❀ बहुजनहिताय बहुजनसुखाय ❀

याव बुद्धो ति नामं पि, गण्हीयिंसु बुधा मुदा ।
ताव तिट्ठतु लोकम्हि, कासिका बौद्धभारती ॥

बौद्धभारतीगन्थमालाय

तेरसमं पुप्फं

मिलिन्दपञ्हपालि

250
मिलि | मि

बौद्धभारती

वाराणसी

१९७९

बौद्धभारतीग्रन्थमाला–१३

Bauddha Bharati Series–13

मिलिन्दपञ्हो

सम्पादक

स्वामी द्वारिकादासशास्त्री

Baudha Bharati Series–13

MILIṆDAPAÑHA PĀLI

[Questions of Milind]

Edited By

SWAMI DWARIKADAS SHASTRI

Acharya (Vyakarana, Pali & Bauddha Darshana)

BAUDDHA BHARATI

VARANASI

1979

बौद्धभारतीग्रन्थमाला-१३

मिलिन्दपञ्हपालि

[मिलिन्द-भिक्षुनागसेनसंवाद]

(समीक्षात्मक भूमिका एवं हिन्दीसंक्षेप सहित मूलपाठ)

सम्पादक
स्वामी द्वारिकादासशास्त्री
व्याकरणपालि-साहित्यबौद्धदर्शनाचार्य

बौद्धभारती

१९७९ ख्रिष्टाब्द] वाराणसी [२५२२ बुद्धाब्द

प्रकाशक :
© बौद्धभारती
पोष्ट बॉक्स ४९,
वाराणसी–१ (उ० प्र०)

Published by
© **Bauddha Bharati**
Post Box. 49,
Varanasi-1 (U. P.) India

छात्र संस्करण
मूल्य : २०.००

Student-Edition
Price : 20.00

ग्रन्थालय संस्करण
मूल्य : २५.००
(पच्चीस रुपया मात्र)

Library-Edition.
Price : 25.00
(*Twenty Five Rupees only*)

मुद्रक :
चन्द्रप्रभा प्रिण्टिग प्रेस,
एस ८/१८९, खजुरी,
वाराणसी–२ (उ० प्र०)

Printed by
Chandra Prabha Printing Press,
S. 8/189, Khajuri,
Varanasi--2(U. P.)

प्रकाशकीय वक्तव्य

माननीय विद्वज्जन !

भारतीय विश्वविद्यालयों के परीक्षा-पाठ्यक्रमों में निर्धारित महत्त्वपूर्ण पालि-ग्रन्थों की प्रकाशन-योजना में आज हम यह मिलिन्दपञ्ह (मिलिन्दप्रश्न) नामक तृतीय ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे है। इससे पूर्व सन् १९७५ में **बालावतार** एवं सन् १९७७ में **विसुद्धिमग्ग** का छात्रोपयोगी संस्करण प्रकाशित कर चुके है।

यद्यपि योजना यह थी कि इस ग्रन्थ को हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया जाय। परन्तु इसका अत्यन्त प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद बहुत पहले परमादरणीय भिक्षु जगदीश काश्यप ने किया था। वह अन्यथा उपलब्ध है। उसके रहते हम अलग से इस ग्रन्थ के साथ भी उसे लगाते तो इस ग्रन्थ का मूल्य आज की इस मँहगाई में इतना हो जाता कि छात्र तो इसे खरीद नहीं पाते। फिर भी ग्रन्थ की विषयवस्तु समझने के लिये प्रारम्भ में हिन्दी में कुछ छात्रोपयोगी संक्षेप लगा दिया है।

पुस्तक का मूल्य हम कम ही रखना चाहते थे, पर कागज और मुद्रण की परिस्थिति से विवश होकर यह मूल्य रखना पड़ा है। ग्रन्थ की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए हम अपनी इस विवशता के लिये क्षमाप्रार्थी हैं।

प्रकाशक

पिटकेतर पालि-ग्रन्थ

"........पिटकबाह्य पालिग्रन्थों के निर्माण का श्रेय सिलोन के बौद्ध भिक्षुओं को है, किन्तु इसमें **मिलिन्दप्रश्न** अपवाद है। इतना ही नहीं, अपितु समस्त पालिवाङ्मय में शैली की दृष्टि से भी यह बेजोड़ है।

इसके लेखक का पता नहीं, किन्तु यह उत्तर-पश्चिम भारत में बना होगा—ऐसा अनुमान किया जाता है। ग्रीक सम्राट् मिनेण्डर (ई० पू० प्रथमश०) को ही मिलिन्द कहा गाया है और आचार्य नागसेन के साथ उसके संवाद की योजना इस ग्रन्थ में होने से इसका सार्थक नाम 'मिलिन्दप्रश्न' है।

इस ग्रन्थ की प्राचीनता और प्रामाणिकता इसी से सिद्ध होती है कि आचार्य बुद्धघोष ने पिटक से बाहर के इस ग्रन्थ को भी समान प्रामाणिकता दी है।

मूल मिलिन्दप्रश्न के कलेवर में बाद में आचार्यों ने समय-समय पर वृद्धि भी की है।

इस ग्रन्थ में बौद्ध दर्शन के जटिल प्रश्नों को, जैसे—अनात्मवाद, क्षण-भङ्गवाद के साथ-साथ कर्म, पुनर्जन्म और निर्वाण आदि को सरल उपमायें देकर तार्किक दृष्टि से सुलझाने का प्रयत्न किया गया गया है"।

—आचार्य नरेन्द्रदेव

(बौद्धधर्म-दर्शन, तृतीय अध्याय, पृ० ३३-३४)

पूर्वपीठिका

बुद्धं धम्मं च संघं च, तथेव गुरुकस्सपं।
अभिवन्दिय भासिस्सं, अधिगन्थं यथामति ॥

समृद्ध पालिसाहित्य

यद्यपि विषय की दृष्टि से पालिसाहित्य उतना विस्तृत या परिपूर्ण नहीं है, जितना संस्कृत साहित्य। संस्कृत की तरह नानाविध ज्ञानशाखाओं पर उसमें साहित्य का अभाव है; क्योंकि वस्तुतः पालिसाहित्य में बौद्ध धर्म, वह भी स्थविरवादी बौद्धधर्म, के अतिरिक्त ज्ञातव्य अत्यन्त स्वल्प है। विभिन्न ज्ञान-शाखाओं की वह बहुमूल्य सम्पत्ति इसमें बिल्कुल नहीं मिलती, जिससे हम इस साहित्य को समृद्ध कह सकें। तथापि इस साहित्य के दूसरे अनेक महत्त्वपूर्ण आकर्षण हैं, जिनसे परिपूर्ण होने के कारण इस साहित्य को भी समृद्ध कहने में हमें कोई संकोच नहीं होता।

पालिसाहित्य का विकास न केवल भारतवर्ष में ही, अपितु हमारे पड़ौसी देश लंका, बर्मा, स्याम, कम्बोडिया आदि में भी अत्यधिक हुआ है। अतः स्वभावतः इस साहित्य ने सुदीर्घकाल तक इन देशों की भाषा, विचार-परम्परा को भी प्रभावित किया है। पालि भाषा में साहित्य की रचना बुद्धकाल से लेकर आजतक सतत प्रवाहरूप में होती चली आ रही है। इस तरह इसके विकास का, इसकी समृद्धि का कम से कम २५०० वर्ष का तो इतिहास है ही, अतः यही इसकी समृद्धि का उज्जवल प्रमाण है।

पालिसाहित्य का वर्गीकरण

सम्पूर्ण पालिवाङ्मय को कालक्रम या प्रवृत्ति की दृष्टि से विभक्त किया जा सकता है। कालक्रम से यह साहित्य पालिसाहित्य (पिटक – बुद्धवचन) और अनुपालि (अनुपिटक, अट्ठकथा या स्वतन्त्र व्याख्या) साहित्य रूप से द्विधा वर्गीकृत किया जा सकता है। पालि (पिटक) साहित्य का विकास बुद्ध के निर्वाणकाल से प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व तक माना गया है। और अनुपालि (अनुपिटक) साहित्य का विकास प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व से लगाकर अद्यावधि होता चला आ रहा है।

(क) पिटक-साहित्य

(क) इस पालि या पिटक साहित्य को विद्वानों ने सर्वप्रथम तीन भागों में विभक्त किया है— १. विनयपिटक, २. सुत्तपिटक एव ३. अभिधम्मपिटक।

१. विनयपिटक—यह पिटक अपने आप में परिपूर्ण है, परन्तु विषयवस्तु की दृष्टि से तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—(क) सुत्तविभङ्ग, (ख) खन्धक एवं (ग) परिवार। सुत्तविभङ्ग में दो ग्रन्थ हैं— १. **पाराजिक** एवं २. **पाचित्तिय**। खन्धक में भी दो ग्रन्थ है—१. **महावग्ग** एवं २. **चुल्लवग्ग**। **परिवार** या परिवारपालि अपने नाम से विख्यात है।

२. सुत्तपिटक—यह पिटक पांच निकायों में विभाजित किया गया है—१. दीघनिकाय, २. मज्झिमनिकाय, ३. संयुक्तनिकाय, ४. अंगुत्तरनिकाय एवं ५. खुद्दकनिकाय। अन्तिम खुद्दकनिकाय में १५ छोटे-बड़े ग्रन्थ स्वतन्त्र रूप से सम्मिलित किये गये हैं।

३. अभिधम्मपिटक—इस पिटक में सात ग्रन्थ हैं—१. धम्मसंगणि, २. विभंग, ३. धातुकथा, ४. पुग्गलपञ्ञत्ति, ५. यमक, ६. पट्ठान एवं ७. कथावत्थु।

(ख) पांच निकाय—पिटकसाहित्य (त्रिपिटक) का उक्त वर्गीकरण तो प्रसिद्ध ही है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी समग्र त्रिपिटक को पांच निकायों में भी विभक्त करके दिखाया गया है। इनमें चार निकाय तो पूर्वोक्त दीघनिकायादिक ही हैं, पाँचवें खुद्दकनिकाय में उक्त १५ ग्रन्थों के अतिरिक्त विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक का भी संग्रह कर दिया गया है। परन्तु यह विभाजन स्वाभाविक एवं तर्कसम्मत नहीं लगता।

(ग) नौ अङ्ग—त्रिपिटक (बुद्धवचनों) का एक वर्गीकरण नौ अङ्गों के रूप में भी प्रसिद्ध है। वे नौ अङ्ग हैं—१. **सुत्त** (भगवान् द्वारा दिये गये वे धार्मिक उपदेश जो गद्यों में संगृहीत हुए हैं), २. **गेय्य** (भगवान् के वे उपदेश जो गद्य-पद्य मिश्रित अर्थात् गाने योग्य है), ३. **वेय्याकरण** (व्याकरण, वह व्याख्यापरक साहित्य जो अभिधम्मपिटक आदि में सन्निहित है) ४. **गाथा** (श्लोक, पदबद्ध संग्रह) ५. **उदान** (भावातिरेक में बुद्ध या बुद्धशिष्यों के श्रीमुख से निकले उद्गार), ६. **इतिवुत्तक** (इत्युक्तकम्, 'ऐसा कहा गया' इस वाक्यांश के साथ भगवान् की छोटी-छोटी उक्तियों का संग्रह), ७. **जातक** (बुद्ध के पूर्वजन्मों से सम्बद्ध कथायें), ८. **अब्भुतधम्म** (अद्भुत धर्म, यौगिक सिद्धियों का वर्णन करने वाले त्रिपिटक के अंश) एवं ९. **वेदल्ल** (ज्ञानवर्धन के लिये प्रश्नोत्तर के रूप में लिखे गये उपदेश, जैसे चूळवेदल्ल सुत्त, या महावेदल्लसुत्त)। इसीलिये कहा

है—'नवङ्गं बुद्धसासनं'। यह ध्यान रखना चाहिये कि बुद्धवचनों का यह नौ प्रकार का विभाजन भी विषय की दृष्टि से है, ग्रन्थों की दृष्टि से नहीं।

(घ) बुद्धवचनों का एक और वर्गीकरण ८४००० धर्मस्कन्धों के रूप में भी किया गया है, किन्तु यह बौद्ध विद्वानों की विश्लेषणप्रियता का ही एक नमूना है अतः यह औपचारिक है, व्यवहार में इसका उपयोग कम ही है।

सामान्यतः आजतक त्रिपिटक एवं उसके उपविभागों के रूप में ही बुद्धवचनों के अध्ययन की परिपाटी है।

(ख) अनुपिटक साहित्य

अनुपिटक साहित्य का वर्गीकरण करते समय भी हम कालक्रम को ही प्रधान मानेंगे। जैसा पहले कहा जा चुका है, इस अनुपिटक साहित्य की रचना त्रिपिटक के पूर्ण हो जाने के बाद से प्रारम्भ होकर वर्तमान काल तक होती चली आ रही है। किसी भी विद्वान् के लिये यह आश्चर्य की बात होगी कि इतने सुदीर्घ विकास-काल में भी इस साहित्य में इतनी विभिन्नता नहीं दिखायी देती जितनी कि अन्य किसी भी साहित्य के अन्दर मिलती है। इसका एकमात्र कारण यह है कि इस साहित्य का हमेशा एक ही केन्द्रबिन्दु—स्थविरवादी बौद्ध-धर्म का अध्ययन एवं विवेचन रहा है। अतः एक लक्ष्य होने के कारण नाना-रूपता आने का प्रश्न नहीं उठता। फिर भी, कालक्रम और प्रवृत्ति की दृष्टि से इस समग्र साहित्य को तीन युगों में बाँटा जा सकता हैं।

पहला युग प्रथम शताब्दी ईस्वीपूर्व से लगाकर चौथी शताब्दी ईस्वी तक अर्थात् बुद्धघोष के आविर्भावकाल (५०० वर्ष) तक मानना चाहिए। इस युग में **नेत्तिपकरण, पेटकोपदेस, सुत्तसंग्रह** और **मिलिन्दपञ्ह** एवं **दीपवंस** आदि की रचना हुई। जिनमें मिलिन्दपञ्ह सर्वतोऽधिक प्रसिद्ध है। क्योंकि यह सारा साहित्य बुद्धघोष की उत्पत्ति से पूर्व लिखा गया, अतः इसको 'पूर्वबुद्धघोष युग का साहित्य' कहा जा सकता है।

दूसरा युग बुद्धघोष के उत्पादकाल से प्रारम्भ माना जाता है। बुद्धघोष के प्रसिद्ध ग्रन्थ **विसुद्धिमग्ग** एवं उनकी **अट्ठकथाएँ,** बुद्धदत्त और धर्मपाल आदि की अट्ठकथाएँ इसी युग में लिखी गयी। प्रसिद्ध इतिहास-ग्रन्थ **महावंस,** एवं व्याकरण शास्त्र में **कच्चायन व्याकरण** तथा अभिधर्म दर्शन पर **अभिधम्मत्थसंगह** भी इसी युग में लिखा गया। पालित्रिपिटक पर अट्ठकथाओं की रचना इस युग की मुख्य विशेषता है, जिसके प्रेरक आचार्य बुद्धघोष ही हैं। अतः इस युग को 'बुद्धघोष युग' नाम से इतिहासकारों ने व्यवहृत किया है। इस युग की रचना-पंक्ति पाँचवी शताब्दी से लगाकर बारहवीं शताब्दी तक चलती है।

तीसरा युग—उक्त युग में जो अट्ठकथा-साहित्य लिखा गया, उसी की टीकाएँ, उपटीकाएँ, अनुटीकाएँ आगे की शताब्दियों में लिखी जाती रहीं। यह बारहवीं शताब्दी से आज तक का सुदीर्घ युग है। इस युग में प्रायः बुद्धघोष एवं उनके समकालिक आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट पद्धति पर या उनके ही उपजीव्य साहित्य की रचना होती रही है, अतः इस युग को 'बुद्धघोष युग की परम्परा अथवा टीकाओं का युग' नाम दिया गया है।

मिलिन्दपञ्ह का गौरव

इतने विस्तृत वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि पालिसाहित्य में मिलिन्दपञ्ह का क्याऽस्थान है। यह ग्रन्थ पूर्वबुद्धघोष युग की सबसे प्रसिद्ध रचना है। इसलिये यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण अनुपिटक-साहित्य में इस ग्रन्थ की समता अन्य कोई ग्रन्थ नहीं कर पाया, न तो विषय के वर्णन की दृष्टि से, नहीं भाषा की दृष्टि से और न शैली की दृष्टि से। आचार्य बुद्धघोष ने इस ग्रन्थ को अपनी अट्ठकथाओं में स्थान-स्थान पर त्रिपिटक के समान ही आदरपूर्वक स्मरण करते हुए उद्धृत किया है। यह इसकी महत्ता का सर्वोत्तम परिचायक है। साहित्य और दर्शन—दोनों ही दृष्टियों से 'मिलिन्दपञ्ह' एक गौरवशाली ग्रन्थ है। पाश्चात्त्य विद्वान् ग्रन्थ के इस गौरव पर इतने मुग्ध हैं कि उन्हें इसमें ग्रीक प्रभाव और प्लेटो के विचारों की गन्ध आ गयी; क्योंकि उनकी दृष्टि में भारतीयों में ऐसा उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखने की क्षमता कहाँ थी!

मिलिन्दपञ्ह का रचनाकाल

इस ग्रन्थ में, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, 'मिलिन्द' के 'प्रश्नों' का विवरण है। ('मिलिन्द' शब्द ग्रीक 'मेनान्डर' नाम का भारतीयकरण है।) कहना यह चाहिये कि इसमें मिलिन्द के प्रश्नों का विवरण ही नहीं, अपितु उसके उन प्रश्नों का समाधान इसका मुख्य विषय है। यह समाधान भदन्त नागसेन नामक बौद्ध भिक्षु ने किया था, अतः मिलिन्द एवं भदन्त नागसेन के संवाद के रूप में यह ग्रन्थ लिखा गया।

उक्त संवाद एक ऐतिहासिक तथ्य है। इतिहास में एतद्विषयक प्रभृत सामग्री उपलब्ध है। मिलिन्द को स्वयं इस ग्रन्थ में ही योनक [=यवनक, यूनान= ग्रीस] देश का राजा कहा गया है और उसकी राजधानी सागल [=स्यालकोट, वर्तमान में पाकिस्तान का एक नगर) बतलायी गयी है। इतिहास पढ़ने से हम जानते हैं कि भारत का उत्तर-पश्चिमी भाग दूसरी शताब्दी ई० पूर्व में कुछ समय के लिये ग्रीक शासकों के हाथों में चला गया था। ग्रीक शासक 'मेनान्डर'

या 'मेनान्ड्रोस' ही 'मिलिन्दपञ्ह' का 'मिलिन्द' है। यह इतिहासविदों का निश्चित मत है। किन्तु इस मिलिन्द के शासनकाल की निश्चित तिथि के विषय में उनका ऐकमत्य नहीं है। उनमें से कुछ इतिहासकार मानते हैं कि मिलिन्द ने १५५ ई० पूर्व में भारत पर आक्रमण किया, कुछ का मत है कि मिलिन्द का शासनकाल प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व था, एक विद्वान् कहते हैं कि ९० वर्ष ईस्वी पूर्व से पहले मिलिन्द का समय नहीं माना जा सकता। कुल मिलाकर विद्वानों का बहुमत इसी पक्ष में है कि मिलिन्द का शासनकाल प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व है। अतः अपने मूलरूप में 'मिलिन्दपञ्ह' इसी समय लिखा गया—यह निश्चित है।

ग्रन्थ की एतद्विषयक ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते हुए इसी ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की भूमिका (पृ० ५–६) में आदरणीय गुरुदेव भिक्षु श्री जगदीश काश्यप एक और दृढ़तर साक्ष्य उपस्थित करते हैं। वे लिखते हैं—

"मिलिन्दपञ्हो के अन्त में आता है कि राजा मिलिन्द भिक्षु बना और उसने अर्हत्-पद प्राप्त किया। इसमें ऐतिहासिक सत्य कहाँ तक है, कहा नहीं जा सकता। राजा मिलिन्द के विषय में सब से प्रामाणिक जानकारी हमें प्राप्त है उसके सिक्कों से।

अभी तक राजा मिलिन्द के लगभग बाईस सुन्दर सिक्के उपलब्ध हैं। अधिक में राजा मिलिन्द का नाम स्पष्टतया पढ़ा जाता है। आठ सिक्कों में राजा की शकल भी है। ये सिक्के उत्तर-भारत के सुदूर प्रदेश में प्राप्त हुए हैं—पश्चिम में काबुल तक, पूर्व में मथुरा तक और उत्तर में काश्मीर तक। इससे पता चलता है कि मिलिन्द के राज्य का प्रसार बड़ा था। सिक्कों पर राजा की शकल बड़ी सुन्दर आई है, लम्बी नाक के साथ मूर्ति बड़ी ही सजीव मालूम पड़ती है। कुछ सिक्कों की शकल तरुण अवस्था की है, और कुछ की अत्यन्त वृद्धावस्था की। इससे पता चलता है कि मिलिन्द राजा का राज्य-काल भी बड़ा लम्बा रहा होगा। सिक्कों के एक तरफ ग्रीक भाषा में और दूसरी तरफ उस समय की पाली भाषा में लेख है। इक्कीस सिक्कों पर है :

एक तरफ—Basileos Soteros Menadrou

और दूसरी तरफ—महरजस तद्रतस मेनन्द्रस

कुछ सिक्कों पर दौड़ते घोड़े, ऊँट, हाथी, सूअर, चक्र या ताड़ के पत्ते खुदे हैं। चक्र वाले सिक्के से यह प्रमाणित होता है कि राजा के ऊपर बौद्ध धर्म का प्रभाव अवश्य पड़ा होगा, क्योंकि चक्र [=धर्मचक्र] बुद्ध-धर्म का एक प्रधान चिह्न हैं। केवल एक सिक्का ऐसा है जो दूसरों से बिलकुल भिन्न है

और इस बात को बहुत हद तक पुष्ट करता है कि मिलिन्द राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। उसके एक तरफ लिखा है :

Basileos Dikaiou Menandrou

दूसरी तरफ—महरजस धर्मिकस मेनन्द्रस

यहाँ 'धर्मिकस' का अर्थ है "धार्मिकस्य"। बौद्ध साहित्य में उपासक राजा के लिये बराबर 'धम्मराज' शब्द का प्रयोग होता है। अशोक का तो नाम ही हो गया था 'धर्माशोक'। अतः इस सिक्के में जो 'धर्मिकस' पद का प्रयोग आया है उससे सिद्ध होता है कि मिलिन्द अन्त में अवश्य बौद्ध हो गया होगा।

प्लुटार्क भी अपने इतिहास में लिखता है कि मेनाण्डर बड़ा न्यायी विद्वान् और जनप्रिय राजा था। उसकी मृत्यु के बाद उसके फूल (=भस्मावशेष) लेने के लिए लोगों में लड़ाई छिड़ गई थी। लोगों ने उसके फूलों पर बड़े-बड़े स्तूप बनवाये। यह कहानी भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के समय जो बातें हुई थीं, उनसे बहुत मिलती है। फूलों के ऊपर स्तूप बनवाना बौद्धों की प्रचलित प्रथा थी। इससे भी यह ज्ञात होता है कि मिलिन्द अवश्य बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गया होगा"।

'मिलिन्दपञ्हो' के रचयिता : नागसेन

इस तरह ग्रीक राजा मिलिन्द एवं भदन्त नागसेन के संवाद के रूप में इस ग्रन्थ का लिखा जाना एक निश्चित ऐतिहासिक तथ्य सिद्ध होने पर अभी इन प्रश्नों पर विचार करना है कि इसका रचयिता कौन है ? इसका मूल रूप क्या था, किस भाषा में था ? बाद में एक बार या बार-बार इसमें कब और क्या क्या परिवर्तन-परिवर्धन हुए ?

इसके रचना-स्थान के विषय में यह निश्चित समझ लेना चाहिये कि मूल रूप में यह ग्रन्थ उत्तर-पश्चिम भारत में द्वितीय या प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व में हुए मिलिन्द व नागसेन के संवाद के रूप में उसी समय या कम से कम प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व के निकट काल में, बौद्ध धर्म और दर्शन सम्बन्धी शंकाओं के निवारणार्थ, लिखा गया था।

इस ग्रन्थ के रचयिता के रूप में भदन्त नागसेन को माना जा सकता है। ग्रन्थ के नायक होने के साथ-साथ उनके इस ग्रन्थ का रचयिता होने में कोई विरोध नहीं है; क्योंकि हम भारतीय लेखकों की परम्परा में ऐसे अनेक उदाहरण देखते हैं कि वे ग्रन्थ के लेखक भी हैं, और ग्रन्थ में पात्र (संवादक) भी हैं। जैसे रामायणकार वाल्मीकि रामायण के रचयिता भी हैं और राम के उपदेशक के रूप में ग्रन्थ में भी स्थान-स्थान पर चर्चित हैं। इसी तरह

महाभारतकार व्यास महाभारत में जगह-जगह एक विशिष्ट संवादक के रूप में स्थान पाये हुए हैं। ऐसी स्थिति में नागसेन भी इस ग्रन्थ के रचयिता होते हुए संवादक भी क्यों नहीं हो सकते ! आचार्य बुद्धघोष ने भी, पालिवाङ्मय में जिनकी प्रामाणिता असन्दिग्ध एवं सर्वोपरि है, अपनी अट्ठकथाओं में विशेषतः अट्ठसालिनी और विसुद्धिमग्ग में स्थान-स्थान भदन्त नागसेन को मिलिन्दपञ्हो के रचयिता के रूप में ही माना है।

श्रीमती रायस डेविस ने 'मिलिन्दपञ्हो' के अपने अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में ग्रन्थ के रचयिता का नाम 'माणव' बतलाया है। परन्तु 'माणव' नामधारी किसी विद्वान् द्वारा 'मिलिन्दपञ्हो' जैसे उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना के बाद भी उसका उससे पहले या बाद में कोई नाम भी न ले—ऐसा कभी देखा या सुना नहीं गया। अतः इस 'माणव' नाम के पीछे ऐतिहासिकता के अभाव में इसे हम श्रीमती रायस डेविस का कल्पनाप्रसूत ही मानते हैं। विद्वानों को ऐसे भ्रमजाल में नहीं फँसना चाहिये।

मिलिन्दपञ्ह का मूल रूप

मिलिन्दपञ्ह के मूल रूप को लेकर भी पश्चिमी विद्वानों ने एक वाद खड़ा किया है। वे कहते हैं कि यह एक समय में बनी हुई समग्र रचना नहीं है। उनके अनुसार इसमें समय-समय पर परिवर्धन होते रहे हैं। परिच्छेदों और विषयवस्तु की भिन्नरूपता का सहारा लेकर उन्होंने यह सिद्ध करने का साहस किया है ! उनकी धारणा है कि मौलिक रूप में यह ग्रन्थ मिलिन्द-नागसेन के संवाद के संक्षिप्त विवरण के रूप में बहुत छोटा था, बाद में स्थविरवाद की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विषयों को इसमें समाविष्ट कर दिया गया।

इसमें वे लोग ग्रन्थ के अनेकरूपतामय आन्तरिक साक्ष्य के अतिरिक्त एक प्रभावशाली बाह्य साक्ष्य भी देते हैं। वह साक्ष्य है ३१७ और ४२० ई० के मध्य हुआ इस ग्रन्थ का चीनी भाषा रूपान्तर, इसमें प्रारम्भ के केवल तीन परिच्छेदों (१. बाहिर कथा, २. लक्खणपञ्ह एवं ३. विमतिच्छेदनपञ्ह) का ही अनुवाद मिलता है। इस अनुवाद का नाम चीन में नागसेन-सूत्र है। इसमें चौथे परिच्छेद (मेण्डकपञ्ह) से छठे (ओपम्मकथापञ्ह) परिच्छेद तक का अनुवाद नहीं है। इस साक्ष्य के आधार पर सेनार्ट, बार्थ, गायगर और विन्टरनित्ज आदि इस ग्रन्थ का मौलिक रूप तृतीय परिच्छेद तक ही मानते हैं।

इस मत के समर्थन में वे अन्य कारण भी देते । १. सबसे बड़ा कारण है इस ग्रन्थ के तृतीय परिच्छेद के अन्त में ही ग्रन्थ-समाप्तिसूचक वाक्य लिख दिया

गया है—'मिलिन्दपञ्हपुच्छाविसज्जना निट्ठिता।' फिर चौथे परिच्छेद के प्रारम्भ में नये सिरे से लिखा है—

"भस्सप्पवेदी वेतण्डी, अतिबुद्धि विचक्खणो।
मिलिन्दो ञाणभेदाय, नागसेनमुपागमि॥"

एक ही ग्रन्थ था तो जब पहले मिलिन्द के प्रश्न समाप्त कर दिये गये तब पुनः इस तरह दोबारा विषयोत्थान करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी? २. दूसरा कारण देते हुए वे कहते हैं कि कितने आश्चर्य की बात है कि आचार्य बुद्धघोष भी मिलिन्दपञ्ह के जिन उद्धरणों को अपने ग्रन्थों में उद्धृत करते हैं, वे सब प्रायः प्रथम के तीन परिच्छेदों में से ही हैं। अतः निष्पक्ष समालोचक होने के नाते प्रथम तीन परिच्छेदों को ही प्रामाणिक (मूलरूप) मानना पड़ता है। यों, इन बाह्य और आन्तरिक साक्ष्यों के आधार पर पाश्चात्त्य विद्वानों ने मिलिन्दपञ्ह का मूलरूप प्रथम तीन परिच्छेद तक ही माना, उसके बाकी परिच्छेदों को वे बाद में मिलाया हुआ मानते हैं।

पाश्चात्यमतखण्डन—संक्षेप में इन विद्वानों ने ग्रन्थ के मौलिक रूप के उपर्युक्त निर्णय में चार हेतु दिये है—१. विषयवस्तु की भिन्नरूपता, २. ग्रन्थ का चीनीभाषान्तर, ३. बुद्धघोष द्वारा उद्धृत इस ग्रन्थ के उद्धरण एवं ४. ग्रन्थ के चौथे परिच्छेद से नये रूप में विषयावतरण। हमारा इस बाद में इतना ही कहना है कि पाश्चात्त्य विद्वान् ग्रन्थ को सूक्ष्मेक्षिकया न पढ़ने के कारण और भारतीय लेखकों की शैली एवं भारतीय संस्कारों से अपरिचित होने के कारण ऐसी भूल कर बैठे! प्रत्येक ग्रन्थ को रचना के अनुबन्ध-चतुष्टय होते हैं—१. विषय, २. प्रयोजन, ३. अधिकारी एवं ४. सम्बन्ध। मिलिन्दपञ्ह के भी अनुबन्ध-चतुष्टय हैं। इसका साक्षात् अधिकारी है—मिलिन्द और प्रयोजन है मिलन्द के बौद्ध दर्शन एवं धर्म के विषय में सञ्जात भ्रमों का निराकरण।

१. हम इतिहास से इस साक्षात् अधिकारी मिलिन्द के विषय में जानते है कि यह विद्वान् था, तार्किक था, परन्तु अभारतीय था। इसे भारतीय धर्म, दर्शन एवं शास्त्र के विषय में कोई श्रद्धा नहीं थी। यह अपने देश के विद्वानों को, भारत और यूनान के बीच में पड़ने वाले देश के अन्य विद्वानों को अपनी तर्कबुद्धि से परास्त कर चुका था। भारत में भी यह नागसेन से संवाद होने से पूर्व पूरण काश्यप आदि अन्य भारतीय धर्मपीठाधीशों एवं दर्शनाचार्यों को, आयुपाल जैसे बौद्धों को अपनी अनुपम तर्कशक्ति से चुप कर चुका था। इस कारण इसे अपने तर्कबल का बहुत दम्भ हो गया था। वह कह बैठा—"तुच्छो बत, भो, जम्बुदीपो! नत्थि कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा, यो मया सद्धिं सल्लपितुं उस्सहति,

कङ्खं पटिविनेतुं"। (पूरा जम्बुद्वीप आज विद्याविहीन हो चुका है, इसमें ऐसा कोई श्रमण या ब्राह्मण विद्वान् नहीं दिखायी देता जो मेरे सामने आने की हिम्मत कर सके! मेरे प्रश्नों का उत्तर देना तो बहुत दूर की बात है!) ऐसी परिस्थिति में वह नागसेन से मिला है। मिलते ही उसने यहाँ भी, पूर्व के विद्वानों की तरह नागसेन के सामने भी, वितण्डावाद के सहारे तत्त्वचर्चा प्रारम्भ की थी। परन्तु नागसेन जैसे सिद्ध विद्वान् के सामने उसकी एक भी न चली और जब उसके सभी छोटे-बड़े प्रश्नों का शास्त्रानुकूल एवं तर्कसम्मत उत्तर मिलता गया तब जीवन में पहली बार उसके दम्भ, दर्प व अभिमान विगलित हुए और वह हृदय से एक वास्तविक विद्वान् के सामने नतमस्तक हुआ। उसके मुख से अचानक ये नम्रताभरे उद्गार निकले—"आम, भणे, पण्डितो थेरो। एदिसो आचरियो भवेय्य, मादिसो च अन्तेवासी, नचिरस्सेव पण्डितो धम्मं आजानेय्या" ति। (योनकदेशवासियो! तुम ठीक ही कह रहे हो, भदन्त नागसेन विद्वान् हैं! ऐसा (नागसेन जैसा) आचार्य (उपदेष्टा) हो, और मेरे जैसा अन्तेवासी जिज्ञासु, तभी वह धर्म की गुत्थियों को इतनी जल्दी सुलझा सकता है)। और वह भदन्त नागसेन का वस्तुतः अन्तेवासी बन गया।

अन्तेवासी बनकर उसने त्रिपिटक का, स्थविरवाद दर्शन का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया। अध्ययन करने के काद उसकी जन्मजात तर्कबुद्धि से त्रिपिटक में जो बातें उसे दुतरफा लगी उनके बारे में भदन्त नागसेन से प्रश्न करके अपने भ्रम का निराकरण किया। मेण्डकपञ्ह में ऐसे ही भ्रमात्मक प्रश्नों का उत्तर है।

इस तरह त्रिपिटक का सर्वथा विनीत अध्येता बनने पर भी मिलिन्द की पुरानी भावना प्रच्छन्न रूप से काम कर रही थी, उसी के आधार पर उसके द्वारा बाद में जो प्रश्न किये गये उनका अनुमान (तर्क, युक्ति) के बल पर भदन्त नागसेन द्वारा उत्तर दिया गया। अनुमानपञ्ह में ऐसे ही प्रश्नों का उत्तर है।

उन्हीं में से कुछ प्रश्नों का उत्तर तर्क के आधार पर उपमा (उदाहरण) के सहारे से ओपम्मकथापञ्ह में दिया है, क्योंकि उपमा द्वारा कठिन से कठिन बात भी जल्दी समझ में आ जाती है।

इस तरह साधारण पाठक ग्रन्थ के विषय की भिन्नरूपता का कारण समझ सकते हैं। इस वस्तुस्थिति के रहते यह कैसे माना जा सकता है ग्रन्थ बार-बार कई व्यक्तियों द्वारा लिखा गया है।

२. अब चीनी भाषान्तर को लें। चीनी भाषान्तर तीन ही परिच्छेद तक मिलता है तो हम क्या करें! फिर हमारे पिछले तर्क के आधार पर

हो सकता है चीनियों ने जितने अंश में सीधे शास्त्र पर प्रश्न किये गये थे, उतने का अनुवाद कर लिया गया। अवशिष्ट जिस अंश में स्थविर-वादी दर्शन की चर्चा है उसका महायानवादी चीनी विद्वान् अनुवाद न करें तो इसमें ग्रन्थ का क्या दोष है? अथ च, यह भी हो सकता है, प्रारम्भ में पूरे ग्रन्थ का चीनो अनुवाद किया गया हो, बाद में किसी कारण से आगे का अंश लुप्त हो गया हो और फिर अनुवाद में भिन्नरूपता आ जाने के भय से या स्थविरवाद के प्रति उपेक्षा के कारण वहाँ पुनः दुबारा अनुवाद न किया गया हो। अतः केवल चीनी भाषान्तर के दुर्बल साक्ष्य पर हम यह मानने को तैयार नहीं है कि मूल रूप में ग्रन्थ प्रारम्भ में तीन परिच्छेद तक ही लिखा गया था।

३. रह गयी बात आचार्य बुद्धघोष द्वारा उद्धृत उद्धरणांशों की। इस विषय में हमारा यह मत है कि ग्रन्थ में विमतिच्छेद-पञ्हपर्यन्त एक विदेशी तर्क-शास्त्री से शास्त्र के मुद्दों पर ही प्रधानतः चर्चा है। उधर बुद्धघोष को शास्त्र की अपनी व्याख्या (अट्ठकथा) में जहाँ-जहाँ अपने से अधिक उद्भट विद्वान् के सहारे की आवश्यकता पड़ी वहाँ उन्होंने त्रिपिटक में उद्धरण न मिलने पर मिलिन्दपञ्ह से उद्धरण दिये। मेण्डकपञ्ह, अनुमानपञ्ह में शास्त्रप्रधान-चर्चा नहीं है, अतः उन्होंने उन प्रकरणों से उद्धरण नहीं दिये। परन्तु यह इससे यह कैसे सिद्ध किया जा सकता है कि मिलिन्दपञ्ह की मूल रूप में तीन ही परिच्छेद तक रचना हुई थी।

४. रही बात चतुर्थ परिच्छेद से नये रूप में विषयावतरण की, इसमें भी पाश्चात्त्यों को क्या परेशानी है? हमारे भारतीय संस्कारों में ग्रन्थों के प्रत्येक परिच्छेद के प्रारम्भ में मंगलाचरण की परिपाटी देखी गयी है। जब कि मिलिन्द-पञ्ह में तो चतुर्थ परिच्छेद नये परिवेश में प्रारम्भ किया जा रहा है, वहाँ पुनः मंगलाचरण करना स्वभाविक है। हम पीछे कह ही आये हैं कि तृतीय परिच्छेद तक भदन्त नागसेन के साथ उस मिलिन्द के संवाद हैं जो धृष्ट, उद्धत, वितण्डा-वादी एवं अभारतीय हे। अब चतुर्थ परिच्छेद में वही भस्सप्पवेदी, वेतण्डी मिलिन्द भदन्त नागसेन का अन्तेवासी, उपासक, भारतीय दर्शन तथा बौद्ध धर्म के प्रति विनीत एवं श्रद्धालु बन चुका है, पाठक को यह दिखाने के लिये ह नये रूप में विषय प्रारम्भ किया गया है। इससे यह कैसे सिद्ध हो सकता है कि यहाँ से यह ग्रन्थ शताब्दियों बाद किसी दूसरे रचनाकार ने लिखा है।

इन सब युक्तियों के आधार पर हम तो यह मानते हैं कि यह ग्रन्थ 'एक साथ, एक ही समय, एक ही लेखक द्वारा' लिखा गया है।

ग्रन्थ के कई पाठभेद मिलने की बात भी ऐसी ही है! जर्मन विद्वान् श्रेडर ने इस ग्रन्थ के सात पाठ-भेद खोज निकाले हैं। एक दो की बात कौन कहे! इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के बारे में साधनाभाव में ऐसी ही सब कपोल-कल्पनायें हुआ करती हैं।

क्या मिलिन्दपञ्ह मूलरूप में संस्कृत में था ?

मिलिन्दपञ्ह की उत्कृष्ट रचना-शैली, जो कि उस काल के संस्कृत ग्रन्थों से मिलती-जुलती है, उसे देखकर गायगर जैसे कुछ पाश्चात्य मनीषियों ने और उनकी देखा-देखी यहाँ के विद्वानों ने मिलिन्दपञ्ह के विषय में यह धारणा फैलायी कि यह ग्रन्थ मूल रूप में संस्कृत में लिखा गया था, बाद में किसी विद्वान् ने पालि भाषा में उसका अनुवाद कर दिया।

परन्तु यदि शैलीमात्र से हम इस ग्रन्थ के वर्तमान रूप को संस्कृत से अनूदित मानें तो भगवान बुद्ध से लगाकर आचार्य बुद्धघोष तक का बहुत सा पालिसाहित्य संस्कृत से अनूदित मानना पड़ेगा। क्या दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय और विसुद्धिमग्ग की भाषा और शैली मिलिन्दपञ्ह से कहीं भी कमजोर है? यदि वे सब ग्रन्थ मूल रूप में पालि में ही लिखे गये माने जा सकते हैं तो मिलिन्दपञ्ह के विषय में यह विवाद किस तर्क के आधार पर खड़ा किया जा सकता है?

वस्तुसत्य यह है कि तीन शताब्दी ईस्वी पूर्व से लगाकर पाँचवी, छठी शताब्दी तक लिखित समग्र भारतीय साहित्य, फिर वह भले ही संस्कृत में लिखा गया हो, या पालि में या प्राकृत में; सबकी शैली समानतया उत्कृष्ट रही है। क्योंकि उस समय संस्कृत अधिक समृद्ध थी, अतः उसके नाम पर किसी भी ग्रन्थ के लिए यह भ्रम फैलाना सरल होता है कि वह मूलरूप में संस्कृत में लिखा गया होगा। वस्तुतः मिलिन्दपञ्ह मूलरूप में पालि में ही लिखा गया है।

एक बात और! स्थविरवाद का प्रतिपादन जिस सम्पन्नता एवं समृद्धि के साथ पालि भाषा में किया जा सकता था उतना संस्कृत में नहीं; क्योंकि उस समय तक संस्कृत के विद्वान् पालिभाषा में लिखना अपनी हीनता समझते थे और स्थविरवादी विद्वान उस समय "अनुजानामि, भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया परियापुणितुं' भगवान् की इस आज्ञा का उल्लंघन करना पाप समझते थे! ऐसी स्थिति में मिलिन्दपञ्ह के संस्कृत में लिखे जाने की कल्पना उस समय की सामाजिक मान्यताओं से अपने आप को अपरिचित घोषित करना है।

अतः हम यही मानने में अपना और पालिसाहित्य का सम्मान समझते है कि मिलिन्दपञ्ह मूल रूप में पालिभाषा में ही निबद्ध हुआ है। प्रसिद्ध इतिहासविद् डा० भरतसिंह उपाध्याय भी हमारे इस मत के समर्थक है।

मिलिन्दपञ्ह के रचयिता नागसेन

यदि मिलिन्दपञ्ह के रचयिता के रूप में भदन्त नागसेन को ही माना जाता है, तो नागसेन का जीवनचरित्र हम ग्रन्थ की विषयवस्तु लिखते समय प्रारम्भ में ही लिखेंगे। सम्राट् मिलिन्द के विषय में, हमें जो कुछ इतिहास से ज्ञात हुआ, पीछे लिख चुके हैं।

मिलिन्दपञ्ह का त्रुटित अंश

मिलिन्दपञ्ह के अब तक हमको जितने भी संस्करण मिले हैं—रोमन, श्रीलंका, वर्मा या हिन्दी संस्करण—सभी त्रुटित मिले हैं। यहाँ तक कि छट्ठ संगायन (बर्मा) का नवीनतम संस्करण भी उतने अंश में त्रुटित ही हैं।

छठे ओपम्मकथापञ्ह में कुम्भवग्ग को ६७वीं मातिका के बाद अवशिष्ट मातिकाओं का व्याख्यान किसी भी संस्करण में उपलब्ध नहीं हुआ, विवशतः इस संस्करण में हम भी उतनी मातिकाओं का व्याख्यान नहीं दे पाये। यद्यपि इतने अंश के नष्ट होने से मिलिन्दपञ्ह की पूर्णता पर कोई आंच नहीं आ पायी, क्योंकि उतने अंश की मातिकाएँ तो उपलब्ध हैं ही। इन मातिकाओं से भी जिज्ञासु का बहुत कुछ समाधान हो जाता है।

अनुमान ऐसा होता है कि ग्रन्थ का यह अंश बहुत पहले नष्ट हो गया था, बाद में भाषा की अनेकरूपता आ जाने के भय से किसी विद्वान् ने यह अंश पुनः अपनी भाषा में नहीं लगाया; क्योंकि इन प्राचीन ग्रन्थों के साथ पुण्यपाठ का लाभ भी श्रद्धालु जिज्ञासुओं के साथ जुड़ा हुआ है! भदन्त नागसेन के अतिरिक्त किसी अन्य द्वारा त्रुटित अंश जोड़ देने से वह लाभ मिलना असम्भव था।

ग्रन्थ का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व

इस ग्रन्थ का साहित्य, इतिहास, भूगोल आदि की दृष्टि से जो महत्त्व है, उसके विषय में पालिसाहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार डा० भरतसिंह उपाध्याय अपने ग्रन्थ (पालि साहित्य का इतिहास) में लिखते हैं—

"मिलिन्दपञ्ह का दार्शनिक और धार्मिक दृष्टि से तो महत्त्व है ही, साथ ही इसका साहित्यिक या ऐतिहासिक मूल्य भी कम नहीं है। यद्यपि स्थविरवादी बौद्ध धर्म का यह कण्ठहार है, जिसकी प्रतिष्ठा यहाँ बुद्ध-वचनों के समान ही मान्य है, वह भारतीय साहित्य की भी अमूल्य निधि है। यह सत्य है कि लंका, बरमा और स्याम की तरह भारत में उसकी आधुनिक लोक-भाषाओं में 'मिलिन्दपञ्ह' सम्बन्धी प्रचुर साहित्य नहीं लिखा गया, किन्तु केवल इस कारण उसे उस गौरव से, जो मिलिन्दपञ्ह ने भारतीय साहित्य को दिया है, वंचित कर देना ठीक नहीं होगा।

यह ग्रन्थ प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व की प्रभावशाली भारतीय गद्य शैली का सर्वोत्तम नमूना है। विवेचनात्मक बिषयों के लिये उपयुक्त हिन्दी की गद्य शैली का तो विकास हमारे साहित्य में तो अभी हुआ है। अंग्रेजी साहित्य में भी ऐसी परम्परा १००–१५० वर्ष से पहले नहीं जाती। संस्कृत में बाण और दण्डी का गद्य भी निश्चय ही इसके लिए उपयुक्त नहीं था। इस दृष्टि से 'मिलिन्दपञ्ह' की विचारात्मक गद्यबद्ध शैली कितनी महत्त्वपूर्ण है, इसका सम्यक् अनुमापन ही नहीं किया जा सकता। लेखक का शब्दों पर अधिकार, उसकी शैली की प्रवहणशीलता, उसका ओजमय शब्दचयन, कथन की प्रभावपूर्ण शैली, उपमाओं और युक्तियों द्वारा उसका स्वाभाविक अलंकारविधान, सबसे बढ़कर उसकी सरलता और प्रसाद गुण—ये सब विशेषतायें उसे साहित्यिक गद्य के निर्माताओं की उस श्रेणी में बैठा देते हैं, जहाँ उसका तेज सर्वोपरि है।

प्राचीन भारतीय गद्यसाहित्य में 'मिलिन्दपञ्ह' के समान अन्य कोई रचना न पाकर ही सम्भवतः कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने यह अनुमान लगा लिया है कि इस ग्रन्थ की शैली पर ग्रीक प्रभाव उपलक्षित है। परन्तु यह एक बड़ा भ्रम है। सत्य यह है कि भारतीय पराधीनता के युग में अधिकांश पश्चिमी विद्वान् यह विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि भारत ने भी विश्व-संस्कृति को कुछ मौलिक योगदान दिया है। इसी कारण उन्होंने अनेक प्राचीन भारतीय विशेषतापूर्ण बातों पर भी पश्चिमी प्रभाव की कल्पना कर ली है। अफलातूं के संवादों के प्रभाव को 'मिलिन्दपञ्ह' की शैली पर बताने के समान और कोई निरर्थक बात नहीं कही जा सकती। पहले तो ग्रीक भाषा और विचार से नागसेन के परिचित होने का साक्ष्य नहीं दिया जा सकता, फिर उनके सामने प्राचीन उपनिषदों और स्वयं बुद्धवचनों के रूप में गम्भीर संवादों की परम्परा प्रस्तुत थी, तो वे उसे छोड़कर विदेश से उसे ग्रहण करने क्यों जाते? वह समय तो भारतीय संस्कृति के गौरव का था। और हम समझते हैं भारतीय ज्ञान का वह गौरव ही 'मिलिन्दपञ्ह' में प्रतिध्वनित हुआ है जिससे नमित होकर ही बुद्धिवादी मिलिन्द राजा बुद्धधर्म में उपासकत्व ग्रहण कर लेता है। यह भारतीय ज्ञान की उस ग्रीक ज्ञान पर महान विजय का द्योतक है जिसकी पाश्चात्य जगत् बड़ी दम भरता है और जिससे ही वास्तव में उसने सारा ज्ञान प्राप्त भी किया है। 'मिलिन्दपञ्ह' उस ज्ञानविजय अथवा धर्मविजय का स्मारक एवं परिचायक है जिसे भारत ने उस समय के, अपने अलावा, सबसे अधिक ज्ञानसम्पन्न देश पर प्राप्त किय था। इस दृष्टि से वह भारतीय वाङ्मय के अमर रत्नों में से एक है।

जहाँ तक 'मिलिन्दपञ्ह' की शैली के स्रोतों या उसकी प्रेरणा का सवाल है

वह निश्चय ही तिपिटक बुद्धवचनों में ही निहित है। दीघनिकाय के 'पायासि-सुत्त' जैसे सुत्तों की जीवित संवाद-शैली उसकी प्रेरणा-स्वरूप मानी जा सकती है। 'कथावत्थु' के अप्रतिम आचार्य मोग्गलिपुत्त तिस्स के भी भदन्त नागसेन कम ऋणी नहीं हैं। यद्यपि इन दोनों ग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन हम यहाँ विस्तार-भय से नहीं कर सकते, किन्तु यह तो निश्चित ही है कि मोग्गलिपुत्त के समाधानों पर ही नागसेन के अधिकांश 'प्रश्न व्याकरण' (प्रश्नों के उत्तर) आधारित हैं और जिस मन्तव्य को वहाँ 'स्थविरवाद' के रूप में अपनाया गया है वही मन्तव्य मिलिन्दपञ्हकार का भी है।

यद्यपि उपनिषदों की शैली का कोई स्पष्ट प्रभाव 'मिलिन्दपञ्ह' पर परिलक्षित नहीं होता, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि श्वेतकेतु आरुणेय और प्रवाहण जाबालि (जिनके संवाद छान्दोग्य १, ८, ३ और बृहदारण्यक ६, २, १, में आते हैं), आरुणि और श्वेतकेतु (छान्दोग्य ६, १) आदि अनेक ऋषियों के संवाद अपनी विचित्र विशेषताएँ रखते हुए भी मिलिन्द और नागसेन के प्रभावशाली संवादों में अपनी पूर्णता प्राप्त करते हैं।

इतिहास की दृष्टि से, विशेषतः पालि-साहित्य के इतिहास की दृष्टि से 'मिलिन्दपञ्ह' का यह महत्त्व है कि उसमें पालि-त्रिपिटक से नाना ग्रन्थों के नाम दे देकर, पाँच निकायों, अभिधम्मपिटक के सात ग्रन्थों और उनके भिन्न-भिन्न अंगों के निर्देशपूर्वक अनेक अंश उद्धृत किये गये हैं, जिनसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि पालि त्रिपिटक प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व अपने उसी नाम-रूप में विद्यमान था जिसमें वह आज है। इस प्रकार 'मिलिन्दपञ्ह' का साक्ष्य अशोक के अभिलेखों द्वारा प्रदत्त साक्ष्य का समर्थन करता है।

'मिलिन्दपञ्ह' में अनेक स्थानों के वर्णन हैं, जैसे अलसन्द (अलेक्जेण्ड्रिया), यवन (यूनान, बैक्ट्रिया), भरुकच्छ (भडौंच), चीन (चीनदेश), गान्धार, कलिंग, कजंगला, कोसल, मथुरा, सागल, साकेत, सौराष्ट्र (सोरट्ठ), वाराणसी, बंग, तक्कोल्ल, उज्जैनी आदि। इनसे तत्कालीन भारतीय भूगोल पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

सारांश यह है कि धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास, भूगोल—सभी दृष्टियों से 'मिलिन्दपञ्ह' का भारतीय वाङ्मय के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है और पालि अनुपिटक-साहित्य में तो उसके समान महत्त्वपूर्ण कोई दूसरा स्वतन्त्र ग्रन्थ है ही नहीं—यह तो निर्विवाद ही है"।

वर्तमान सम्पादन

१. हमको सम्पादन के समय इस ग्रन्थ के ये ४ पहले संस्करण मिले हैं—

(क) **रोमन लिपि में**, वी० ट्रेन्कनर द्वारा सम्पादित एवं लन्दन से प्रकाशित, १८८० ई०।

(ख) **श्रीलंका की लिपि में**, श्री पियरतन, श्री गुणरतन एवं श्री रत्नसार थेर द्वारा सम्पादित, सीलोन से प्रकाशित, १९२७ ई०।

(ग) **देवनागरी लिपि में**, श्री आर० डी० वडेकर द्वारा सम्पादित, बम्बई विश्वविद्यालय से प्रकाशित, १९४० ई०।

(घ) बर्मी लिपि में, छठ्ठ संगीति द्वारा संगायित, एवं बुद्ध-सासन-समिति रंगून द्वारा मुद्रापित, १९६० ई०। जिसमें इस ग्रन्थ (मिलिन्द पञ्हपालि) के मुखपृष्ठ पर ही अपनी बात स्पष्ट लिख दी है—

'छठ्ठसंगीतियं थेरा, संगीतिकारका यथा।
सङ्गायिसु, तथेवायं दुतियं पि सुमुद्दिता'॥

निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाय तो उक्त चारों संस्करणों में अन्तिम चतुर्थ संस्करण ही सर्वोत्तम है—सम्पादन की दृष्टि से भी, प्रामाणिकता की दृष्टि से भी और मुद्रण की दृष्टि से भी।

अतः हमने भी इसी संस्करण को आदर्श माना है। मूलपाठ और विषयविभाजन हमने इसी के आधार पर रखा है। इस तरह हमारा यह संस्करण छठ्ठसंगायन-संस्करण पर आधृत होने के कारण नालन्दा-परम्परा में प्रकाशित त्रिपिटक एवं अट्ठकथाओं के समान ही प्रामाणिक माना जाना चाहिये; क्योंकि उक्त 'नालन्दा का समग्र प्रकाशन' भी वर्तमान बौद्ध जगत् में आदर्शभूत छठ्ठसंगायन को ही अपना आधार मानता है।

देवनागरी लिपि में प्रकाशित श्री वड़ेकर द्वारा सम्पादित संस्करण ट्रेन्कनर-संस्करण (रोमन) पर आधृत है। ट्रेन्कनर का संस्करण इतना पुराना और स्वल्प सामग्री पर आधृत था कि उसे कई तरह से अपूर्ण ही कहना चाहिये। उसमें मूलपाठ, विषयविभाजन आदि सब कुछ उस समय में उपलब्ध स्वल्प सामग्री के सहारे से दिया गया है, जो आज छठ्ठसंगायन-संस्करण को देखने के बाद बहुत कुछ विद्वज्जनानुमोदित नहीं रह गया है। फिर भी श्री बड़ेकर महोदय के हम भारतीय जन इस अर्थ में अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि जिस समय भारत में पालि-भाषा के अध्ययन-अध्यापन के साधन नहीं के बराबर थे, उस समय उन्होंने इतना

महत्त्वपूर्ण एवं उत्कृष्ट ग्रन्थ पालि-अध्येताओं को देवनागरी लिपि में आधुनिक साज-सज्जा के साथ हस्तगत करा दिया।

२. ग्रन्थ का पैराग्राफिंग तथा उसका क्रमाङ्क हमारा अपना है। पैराग्राफिंग के विषय में हम छट्ठसंगायन से सहमत हैं, पर क्रमाङ्क के सम्बन्ध में हमारा अपना दृष्टिकोण रहा है, तदनुसार हमने क्रमाङ्क विषयवस्तु के अनुसार प्रश्नोत्तर के रूप में दिये हैं। आशा है, विद्वज्जन इसका समर्थन करेंगे।

३. हम अपने प्रकाशन के अन्य ग्रन्थों की तरह, अनुसन्धाताओं की सुविधा के लिये इस ग्रन्थ में आये त्रिपिटक के उद्धरणों के अन्त में पृष्ठाङ्कसहित सम्बद्ध ग्रन्थों का नाम देना चाहते थे, परन्तु छात्रों के लिये बहुत अधिक उपयोगी न होने के कारण, हमने अपना यह सात्त्विक लोभ संवृत कर लिया। फिर भी, त्रिपिटक के ग्रन्थों का नाम भिन्न टाइप में दिया गया है, ताकि अध्येता की दृष्टि में तत्काल उस ग्रन्थ का नाम आ जाय।

४. पालि भाषा के साधारण पाठकों के लिये भी यह ग्रन्थ सुविधया पठनीय हो सके, इसके लिये हमने अनावश्यक सन्धिवाले पद अलग-अलग रखे हैं, विशेषतः वग्गन्त (परसवर्ण) की सन्धिवाले पद। इससे ग्रन्थ की परम्परा सुरक्षित रहेगी और साधारण पाठकों के लिये भी ग्रन्थ सुग्राह्य होगा।

५. विराम आदि चिह्नों के लिये हमने नालन्दा-परम्परा को आदर्श माना है। उसी के अनुसार समग्र चिह्नों का प्रयोग किया गया है। राजा मिलिन्द और भदन्त नागसेन के प्रश्न-उत्तरों को सर्वत्र पृथक्-पृथक् डबल इन्वर्टेड कामा (" ") में बन्द किया गया है और उनके अन्तर्भूत अन्य ग्रन्थों के उद्धरणों को सिंगल इन्वर्टेड (' ') में। इस तरह छात्र सरलता से यह जान सकेंगे कि कितना अंश मिलिन्द के प्रश्न का है और कितना भदन्त नागसेन के उत्तर का। इससे ग्रन्थ को समझने में छात्रों को बहुत सुविधा मिलेगी—ऐसा हमारा विश्वास है।

६. इस तरह गुरुकृपा से अत्यधिक परिश्रमपूर्वक इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है। पूर्ण विश्वास है कि हमारा यह परिश्रम विद्वज्जन तथा छात्रगण दोनों का ही समान रूप से सुखकर एवं हितकर होगा।

७. इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन महानुभावों की अनुपम कृतियों का, रचनाओं का, ग्रन्थों का हमने सहारा लिया है, उसके लिये हम हृदय से उन सज्जनों के प्रति कृतज्ञता स्वीकार करते हैं। इसके लिये उनका आभार मानना हम अपना प्रथम कर्तव्य समझते हैं।

४. १२. ७९ विद्वज्जनवशंवद
वाराणसी **स्वामी द्वारिकादासशास्त्री**

उत्तरपीठिका

मिलिन्दपञ्हगन्थस्स, कथेयं रट्ठभासया।

बालानं सुखबोधाय, संखेपेन कथीयति ॥

मिलिन्दपञ्ह का विषय-विभाजन

इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही 'गन्थकथावत्थु' शीर्षक से सागल नगर का विभूतिवर्णन एवं इस ग्रन्थ का छह प्रकरणों में विस्तार बताया है। यह विस्तार यों है—१. बाहिरकथा, २. मिलिन्दपञ्ह, ३. लक्खणपञ्ह, ४. मेण्डकपञ्ह, ५. अनुमानपञ्ह, एवं ६. ओपम्मकथापञ्ह। वस्तुतः ग्रन्थ देखने से ज्ञात होता है कि लेखक ने तीसरे अध्याय मिलिन्दपञ्ह को विषयवर्णन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों में बाँटा है—(क) लक्खणपञ्ह एवं (ख) विमतिच्छेदनपञ्ह। मेण्डकपञ्ह को भी (क) महावग्ग एवं (ख) योगिकथापञ्ह रूप में विभक्त किया गया है।

यद्यपि अन्य संस्करणों में धुतङ्गपञ्ह को भी एक पृथक् प्रकरण माना है, किन्तु हमने इसको इस संस्करण में छट्ठसंगायन के आधार पर अनुमानपञ्ह के अन्तर्गत ही रखा है।

१. बाहिरकथा

पूर्वजन्म—इस प्रकरण में सर्वप्रथम नागसेन एवं मिलिन्द की पूर्वजन्मकथा कहते हुए बताया गया कि काश्यप बुद्ध के समय किसी विहार में गुरु, शिष्य के रूप में रहने वाले दो भिक्षु परस्पर विवाद कर यह दृढ़ संकल्प कर बैठे कि आगामी जन्म में हम अर्हत् बनें।

मिलिन्द—उनमें से शिष्य जम्बुद्वीप के सागल नगर में मिलिन्द नाम से राजा बना था। जो कि प्रतापी सम्राट् होते हुए श्रुति, स्मृति, सांख्य-योग, राजनीति, न्यायशास्त्र, गणित, संगीत, आयुर्वेद, पुराण, इतिहास, धनुर्वेद आदि शास्त्रों का भी महान् पण्डित था। इसकी दूसरे मतों के विद्वानों से खोज-खोज कर शास्त्रार्थ करने की प्रकृति थी। कहने का मतलब है कि यह बल एवं विद्या में अपने समान किसी को नहीं समझता था। दूतों के बताने पर इसने उस समय के प्रसिद्ध विद्वान् एवं धर्मपीठाधीश पूरण कस्सप एवं मक्खलि गोसाल आदि से उनके धर्म, दर्शन के विषय में विस्तार से चर्चा की, परन्तु

उनसे यह सन्तुष्ट नहीं हुआ। अन्त में इसे अपनी विद्या का इतना दम्भ हो गया कि यह विद्वान् लोगों को परेशान करने लगा और वे घबराकर इसका राज्य छोड़ कर अन्यत्र चले गये।

नागसेन का अवतार—ऐसे समय में बौद्ध भिक्षुओं में भी खलबली मचना स्वाभाविक था। आयुष्मान् अश्वगुप्त के नेतृत्व में बौद्धों की सभा हुई। उसमें निश्चय किया गया कि मिलिन्द से शास्त्रार्थ करने के लिये तावतिंस लोकवासी महासेन देवपुत्र से निवेदन किया जाय। अश्वगुप्त ने जाकर इन्द्र को साथ ले महासेन देवपुत्र को इसके लिये सहमत किया।

महासेन हिमालय की तलहटी में बसे कजङ्गल नामक ग्राम में सोणुत्तर ब्राह्मण के घर 'नागसेन' नाम से अवतरित हुए। धीरे-धीरे वे सात वर्ष के हो गये। पिता सोणुत्तर ने नागसेन को पहले ब्राह्मणों से वेद, शास्त्र पढ़ाये; बाद में उसे भिक्षु रोहण से पढ़ने के लिये भेजा। भिक्षु रोहण ने नागसेन को दीक्षित कर सम्पूर्ण त्रिपिटक पढ़ाया। वहीं नागसेन ने समग्र बौद्ध दर्शन भी हृदयङ्गम किया। भिक्षुओं द्वारा ली गयी परीक्षा में वह उत्तीर्ण हुआ। इससे नागसेन को कुछ दर्प हो गया कि मैं अपने आचार्य (रोहण) से अधिक विद्वान् हूँ। आचार्य रोहण ने उसके मन की बात जान ली, उन्होंने नागसेन को फटकारा और दण्डस्वरूप उसे आयुष्मान् अश्वगुप्त के पास भेजा। नागसेन अश्वगुप्त के विहार में रहकर विनयपूर्वक धर्मोपदेश करने लगे। अन्त में नागसेन के व्यवहार से अश्वगुप्त प्रसन्न हो गये।

नागसेन का पाटलिपुत्रगमन—आयुष्मान् अश्वगुप्त ने नागसेन को बौद्ध-दर्शन के गम्भीर अध्ययन के लिये धर्मरक्षित के पास पाटलिपुत्र के अशोकाराम में भेजा। रास्ते में उनको पाटलिपुत्र जाने वाले एक व्यापारी का साथ मिल गया। व्यापारी को नागसेन ने अभिधर्म का उपदेश किया। व्यापारी के ज्ञान-चक्षु गये। इधर नागसेन भी अशोकाराम में पहुंच कर आयुष्मान् धर्मरक्षित के उपदेश से अर्हत्त्व प्राप्त कर गये।

नागसेन को हिमालयवासी भिक्षुओं का सन्देश—इसके बाद हिमालयवासी भिक्षुओं ने नागसेन को सन्देश भेजा कि धर्म के हित में आप से यहाँ बहुत आवश्यक परामर्श करना है, आप तत्काल आइये। नागसेन तत्काल हिमालय की भिक्षु-सभा में पहुँचे। उस सभा ने नागसेन को आदेश दिया कि वे इसी क्षण सागलक नगर जाकर मिलिन्द का दर्प विखण्डित करें और उसको बौद्ध धर्म में विनीत करें।

मिलिन्द की बौद्ध धर्म के ज्ञान के प्रति उत्कण्ठा—उधर मिलिन्द ने सागल

नगर के सङ्खेय्य परिवेण के महास्थविर आयुपाल से बौद्ध धर्म व दर्शन के प्रति उत्कण्ठा प्रकट की। आयुपाल स्थविर मिलिन्द की जिज्ञासा शान्त नहीं कर सके। तब मिलिन्द के दूतों ने उसको विद्वान् आयुष्मान् नागसेन की हिमालय में उपस्थिति की सूचना दी। कुछ समय बाद आयुष्मान् नागसेन स्वयं सङ्खेय्य परिवेण में पधारे।

मिलिन्द की नागसेन से पहली भेंट—ज्यों ही राजा मिलिन्द को नागसेन के आने का पता लगा, वह स्वयं उनके दर्शन करने के लिये सङ्खेय्यपरिवेण में आया। नागसेन उस समय भिक्षु-परिषद् में धर्मोपदेश कर रहे थे। मिलिन्द उस सभा से बहुत प्रभावित हुआ। उसने नागसेन से बौद्धदर्शन पर संवाद करने की इच्छा प्रकट की। नागसेन ने कहा—संवाद हो सकता है, पर वह पण्डितवाद के ढंग से होगा, न कि राजवाद के ढंग से। राजा ने स्वीकार किया। और यथासमय नीचे आसन पर बैठ कर संवाद प्रारम्भ किया।

२. मिलिन्दपञ्ह

(क. लक्खणपञ्ह)

ग्रन्थ में यह प्रकरण सबसे महत्त्पूर्ण है। इसमें बौद्ध धर्म के दो आधारभूत सिद्धान्तों अनात्मवाद और पुनर्जन्म का स्थविरवाद की दृष्टि से शास्त्रानुकूल एवं तर्कसम्मत विश्लेषण किया गया है।

अनात्मवाद—बात कुछ ऐसी बनी कि परस्पर कुशल-प्रश्न पूछने और परिचय प्राप्त करने में ही मिलिन्द और नागसेन में दार्शनिक संवाद शुरू हो गया। मिलिन्द नागसेन के सम्मुख बैठ गये, उन्होंने पूछा—"भन्ते, आपका नाम क्या है?" नागसेन ने उत्तर दिया "मुझे लोक में नागसेन नाम से बुलाया जाता है। परन्तु यह नाम केवल व्यवहार के लिये है, तात्त्विक दृष्टि से इस प्रकार का कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं होता।" मिलिन्द–"भन्ते, यदि यथार्थ में नागसेन कोई व्यक्ति नहीं है तो इन ऐन्द्रियिक विषयों का उपभोग, पाप-पुण्य का कर्ता यहाँ कौन है? ध्यान कौन लगाता है? आर्यमार्ग के फल निर्वाण का प्रत्यक्ष कौन करता है? तब तो आप का कोई गुरु भी नहीं, न आप उपसम्पन्न हैं? आप कहते हैं 'मुझे नागसेन नाम से बुलाया जाता है' आखिर यह 'नागसेन' है क्या? क्या केश, नख, दाँत, त्वचा, मांस आदि से युक्त शरीर 'नागसेन' है, या फिर रूप, वेदना, संज्ञा संस्कार, विज्ञान 'नागसेन' हैं? या इनसे अतिरिक्त और कोई वस्तु?" नागसेन ने सब का उत्तर एक 'ना' में दिया। वितण्डावादी मिलिन्द इस संक्षिप्त उत्तर से चकरा गया। उसे परेशान देखकर भदन्त नागसेन ने रथ की उपमा देकर अपने उत्तर का स्पष्टीकरण किया।

उन्होंने कहा—"राजन् ! आप यहाँ जिस रथ से आये हैं उस रथ के बांस, धुरा, पहिये, जूआ और चाबुक आदि रथ नहीं होते, अपितु इन भिन्न-भिन्न अवयवों पर 'रथ' का अस्तित्व निर्भर है। 'रथ' एक शब्द है जो केवल व्यवहार के लिये है। उसी तरह व्यक्ति 'नागसेन' का अस्तित्व भी रूप, वेदना, संज्ञा, विज्ञान, संस्कार इन पांच स्कन्धों पर आधृत है। 'नागसेन' शब्द केवल व्यवहार मात्र है। परमार्थतः 'नागसेन' नामक कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं होता।" साथ ही इस सिद्धान्त पर त्रिपिटक का निम्न लिखित प्रमाण दिया—

"यथा हि अङ्गसम्भारा, होति सद्दो 'रथो' इति।
एवं खन्धेसु सन्तेसु, होति 'सत्तो' ति सम्मुति॥"

(संयुत्त० ५।१०।६)

पुनर्जन्म—'उपर्युक्त अनात्मवाद का सिद्धान्त मानते हुए भी बौद्ध फिर पुनर्जन्म को कैसे सिद्ध कर पायेंगे ?'—यह आशंका मिलिन्द के तर्कवादी मस्तिष्क में उठी। उसने अपना यह सन्देह भदन्त के सम्मुख रखा। उसने पूछा—"भन्ते, कौन उत्पन्न होता है ? क्या उत्पन्न होने पर व्यक्ति वही रहता है, या अन्य हो जाता है ?" भदन्त ने कहा—"न तो वही, न अन्य ही।" इस उत्तर से मिलिन्द के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। वह भदन्त का मुँह देखता रह गया। तब भदन्त ने उदाहरण देते हुए समझाया कि पहले पुरुष बच्चा था, फिर तरुण हुआ, फिर युवा हुआ, फिर वृद्ध हुआ, क्या वह बच्चा, तरुण, युवा और वृद्ध एक ही हैं ? नहीं, एक नहीं अलग-अलग हैं। हाँ (यह मानने पर), अब यह प्रश्न उठ सकता है कि तब तो न किसी का कोई पिता होगा, न कोई किसी की माता, न कोई आचार्य, न शिष्य, ऐसी स्थिति में लौकिक व्यवहार ही विखण्डित हो जायगा; क्योंकि तब यह लगेगा कि एक ही पुरुष के बचपन की माता दूसरी, युवावस्था की माता दूसरी। पढ़ने वाला विद्यार्थी दूसरा होगा, पठ-लिख कर निकलने वाला दूसरा। पाप कोई करेगा, उसका फल भोगने वाला कोई अन्य होगा ! यह एक ऐसी अनवस्था होगी जिसका कोई उत्तर नहीं होगा। भदन्त ने इस गुत्थी को यों सुलझाया—"धर्म-सन्तति के निरन्तर प्रवाह से, उनके संघात रूप में आ जाने से एक उत्पन्न होता है, दूसरा निरुद्ध होता है। ओर यह सब ऐसे होता है जैसे सब कुछ युगपत् ही रहा हो। अतः न तो सर्वथा उसी की तरह, और न सर्वथा अन्य की तरह, वह जीवन की अन्तिम चेतनावस्था में पहुँच जाता है। मिलिन्द इस उत्तर से पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने फिर पूछा—"परन्तु भन्ते, वह है क्या जो जन्म ग्रहण (सन्ततिप्रवाह) करता है ?" भदन्त का उत्तर था—"नाम (सूक्ष्म चित्त-

चैतसिक धर्म) एवं रूप (पञ्च महाभूत) जन्म ग्रहण करता है।" **मिलिन्द**—"क्या यही नाम-रूप जन्म ग्रहण करता है ?" **भदन्त**—"महाराज ! यही नाम-रूप जन्म नहीं ग्रहण करता, अपितु इस नाम-रूप के द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्मों से उत्पन्न अन्य नाम-रूप जन्म ग्रहण करता है।" बात को और स्पष्ट करते हुए भदन्त ने कहा—"यद्यपि मृत्यु के समय जिसका अन्त होता है, वह एक अन्य नाम-रूप होता है और जो पुनर्जन्म ग्रहण करता है वह अन्य है; तो भी यह द्वितीय नाम-रूप उस प्रथम नाम-रूप से ही निकलता है। अतः राजन्, वस्तुसत्य यह है कि धर्मसन्तति ही संसरण करती है, धर्मसन्तति ही जन्म ग्रहण करती है।

इस तरह मिलिन्दपञ्ह में प्रतिपादित पुनर्जन्मवाद का यह संक्षिप्त विवरण हुआ।

इसके बाद इसी प्रकरण के **विचार वर्ग** में—(१) भूत, भविष्यत्, वर्तमान काल का मूल अविद्या है, (२) सृष्टि के आरम्भकाल का पता नहीं है, अर्थात् वह अनादि है, (३) 'आरम्भ' कहते हैं भूतकाल को। अविद्यामिश्रित आरम्भ का पता लग सकता है, अविद्यारहित का नहीं, (४) संस्कार की उत्पत्ति और उससे मुक्ति, (५) भाव से भाव की उत्पत्ति, (६) हम लोगों के अन्दर कोई आत्मा नहीं है, (७) चक्षुर्विज्ञान की उत्पत्ति के साथ ही मनोविज्ञान की उत्पत्ति, (८) मनोविज्ञान के साथ ही स्पर्श, वेदना, संज्ञा वितर्क, विचार आदि धर्म होते हैं—इन विषयों पर विचार किया गया है।

(ख) विमतिच्छेदनपञ्ह

इस प्रकरण को ग्रन्थकार ने चार वर्गों में बाँटा है। वे हैं—१. निब्बानवग्ग, २. बुद्धवग्ग, ३. सतिवग्ग एवं ४. अरूपधम्मववत्थानवग्ग। इस प्रकरण में बौद्धदर्शन से सम्बद्ध छोटे-छोटे अनेक विषयों पर हुए राजा मिलिन्द के सन्देहों (विमति) का निराकरण (छेदन)किया गया है। राजा के इन सन्देहों को वर्ग, क्रम से यों विभाजित किया जा सकता है—

१. निब्बानवग्ग—(क) क्या पञ्च आयतन (चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा एवं त्वक्) नाना कर्मों के फल से हुए हैं या एक कर्म के फल से ?, (ख) मनुष्य के नानास्वभाव में कर्म की प्रधानता, (ग) क्या पूर्वजन्म कृत कर्म फलों को भोगने के अतिरिक्त नये कर्म भी करने चाहिये ?, (घ) स्वाभाविक अग्नि एवं नरकाग्नि में क्या अन्तर है ? (ङ) पृथ्वी का आधार क्या है ? (च) क्या निरोध हो जाना ही निर्वाण है ? (छ) क्या सभी लोग निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं ?, (ज) क्या अज्ञानी निर्वाण-सुख को जानते हैं ?

२. **बुद्धवग्ग**—इस वग्ग में (क) बुद्ध हुए थे कि नहीं ? (ख) बुद्ध का अनुत्तर (श्रेष्ठ) भाव, (ग) क्या उनके अनुत्तर भाव का ज्ञान हो सकता है ?' (घ) धर्मज्ञान, (ङ) यदि संक्रमण नहीं होता तो पुनर्जन्म कैसे होता ? (च) इस शरीर में कोई अतिरिक्त ज्ञाता (आत्मा) है ? (छ) ऐसा कोई जीव है जो इस शरीर से निकल दूसरे शरीर में प्रवेश करता है ? (ज) कर्मफल है या नहीं ? (झ) जन्म लेनेवाला अपने जन्म के विषय में जानता है ? (ञ) क्या निर्वाण के बाद व्यक्तित्व का सर्वथा लोप ही जाता है ? इन पर विचार किया है।

३. **सतिवग्ग**—(क) क्या भिक्षुओं को अपना शरीर प्रिय होता है ? (ख) क्या बुद्ध के कोई गुरु था ? (ग) बुद्ध में महपुरुषों के बत्तीस लक्षण थे ? (घ) बुद्ध का कोई गुरु था या नहीं ? (ङ) बुद्ध की उपसम्पदा हुई थी कि नहीं ? (च) अपने सम्बन्धी के वियोग में रोने में या धर्मप्रेम से रोने में क्या अन्तर है ? (छ) रागी और विरागी में क्या भेद है ?, (ज) प्रज्ञा कहाँ रहती है ?, (झ)संसार क्या है ? (ञ) बीती हुई बातों को हम कैसे स्मरण करते हैं ?, (ट) स्मृतियाँ मन से उत्पन्न होती हैं, या बाह्य चीजों से ?

४. **अरूपधम्मववत्थानवग्ग**—(क) स्मृत्युत्पाद के १६ प्रकार, (ख) क्या मृत्यु के समय बुद्ध के स्मरण से देवत्व लाभ हो सकता है ? (ग) क्या भिक्षु अतीत के दुःखों के प्रहाण के लिये प्रयास करते हैं ? (घ) ब्रह्मलोक यहाँ से कितना दूर है ? (ङ) मरकर दूसरी जगह उत्पन्न होने के लिये कितने समय की आवश्यकता है ? (च) बोध्यङ्ग कितने हैं ? (छ) पाप और पुण्य दोनों में कौन अधिक हैं ? (ज) जाने अनजाने पाप करनेवालों में किसका पाप अधिक है ? (झ) ऐसा कोई है जो इसी शरीर से देवलोक जा सकता हो ? (ञ) सौ योजन लम्बी हड्डियाँ कैसे हो सकती है ? (ट) श्वास-प्रश्वास का निरोध कैसे होता है ? (ठ) 'समुद्र' नाम क्यों पड़ा ? (ड) सारे समुद्र का पानी खारा ही क्यों है ? (ढ) क्या सूक्ष्म धर्मों का नाश भी सम्भव है ? (ण) क्या विज्ञान, प्रज्ञा और जीवात्मा—ये तीनों शब्द-अर्थ में पृथक् पृथक् हैं या एकार्थक हैं ?

भदन्त नागसेन ने राजा के इन सब सन्देहों का बहुत ही मनोरम शैली में शान्ति एवं गम्भीरता के साथ उत्तर दिया है। यहाँ तक आकर प्रश्नकर्ता (मिलिन्द) और उत्तरदाता (नागसेन) दोनों ही अपने अपने प्रश्नोत्तरों से सन्तुष्ट हुए दिखायी पड़ते हैं। राजा को ऐसा लगता है कि जो कुछ मैंने पूछा, भदन्त ने उन सबका उत्तर दे दिया, और भदन्त भी ऐसा मानते हैं कि राजा ने जो कुछ पूछा उन सबका मैंने उत्तर दे दिया। इस तरह सन्तुष्ट होकर भदन्त अपने संघाराम चले गये और राजा अपने साथियों के साथ वापस अपने राजप्रासाद को लौट गया।

मेण्डकपञ्ह

शीर्षक का शब्दार्थ—पालि में 'मेण्डक कहते हैं भेड़ को। जैसे भेड़ के दोनों सींग समानतया पैने (तीखे) होते हैं, इस प्रकरण में आये प्रश्न भी दोनों तरफ से तीखे, एक दूसरे के विरोधी, समानतया आपत्तिग्रस्त अतएव द्विविधात्मक (विरोधाभासात्मक) दिखायी देते हैं। भदन्त नागसेन ने बहुत कुशलता से तर्क-पूर्वक स्थविरवादसम्मत इनके उत्तर दिये हैं। तात्पर्य यह है कि ऊपर से विरोधी दिखायी देने वाले त्रिपिटिक के विभिन्न विवरणों एवं बुद्धवचनों के विरोध का परिहार और उनमें समन्वयस्थापन इस प्रकरण का लक्ष्व है। इसमें मिलिन्द के प्रश्नों के दो भाग हैं—१. महावग्ग, २. योगिकथापञ्ह।

१. महावग्ग

इस वग्ग में प्रसङ्गवश प्रारम्भ में ही धार्मिक मन्त्रणा के योग्य, अयोग्य व्यक्तियों एवं स्थानों का विवरण है। साथ ही आचार्य एवं शिष्य के एक दूसरे प्रति कर्तव्य बताये गये हैं। इसके बाद—

(१) परिनिर्वृत्त बुद्ध की पूजा के विषय में मिलिन्द के प्रश्न का उत्तर देते हुए भदन्त नागसेन ने अग्नि, आँधी, ढोल, महापृथ्वी, रोग एवं नन्दक यक्ष की उपमा देते हुए बताया कि भगवान् तो मुक्त हो चुके हैं, वे अब किसी की पूजा को स्वीकार या अस्वीकार क्या करेंगे! देवता और मनुष्य भगवान् के कायरत्न की पूजा एवं उनके द्वारा बताये ज्ञानरत्न के अनुकूल आचरण करते हुए विविध सम्पत्ति प्राप्त करते हैं। फिर (२) क्या बुद्ध सर्वज्ञ थे? (३) भगवान् ने देवदत्त को, उसका औद्धत्य ज्ञात रहते हुए भी, दीक्षा क्यों दी? (४) बड़े भूकम्प होने के कारण क्या है? (५) शिवि राजा द्वारा नेत्रदान, (६) गर्भाशय में आने के तीन प्रसिद्ध कारणों के अतिरिक्त शास्त्र में उल्लिखित अन्य कारणों (औप-पातिक आदि का समर्थन कैसे हो? (७) बौद्ध धर्म के अन्तर्धान के विषय में भगवान् के परस्पर विरोधी वचनों का समन्वय कैसे हो? (८) क्या बुद्ध निष्कलङ्क एवं निष्पाप हैं? (९) बुद्ध समाधि क्यों लगाते थे जब वे मुक्त हो चुके थे? (१०) ऋद्धिबल का माहात्म्य—मिलिन्द के इन प्रश्नों के नागसेन ने शास्त्रानुकूल एवं तर्कसम्मत उत्तर दिये हैं, जो ग्रन्थ में यथास्थान विस्तार से देखे जा सकते हैं।

२. योगिकथापञ्ह

इस प्रकरण को ४ वर्गों में बाँटा गया है—जैसे १. अभेज्जवग्ग, २. पणामितवग्ग, ३. सब्बञ्ञुतञाणवग्ग एवं ४. सन्थववग्ग।

पहले **अभेज्जवग्ग में** (क) क्षुद्रानुक्षुद्र विनय-नियम, (ख) सर्वथा छोड़ देने लायक (अव्याकृत) प्रश्न; (ग) मृत्युभय, (घ) मृत्युभय से मुक्ति, (ङ) ऋद्धिबल-सम्पन्न बुद्ध को भी समय-समय पर किस अन्तराय से भिक्षा नहीं मिली ? (च) बिना जाने पाप-पुण्यों की गति ? (छ) बुद्ध का भिक्षुओं के प्रति निरपेक्ष भाव, (ज) क्या कोई बौद्ध भिक्षुओं को बहका सकता है ?—मिलिन्द के इन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

दूसरे **पणामितवग्ग** में (क) उपासक द्वारा भिक्षुओं का आदर करना, (ख) बुद्ध द्वारा सभी प्राणियों का हित, (ग) संयत बुद्ध ने शैल ब्राह्मण को वस्त्रगुह्य का अवलोकन क्यों कराया ? (घ) क्या बुद्ध कटुभाषी थे ? (ङ) क्या वृक्ष चेतन हैं ? (च) बुद्ध का अन्तिम भोजन, (छ) बुद्ध(मूर्ति)पूजा भिक्षुओं के लिये भी सम्मत है ? (ज) देवदत्त द्वारा फैंका गया पत्थर बुद्ध के पैर पर किस कारण लगा ? (झ) श्रेष्ठ और मध्यम श्रमण कौन है ? (ञ) क्या बुद्ध आत्मप्रशंसा सुन-सुनकर खुश होते हैं ? (ट) अहिंसा द्वारा लौकिक निग्रह कैसे किया जा सकता है ? (ठ) क्या बुद्ध ने सारिपुत्त-मोग्गल्लान को क्रुद्ध होकर अपनी धर्मपरिषद् से निकाल दिया था ?—मिलिन्द के इन प्रश्नों का उत्तर भदन्त द्वारा दिया गया है।

तीसरे **सब्बञुतञाणवग्ग** में (क) ऋद्धिबलसम्पन्न होते हुए भी मोग्गल्लान डाकुओं की लाठियों से क्यों मारे गये ? (ख) भिक्षुजन विनय-उपदेश दूसरों से छिपाकर क्यों करते हैं ? (ग) मिथ्याभाषण का गौरव-लाघव क्या है ? (घ) बोधि-सत्त्व की धर्मता, (ङ) क्या बुद्ध ने आत्महत्या का अनुमोदन किया था ? (च) मैत्री-भावना का माहात्म्य, (छ) सभी जन्मों में बुद्ध से देवदत्त के उच्च कुल में उत्पन्न होने पर सन्देह होता है कि कुशल-अकुशल कर्मों का विपाक सम है या विषम ? (ज) अमरादेवी का पातिव्रत धर्म, (झ) क्या सभी अर्हत् निर्भय होते हैं ? (ञ) क्या सर्वज्ञ बुद्ध को देवताओं द्वारा की गयी स्तुति में आयी उप-माओं का ज्ञान नहीं था ?—मिलिन्द के इन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

चौथे सन्थववग्ग में (क) घर बनवाना, (ख) भोजन में संयम, (ग) भगवान् का नीरोग होना, (घ) अनुत्पन्न मार्ग को उत्पन्न करना, (ङ) लोमस काश्यप, (च) छद्दन्त, ज्योतिपाल (छ) घटीकार ब्रह्मा के विषय में, (ज) बुद्ध की क्या जाति है—ब्राह्मण या क्षत्रिय (राजा) ? (झ) धर्मोपदेश के बाद भोजन न करना, (ञ) धर्मदेशना में बुद्ध का अनौत्सुक्य, एवं (ट) बुद्ध का कोई आचार्य नहीं था—मिलिन्द के इन प्रश्नों पर भदन्त नागसेन ने गम्भीरता से विचार किया है।

५. अनुमानपञ्ह

इस पाँचवे प्रकरण को भदन्त नागसेन ने चार वर्गों में विभक्त किया है। इन वर्गों के नाम हैं—१. बुद्धवग्ग, २. निप्पञ्चवग्ग, ३. वेस्सन्तरवग्ग, एवं ४ अनुमानवग्ग। इन सभी वर्गों में भदन्त ने मिलिन्द के प्रश्नों के उत्तर अनुमान (अकाट्य तर्क) के बल पर दिये हैं, अतः इस प्रकरण का उपर्युक्त नाम सार्थक है।

१. **बुद्धवग्ग**—इस वर्ग में मिलिन्द ने (क) दो बुद्धों के एक ही समय में अवतार, (ख) महापजापती गोतमी द्वारा दिये गये वस्त्र को स्वयं न लेकर बुद्ध द्वारा संघ को देने के विषय में अनुज्ञा, (ग) प्रव्रजित की गृहस्थ से विशेषता, (घ) स्वयं बुद्ध द्वारा क्लिष्ट तप से लक्ष्य-प्राप्ति में असफल होने पर भी भिक्षुओं को पुनः क्लिष्टचर्या का उपदेश, (ङ) बुद्धशासन में इतने गुण रहने पर भी अविवेकी भिक्षु द्वारा पुनः गृहस्थ-धर्म स्वीकार करना, (च) अर्हत् को शारीरिक मानसिक वेदनाओं का अनुभव, (छ) पाराजिक आदि आपत्तियाँ गृहस्थ को भी होती है या नहीं? (ज) गृहस्थ और परिव्राजक के पापों में अन्तर, (झ) जल में प्राण हैं या नहीं?—ये नौ प्रश्न किये हैं। इन नौ प्रश्नों का उत्तर भदन्त नागसेन ने बहुत ही कुशल तर्कों से दिया है।

२. **निप्पपञ्चवग्ग**—इस वर्ग में मिलिन्द ने (क) प्रपञ्च से छुटकारा पाने का उपाय, (ख) गृहस्थ की अर्हत्त्वप्राप्ति के बाद की दशा, (ग) अर्हत् के दोष, (घ) लोक में किन तीन चीजों का अभाव है? (ङ) निर्गुण निर्वाण, (च) कर्मज क्या क्या हैं? (छ) यक्षों में प्रेत होते हैं कि नहीं? (ज) समग्र शिक्षापद भगवान् ने एक ही साथ क्यों नहीं कहे? (झ) सूर्य की गर्मी घटती-बढ़ती क्यों है? (ञ) हेमन्त ऋतु में सूर्य ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा क्यों अधिक प्रकाश देता है?—ये प्रश्न किये हैं। भदन्त नागसेन ने इन सभी प्रश्नों का साङ्गोपाङ्ग उत्तर देकर राजा को सन्तुष्ट किया।

३. **वेस्सन्तरवग्ग**—इस वर्ग में भदन्त नागसेन राजा मिलिन्द के इन प्रश्नों का उत्तर दिया है—(क) वेस्सन्तर राजा के दान में क्या विशेषता थी, (ख) अन्य बोधिसत्त्वों से गौतम की दुःखचर्या में क्या भेद था, (ग) पाप और पुण्य में कौन बलवान् है, (घ) मरे हुए लोगों को उनके निमित्त किये दान से उनको कोई लाभ होता है, (ङ) स्वप्न क्यों आते हैं, और उन्हें कौन देखता है, (च) कालमृत्यु और अकालमृत्यु क्या है, (छ) किन चैत्यों में अलौकिकता होती है, (ज) ज्ञान किसे होता है, किसे नहीं, (झ) क्या निर्वाण एकान्तसुख ही है या

दुःख-मिश्रित भी, (ञ) निर्वाण का रूप व संस्थान है ? (ट) नीरूप निर्वाण का साक्षात्कार कैसे होता है ? (ठ) निर्वाण पहचान क्या है ?

४. **अनुमानवग्ग**—इस वर्ग में केवल दो प्रश्नों का उत्तर है। पहला प्रश्न मिलिन्द का यह है कि जब आपने बुद्ध को देखा नहीं तो कैसे आपकी बात मान ली जाय कि वे कभी अवतरित हुए थे और उन्होंने अनुपम धर्मोपदेश किया था ? भदन्त नागसेन ने मिलिन्द के पूर्वजों का सटीक उदाहरण देकर बुद्ध का अस्तित्व सिद्ध किया और साथ ही उनके द्वारा बसाये गये धर्मनगर का बहुत ही अच्छा काव्यमय वर्णन किया है।

राजा ने दूसरा प्रश्न किया कि यदि गृहस्थ रहकर भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तो दुष्कर धुताङ्गव्रत पालन करने से क्या लाभ है ? भदन्त नागसेन ने उत्तर दिया कि यद्यपि गृहस्थ भी ज्ञानी हो सकते हैं, तथापि उक्त व्रतों के पालन के २८ गुण हैं जो इन व्रतपालक तपस्वियों को ज्ञानी गृहस्थ से पृथक् श्रेणि में बैठा देते हैं। फिर उन धुताङ्गव्रतपालकों में १८ विशिष्ट गुण आ जाते हैं। इन कठोर व्रतों का पालन सामान्य जन के वश की बात नहीं, अपितु श्रद्धालु, दृढ़संकल्प वाले, पापकर्म से डरनेवाले आदि दस प्रकार के आध्यात्मिक वीरता वाले व्यक्ति ही इन व्रतों के पालन में अभ्यासी हो सकते हैं। जो व्यक्ति गृहस्थ रहते हुए इस जन्म में निर्वाण पा लेते हैं, उन्होंने भी पूर्वजन्मों में कभी न कभी धुताङ्गव्रतों का पालन अवश्य किया होगा। भदन्त नागसेन ने स्थविर सारिपुत्र का उदाहरण देते हुए निष्कर्ष निकाला है कि सारिपुत्र उक्त व्रतों का कठोरतया पालन करने के कारण ही बुद्ध के 'प्रथमशिष्य' पद पर पहुँचे थे। प्रसङ्गतः नागसेन ने तेरह धुताङ्ग व्रतों के नाम भी गिनायें हैं, जिन्हें ग्रन्थ में देखा जा सकता है। (इन व्रतों के विशेष ज्ञान के लिये **विसुद्धिमग्गो** के द्वितीय परिच्छेद का भी अनुशीलन करना चाहिये।)

६. ओपम्मकथापञ्ह

इस प्रकरण में उपमाओं के सहारे यह सिद्ध किया गया है कि जिज्ञासु को अर्हत्त्व-प्राप्ति के लिये नाना गुणों का अधिग्रहण किस प्रकार करना चाहिये। भदन्त नागसेन कहते हैं कि इन नाना गुणों को प्राप्त करने में जिज्ञासु को किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिये। जिज्ञासु को लोकचारिका करते हुए जहाँ से भी ये गुण मिलें उन्हें लेना चाहिये। यहाँ तक कि जिन पशु-पक्षियों को समाज हीनतम मानता है, जैसे गधा, बन्दर, कछुआ, मुर्गा, कौआ-आदि, क्योंकि इन पशु-पक्षियों में भी अच्छाइयाँ हैं, सद्गुण हैं अतः उनसे वे अच्छाइयाँ ग्रहण करना, उन अच्छाइयों में उन पशु-पक्षियों का अनुकरण करना जिज्ञासु के लिये पारमिताओं के अभ्यास में नितान्त सहायक होता है।

पशु-पक्षियों तक से अच्छाई (गुण) ग्रहण करना, उन बातों में उन्हें अपना गुरुतुल्य मानना—यह श्रमणपरम्परा (सन्त-परम्परा) की अपनी विशेषता रही है। सन्त-परम्परा में सीलपारमिता की साधना के लिये इसे अत्यावश्यक माना गया है। राजस्थान के प्रसिद्ध सन्त, महात्मा दादूदयाल ने भी कहा है—

'दादू' सबही गुरु किये, पसु पंखी बनराइ।
तीन लोक गुण पंच सौं, सबही माँहि खुदाइ॥

कितने सुखद आश्चर्य की बात है कि २५०० वर्ष के सुदीर्घ काल के अन्तराल के बाद भी सन्तों का इस गुणग्राहकता में समान आग्रह है। यही श्रमण-परम्परा का वैशिष्ट्य है।

× × × ×

मिलिन्दपञ्ह की विषय-वस्तु को समझाने के लिये हमने प्रत्येक प्रकरण का संक्षेप में यह परिचय दिया है। इन सभी विषयों का विस्तृत ज्ञान तो ग्रन्थ के गम्भीरतया अवगाहन से ही होगा। फिर भी, इस संक्षिप्त परिचय से जिज्ञासु को ग्रन्थ की विषय-भूमि का साधारण ज्ञान तो हो ही जायगा।

गन्थागतवत्थुसूची

मिलिन्द-नागसेनानं, पुच्छा विसज्जना तथा ।
तासं सूचीध निद्दिट्ठा, यथा गन्थम्हि आगता ॥

गन्थकथावत्थु १

१. बाहिरकथा

१. पुब्बयोगो २
१. नागसेनस्स मिलिन्दस्स च पुब्बजातिकथा २
२. पूरणेन कस्सपेन रञ्ञो समागमो ३
३. मक्खलिगोसालेन मिलिन्दस्स समागमो ३
४. आयस्मतो अस्सगुत्तस्स पुच्छा ४
५. सो महासेनं देवपुत्रं याचेसि ५
६. रोहणस्स दण्डकम्मं ६
७. महासेनस्स पातुभावो ६
८. नागसेनदारकस्स सज्झायकालो ७
९. आयस्मता रोहणेन नागसेनदारकस्स समागमो ८
१०. नागसेनदारकस्स पब्बज्जा ९
११. नागसेनस्स दण्डकम्मं १०
१२. नागसेनस्स धम्मदेसना ११
१३. नागसेनस्स पाटलिपुत्तगमनं १२
१४. सेट्ठिस्स अभिधम्मदेसनं १३
१५. नागसेनस्स अरहन्तभावो १३
१६. नागसेनस्स सन्तिके दूतपेसनं १४
१७. आयुपालेन सद्धिं मिलिन्दस्स समागमो १४
१८. नागसेनस्स सागलनगरे गमनं १६
१९. नागसेनेन मिलिन्दस्स समागमो १७

२. मिलिन्दपञ्हे

(क) लक्खणपञ्हो

१. महावग्गो **१९**
१. रथूपमाय पुग्गलवीमंसनं १९
२. वस्सगणनपञ्हो २१
३. वीमंसनपञ्हो २१
४. अनन्तकायपञ्हो २२
५. पब्बज्जपञ्हो २३
६. पटिसन्धिपञ्हो २४
७. योनिसोमनसिकारपञ्हो २४
८. मनसिकारलक्खणपञ्हो २५
९. सीललक्खणपञ्हो २५
१०. (क) सम्पसादनलक्खणसद्धापञ्हो २६
(ख) सम्पक्खन्दनलक्खणसद्धापञ्हो २७
११. विरियलक्खणपञ्हो २८
१२. सतिलक्खणपञ्हो २८
१३. समाधिलक्खणपञ्हो २९
१४. पञ्ञालक्खणपञ्हो ३०
१५. नानाधम्मानं एककिच्चनिप्फादन० ३०

२. अद्धानवग्गो **३१**
१. धम्मसन्तति० ३१
२. पटिसन्दहन० ३२
३. ञाणपञ्ञा० ३२
४. पटिसन्दहनपुग्गलवेदियन० ३४
५. वेदना० ३५
६. नामरूपएकत्तनानत्त० ३६

७. थेरपटिसन्दहनापटिसन्दहन० ३८
८. नामरूपपटिसन्दहन० ३८
९. अद्धानपञ्हो ३९
३. विचारवग्गो **३९**
१. अद्धानमूल० ३९
२. पुरिमकोटि० ४०
३. कोटिपञ्ञायन० ४०
४. सङ्खारजायमान० ४१
५. भवन्तसङ्खारजायमान० ४१
६. वेदगू० ४३
७. चक्खुविञ्ञाणादि० ४५
८. फस्सलक्खण० ४७
९. वेदनालक्खण० ४८
१०. सञ्ञालक्खण० ४९
११. चेतनालक्खण० ४९
१२. विञ्ञाणलक्खण० ४९
१३. वितक्कलक्खण० ५०
१४. विचारलक्खण० ५०
४. निब्बानवग्गो **५०**
१. फस्सादिविनिब्भुजन० ५०
२. नागसेन० ५१
३. मिलिन्दपञ्हे
(ख) विमतिच्छेदनपञ्हो **५२**
३. पञ्चायतनकम्मनिब्बत्त० ५२
४. कम्मनानाकरण० ५२
५. वायामकरण० ५२
६. नेरयिकग्गिउण्हभाव० ५३
७. पथविसन्धारण० ५५
८. निरोधनिब्बान० ५५
९. निब्बानलभन० ५५
१०. निब्बानसुखजानन० ५५
५. बुद्धवग्गो **५६**
१. बुद्धस्सअत्थिनानत्थिभाव० ५६
२. बुद्धस्सअनुत्तरभाव० ५६
३. बुद्धस्सअनुत्तरभावजानन० ५७
४. धम्मदिट्ठ० ५७
५. असङ्कमनपटिसन्दहन० ५७
६. वेदगू० ५७
७. अञ्ञकायसङ्कमन० ५७
८. कम्मफलअत्थिभाव० ५८
९. उप्पज्जतिजानन० ५८
१०. बुद्धनिदस्सन० ५९
६. सतिवग्गो **५९**
१. कायपियायन० ५९
२. सब्बञ्ञुभाव० ६०
३. महापुरिसलक्खण० ६०
४. भगवतोब्रह्मचारी० ६१
५. बुद्धस्सउपसम्पदा० ६१
६. अस्सुभेसज्जाभेसज्ज० ६१
७. सरागवीतरागनानाकरण० ६१
८. पञ्ञापतिट्ठान० ६२
९. सङ्खार० ६२
१०. चिरकतसरण० ६२
११. अभिजानन्तसति० ६३
७. अरूपधम्मववत्थानवग्गो **६३**
१. सतिउप्पज्जन० ६३
२. बुद्धगुणसतिपटिलाभ० ६५
३. दुक्खनिरोधवायाम० ६५
४. ब्रह्मलोक० ६६
५. द्विन्नं लोकुप्पन्नानं समकभाव० ६७
६. बोज्झङ्ग० ६७
७. पापपुञ्ञानं अप्पानप्पभाव० ६८
८. जानन्ताजानन्तपापकरणभाव० ६८
९. उत्तरकुरुकादिगमनभाव० ६८
१०. दीघट्ठि० ६९
११. अस्सासपस्सासनिरोध० ६९

१२. समुद्द० ६९
१३. समुद्दएकरस० ७०
१४. सुखुम० ७०
१५. विञ्ञाणनानत्त० ७०
१६. अरूपधम्मववत्थानदुक्कर० ७०
मिलिन्दपञ्हपुच्छाविसज्जना ७२

४. मेण्डकपञ्हे

मेण्डकपञ्हारम्मणकथा

१. अट्ठ मन्तपरिवज्जनियठानानि ७४
२. अट्ठ मन्तविनासकपुग्गला ७४
३. नव गुय्हमन्तविधंसका ७५
४. अट्ठ पञ्ञापटिलाभकारणानि ७५
५. पञ्चवीसति आचरियगुणा ७६
६. दस उपासकगुणा ७६

१. इद्धिबलवग्गो ७७

१. कताधिकारसफलपञ्हो ७७
२. सब्बञ्ञुभाव० ८२
३. देवदत्तपब्बज्ज० ८५
४. पथविचलन० ८९
५. सिविराजचक्खुदान० ९३
६. गब्भावक्कन्ति० ९५
७. सद्धम्मन्तरधान० १००
८. अकुसलच्छेदन० १०३
९. उत्तरिकरणीय० १०६
१०. इद्धिबलदस्सन० १०७

२. अभेज्जवग्गो १०८

१. खुद्दानुखुद्द० १०८
२. अब्याकरणीय० १०९
३. मच्चुभायनाभायन० ११०
४. मच्चुपासमुत्ति० ११४
५. बुद्धलाभन्तराय० ११६
६. अपुञ्ञ० ११९
७. भिक्खुसङ्घपरिहरण० ११९
८. अभेज्जपरिस० १२०

३. पणामितवग्गो १२१

१. सेट्ठधम्म० १२१
२. सब्बसत्तहितफरण० १२३
३. वत्थगुय्हनिदस्सन० १२५
४. फरुसवाचाभाव० १२७
५. रुक्ख-अचेतनभाव० १२९
६. पिण्डपातमहप्फल० १३०
७. बुद्धपूजन० १३१
८. पादसकलिकाहत० १३३
९. अग्गसमण० १३४
१०. वण्णभणन० १३५
११. अहिंसानिग्गह० १३६
१२. भिक्खुपणामित० १३७

४. सब्बञ्ञुतञाणवग्गो १३८

१. इद्धिकम्मविपाक० १३८
२. धम्मविनयपटिच्छन्नापटिच्छन्न० १३९
३. मुसावादगरुलहुभाव० १४१
४. बोधिसत्तधम्मता० १४२
५. अत्तनिपातन० १४३
६. मेत्ताभावनानिसंस० १४४
७. कुसलाकुसलसमविसम० १४६
८. अमरादेवी० १५०
९. अरहन्तअभायन० १५१
१०. बुद्धसब्बञ्ञुभाव० १५२

५. सन्थववग्गो १५३

१. सन्थव० १५३
२. उदरसंयत० १५५
३. बुद्धअप्पाबाध० १५५
४. मग्गुप्पादन० १५६
५. बुद्धअविहेठक० १५८
६. छद्दन्तजोतिपालारब्भ० १५९

७. घटीकार० १६०
८. ब्राह्मणराजवाद० १६१
९. गाथाभिगीतभोजनकथा० १६३
१०. धम्मदेसनाय अप्पोस्सुक० १६६
११. आचरियानाचरिय० १६८

५. अनुमानपञ्हे

१. बुद्धवग्गो १७०
१. द्विन्नं बुद्धानं अनुप्पज्जमान० १७०
२. गोतमीवत्थदान० १७२
३. गिहिपब्बजितसम्मापटिपत्ति० १७४
४. पटिपदादोस० १७५
५. हीनायावत्तन० १७६
६. अरहन्तवेदनावेदियन० १८०
७. अभिसमयन्तराय० १८२
८. दुस्सील० १८४
९. उदकसत्त० १८५

२. निप्पपञ्चवग्गो १८७
१. निप्पपञ्च० १८७
२. खीणासवभाव० १८९
३. खीणासवसतिसम्मोस० १९०
४. लोके नत्थिभाव० १९१
५. अकम्मजादि० १९१
६. कम्मजादि० १९३
७. यक्ख० १९४
८. अनवसेससिक्खापद० १९४
९. सुरियतपन० १९५
१०. कठिनतपन० १९५

३. वेस्सन्तरवग्गो १९६
१. वेस्सन्तर० १९६
२. दुक्करकारिक० २०३
३. कुसलाकुसलबलवतर० २०७
४. पुब्बपेतादिस० २०९
५. सुपिन० २१२
६. अकालमरण० २१४
७. चेतियपाटिहारिय० २२०
८. धम्माभिसमय० २२०
९. एकन्तसुखनिब्बान० २२२
१०. निब्बानरूपसण्ठान० २२४
११. निब्बानसच्छिकरण० २२९
१२. निब्बानसन्निहित० २३२

४. अनुमानवग्गो २३३
१. अनुमान० २३३
२. धुतङ्ग० २४६

६. ओपम्मकथापञ्हे

मातिका २५६

१. गद्रभवग्गो २५७
१. गद्रभङ्ग० २५८
२. कुक्कुटङ्ग० २५९
३. कलन्दकङ्ग० २५९
४. दीपिनीयङ्ग० २६०
५. दीपिकङ्ग० २६०
६. कुम्मङ्ग० २६०
७. वंसङ्ग० २६२
८. चापङ्ग० २६२
९. वायसङ्ग २६२
१०. मक्कटङ्ग० २६३

२. समुद्दवग्गो २६३
१. लाबुलतङ्ग० २६३
२. पदुमङ्ग० २६४
३. बीजङ्ग० २६४
४. सालकल्याणिकङ्ग० २६५
५. नावङ्ग० २६५
६. नावालग्गनकङ्ग० २६६
७. कूपङ्ग० २६६
८. नियामकङ्ग० २६६

९. कम्मकारङ्ग० २६७
१०. समुद्दङ्ग० २६७
३. पथविवग्गो **२६९**
१. पथविअङ्ग० २६९
२. आपङ्ग० २६९
३. तेजङ्ग० २७०
४. वायुङ्ग० २७१
५. पब्बतङ्ग० २७२
६. आकासङ्ग० २७३
७. चन्दङ्ग० २७३
८. सुरियङ्ग० २७४
९. सक्कङ्ग० २७५
१०. चक्कवत्तिङ्ग० २७५
४. उपचिकावग्गो **२७६**
१. उपचिकङ्ग० २७६
२. बिळारङ्ग० २७७
३. उन्दूरङ्ग० २७७
४. विच्छिकङ्ग० २७७
५. नकुलङ्ग० २७८
६. जरसिङ्गाल० २७८
७. मिगङ्ग० २७९
८. गोरूपङ्ग० २७९
९. वराहङ्ग० २८०
१०. हत्थिङ्ग० २८०
५. सीहवग्गो **२८१**
१. सीहङ्ग० २८१
२. चक्कवाळङ्ग० २८२
३. पेणाहिकङ्ग० २८३
४. घरकपोतकङ्ग० २८३
५. उलूकङ्ग० २८४
६. सतपत्तङ्ग० २८४
७. वग्गुलिङ्ग० २८५
८. जलूकङ्ग० २८५
९. सप्पङ्ग० २८५
१०. अजगरङ्ग० २८६
६. मक्कटकवग्गो **२८६**
१. पन्थमक्कटकङ्ग० २८६
२. थनस्सितदारकङ्ग० २८७
३. चित्तकधरकुम्मङ्ग० २८७
४. पवनङ्ग० २८७
५. रुक्खङ्ग० २८८
६. मेघङ्ग० २८८
७. मणिरतनङ्ग० २८९
८. मागविकङ्ग० २९०
९. बाळिसिकङ्ग० २९०
१०. तच्छकङ्ग० २९१
७. कुम्भवग्गो **२९१**
१. कुम्भङ्ग० २९१
२. काळायसङ्ग० २९२
३. छत्तङ्ग० २९२
४. खेत्तङ्ग० २९३
५. अगदङ्ग० २९३
६. भोजनङ्ग० २९३
७. इस्सासङ्ग० २९४
निगमनं **२९५**

मिलिन्दपञ्हपालि

❀ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ❀

मिलिन्दपञ्हपालि

गन्थकथावत्थु

१. मिलिन्दो नाम सो राजा, सागलायं पुरुत्तमे।
उपगञ्छि नागसेनं, गङ्गा व यथा सागरं॥ १॥
आसज्ज राजा चित्रकथिं, उक्काधारं तमोनुदं।
अपुच्छि निपुणे पञ्हे, ठानाठानगते पुथू॥ २॥
पुच्छा विसज्जना चेव, गम्भीरत्थूपनिस्सिता।
हदयङ्गमा कण्णसुखा, अब्भुता लोमहंसना॥ ३॥
अभिधम्मविनयोगाळ्हा, सुत्तजालसमत्थिता।
नागसेनकथा चित्रा, ओपम्मेहि नयेहि च॥ ४॥
तत्थ ञाणं पणिधाय, हासयित्वान मानसं।
सुणाथ निपुणे पञ्हे, कङ्खाठानविदालने ति॥ ५॥

२. तं यथानुसूयते—अत्थि योनकानं नानापुटभेदनं सागलं नाम नगरं नदीपब्बतसोभितं रमणीयभूमिप्पदेसभागं आरामुय्यानोपवनतडागपोक्खरणीसम्पन्नं नदीपब्बतवनरामणेय्यकं सुतवन्तनिम्मितं निहतपच्चत्थिकपच्चामित्तं अनुपपीळितं विविधविचित्रदळ्हमट्टालकोट्ठकं वरगोपुरतोरणं गम्भीरपरिखापण्डरपाकारपरिक्खित्तन्तेपुरं सुविभत्तवीथिचच्चरचतुक्कसिङ्घाटकं सुप्पसारितानेकविधवरभण्डपरिपूरितन्तरापणं विविधदानग्गसतसमुपसोभितं हिमगिरिसिखरसङ्कासवरभवनसतसहस्सप्पटिमण्डितं गजहयरथपत्तिसमाकुलं अभिरूपनरनारीगणानुचरितं आकिण्णजनमनुस्सं पुथुखत्तियब्राह्मणवेस्ससुद्दं विविधसमणब्राह्मणसभाजनसङ्घटितं बहुविधविज्जावन्तनरवीरनिसेवितं कासिककोटुम्बरकादिनानाविधवत्थापणसम्पन्नं सुप्पसारितरुचिरबहुविधपुप्फगन्धापणं गन्धगन्धितं आसिसनियबहुरतनपरिपूरितं दिसामुखसुप्पसारितापणं सिङ्गारवाणिजगणानुचरितं कहापणरजतसुवण्णकंसपत्थरपरिपूरं पज्जोतमाननिधिनिकेतं पहूतधनधञ्ञवित्तूपकरणं परिपुण्णकोसकोट्ठागारं बह्वन्नपानं बहुविधखज्जभोज्जलेय्यपेय्यसायनीयं उत्तरकुरुसङ्कासं सम्पन्नसस्सं आळकमन्दा विय देवपुरं।

एत्थ ठत्वा तेसं पुब्बकम्मं कथेतब्बं। कथेन्तेन च छद्धा विभजित्वा कथेतब्बं। सेय्यथीदं—१. पुब्बयोगो, २. मिलिन्दपञ्हं, ३. लक्खणपञ्हं, ४. मेण्डकपञ्हं, ५. अनुमानपञ्हं, ६. ओपम्मकथापञ्हं ति।

तत्थ मिलिन्दपञ्हो (क) लक्खणपञ्हो (ख) विमतिच्छेदनपञ्हो ति दुविधो। मेण्डकपञ्हो पि (क) महावग्गो (ख) योगिकथापञ्हो ति दुविधो।

१. बाहिरकथा

१. पुब्बयोगो

१. नागसेनस्स मिलिन्दस्स च पुब्बजातिकथा

३. 'पुब्बयोगो' ति तेसं पुब्बकम्मं।

अतीते किर कस्सपस्स भगवतो सासने वत्तमाने गङ्गाय समीपे एकस्मिं आवासे महाभिक्खुसङ्घो पटिवसति। तत्थ वत्तसीलसम्पन्ना भिक्खू पातो व उट्ठाय यट्ठिसम्मज्जनियो आदाय बुद्धगुणे आवज्जन्ता अङ्गणं सम्मज्जित्वा कचवरब्यूहं करोन्ति। अथेको भिक्खु एकं सामणेरं–"एहि, सामणेर, इमं कचवरं छड्डेही" ति आह। सो असुणन्तो विय गच्छति। सो दुतियं पि ततियं पि आमन्तियमानो असुणन्तो विय गच्छतेव। ततो सो भिक्खु–"दुब्बचो वतायं सामणेरो' ति कुद्धो सम्मज्जनिदण्डेन पहारं अदासि। ततो सो रोदन्तो भयेन कचवरं छड्डेन्तो "इमिनाहं कचवरछड्डनपुञ्ञकम्मेन यावाहं निब्बानं पापुणामि एत्थन्तरे निब्बत्तनिब्बत्तट्ठाने मज्झन्हिकसुरियो विय महेसक्खो महातेजो भवेय्यं" ति पठमपत्थनं पट्ठपेसि! कचवरं छड्डेत्वा नहानत्थाय गङ्गातित्थं गतो गङ्गाय ऊमिवेगं गग्गरायमानं दिस्वा "यावाहं निब्बानं पापुणामि एत्थन्तरे निब्बत्तनिब्बत्तट्ठाने अयं ऊमिवेगो विय ठानुप्पत्तिकपटिभानो भवेय्यं अक्खयपटिभानो" ति दुतियं पि पत्थनं पट्ठपेसि।

सो पि भिक्खु सम्मज्जनिसालाय सम्मज्जनिं ठपेत्वा नहानत्थाय गङ्गातित्थं गच्छन्तो सामणेरस्स पत्थनं सुत्वा "एस मया पयोजितो पि ताव एवं पत्थेति, मय्हं किं न समिज्झिस्सती" ति चिन्तेत्वा "यावाहं निब्बानं पापुणामि एत्थन्तरे निब्बत्तनिब्बत्तट्ठाने अयं गङ्गाऊमिवेगो विय अक्खयपटिभानो भवेय्यं, इमिना पुच्छितपुच्छितं सब्बं पञ्हपटिभानं विजटेतुं निब्बेठेतुं समत्थो भवेय्यं" ति पत्थनं पट्ठपेसि।

ते उभो पि देवेसु च मनुस्सेसु च संसरन्ता एकं बुद्धन्तरं खेपेसुं। अथ अम्हाकं भगवता पि "यथा मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो दिस्सति, एवमेते पि दिस्सन्ति, मम परिनिब्बानतो पञ्चवस्ससते अतिक्कन्ते एते उप्पज्जिस्सन्ति। यं मया सुखुमं कत्वा देसितं धम्मविनयं, तं एते पञ्हपुच्छनओपम्मयुत्तिवसेन निज्जटं निग्गुम्बं कत्वा विभजिस्सन्ती" ति निद्दिट्ठा।

४. तेसु सामणेरो जम्बुदीपे सागलनगरे मिलिन्दो नाम राजा अहोसि पण्डितो ब्यत्तो मेधावी पटिबलो। अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं मन्तयोगविधानकिरियानं करणकाले निसम्मकारी होति। बहूनि चस्स सत्थानि उग्गहितानि होन्ति; सेय्यथीदं–सुति, सम्मुति, संख्या, योगो, नीति, विसेसिका, गणिका,

गन्धब्बा, तिकिच्छा, चतुब्बेदा, पुराणा, इतिहासा, जोतिसा, माया, केतु, मन्तना, युद्धा, छन्दसा, बुद्धवचनेन एकूनवीसति। वितण्डवादी दुरासदो दुप्पसहो पुथुतित्थकरानं अग्गमक्खायति। सकलजम्बुदीपे मिलिन्देन रञ्ञा समो कोचि नाहोसि यदिदं थामेन जवेन सूरेन पञ्ञाय, अड्ढो महद्धनो महाभोगो अनन्तबलवाहनो।

५. अथेकदिवसं मिलिन्दो राजा अनन्तबलवाहनं चतुरङ्गिनिं बलग्गसेनाब्यूहं दस्सनकम्यताय नगरा निक्खमित्वा बहिनगरे सेनाङ्गदस्सनं कत्वा सारेत्वा सो राजा भस्सप्पवादको लोकायतवितण्डजनसल्लापप्लवचित्तकोतूहलो विसारदो विजम्भको सूरियं ओलोकेत्वा अमच्चे आमन्तेसि–"बहु भणे, ताव दिवसावसेसो। किं करिस्साम इदानेव नगरं पविसित्वा! अत्थि को पि पण्डितो समणो वा ब्राह्मणो वा सङ्घी गणी गणाचरियो, अपि अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं पटिजानमानो, यो मया सद्धिं सल्लपितुं सक्कोति, कङ्खं पटिविनोदेतुं? तं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छिस्साम, कङ्खं पटिविनयिस्सामा" ति।

एवं वुत्ते पञ्चसता योनका राजानं मिलिन्दं एतदवोचुं–"अत्थि, महाराज, छ सत्थारो—पूरणो कस्सपो, मक्खलि गोसालो, निगन्थो नाटपुत्तो, सञ्जयो बेलट्ठपुत्तो, अजितो केसकम्बलो, पकुधो कच्चायनो। ते सङ्घिनो गणिनो गणाचरियका ञाता यसस्सिनो तित्थकरा, साधुसम्मता बहुजनस्स। गच्छ त्वं, महाराज, ते पञ्हं पुच्छस्सु, कङ्खं पटिविनयस्सू" ति।

२. पूरणेन कस्सपेन रञ्ञो समागमो

६. अथ खो मिलिन्दो राजा पञ्चहि योनकसतेहि परिवुतो भद्रवाहनं रथवरमारुय्ह येन पूरणो कस्सपो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा पूरणेन कस्सपेन सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा पूरणं कस्सपं एतदवोच–"को भन्ते कस्सप, लोकं पालेती" ति? "पथवी, महाराज, लोकं पालेती" ति। "यदि, भन्ते कस्सप, पथवी लोकं पालेति, अथ कस्मा अवीचिनिरयं गच्छन्ता सत्ता पथविं अतिक्कमित्वा गच्छन्ती" ति? एवं वुत्ते पूरणो कस्सपो नेव सक्खि ओगिलितुं, नेव सक्खि उग्गिलितुं। अधोमुखो पत्तक्खन्धो तुण्हीभूतो पज्झायन्तो निसीदि।

३. मक्खलिगोसालेन मिलिन्दस्स समागमो

७. अथ खो मिलिन्दो राजा मक्खलिं गोसालं एतदवोच–"अत्थि, भन्ते गोसाल, कुसलाकुसलानि कम्मानि? अत्थि सुकतदुक्कटानं फलं विपाको" ति?

"नत्थि, महाराज, कुसलाकुसलानि कम्मानि। नत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको। ये ते, महाराज, इध लोके खत्तिया, ते परलोकं गन्त्वापि पुन खत्तिया व भविस्सन्ति। ये ते ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा चण्डाला पुक्कुसा ते परलोकं

गन्त्वापि पुन ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा चण्डाला पुक्कुसा व भविस्सन्ति । किं कुसलाकुसलेहि कम्मेही" ति !

"यदि, भन्ते गोसाल, इध लोके खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा चण्डाला पुक्कुसा ते परलोकं गन्त्वा पि पुन खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा चण्डाला पुक्कुसा व भविस्सन्ति, नत्थि कुसलाकुसलेहि कम्मेहि करणीयं; तेन हि, भन्ते गोसाल, ये ते इध लोके हत्थच्छिन्ना ते परलोकं गन्त्वा पि पुन हत्थच्छिन्ना व भविस्सन्ति, ये पादच्छिन्ना ते पादच्छिन्ना व भविस्सन्ति, ये हत्थपादच्छिन्ना ते हत्थपादच्छिन्ना व भविस्सन्ति, ये कण्णच्छिन्ना ते कण्णच्छिन्ना व भविस्सन्ति, ये नासच्छिन्ना ते नासच्छिन्ना वा भविस्सन्ति, ये कण्णनासच्छिन्ना ते कण्णनासच्छिन्ना व भविस्सन्ती" ति ! एवं वुत्ते गोसालो तुण्ही अहोसि ।

अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो एतदहोसि–"तुच्छो बत भो जम्बुदीपो, पलापो बत भो जम्बुदीपो ! नत्थि कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा, यो मया सद्धिं सल्लपितुं सक्कोति, कङ्खं पटिविनोदेतुं" ति । अथ खो मिलिन्दो राजा अमच्चे आमन्तेसि–"रमणीया बत भो दोसिना रत्ति । कं नु ख्वज्ज समणं वा ब्राह्मणं वा उपसङ्कमेय्याम पञ्हं पुच्छितुं ? को मया सद्धिं सल्लपितुं सक्कोति, कङ्खं पटिविनोदेतुं" ति ? एवं वुत्ते अमच्चा तुण्हीभूता रञ्ञो मुखं ओलोकयमाना अट्ठंसु ।

तेन खो पन समयेन सागलनगरं द्वादसवस्सानि सुञ्ञं अहोसि समणब्राह्मणगहपतिपण्डितेहि । यत्थ समणब्राह्मणगहपतिपण्डिता पटिवसन्ती ति सुणाति, तत्थ गन्त्वा राजा ते पञ्हं पुच्छति । ते सब्बे पि पञ्हाविस्सज्जनेन राजानं आराधेतुं असक्कोन्ता येन वा तेन वा पक्कमन्ति । ये अञ्ञं दिसं न पक्कमन्ति ते सब्बे तुण्हीभूता अच्छन्ति । भिक्खू पन येभुय्येन हिमवन्तमेव गच्छन्ति ।

४. आयस्मतो अस्सगुत्तस्स पुच्छा

८ तेन खो पन समयेन कोटिसता अरहन्तो हिमवन्ते पब्बते रक्खिततले पटिवसन्ति । अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो दिब्बाय सोतधातुया मिलिन्दस्स रञ्ञो वचनं सुत्वा युगन्धरमत्थके भिक्खुसङ्घं सन्निपातेत्वा भिक्खू पुच्छि–"अत्थावुसो, कोचि भिक्खु पटिबलो मिलिन्देन रञ्ञा सद्धिं सल्लपितुं, कङ्खं पटिविनेतुं" ति ?

एवं वुत्ते कोटिसता अरहन्तो तुण्ही अहसुं । दुतियं पि ततियं पि खो पुट्ठा तुण्ही अहेसुं । अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो भिक्खुसङ्घं एतदवोच– "अत्थावुसो, तावतिंसभवने वेजयन्तस्स प्राचीनतो केतुमती नाम विमानं, तत्थ महासेनो नाम देवपुत्तो पटिवसति । सो पटिबलो तेन मिलिन्देन रञ्ञा सद्धिं सल्लपेतुं, कङ्खं पटिविनेतुं" ति ।

९. सो महासेनं देवपुत्तं याचेसि

९. अथ खो कोटिसता अरहन्तो युगन्धरपब्बते अन्तरहिता तावतिंसभवने पातुरहेसुं। अद्दसा खो सक्को देवानमिन्दो ते भिक्खू दूरतो व आगच्छन्ते। दिस्वान येन आयस्मा अस्सगुत्तो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अस्सगुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितो खो सक्को देवानमिन्दो आयस्मन्तं अस्सगुत्तं एतदवोच–"महा खो, भन्ते, भिक्खुसङ्घो अनुप्पत्तो। अहं सङ्घस्स आरामिको, केनत्थो? किं मया करणीयं" ति?

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो सक्कं देवानमिन्दं एतदवोच–"अयं खो, महाराज, जम्बुदीपे सागलनगरे मिलिन्दो नाम राजा वितण्डवादी दुरासदो दुप्पसहो पुथुतित्थकरानं अग्गमक्खायति। सो भिक्खुसङ्घं उपसङ्कमित्वा दिट्ठिवादेन पञ्हं पुच्छित्वा भिक्खुसङ्घं विहेठेती" ति।

अथ खो सक्को देवानमिन्दो आयस्मन्तं अस्सगुत्तं एतदवोच-"अयं खो, भन्ते, मिलिन्दो राजा इतो चुतो मनुस्सेसु उप्पन्नो। एसो खो, भन्ते, केतुमतीविमाने महासेनो नाम देवपुत्तो पटिवसति। सो तेन मिलिन्देन रञ्ञा सद्धिं पटिबलो सल्लपितुं, कङ्खं पटिविनेतुं। तं देवपुत्तं याचिस्साम मनुस्सलोकूपपत्तिया" ति।

अथ खो सक्को देवानमिन्दो भिक्खुसङ्घं पुरक्खत्वा केतुमतीविमानं पविसित्वा महासेनं देवपुत्तं आलिङ्गित्वा एतदवोच-"याचति तं, मारिस, भिक्खुसङ्घो मनुस्सलोकूपपत्तिया" ति। "न मे, भन्ते, मनुस्सलोकेनत्थो कम्मबहुलेन। तिब्बो मनुस्सलोको। इधेवाहं भन्ते, देवलोके उपरूपरूपपत्तिको हुत्वा परिनिब्बायिस्सामी" ति। दुतियं पि, ततियं पि खो सक्केन देवानमिन्देन याचितो महासेनो देवपुत्तो एवमाह—"न मे, भन्ते, मनुस्सलोकेनत्थो कम्मबहुलेन। तिब्बो मनुस्सलोको। इधेवाहं, भन्ते, देवलोके उपरूपरूपपत्तिको हुत्वा परिनिब्बायिस्सामी" ति।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो महासेनं देवपुत्तं एतदवोच—"इध मयं, मारिस, सदेवकं लोकं अनुविलोकयमाना अञ्ञत्र तया मिलिन्दस्स रञ्ञो वादं भिन्दित्वा सासनं पग्गहेतुं समत्थं अञ्ञं कञ्चि न पस्साम। याचति तं, मारिस, भिक्खुसङ्घो—'साधु, सप्पुरिस, मनुस्सलोके निब्बत्तित्वा दसबलस्स सासनं पग्गण्हाही' ति। एवं वुत्ते महासेनो देवपुत्तो—"अहं किर मिलिन्दस्स रञ्ञो वादं भिन्दित्वा बुद्धसासनं पग्गहेतुं समत्थो भविस्सामी" ति हट्ठपहट्ठो उदग्गुदग्गो हुत्वा—"साधु, भन्ते, मनुस्सलोके उप्पज्जिस्सामी" ति पटिञ्ञं अदासि।

६. रोहणस्स दण्डकम्मं

१०. अथ खो ते भिक्खू देवलोके तं करणीयं तीरेत्वा देवेसु तावतिंसेसु अन्तरहिता हिमवन्ते पब्बते रक्खिततले पातुरहेसुं।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो भिक्खुसङ्घं एतदवोच—"अत्थावुसो, इमस्मिं भिक्खुसङ्घे कोचि भिक्खु सन्निपातं अनागतो" ति ? एवं वुत्ते अञ्ञतरो भिक्खु आयस्मन्तं अस्सगुत्तं एतदवोच—"अत्थि, भन्ते, आयस्मा रोहणो इतो सत्तमे दिवसे हिमवन्तं पब्बतं पविसित्वा निरोधं समापन्नो। तस्स सन्तिके दूतं पाहेथा" ति। आयस्मा पि रोहणो तं खणञ्ञेव निरोधा वुट्ठाय "सङ्घो मं पटिमानेती" ति हिमवन्ते पब्बते अन्तरहितो रक्खिततले कोटिसतानं अरहन्तानं पुरतो पातुरहोसि।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो आयस्मन्तं रोहणं एतदवोच—"किं नु खो, आवुसो रोहण, बुद्धसासने भिज्जन्ते न पस्ससि सङ्घस्स करणीयानी" ति ? "अमनसिकारो मे, भन्ते, अहोसी" ति। "तेन हावुसो, रोहण, दण्डकम्मं करोही" ति। "किं, भन्ते, करोमी" ति ? "अत्थावुसो रोहण, हिमवन्तपब्बतपस्से कजङ्गलं नाम ब्राह्मणगामो। तत्थ सोणुत्तरो नाम ब्राह्मणो पटिवसति। तस्स पुत्तो उप्पज्जिस्सति नागसेनो नाम दारको। तेन हि त्वं, आवुसो रोहण, दसमासाधिकानि सत्त वस्सानि तं कुलं पिण्डाय पविसित्वा नागसेनं दारकं नीहरित्वा पब्बाजेहि। पब्बजिते व तस्मिं दण्डकम्मतो मुच्चिस्ससी" ति। आयस्मा पि खो रोहणो "साधू" ति सम्पटिच्छि।

७. महासेनस्स पातुभावो

११. महासेनो पि खो देवपुत्तो देवलोका चवित्वा सोणुत्तर-ब्राह्मणस्य भरियाय कुच्छिस्मिं पटिसन्धिं अग्गहेसि। सह पटिसन्धिग्गहणा तयो अच्छरिया अब्भुता धम्मा पातुरहेसुं—आवुधभण्डानि पज्जलिंसु, अग्गसस्सं अभिनिप्फन्नं, महामेघो अभिप्पवस्सि। आयस्मा पि खो रोहणो तस्स पटिसन्धिग्गहणतो पट्ठाय दसमासाधिकानि सत्त वस्सानि तं कुलं पिण्डाय पविसन्तो एकदिवसं पि कटच्छुमत्तं भत्तं वा उळुङ्कमत्तं यागुं वा अभिवादनं वा अञ्जलिकम्मं वा सामीचिकम्मं वा नालत्थ। अथ खो अक्कोसं येव परिभासं येव पटिलभति। "अतिच्छथ, भन्ते" ति वचनमत्तं पि वत्ता नाम नाहोसि। दसमासाधिकानं पन सत्तन्नं वस्सानं अच्चयेन एकदिवसं—"अतिच्छथ, भन्ते" ति वचनमत्तं अलत्थ। तं दिवसमेव ब्राह्मणो पि बहिकम्मन्ता आगच्छन्तो पटिपथे थेरं दिस्वा—"किं, भो पब्बजित, अम्हाकं गेहं अगमित्था" ति आह। "आम, ब्राह्मण, अगमम्हा" ति। "अपि किञ्चि लभित्था" ति ? "आम, ब्राह्मण, लभिम्हा" ति। सो अनत्तमनो गेहं गन्त्वा पुच्छि—"तस्स पब्बजितस्स किञ्चि अदत्था" ति ? "न किञ्चि

अदम्हा" ति। ब्राह्मणो दुतियदिवसे घरद्वारे येव निसीदि—"अज्ज पब्बजितं मुसावादेन निग्गहेस्सामी" ति। थेरो दुतियदिवसे ब्राह्मणस्स घरद्वारे सम्पत्तो।

ब्राह्मणो थेरं दिस्वा व एवमाह—"तुम्हे हिय्यो अम्हाकं गेहे किञ्चि अलभित्वा व 'लभिम्हा' ति अवोचुत्थ। वट्टति नु खो तुम्हाकं मुसावादो" ति? थेरो आह—"मयं, ब्राह्मण, तुम्हाकं गेहे पविसन्ता दसमासाधिकानि सत्तवस्सानि 'अतिच्छथा' ति वचनमत्तं पि अलभित्वा हिय्यो 'अतिच्छथा' ति वचनमत्तं लभिम्हा। अथेतं वाचापटिसन्थारं उपादाय एवमवोचुम्हा" ति।

ब्राह्मणो चिन्तेसि—"इमे वाचा पटिसन्थारमत्तं पि लभित्वा जनमज्झे 'लभिम्हा' ति पसंसन्ति, अञ्ञं किञ्चि खादनीयं वा भोजनीयं वा लभित्वा कस्मा नप्पसंसन्ती" ति! पसीदित्वा अत्तनो अत्थाय पटियादितभत्ततो कटच्छुभिक्खं तदुपियं च ब्यञ्जनं दापेत्वा—"इमं भिक्खं सब्बकालं तुम्हे लभिस्सथा" ति आह।

सो पुन दिवसतो पभुति उपसङ्कमन्तस्स थेरस्स उपसमं दिस्वा भिय्योसो मत्ताय पसीदित्वा थेरं निच्चकालं अत्तनो घरे भत्तविसग्गकरणत्थाय याचि। थेरो तुण्हीभावेन अधिवासेत्वा दिवसे दिवसे भत्तकिच्चं कत्वा गच्छन्तो थोकं थोकं बुद्धवचनं कथेत्वा गच्छति।

सा पि खो ब्राह्मणी दसमासच्चयेन पुत्तं विजायि। 'नागसेनो' स्स नाममकंसु। सो अनुक्कमेन वड्ढन्तो सत्तवस्सिको जातो।

८. नागसेनस्स दारकस्स सज्झायकालो

१२. अथ खो नागसेनस्स दारकस्स पिता नागसेनं दारकं एतदवोच—"इमस्मि खो, तात नागसेन, ब्राह्मणकुले सिक्खानि सिक्खेय्यासी" ति। "कतमानि, तात, इमस्मि ब्राह्मणकुले सिक्खानि नामा" ति? "तयो खो, तात नागसेन, वेदा सिक्खानि नाम, अवसेसानि सिप्पानि सिप्पं नामा" ति।' 'तेन हि, तात, सिक्खिस्सामी" ति।

अथ खो सोणुत्तरो ब्राह्मणो आचरियब्राह्मणस्य आचरियभागं सहस्सं दत्वा अन्तो पासादे एकस्मि गब्भे एकतो मञ्चकं पञ्ञपेत्वा आचरियब्राह्मणं एतदवोच-"सज्झापेहि खो त्वं, ब्राह्मण, इमं दारकं मन्तानी" ति।

"तेन हि, तात दारक, उग्गण्हाहि मन्तानी" ति आचरियब्राह्मणे सज्झायति नागसेनस्स दारकस्स एकेनेव उद्देसेन तयो वेदा हदयङ्गता वाचुग्गता सूपधारिता सुववत्थापिता सुमनसिकता अहेसुं। सकिमेव चक्खुं उदपादि तीसु वेदेसु सनिघण्डु-केटुभेसु साक्खरप्पभेदेसु इतिहासपञ्चमेसु पदको वेय्याकरणो लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो अहोसि।

अथ खो नागसेनो दारको पितरं एतदवोच—"अत्थि नु खो, तात, इमस्मिं ब्राह्मणकुले इतो उत्तरिं पि सिक्खितब्बानि, उदाहु एत्तकानेवा" ति ?

"नत्थि, तात नागसेन, इमस्मिं ब्राह्मणकुले इतो उत्तरिं सिक्खितब्बानि, एत्तकानेव सिक्खितब्बानी" ति ।

अथ खो नागसेनो दारको आचरियस्स अनुयोगं दत्वा पासादा ओरुय्ह पुब्बवासनाय चोदितहदयो रहोगतो पटिसल्लीनो अत्तनो सिप्पस्स आदिमज्झ-परियोसानं ओलोकेन्तो आदिम्हि वा मज्झे वा परियोसाने वा अप्पमत्तकं पि सारं अदिस्वा—"तुच्छा वत, भो, इमे वेदा; पलापा वत, भो, इमे वेदा; असारा निस्सारा" ति विप्पटिसारी अनत्तमनो अहोसि ।

९. आयस्मता रोहणेन नागसेनदारकस्स समागमो

१३. तेन खो पन समयेन आयस्मा रोहणो वत्तनिये सेनासने निसिन्नो नागसेनस्स दारकस्स चेतसा चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय निवासेत्वा पत्तचीवर-मादाय वत्तनिये सेनासने अन्तरहितो कजङ्गल-ब्राह्मणगामस्स पुरतो पातुरहोसि ।

अद्दसा खो नागसेनो दारको अत्तनो द्वारकोट्ठके ठितो आयस्मन्तं रोहणं दूरतो व आगच्छन्तं । दिस्वान अत्तमनो उदग्गो पमुदितो पीतिसोमनस्सजातो—"अप्पेव नामायं पब्बजितो कञ्चि सारं जानेय्या" ति येनायस्मा रोहणो तेनुप-सङ्कमि । उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं रोहणं एतदवोच—"को नु खो त्वं मारिस, एदिसो भण्डुकासाववसनो" ति ? "पब्बजितो नामाहं, दारका" ति । "केन हि त्वं, मारिस, पब्बजितो नामासि" ? "पापकानं मलानं पब्बाजेतुं पब्बजितो, तस्माहं, दारक, पब्बजितो नामा" ति ।

किङ्कारणा, मारिस, ते केसा न यथा अञ्ञेसं" ति ? "सोळसिमे, दारक, पलिबोधे दिस्वा केसमस्सुं ओहारेत्वा पब्बजितो । कतमे सोळस ? १. अलङ्कार-पलिबोधो, २. मण्डनपलिबोधो, ३. तेलमक्खनपलिबोधो, ४. धोवनपलिबोधो, ५. मालापलिबोधो ६. गन्धपलिबोधो, ७. वासनपलिबोधो, ८. हरीटकपलिबोधो, ९. आमलकपलिबोधो, १०. रङ्गपलिबोधो, ११. बन्धनपलिबोधो, १२. कोच्छ-पलिबोधो, १३. कप्पकपलिबोधो, १४. विजटनपलिबोधो, १५. ऊकापलिबोधो, १६. केसेसु विलूनेसु सोचन्ति किलिमन्ति परिदेवन्ति उरत्ताळिं कन्दन्ति, सम्मोहं आपज्जन्ति । इमेसु खो, दारक, सोळसपलिबोधेसु पलिगुण्ठिता मनुस्सा सब्बानि अतिसुखुमानि सिप्पानि नासेन्ती" ति ।

"किङ्कारणा, मारिस, वत्थानि पि ते न यथा अञ्ञेसं" ति ? "कामनिस्सि-तानि खो, दारक, वत्थानि कमनीयानि गिहिब्यञ्जनानि । यानि कानिचि खो भयानि वत्थतो उपज्जन्ति, तानि कासाववसनस्स न होन्ति । तस्मा वत्थानि पि मे न यथा अञ्ञेसं" ति ।

"जानासि खो त्वं, मारिस, सिप्पानि नामा" ति ? "आम, दारक, जानामहं सिप्पानि । यं लोके उत्तमं मन्तं तं पि जानामी" ति । "मय्हं पि तं, मारिस, दातुं सक्का" ति ? "आम, दारक, सक्का" ति । "तेन हि मे देही" ति । "अकालो खो, दारक ! अन्तरघरं पिण्डाय पविट्ठम्हा" ति ।

अथ खो नागसेनो दारको आयस्मतो रोहणस्स हत्थतो पत्तं गहेत्वा घरं पवेसेत्वा पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेत्वा सम्पवारेत्वा आयस्मन्तं रोहणं भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं एतदवोच–"देहि मे दानि, मारिस, मन्तं" ति !

"यदा खो त्वं, दारक, निप्पलिबोधो हुत्वा मातापितरो अनुजानापेत्वा मया गहितं पब्बजितवेसं गण्हिस्ससि तदा दस्सामी" ति आह ।

अथ खो नागसेनो दारको मातापितरो उपसङ्कमित्वा आह–"अम्म, तात, अयं पब्बजितो 'यं लोके उत्तमं मन्तं तं जानामी' ति वदति । न च अत्तनो सन्तिके अपब्बजितस्स देति । अहमेतस्स सन्तिके पब्बजित्वा तं मन्तं उगण्हिस्सामी" ति । अथस्स मातापितरो—"पब्बजित्वापि नो पुत्तो मन्तं गण्हतु । गहेत्वा पुन आगच्छिस्सती" ति मञ्ञमाना "गण्ह, पुत्ता" ति अनुजानिंसु ।

१०. नागसेनस्स पब्बज्जा

१४. अथ खो आयस्मा रोहणो नागसेनं दारकं आदाय येन वत्तनियं सेनासनं येन विजम्भवत्थु तेनुपसङ्कमि । उपसङ्कमित्वा विजम्भवत्थुस्मिं सेनासने एकरत्तं वसित्वा येन रक्खिततलं तेनुपसङ्कमि । उपसङ्कमित्वा कोटिसतानं अरहन्तानं मज्झे नागसेनं दारकं पब्बाजेसि ।

पब्बजितो च पनायस्मा नागसेनो आयस्मन्तं रोहणं एतदवोच–"गहितो मे, भन्ते, तव वेसो । देथ मे दानि मन्तं" ति । अथ खो आयस्मा रोहणो "किम्हि नु खोहं नागसेनं विनेय्यं पठमं ? विनये वा, सुत्तन्ते वा, अभिधम्मे वा ?" ति चिन्तेत्वा "पण्डितो खो अयं नागसेनो, सक्कोति सुखेनेव अभिधम्मं परियापुणितुं" ति पठमं अभिधम्मे विनेसि । आयस्मा च नागसेनो–"कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा' ति तिकदुकपटिमण्डितं धम्मसङ्गणिपकरणं; खन्धविभङ्गादिअट्ठारसविभङ्गपटिमण्डितं विभङ्गप्पकरणं; 'सङ्गहो, असङ्गहो' ति आदिना चुद्दसविधेन विभत्तं धातुकथापकरणं; 'खन्धपञ्ञत्तिआयतनपञ्ञत्ती' ति आदिना छब्बिधेन बिभत्तं पुग्गलपञ्ञतिप्पकरणं; सकवादे पञ्चसुत्तसतानि, परवादे पञ्चसुत्तसतानी ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा विभत्तं कथावत्थुप्पकरणं; मूलयमकं, खन्धयमकं ति आदिना दसविधेन विभत्तं यमकप्पकरणं; 'हेतुपच्चयो, आरम्मणपच्चयो' ति आदिना चतुवीसतिविधेन विभत्तं पट्ठानप्पकरणं ति सब्बं तं

अभिधम्मपिटकं एकेनेव सज्झायेन पगुणं कत्वा "तिट्ठथ, भन्ते, न पुन ओसारेथ, एत्तकेनेवाहं सज्झायिस्सामी" ति आह।

अथ खो आयस्मा नागसेनो येन कोटिसता अरहन्तो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा कोटिसते अरहन्ते एतदवोच–"अहं खो, भन्ते, 'कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा' ति इमेसु तीसु पदेसु पक्खिपित्वा सब्बं तं अभिधम्मपिटकं वित्थरेन ओसारेस्सामी" ति। "साधु, नागसेन, ओसारेही" ति।

अथ खो आयस्मा नागसेनो सत्तमासानि सत्तप्पकरणानि वित्थरेन ओसारेसि। पथवी उन्नदि। देवता साधुकारमदंसु। ब्रह्मानो अप्फोटेसुं। दिब्बानि चन्दनचुण्णानि, दिब्बानि च मन्दारवपुप्फानि अभिप्पवस्सिंसु।

११. नागसेनस्स दण्डकम्मं

१५. अथ खो कोटिसता अरहन्तो आयस्मन्तं नागसेनं परिपुण्णवीसतिवस्सं रक्खिततले उपसम्पादेसुं। उपसम्पन्नो च पनायस्मा नागसेनो तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय उपज्झायेन सद्धिं गामं पिण्डाय पविसन्तो एवरूपं परिवितक्कं उप्पादेसि–"तुच्छो वत मे उपज्झायो, बालो वत मे उपज्झायो। ठपेत्वा अवसेसं बुद्धवचनं पठमं मं अभिधम्मे विनेसी" ति।

अथ खो आयस्मा रोहणो आयस्मतो नागसेनस्स चेतसा चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"अननुच्छविकं खो, नागसेन, परिवितक्कं वितक्केसि। न खो पनेतं, नागसेन, तवानुच्छविकं" ति।

अथ खो आयस्मतो नागसेनस्स एतदहोसि–"अच्छरियं वत भो, अब्भुतं वत भो! यत्र हि नाम मे उपज्झायो चेतसा चेतोपरिवितक्कं जानिस्सति! पण्डितो वत मे उपज्झायो। यन्नूनाहं उपज्झायं खमापेय्यं" ति। अथ खो आयस्मा नागसेनो आयस्मन्तं रोहणं एतदवोच—"खमथ मे, भन्ते! न पुन एवरूपं वितक्केस्सामी" ति।

अथ खो आयस्मा रोहणो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"न खो त्याहं, नागसेन, एत्तावता खमामि। अत्थि खो, नागसेन, सागलं नाम नगरं। तत्थ मिलिन्दो नाम राजा रज्जं कारेति। सो दिट्ठिवादेन पञ्हं पुच्छित्वा भिक्खुसङ्घं विहेठेति। सचे त्वं तत्थ गन्त्वा तं राजानं दमेत्वा बुद्धसासने पसादेस्ससि, एवाहं तं खमिस्सामी" ति।

"तिट्ठतु, भन्ते, एको मिलिन्दो राजा। सचे, भन्ते, सकलजम्बुदीपे सब्बे राजानो आगन्त्वा मं पञ्हं पुच्छेय्युं, सब्बं तं विसज्जेत्वा सम्पदालेस्सामी" ति "खमथ मे, भन्ते" ति वत्वा "न खमामी" ति वुत्ते "तेन हि, भन्ते, इमं तेमासं

कस्स सन्तिके वसिस्सामी" ति आह। "अयं खो, नागसेन, आयस्मा अस्सगुत्तो वत्तनिये सेनासने विहरति। गच्छ त्वं, नागसेन, येनायस्मा अस्सगुत्तो तेनुपसङ्कम। उपसङ्कमित्वा मम वचनेन आयस्मतो अस्सगुत्तस्स पादे सिरसा वन्द। एवञ्च नं वदेहि–'उपज्झायो मे, भन्ते, तुम्हाकं पादे सिरसा वन्दति, अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छति। उपज्झायो मे, भन्ते, इमं तेमासं तुम्हाकं सन्तिके वसितुं मां पहिणी' ति। 'कोनामो ते उपज्झायो' ति च वुत्ते 'रोहणत्थेरो नाम, भन्ते' ति वदेय्यासि। 'अहं को नामो' ति वुत्ते एवं वदेय्यासि–'मम उपज्झायो, भन्ते, तुम्हाकं नामं जानाती' ति।

"एवं, भन्ते" ति खो आयस्मा नागसेनो आयस्मन्तं रोहणं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पत्तचीवरमादाय अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन वत्तनियं सेनासनं येनायस्मा अस्सगुत्तो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अस्सगुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितो खो आयस्मा नागसेनो आयस्मन्तं अस्सगुत्तं एतदवोच—"उपज्झायो मे, भन्ते, तुम्हाकं पादे सिरसा वन्दति, एवञ्च वदति—अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छति। उपज्झायो मे, भन्ते, इमं तेमासं तुम्हाकं सन्तिके वसितुं मं पहिणी" ति।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"त्वं किन्नामोसी" ति? "अहं, भन्ते नागसेनो नामा" ति। "कोनामो ते उपज्झायो" ति? "उपज्झायो मे, भन्ते, रोहणो नामा" ति। "अहं कोनामो" ति? "उपज्झायो मे, भन्ते, तुम्हाकं नामं जानाती" ति। "साधु, नागसेन, पत्तचीवरं पटिसामेहि" ति।

"साधु, भन्ते" ति पत्तचीवरं पटिसामेत्वा पुनदिवसे परिवेणं सम्मज्जित्वा मुखोदकं दन्तपोणं उपट्ठपेसि। थेरो सम्मज्जितट्ठानं पटिसम्मज्जि। तं उदकं छड्डेत्वा अञ्ञं उदकं आहरि। तञ्च दन्तकट्ठं अपनेत्वा अञ्ञं दन्तकट्ठं गण्हि। न आलापसल्लापं अकासि। एवं सत्त दिवसानि कत्वा सत्तमे दिवसे पुन पुच्छित्वा पुन तेन तथेव वुत्ते वस्सावासं अनुजानि।

१२. नागसेनस्स धम्मदेसना

१६. तेन खो पन समयेन एका महाउपासिका आयस्मन्तं अस्सगुत्तं तिंसमत्तानि वस्सानि उपट्ठासि। अथ खो सा महाउपासिका तेमासच्चयेन येनायस्मा अस्सगुत्तो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अस्सगुत्तं एतदवोच—"अत्थि नु खो, तात, तुम्हाकं सन्तिके अञ्ञो भिक्खू" ति? "अत्थि, महाउपासिके, अम्हाकं सन्तिके नागसेनो नाम भिक्खू" ति? "तेन हि, तात

अस्सगुत्त, अधिवासेहि नागसेनेन सद्धिं स्वातनाय भत्तं" ति। अधिवासेसि खो आयस्मा अस्सगुत्तो तुण्हीभावेन।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय आयस्मता नागसेनेन सद्धिं पच्छासमणेन येन महाउपासिकाय निवेसनं तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो सा महाउपासिका आयस्मन्तं अस्सगुत्तं आयस्मन्तं च नागसेनं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेसि सम्पवारेसि। अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"त्वं, नागसेन, महाउपासिकाय अनुमोदनं करोही" ति इदं वत्वा उट्ठायासना पक्कामि।

अथ खो सा महाउपासिका आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच– महल्लिका खोहं, तात नागसेन। गम्भीराय धम्मकथाय मय्हं अनुमोदनं करोही" ति। आयस्मा नागसेनो तस्सा महाउपासिकाय गम्भीराय धम्मकथाय लोकुत्तराय सुञ्ञताप्पटिसंयुत्ताय अनुमोदनं अकासि। अथ खो तस्सा महाउपसिकाय तस्मिं येव आसने विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि–"यं किञ्चि समुदयधम्मं सब्बं तं निरोधधम्मं" ति। आयस्मा पि खो नागसेनो तस्सा महाउपासिकाय अनुमोदनं कत्वा अत्तना देसितं धम्मं पच्चवेक्खन्तो विपस्सनं पट्ठपेत्वा तस्मिं येव आसने निसिन्नो सोतापत्तिफले पतिट्ठासि।

अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो मण्डलमाले निसिन्नो द्विन्नं पि धम्मचक्खुपटिलाभं ञत्वा साधुकारं पवत्तेसि–"साधु साधु, नागसेन! एकेन कण्डप्पहारेन द्वे महाकाया पदालिता" ति। अनेकानि च देवतासहस्सानि साधुकारं पवत्तेसुं।

१३. नागसेनस्स पाटलिपुत्तगमनं

१७. अथ खो आयस्मा नागसेनो उट्ठायासना येनायस्मा अस्सगुत्तो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अस्सगुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो आयस्मन्तं नागसेनं आयस्मा अस्सगुत्तो एतदवोच—"गच्छ त्वं, नागसेन, पाटलिपुत्तं। पाटलिपुत्तनगरे असोकारामे आयस्मा धम्मरक्खितो पटिवसति। तस्स सन्तिके बुद्धवचनं परियापुणाही" ति। कीव दूरे, भन्ते, इतो पाटलिपुत्तनगरं" ति? "योजनसतानि खो, नागसेना" ति।

"दूरो खो, भन्ते, मग्गो। अन्तरामग्गे भिक्खा दुल्लभा। कथाहं गमिस्सामी" ति? गच्छ त्वं, नागसेन, अन्तरामग्गे पिण्डपातं लभिस्ससि सालीनं ओदनं विगतकाळकं अनेकसूपं अनेकब्यञ्जनं" ति।

"एवं भन्ते" ति खो आयस्मा नागसेनो आयस्मन्तं अस्सगुत्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पत्तचीवरमादाय येन पाटलिपुत्तं तेन चारिकं पक्कामि।

१४. सेट्ठिस्स अभिधम्मदेसनं

१८. तेन खो पन समयेन पाटलिपुत्तको सेट्ठि पञ्चहि सकटसतेहि पाटलिपुत्त-गाममग्गं पटिपन्नो होति। अद्दसा खो पाटलिपुत्तको सेट्ठि आयस्मन्तं नागसेनं दूरतो व आगच्छन्तं। दिस्वान येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नागसेनं अभिवादेत्वा–"कुहिं गच्छसि ताता"? ति आह। "पाटलि-पुत्तं, गहपती" ति। "साधु, तात, मयं पि पाटलिपुत्तं गच्छाम। अम्हेहि सद्धिं सुखं गच्छथा" ति।

अथ खो पाटलिपुत्तको सेट्ठि आयस्मतो नागसेनस्स इरियापथे पसीदित्वा आयस्मन्तं नागसेनं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेत्वा सम्पवा-रेत्वा आयस्मन्तं नागसेनं भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं अञ्ञतरं नीचं आसनं गहेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो पाटलिपुत्तको सेट्ठि आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"किनामोसि त्वं, ताता" ति? "अहं गहपति, नागसेनो नामा" ति। "जानासि खो त्वं, तात, बुद्धवचनं नामा" ति? "जानामि खो हं, गहपति, अभिधम्मपदानी" ति।

"लाभा नो, तात। सुलद्धं नो, तात। अहं पि खो, तात, आभिधम्मिको, त्वं पि आभिधम्मिको। भण, तात, अभिधम्मपदानी" ति। अथ खो आयस्मा नागसेनो पाटलिपुत्तकस्स सेट्ठिस्स अभिधम्मं देसेसि। देसेन्ते येव पाटलिपुत्तकस्स सेट्ठिस्स विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि—"यं किञ्चि समुदयधम्मं सब्बं तं निरोधधम्मं" ति।

अथ खो पाटलिपुत्तको सेट्ठि पञ्चमत्तानि सकटसतानि पुरतो उय्योजेत्वा सयं पच्छतो गच्छन्तो पाटलिपुत्तस्स अविदूरे द्वेधापथे ठत्वा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"अयं खो, तात नागसेन, असोकारामस्स मग्गो। इदं खो, तात, अम्हाकं कम्बलरतनं सोळसहत्थं आयामेन, अट्ठहत्थं वित्थारेन। पटिग्गण्हाहि खो, तात इमं कम्बलरतनं अनुकम्पं उपादाया" ति। पटिग्गहेसि खो आयस्मा नागसेनो तं कम्बलरतनं अनुकम्पं उपादाय। अथ खो पाटलिपुत्तको सेट्ठि अत्त-मनो उदग्गो पमुदितो पीतिसोमनस्सजातो आयस्मन्तं नागसेनं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि।

१५. नागसेनस्स अरहत्तभावो

१९. अथ खो आयस्मा नागसेनो येनासोकारामो येनायस्मा धम्मरक्खितो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं धम्मरक्खितं अभिवादेत्वा अत्तनो आगतकरणं कथेत्वा आयस्मतो धम्मरक्खितस्स सन्तिके तेपिटकं बुद्धवचनं एकेनेव उद्देसेन तीहि मासेहि ब्यञ्जनतो परियापुणित्वा पुन तीहि मासेहि अत्थतो मनसाकासि।

अथ खो आयस्मा धम्मरक्खितो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"सेय्यथापि, नागसेन, गोपालको गावो रक्खति, अञ्ञे गोरसं परिभुञ्जन्ति; एवमेव खो, त्वं नागसेन, पुथुज्जनो तेपिटकं बुद्धवचनं धारेन्तो पि न भागी सामञ्ञस्सा" ति। "होतु, भन्ते, अलं एत्तकेना" ति। तेनेव दिवसभागेन तेन रत्तिभागेन सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणि ! सह सच्चप्पटिवेधेन आयस्मतो नागसेनस्स सब्बे देवा साधुकारमदंसु, पथवी उन्नदि, ब्रह्मानो अप्फोटेसुं, दिब्बानि चन्दन-चुण्णानि दिब्बानि च मन्दारवपुप्फानि अभिप्पवस्सिंसु।

१६. नागसेनस्स सन्तिके दूतपेसनं

२०. तेन खो पन समयेन कोटिसता अरहन्तो हिमवन्ते पब्बते रक्खिततले सन्निपतित्वा आयस्मतो नागसेनस्स सन्तिके दूतं पाहेसुं—"आगच्छतु नागसेनो ! दस्सनकामा मयं नागसेनं" ति। अथ खो आयस्मा नागसेनो दूतस्स वचनं सुत्वा असोकारामे अन्तरहितो हिमवन्ते पब्बते रक्खिततले कोटिसतानं अरहन्तानं पुरतो पातुरहोसि।

अथ खो कोटिसता अरहन्तो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोचुं–"एसो खो, नागसेन, मिलिन्दो राजा भिक्खुसङ्घं विहेठेति वादप्पटिवादेन पञ्हपुच्छाय। साधु, नागसेन, गच्छ त्वं मिलिन्दं राजानं दमेही" ति। "तिट्ठतु, भन्ते, एको मिलिन्दो राजा। सचे, भन्ते, सकलजम्बुद्दीपे राजानो आगन्त्वा मं पञ्हं पुच्छेय्युं सब्बं तं विस्सज्जेत्वा सम्पदालेस्सामि। गच्छथ वो, भन्ते, अच्छम्भिता सागलनगरं" ति। अथ खो थेरा भिक्खू सागलनगरं कासावप्पज्जोतं इसिवात-पटिवातं अकंसु।

१७. आयुपालेन सद्धिं मिलिन्दस्स समागमो

२१. तेन खो पन समयेन आयस्मा आयुपालो सङ्खेय्यपरिवेणे पटिवसति। अथ खो मिलिन्दो राजा अमच्चे एतदवोच–"रमणीया वत, भो, दोसिना रत्ति। कं नु खज्ज समणं वा ब्राह्मणं वा उपसङ्कमेय्याम साकच्छाय पञ्हपुच्छनाय, को मया सद्धिं सल्लपितुं उस्सहति, कङ्खं पटिविनेतुं" ति ? एवं वुत्ते पञ्चसता योनका राजानं मिलिन्दं एतदवोचुं–"अत्थि, महाराज, आयुपालो नाम थेरो तेपिटको बहुस्सुतो आगतागमो। सो एतरहि सङ्खेय्यपरिवेणे पटिवसति। गच्छ त्वं, महाराज, आयस्मन्तं आयुपालं पञ्हं पुच्छस्सू" ति। "तेन हि भणे, भदन्तस्स आरोचेथा" ति।

अथ खो नेमित्तिको आयस्मतो आयुपालस्स सन्तिके दूतं पाहेसि–"राजा, भन्ते, मिलिन्दो आयस्मन्तं आयुपालं दस्सनकामो" ति। आयस्मा पि खो आयुपालो एवमाह–"तेन हि आगच्छतू" ति। अथ खो मिलिन्दो राजा पञ्चमत्तेहि

योनकसतेहि परिवुतो रथवरमारुय्ह येन सङ्खेय्यपरिवेणं येनायस्मा आयुपालो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मता आयुपालेन सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं आयुपालं एतदवोच–"किमत्थिया, भन्ते आयुपाल, तुम्हाकं पब्बज्जा ? को च तुम्हाकं परमत्थो" ति ? थेरो आह–"धम्मचरियसमचरियत्था खो, महाराज, पब्बज्जा, सामञ्ञफलं खो पन अम्हाकं परमत्थो" ति। "अत्थि पन, भन्ते, कोचि गिही पि धम्मचारी, समचारी" ति ? "आम, महाराज, अत्थि गिही पि धम्मचारी समचारी। भगवति खो, महाराज, बाराणसियं इसिपतने मिगदाये धम्मचक्कं पवत्तेन्ते अट्ठारसन्नं ब्रह्मकोटीनं धम्माभिसमयो अहोसि। देवतानं पन धम्माभिसमयो गणनपथं वीतिवत्तो। सब्बे ते गिहिभूता, न पब्बजिता।

"पुन च परं, महाराज, भगवतो खो महासमयसुत्तन्ते देसियमाने, महामङ्गलसुत्तन्ते देसियमाने, समचित्तपरियायसुत्तन्ते देसियमाने, राहुलोवाद-सुत्तन्ते देसियमाने, पराभवसुत्तन्ते देसियमाने गणनपथं वीतिवत्तानं देवतानं महाभिसमयो अहोसि। सब्बे ते गिहिभूता, न पब्बजिता" ति।

"तेन हि, भन्ते आयुपाल, निरत्थिका तुम्हाकं पब्बज्जा। पुब्बे कतस्स पापकम्मस्स निस्सन्देन समणा सक्यपुत्तिया पब्बजन्ति, धुतङ्गानि च परिहरन्ति। ये खो ते, भन्ते आयुपाल, भिक्खू एकासनिका, नून ते पुब्बे परेसं भोगहारका चोरा। ते परेसं भोगे अच्छिन्दित्वा तस्स कम्मस्स निस्सन्देन एतरहि एकासनिका भवन्ति। न लभन्ति कालेन कालं परिभुञ्जितुं। नत्थि तेसं सीलं, नत्थि तपो, नत्थि ब्रह्मचरियं। ये खो पन ते, भन्ते आयुपाल, भिक्खू अब्भो-कासिका, नून ते पुब्बे गामघातका चोरा। ते परेसं गेहानि विनासेत्वा तस्स कम्मस्स निस्सन्देन एतरहि अब्भोकासिका भवन्ति। न लभन्ति सेनासनानि परिभुञ्जितुं। नत्थि तेसं सीलं, नत्थि तपो, नत्थि ब्रह्मचरियं। ये खो पन ते, भन्ते आयुपाल, भिक्खू नेसज्जिका, नून ते पुब्बे पन्थदूसका चोरा। ते परेसं पथिके जने गहेत्वा बन्धित्वा निसीदापेत्वा तस्स कम्मस्स निस्सन्देन एतरहि नेसज्जिका भवन्ति। न लभन्ति सेय्यं कप्पेतुं। नत्थि तेसं सीलं, नत्थि तपो, नत्थि ब्रह्मचरियं" ति आह।

एवं वुत्ते आयस्मा आयुपालो तुण्ही अहोसि। न किञ्चि पटिभासि। अथ खो पञ्चसता योनका राजानं मिलिन्दं एतदवोचुं–"पण्डितो, महाराज, थेरो। अपि च खो अविसारदो, न किञ्चि पटिभासती" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं आयुपालं तुण्हीभूतं दिस्वा अप्फोटेत्वा उक्कुट्ठिं करवा योनके एतदवोच–"तुच्छो बत, भो, जम्बुदीपो ! पलापो बत,

भो, जम्बुदीपो ! नत्थि कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा यो मया सद्धिं सल्लपितुं उस्सहति, कङ्खं पटिविनेतुं" ति ।

१८. नागसेनस्स सागलनगरे आगमनं

२२. अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो सब्बं तं परिसं अनुविलोकेन्तस्स अभीते अमङ्कुभूते योनके दिस्वा एतदहोसि–"निस्संसयं अत्थि मञ्ञे अञ्ञो कोचि पण्डितो भिक्खु यो मया सद्धिं सल्लपितुं उस्सहति, योनका न मङ्कुभूता" ति । अथ खो मिलिन्दो राजा योनके एतदवोच–"अत्थि, भणे, अञ्ञो कोचि पण्डितो भिक्खु यो मया सद्धिं सल्लपितुं उस्सहति, कङ्खं पटिविनेतुं" ति ?

तेन खो पन समयेन आयस्मा नागसेनो समणगणपरिवुतो सङ्घी गणी गणाचरियो ञातो यसस्सी साधुसम्मतो बहुजनस्स पण्डितो ब्यत्तो मेधावी निपुणो विञ्ञू विभावी विनीतो विसारदो बहुस्सुतो तेपिटको वेदगू पभिन्नबुद्धिमा आगतागमो पभिन्नपटिसम्भिदो नवङ्गसत्थुसासने परियत्तिधरो पारमिप्पत्तो जिनवचने धम्मत्थदेसनापटिवेधकुसलो अक्खयविचित्रपटिभानो चित्रकथी कल्याणवाक्करणो दुरासदो दुप्पसहो दुरुत्तरो दुरावरणो दुन्निवारयो, सागरो विय अक्खोभो, गिरिराजा विय निच्चलो, रणञ्जहो तमोनुदो पभङ्करो महाकथी परगणिगणमथनो परितित्थियमद्दनो भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं राजूनं राजमहामत्तानं सक्कतो गरुकतो मानितो पूजितो अपचितो लाभी चीवर-पिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं लाभग्ग-यसग्गप्पत्तो, वुद्धानं विञ्ञूनं सोतावधानेन समन्नागतानं सन्दस्सेन्तो नवङ्गं जिनसासनरतनं, उपदिसन्तो धम्ममग्गं, धारेन्तो धम्मप्पज्जोतं, उस्सापेन्तो धम्मयूपं, यजन्तो धम्मयागं, पग्गण्हन्तो धम्मद्धजं, उस्सापेन्तो धम्मकेतुं, धमेन्तो धम्मसङ्खं, आहनन्तो धम्मभेरिं, नदन्तो सीहनादं, गज्जन्तो इन्दगज्जितं, मधुरगिरगज्जितेन ञाणवरविज्जुजालपरिवेठितेन करुणाजलभरितेन महता धम्मामतमेघेन सकल-लोकमभितप्पयन्तो, गामनिगमराजधानीसु चारिकं चरमानो अनुपुब्बेन सागल-नगरं अनुप्पत्तो होति ।

तत्र सुदं आयस्मा नागसेनो असीतिया भिक्खुसहस्सेहि सद्धिं सङ्खेय्यपरिवेणे पटिवसति । तेनाहु पोराणा–

"बहुस्सुतो चित्रकथी, निपुणो च विसारदो ।
सामयिको च कुसलो, पटिभाने च कोविदो ॥

"ते च तेपिटका भिक्खू, पञ्चनेकायिका पि च ।
चतुनेकायिका चेव, नागसेनं पुरक्खरुं ॥

'गम्भीरपञ्ञो मेधावी, मग्गामग्गस्स कोविदो।
उत्तमत्थं अनुप्पत्तो, नागसेनो विसारदो॥
"तेहि भिक्खूहि परिवुतो, निपुणेहि सच्चवादिहि।
चरन्तो गामनिगमं, सागलं उपसङ्कमि॥
"सङ्ख्येय्यपरिवेणस्मिं, नागसेनो तदा वसि।
कथेति सो मनुस्सेहि, पब्बते केसरी यथा" ति॥

१९. नागसेनेन मिलिन्दस्स पठमसमागमो

२३. अथ खो देवमन्तियो राजानं मिलिन्दं एतदवोच–"आगमेहि त्वं, महाराज। अत्थि, महाराज, नागसेनो नाम थेरो पण्डितो ब्यत्तो मेधावी विनीतो विसारदो बहुस्सुतो चित्रकथी कल्याणपटिभानो अत्थधम्मनिरुत्तिपटिभानपटिसम्भिदासु पारमिप्पत्तो। सो एतरहि सङ्ख्येय्यपरिवेणे पटिवसति। गच्छ त्वं, महाराज, आयस्मन्तं नागसेनं पञ्हं पुच्छस्सु। उस्सहति सो तया सद्धिं सल्लपितुं, कङ्खं पटिविनेतुं" ति। अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो सहसा 'नागसेनो' ति सद्दं सुत्वाव अहुदेव भयं, अहुदेव छम्भितत्तं, अहुदेव लोमहंसो। अथ खो मिलिन्दो राजा देवमन्तियं एतदवोच–"उस्सहति सो नागसेनो भिक्खु मया सद्धिं सल्लपितुं" ति? "उस्सहति, महाराज, अपि इन्द्र-यम-वरुण-कुवेर-प्रजापति-सुयाम-सन्तुसित-लोकपालेहि पि पितुपितामहेन महाब्रह्मुना पि सद्धिं सल्लपितुं, किमङ्ग, पन मनुस्सभूतेना" ति!

अथ खो मिलिन्दो राजा देवमन्तियं एतदवोच–"तेन हि त्वं, देवमन्तिय, भदन्तस्स सन्तिके दूतं पेसेही" ति। "एवं, देवा" ति खो देवमन्तियो आयस्मतो नागसेनस्स सन्तिके दूतं पाहेसि–"राजा, भन्ते, मिलिन्दो आयस्मन्तं दस्सनकामो" ति। आयस्मा पि खो नागसेनो एवमाह–"तेन हि आगच्छतू" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा पञ्चमत्तेहि योनकसतेहि परिवुतो रथवरमारुय्ह महता बलकायेन सद्धिं येन सङ्ख्येय्यपरिवेणं येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन आयस्मा नागसेनो असीतिया भिक्खुसहस्सेहि सद्धिं मण्डलमाले निसिन्नो होति। अद्दसा खो मिलिन्दो राजा आयस्मतो नागसेनस्स परिसं दूरतो व। दिस्वान देवमन्तियं एतदवोच–"कस्सेसा, देवमन्तिय, महती परिसा" ति? "आयस्मतो खो, महाराज, नागसेनस्स परिसा" ति।

अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो आयस्मतो नागस्सेनस्स परिसं दूरतो व दिस्वा अहुदेव भयं, अहुदेव छम्भितत्तं, अहुदेव लोमहंसो। अथ खो मिलिन्दो राजा खग्गपरिवारितो विय गजो, गरुळपरिवारितो विय नागो, अजगरपरिवारितो विय कोत्थुको, महिंसपरिवुतो विय अच्छो, नागानुबन्धो विय मण्डूको, सद्दूला-

नुबद्धो विय मिगो, अहितुण्डिकसमागतो विय पन्नगो, मज्जारसमागतो विय उन्दूरो, भूतवेज्जसमागतो विय पिसाचो, राहुमुखगतो विय चन्दो, पन्नगो विय पेळन्तरगतो, सकुणो विय पञ्जरन्तरगतो, मच्छो विय जालन्तरगतो, वाळवनमनुप्पविट्ठो विय पुरिसो, वेस्सवणापराधिको विय यक्खो, परिक्खीणायुको विय देवपुत्तो, भीतो उब्बिग्गो उत्रस्तो संविग्गो लोमहट्ठजातो विमनो दुम्मनो भन्तचित्तो विपरिणतमानसो "मा मं अयं परियोजनो परिभवी" ति सतिं उपट्ठपेत्वा देवमन्तियं एतदवोच—"मा खो त्वं, देवमन्तिय, आयस्मन्तं नागसेनं मय्हं आचिक्खेय्यासि। अनक्खातञ्ञेवाहं नागसेनं जानिस्सामी" ति। "साधु, महाराज, त्वञ्ञेव जानाही" ति।

तेन खो पन समयेन आयस्मा नागसेनो तस्सा भिक्खुपरिसाय पुरतो चत्तालीसाय भिक्खुसहस्सानं नवकतरो होति; पच्छतो चत्तालीसाय भिक्खुसहस्सानं वुड्ढतरो। अथ खो मिलिन्दो राजा सब्बं तं भिक्खुसङ्घं पुरतो च पच्छतो च मज्झतो च अनुविलोकेन्तो अद्दसा खो आयस्मन्तं नागसेनं दूरतो व भिक्खुसङ्घस्स मज्झे निसिन्नं केसरसीहं विय विगतभयभेरवं विगतलोमहंसं विगतभयसारज्जं। दिस्वान आकारेनेव अञ्ञासि—"एसो खो एत्थ नागसेनो" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा देवमन्तियं एतदवोच—"एसो खो, देवमन्तिय, आयस्मा नागसेनो" ति?

"आम, महाराज, एसो खो नागसेनो। सुट्ठु खो त्वं, महाराज, नागसेनं अञ्ञासी" ति। ततो राजा तुट्ठो अहोसि—"अनक्खातो व मया नागसेनो अञ्ञातो" ति। अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो आयस्मन्तं नागसेनं दिस्वा व अहुदेव भयं, अहुदेव छम्भितत्तं, अहुदेव लोमहंसो। तेनाहु—

"चरणेन च सम्पन्नं, सुदन्तं उत्तमे दमे।
दिस्वा राजा नागसेनं, इमं वचनमब्रवि॥

"कथिता मया बहू दिट्ठा, साकच्छा ओसटा बहू।
न तादिसं भयं आसि, अज्ज तासो यथा मम॥

"निस्संसयं पराजयो, मम अज्ज भविस्सति।
जयो च नागसेनस्स, यथा चित्तं न सण्ठितं" ति॥

बाहिरकथा निट्ठिता।

मिलिन्दपञ्हे

(क) लक्खणपञ्हो

१. महावग्गो

१. रथूपमाय पुग्गलवीमंसनं

१. अथ खो मिलिन्दो राजा येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मता नागसेनेन सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। आयस्मापि खो नागसेनो पटिसम्मोदनीयेनेव मिलिन्दस्स रञ्ञो चित्तं आराधेसि।

अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"कथं भदन्तो ञायति—किंनामोसि, भन्ते" ति ? "नागसेनो ति खो अहं, महाराज, ञायामि। 'नागसेनो ति खो मं, महाराज, सब्रह्मचारी समुदाचरन्ति। अपि च मातापितरो नामं करोन्ति—'नागसेनो' ति वा 'सूरसेनो' ति वा 'वीरसेनो' ति वा 'सीहसेनो' ति वा। अपि च खो, महाराज, सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नाममत्तं यदिदं नागसेनो' ति। न हेत्थ पुग्गलो उपलब्भती" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा एवमाह–"सुणन्तु मे, भोन्तो पञ्चसता योनका, असीतिसहस्सा च भिक्खू ! अयं नागसेनो एवमाह–'न हेत्थ पुग्गलो उपलब्भती' ति। कल्लं नु खो तदभिनन्दितु" ति ? अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"सचे, भन्ते नागसेन, पुग्गलो नूपलब्भति, को चरहि तुम्हाकं चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं देति ? को तं परिभुञ्जति ? को सीलं रक्खति ? को भावनमनुयुञ्जति ? को मग्गफलनिब्बानानि सच्छिकरोति ? को पाणं हनति ? को अदिन्नं आदियति ? को कामेसु मिच्छाचारं चरति ? को मुसा भणति ? को मज्जं पिवति ? को पञ्चानन्तरियकम्मं करोति ? तस्मा नत्थि कुसलं, नत्थि अकुसलं, नत्थि कुसलाकुसलानं कम्मानं कत्ता वा कारेता वा, नत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको। सचे, भन्ते नागसेन, यो तुम्हे मारेति, नत्थि तस्सापि पाणातिपातो। तुम्हाकं पि, भन्ते नागसेन, नत्थि आचरियो, नत्थि उपज्झायो, नत्थि उपसम्पदा। 'नागसेनो ति मं, महाराज, सब्रह्मचारो समुदाचरन्ती' ति यं वदेसि, कतमो एत्थ नागसेनो" ?

"किन्नु खो, भन्ते केसा नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "लोमा नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति।

"नखा···दन्ता···तचो···मंसं···न्हारु···अट्ठि···अट्ठिमिञ्जं···वक्कं······ हदयं···यकनं···किलोमकं···पिहकं···पप्फासं···अन्तं···अन्तगुणं···उदरियं···

करीसं⋯पित्तं⋯सेम्हं⋯पुब्बो⋯लोहितं⋯सेदो⋯मेदो⋯अस्सु⋯वसा⋯खेळो⋯सिङ्घाणिका⋯लसिका⋯मुत्तं⋯मत्थके मत्थलुङ्गं नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "किन्नु खो, भन्ते, रूपं नागसेनो" ति? "न हि, महाराजा" ति। "वेदना नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "सञ्ञा नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा' ति। "सङ्खारा नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "विञ्ञाणं नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "किं पन, भन्ते, रूपवेदनासञ्ञासङ्खारविञ्ञाणं नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "किं पन, भन्ते, अञ्ञत्र रूपवेदनासञ्ञासङ्खारविञ्ञाणं नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "तमहं, भन्ते, पुच्छन्तो पुच्छन्तो न पस्सामि नागसेनं। नागसेनसद्दो येव नु खो, भन्ते, नागसेनो" ति ? "न हि, महाराजा" ति। "को पनेत्थ नागसेनो ? अलिकं त्वं, भन्ते, भाससि मुसावादं, नत्थि नागसेनो" ति ?

अथ खो आयस्मा नागसेनो मिलिन्दं राजानं एतदवोच–"त्वं खोसि, महाराज, खत्तियसुखुमालो अच्चन्तसुखुमालो। तस्स ते, महाराज, मज्झन्हिकसमयं तत्ताय भूमिया उण्हाय वालिकाय खराय सक्खरकथलिकाय मद्दित्वा पादेनागच्छन्तस्स पादा रुज्जन्ति, कायो किलमति, चित्तं उपहञ्ञति, दुक्खसहगतं कायविञ्ञाणं उप्पज्जति। किन्नु खो त्वं पादेनागतोसि, उदाहु वाहनेना" ति ? "नाहं भन्ते, पादेनागच्छामि। रथेनाहं आगतोस्मी" ति।

"सचे त्वं, महाराज, रथेनागतोसि, रथं मे आरोचेहि। किन्नु खो, महाराज, ईसा रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "अक्खो रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "चक्कानि रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "रथपञ्जरं रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। रथदण्डको रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "युगं रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "रस्मियो रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "पतोदलट्ठि रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किन्नु खो, महाराज, ईसा-अक्ख-चक्क-रथपञ्जर-रथदण्ड-युग-रस्मि-पतोदा रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किं पन, महाराज, अञ्ञत्र ईसाअक्खचक्करथपञ्जररथदण्डयुगरस्मिपतोदा रथो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "तमहं, महाराज पुच्छन्तो पुच्छन्तो न पस्सामि रथं। रथसद्दो येव नु खो, महाराज, रथो" ति ? "न हि भन्ते" ति। "को पनेत्थ रथो ? अलिकं त्वं, महाराज, भाससि मुसावादं, नत्थि रथो। त्वंसि, महाराज सकलजम्बुदीपे अग्गराजा। कस्स पन त्वं भायित्वा मुसावादं भाससि ? सुणन्तु मे, भोन्तो पञ्चसता योनका, असीतिसहस्सा च भिक्खू ! अयं मिलिन्दो राजा एवमाह–'रथेनाहं आगतोस्मी' ति। 'सचे त्वं, महाराज, रथेनागतोसि, रथं मे आरोचेही' ति वुत्तो समानो रथं न सम्पादेति। कल्लं नु खो तदभिनन्दितुं" ति ?

एवं वुत्ते पञ्चसता योनका आयस्मतो नागसेनस्स साधुकारं दत्वा मिलिन्दं राजानं एतदवोचुं—"इदानि खो त्वं, महाराज, सक्कोन्तो भासस्सू" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नासेनं एतदवोच—"नाहं, भन्ते, नागसेन, मुसा भणामि। ईसं च पटिच्च, चक्कानि च पटिच्च, रथपञ्जरं च पटिच्च, रथदण्डकं च पटिच्च 'रथो' ति सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नाममत्तं पवत्तती" ति।

"साधु खो त्वं, महाराज, रथं जानासि। एवमेव खो, महाराज मय्हं पि केसे च पटिच्च, लोमे च पटिच्च····मत्थके मत्थलुङ्गं च पटिच्च, वेदनं च पटिच्च, सञ्ञं च पटिच्च, सङ्खारे च पटिच्च, विञ्ञाणं च पटिच्च, 'नागसेनो' ति सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नाममत्तं पवत्तति। परमत्थतो पनेत्थ पुग्गलो नूपलब्भति। भासितं पेतं, महाराज, वजिराय भिक्खुनिया भगवतो सम्मुखा—

यथा हि अङ्गसम्भारा, होति सद्दो रथो इति।
एवं खन्धेसु सन्तेसु, होति सत्तो ति सम्मुति" ति॥

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं भन्ते नागसेन! अतिचित्रानि पञ्हपटिभानानि विसज्जितानि। यदि बुद्धो तिट्ठेय्य साधुकारं ददेय्य—'साधु साधु, नागसेन, अतिचित्रानि पञ्हपटिभानानि विसज्जितानी" ति।

२. वस्सगणनपञ्हो

२. "कतिवस्सो सि त्वं, भन्ते नागसेना" ति? "सत्तवस्सो हं, महाराजा" ति। "के ते, भन्ते, सत्त? त्वं वा सत्त, गणना वा सत्ता" ति?

तेन खो पन समयेन मिलिन्दस्स रञ्ञो सब्बाभरणपटिमण्डितस्स अलङ्कतपटियत्तस्स पथवियं छाया दिस्सति, उदकमणिके च छाया दिस्सति। अथ खो आयस्मा नागसेनो मिलिन्दं राजानं एतदवोच—"अयं ते, महाराज, छाया पथवियं उदकमणिके च दिस्सति। किं पन, महाराज, त्वं वा राजा, छाया वा राजा" ति? "अहं, भन्ते नागसेन, राजा, नायं छाया राजा। मं पन निस्साय छाया पवत्तती" ति। "एवमेव खो, महाराज, वस्सानं गणना सत्त। न पनाहं सत्त। मं पन निस्साय सत्त पवत्तति छायूपमं, महाराजा" ति। "अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं भन्ते नागसेन! अतिचित्रानि पञ्हपटिभानानि विसज्जितानी" ति।

३. वीमंसनपञ्हो

३. राजा आह—"भन्ते, नागसेन, सल्लपिस्ससि मया सद्धिं" ति? "सचे त्वं, महाराज, पण्डितवादं सल्लपिस्ससि, सल्लपिस्सामि। सचे पन राजवादं सल्लपिस्ससि, न सल्लपिस्सामी" ति। "कथं, भन्ते नागसेन पण्डिता सल्लपन्तो" ति?

"पण्डितानं खो, महाराज, सल्लापे आवेठनं पि कयिरति, निब्बेठनं पि कयिरति, निग्गहो पि कयिरति, परिकम्मं पि कयिरति, विस्सासोपि कयिरति, पटिविस्सासो पि कयिरति। न च तेन पण्डिता कुप्पन्ति। एवं खो, महाराज, पण्डिता सल्लपन्ती" ति। "कथं पन, भन्ते, राजानो सल्लपन्ती" ति? "राजानो खो, महाराज, सल्लापे एकं वत्थुं पटिजानन्ति। यो तं वत्थुं विलोमेति, तस्स दण्डं आणापेन्ति—'इमस्स दण्डं पणेथा' ति। एवं खो, महाराज, राजानो सल्लपन्ती" ति। "पण्डितवादाहं, भन्ते, सल्लपिस्सामि, नो राजवादं; विस्सत्थो भदन्तो सल्लपितुं। यथा भिक्खुना वा सामणेरेन वा उपासकेन वा आरामिकेन वा सद्धिं सल्लपति, एवं विस्सत्थो भदन्तो सल्लपितु मा भायतू" ति। सुट्ठु, महाराजा" ति थेरो अब्भनुमोदि। राजा आह–"भन्ते नागसेन, पुच्छिस्सामी" ति। "पुच्छ, महाराजा" ति। "पुच्छितोसि मे, भन्ते" ति। "विसज्जितं, महाराजा" ति। "किं पन, भन्ते, तया विसज्जितं" ति? "किं पन, महाराज, तया पुच्छितं" ति!

४. अनन्तकायपञ्हो

४. अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो एतदहोसि–"पण्डितो खो अयं भिक्खु, पटिबलो मया सद्धिं सल्लपितुं। बहुकानि च मे ठानानि पुच्छितब्बानि भविस्सन्ति। याव अपुच्छितानि येव तानि ठानानि भविस्सन्ति। अथ सुरियो अत्थं गमिस्सति, यन्नूनाहं स्वे अन्तेपुरे सल्लपेय्यं" ति। अथ खो राजा देवमन्तियं एतदवोच–"तेन हि त्वं, देवमन्तिय, भदन्तस्स आरोचेय्यासि—'स्वे अन्तेपुरे रञ्ञा सद्धिं सल्लापो भविस्सती" ति। इदं वत्वा मिलिन्दो राजा उट्ठायासना थेरं नागसेनं आपुच्छित्वा रथं अभिरूहित्वा 'नागसेनो, नागसेनो' ति सज्झायं करोन्तो पक्कामि। अथ खो देवमन्तियो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"राजा, भन्ते, मिलिन्दो एवमाह–'स्वे, अन्तेपुरे रञ्ञा सद्धिं सल्लापो भविस्सती" ति। "सुट्ठू" ति थेरो अब्भनुमोदि।

अथ खो तस्सा रत्तिया अच्चयेन देवमन्तियो च अनन्तकायो च मङ्कुरो च सब्बदिन्नो च येन मिलिन्दो राजा तेनुपसङ्कमिंसु। उपसङ्कमित्वा राजानं मिलिन्दं एतदवोचुं—"आगच्छतु, महाराज, भदन्तो नागसेनो" ति? "आम, आगच्छतू" ति। "कित्तकेहि भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू" ति? "यत्तके भिक्खू इच्छति तत्तकेहि भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू" ति।

अथ खो सब्बदिन्नो आह—"आगच्छतु, महाराज, दसहि भिक्खूहि सद्धिं" ति? दुतियं पि खो राजा आह–"यत्तके भिक्खू इच्छति तत्तकेहि भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू" ति। दुतियं पि खो सब्बदिन्नो आह–"आगच्छतु, महाराज, दसहि भिक्खूहि सद्धिं" ति? ततियं पि खो राजा आह–"यत्तके भिक्खू इच्छति तत्तकेहि

भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू" ति। ततियं पि खो सब्बदिन्नो आह—"आगच्छतु, महाराज, दसहि भिक्खूहि सद्धिं" ति। "सब्बो पनायं सक्कारो पटियादितो। अहं भणामि—'यत्तके भिक्खू इच्छति, तत्तकेहि भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू' ति। अयं, भणे, सब्बदिन्नो अञ्ञथा भणति। किन्नु मयं नप्पटिबला भिक्खूनं भोजनं दातुं" ति! एवं वुत्ते सब्बदिन्नो मङ्कु अहोसि।

अथ खो देवमन्तियो च अनन्तकायो च मङ्कुरो च येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमिंसु। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोचुं—"राजा, भन्ते, मिलिन्दो एवमाह—'यत्तके भिक्खू इच्छति तत्तकेहि भिक्खूहि सद्धिं आगच्छतू'" ति। अथ खो आयस्मा नागसेनो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय असीतिया भिक्खुसहस्सेहि सद्धिं सागलं पाविसि।

अथ खो अनन्तकायो आयस्मन्तं नागसेनं निस्साय गच्छन्तो आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि—'नागसेनो' ति, कतमो एत्थ नागसेनो" ति? थेरो आह—"को पनेत्थ 'नागसेनो' ति मञ्ञसी" ति? "यो सो, भन्ते, अब्भन्तरे वातो जीवो पविसति च निक्खमति च सो 'नागसेनो' ति मञ्ञामी" ति। "यदि पनेसो वातो निक्खमित्वा नप्पविसेय्य, पविसित्वा न निक्खमेय्य, जीवेय्य नु खो सो पुरिसो" ति? "न हि, भन्ते" ति। "ये पनिमे सङ्खधमका सङ्खं धमेन्ति, तेसं वातो पुन पविसती" ति? "न हि, भन्ते" ति। "ये पनिमे वंसधमका वंसं धमेन्ति, तेसं वातो पुन पविसती" ति। "न हि, भन्ते" ति। "ये पनिमे सिङ्गधमका सिङ्गं धमेन्ति, तेसं वातो पुन पविसती" ति? "न हि, भन्ते" ति। "अथ किस्स पन ते न मरन्ति" ति? "नाहं पटिबलो तया वादिना सद्धिं सल्लपितुं! साधु, भन्ते, अत्थं जप्पेही" ति। "नेसो जीवो। अस्सासपस्सासा नामेते कायसङ्खारा" ति। थेरो अभिधम्मकथं कथेसि। अथ अनन्तकायो उपासकत्तं पटिवेदेसी ति।

५. पब्बज्जपञ्हो

५. अथ खो आयस्मा नागसेनो येन मिलिन्दस्स रञ्ञो निवेसनं तेनुपसङ्कमि। उपङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं सपरिसं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेत्वा सम्पवारेत्वा एकमेकं भिक्खुं एकमेकेन दुस्सयुगेन अच्छादेत्वा आयस्मन्तं नागसेनं तिचीवरेन अच्छादेत्वा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"भन्ते नागसेन, दसहि भिक्खूहि सद्धिं इध निसीदथ, अवसेसा गच्छन्तू" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं विदित्वा अञ्ञतरं नीचं आसनं गहेत्वा एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा

आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच–"भन्ते नागसेन, किम्हि होति कथासल्लापो" ति ? "अत्थेन मयं, महाराज, अत्थिका। अत्थे होतु कथासल्लापो" ति। राजा आह–"किमत्थिया, भन्ते नागसेन, तुम्हाकं पब्बज्जा, को च तुम्हाकं परमत्थो" ति ? थेरो आह–"किं ति, महाराज, 'इदं दुक्खं निरुज्झेय्य, अञ्ञं च दुक्खं न उप्पज्जेय्या' ति एतदत्था, महाराज, अम्हाकं पब्बज्जा। अनुपादा परिनिब्बानं खो पन अम्हाकं परमत्थो" ति।

"किं पन, भन्ते नागसेन, सब्बे एतदत्थाय पब्बजन्ती" ति ? 'न हि महाराज। केचि एतदत्थाय पब्बजन्ति, केचि राजाभिनीता पब्बजन्ति, केचि चोराभिनीता पब्बजन्ति, केचि इणट्टा पब्बजन्ति, केचि आजीवकत्थाय पब्बजन्ति। ये पन सम्मा पब्बजन्ति, ते एतदत्थाय पब्बजन्ती" ति।

"त्वं पन, भन्ते, एतदत्थाय पब्बजितोसी" ति ? "अहं खो, महाराज, दहरको सन्तो पब्बजितो। न जानामि 'इमस्स नामत्थाय पब्बजामी' ति। अपि च खो मे एवं अहोसि—'पण्डिता इमे समणा सक्यपुत्तिया ते मं सिक्खापेस्सन्ती' ति। स्वाहं तेहि सिक्खापितो जानामि च पस्सामि च—'इमस्स नामत्थाय पब्बज्जा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

६. पटिसन्धिपञ्हो

६. राजा आह–"भन्ते नागसेन, अत्थि कोचि मतो न पटिसन्दहती" ति ? थेरो आह–"कोचि पटिसन्दहति, कोचि न पटिसन्दहती" ति।

"को पटिसन्दहति, को न पटिसन्दहती" ति ? "सकिलेसो, महाराज, पटिसन्दहति, निक्किलेसो न पटिसन्दहती" ति। "त्वं पन, भन्ते नागसेन, पटिसन्दहिस्ससी" ति ? "सचे, महाराज, सउपादानो भविस्सामि पटिसन्दहिस्सामि। सचे अनुपादानो भविस्सामि, न पटिसन्दहिस्सामी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७ योनिसोमनसिकारपञ्हो

७. राजा आह–"भन्ते नागसेन, यो न पटिसन्दहति ननु सो योनिसो मनसिकारेन न पटिसन्दहती" ति ? "योनिसो च, महाराज, मनसिकारेन पञ्ञाय च अञ्ञेहि च कुसलेहि धम्मेही" ति। "ननु, भन्ते, योनिसो मनसिकारो येव पञ्ञा" ति ? "न हि, महाराज! अञ्ञा मनसिकारो, अञ्ञा पञ्ञा। इमेसं खो, महाराज, अजेळक-गोण-महिंस-ओट्ठ-गद्रभानं पि मनसिकारो अत्थि, पञ्ञा पन तेसं नत्थी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

८ मनसिकारलक्खणपञ्हो

८. राजा आह–"किंलक्खणो, भन्ते नागसेन, मनसिकारो; किंलक्खणा पञ्ञा" ति ? "ऊहनलक्खणो खो, महाराज, मनसिकारो; छेदनलक्खणा पञ्ञा" ति। "कथं ऊहनलक्खणो मनसिकारो, कथं छेदनलक्खणा पञ्ञा—ओपम्मं करोही" ति ? "जानासि त्वं, महाराज, यवलापके" ति ? "आम, भन्ते, जानामी" ति। "कथं, महाराज, यवलावका यवं लुनन्ती" ति ? "वामेन, भन्ते, हत्थेन यवकलापं गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन दात्तं गहेत्वा दात्तेन छिन्दन्ती" ति।

"यथा, महाराज, यवलावको वामेन हत्थेन यवकलापं गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन दात्तं गहेत्वा यवं छिन्दति; एवमेव खो, महाराज, योगावचरो मनसिकारेन मानसं गहेत्वा पञ्ञाय किलेसे छिन्दति। एवं खो, महाराज, ऊहनलक्खणो मनसिकारो, एवं छेदनलक्खणा पञ्ञा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

९. सीललक्खणपञ्हो

९. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि—'अञ्ञेहि च कुसलेहि धम्मेही' ति, कतमे ते कुसला धम्मा" ति ? "सीलं, महाराज, सद्धा, विरियं, सति, समाधि—इमे ते कुसला धम्मा" ति।

"किंलक्खणं, भन्ते, सीलं" ति ? "पतिट्ठानलक्खणं, महाराज, सीलं सब्बेसं कुसलानं धम्मानं। इन्द्रिय-बल-बोज्झङ्ग-मग्गङ्ग-सतिपट्ठान-सम्मप्पधान-इद्धिपाद-झान-विमोक्ख-समाधिसमापत्तीनं सीलं पतिट्ठं। सीले पतिट्ठितो खो, महाराज, योगावचरो सीलं निस्साय सीले पतिट्ठाय पञ्चिन्द्रियानि भावेति–'सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं' ति; सब्बे कुसला धम्मा न परिहायन्ती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, ये केचि बीजगामभूतगामा वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जन्ति, सब्बे ते पथविं निस्साय पथवियं पतिट्ठाय वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जन्ति; एवमेव खो, महाराज, योगावचरो सीलं निस्साय सीले पतिट्ठाय पञ्चिन्द्रियानि भावेति–सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, ये केचि बलकरणीया कम्मन्ता कयिरन्ति, सब्बे ते पथविं निस्साय पथवियं पतिट्ठाय कयिरन्ति; एवमेव खो, महाराज, योगावचरो सीलं

निस्साय सीले पतिट्ठाय पञ्चिन्द्रियानि भावेति—सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्चिन्द्रियं" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, नगरवड्ढकी नगरं मापेतुकामो पठमं नगरट्ठानं सोधापेत्वा खाणुकण्टकं अपकड्ढापेत्वा भूमिं समं कारापेत्वा ततो अपरभागे वीथिचतुक्कसिङ्घाटकादिपरिच्छेदेन विभजित्वा नगरं मापेति; एवमेव खो, महाराज, योगावचरो सीलं निस्साय सीले पतिट्ठाय पञ्चिन्द्रियानि भावेति—सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोहीं" ति।

"यथा, महाराज, लङ्घको सिप्पं दस्सेतुकामो पथविं खणापेत्वा सक्खरकथलं अपकड्ढापेत्वा भूमिं समं कारापेत्वा मुदुकाय भूमिया सिप्पं दस्सेति; एवमेव खो महाराज, योगावचरो सीलं निस्साय सीले पतिट्ठाय पञ्चिन्द्रियानि भावेति-सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं' ति।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता--

'सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो, चित्तं पञ्ञं च भावयं।
आतापी निपको भिक्खु, सो इमं विजटये जटं' ति॥

'अयं पतिट्ठा धरणीव पाणिनं, इदं च मूलं कुसलाभिवड्ढिया।
मुखं चिदं सब्बजिनानुसासने, यो सीलक्खन्धो वरपातिमोक्खियो"' ति॥

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१० (क) सम्पसादनलक्खणसद्धापञ्हो

१०. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किंलक्खणा सद्धा" ति? "सम्पसादनलक्खणा च, महाराज, सद्धा सम्पक्खन्दनलक्खणा चा" ति। "कथं, भन्ते, सम्पसादनलक्खणा सद्धा" ति? "सद्धा खो, महाराज, उप्पज्जमाना नीवरणे विक्खम्भेति। विनीवरणं चित्तं होति अच्छं विप्पसन्नं अनाविलं। एवं खो, महाराज, सम्पसादनलक्खणा सद्धा" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, राजा चक्कवत्ती चतुरङ्गिनिया सेनाय सद्धिं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो परित्तं उदकं तरेय्य, तं उदकं हत्थीहि च अस्सेहि च रथेहि च पत्तीहि च खुभितं भवेय्य आविलं लुळितं कललीभूतं। उत्तिण्णो च राजा चक्कवत्ती मनुस्से आणापेय्य-'पानीयं, भणे, आहरथ, पिविस्सामी" ति। रञ्ञो च उदकप्पसादको मणि भवेय्य। 'एवं देवा' ति खो ते मनुस्सा रञ्ञो चक्कवत्तिस्स पटिस्सुत्वा तं उदकप्पसादकं मणिं उदके पक्खिपेय्युं। तस्मिं उदके पक्खित्तमत्ते

सङ्खसेवालपणकं विगच्छेय्य, कद्दमो च सन्निसीदेय्य, अच्छं भवेय्य उदकं विप्पसन्नं अनाविलं। ततो रञ्ञो चक्कवत्तिस्स पानीयं उपनामेय्युं-'पिवतु, देव, पानीयं' ति। यथा, महाराज, उदकं, एवं चित्तं दट्ठब्बं। यथा ते मनुस्सा, एवं योगावचरो दट्ठब्बो। यथा सङ्खसेवालपणकं कद्दमो च, एवं किलेसा दट्ठब्बा। यथा उदकप्पसादको मणि, एवं सद्धा दट्ठब्बा। यथा उदकप्पसादके मणिम्हि उदके पक्खित्तमत्ते सङ्खसेवालपणकं विगच्छेय्य, कद्दमो च सन्निसीदेय्य, अच्छं भवेय्य उदकं विप्पसन्नं अनाविलं; एवमेव खो, महाराज, सद्धा उप्पज्जमाना नीवरणे विक्खम्भेति, विनीवरणं चित्तं होति अच्छं विप्पसन्नं अनाविलं। एवं खो, महाराज, सम्पसादनलक्खणा सद्धा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

(ख) सम्पक्खन्दलक्खणसद्धापञ्हो

११. "कथं, भन्ते, सम्पक्खन्दनलक्खणा सद्धा" ति?

"यथा, महाराज, योगावचरो अञ्ञेसं चित्तं विमुत्तं पस्सित्वा सोतापत्तिफले वा सकदागामिफले वा अनागामिफले वा अरहत्ते वा सम्पक्खन्दति, योगं करोति अप्पत्तस्स पत्तिया, अनधिगतस्स अधिगमाय, असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय; एवं खो, महाराज, सम्पक्खन्दनलक्खणा सद्धा" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, उपरिपब्बते महामेघो अभिप्पवस्सेय्य। तं उदकं यथानिन्नं पवत्तमानं पब्बतकन्दरपदरसाखा परिपूरेत्वा नदिं परिपूरेय्य। सा उभतो कूलानि संविस्सन्दन्ती गच्छेय्य। अथ महाजनकायो आगन्त्वा तस्सा नदिया उत्तानतं वा गम्भीरतं वा अजानन्तो भीतो वित्थतो तीरे तिट्ठेय्य। अथञ्ञतरो पुरिसो आगन्त्वा अत्तनो थामं च बलं च सम्पस्सन्तो गाळ्हं कच्छं बन्धित्वा पक्खन्दित्वा तरेय्य। तं तिण्णं पस्सित्वा महाजनकायो पि तरेय्य। एवमेव खो, महाराज, योगावचरो अञ्ञेसं चित्तं विमुत्तं पस्सित्वा सोतापत्तिफले वा सकदागामिफले वा अनागामिफले वा अरहत्ते वा सम्पक्खन्दति, योगं करोति अप्पत्तस्स पत्तिया, अनधिगतस्स अधिगमाय, असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। एवं खो, महाराज, सम्पक्खन्दनलक्खणा सद्धा ति।

भासितं पेतं, महाराज, भगवता संयुत्तनिकायवरे—

'सद्धाय तरती ओघं, अप्पमादेन अण्णवं।
विरियेन दुक्खमच्चेति, पञ्ञाय परिसुज्झती' ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

११. विरियलक्खणपञ्हो

१२. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किंलक्खणं विरियं" ति ? "उपत्थम्भनलक्खणं, महाराज, विरियं। विरियुपत्थम्भिता सब्बे कुसला धम्मा न परिहायन्ती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, पुरिसो गेहे पतन्ते अञ्ञेन दारुना उपत्थम्भेय्य, उपत्थम्भितं सन्तं एवं तं गेहं न पतेय्य; एवमेव खो, महाराज, उपत्थम्भनलक्खणं विरियं। विरियुपत्थम्भिता सब्बे कुसला धम्मा न परिहायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, परित्तकं सेनं महती सेना भञ्जेय्य। ततो राजा अञ्ञमञ्ञं अनुस्सारेय्य, अनुपेसेय्य, अत्तनो परित्तकाय सेनाय बलं अनुपदं ददेय्य, ताय सद्धिं परित्तका सेना महतिं सेनं भञ्जेय्य; एवमेव खो, महाराज, उपत्थम्भनलक्खणं विरियं। विरियुपत्थम्भिता सब्बे कुसला धम्मा न परिहायन्ति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'विरियवा खो, भिक्खवे, अरियसावको अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति। सावज्जं पजहति, अनवज्जं भावेति। सुद्धमत्तानं परिहरती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१२. सतिलक्खणपञ्हो

१३. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किंलक्खणा सती" ति ? "अपिलापनलक्खणा, महाराज, सति, उपग्गण्हनलक्खणा चा" ति। "कथं, भन्ते, अपिलापनलक्खणा सती"ति ? "सति, महाराज, उप्पज्जमाना कुसलाकुसलसावज्जानवज्जहीनप्पणीतकण्हसुक्कसप्पटिभागअप्पटिभागधम्मे अपिलापेति—'इमे चत्तारो सतिपट्ठाना, इमे चत्तारो सम्मप्पधाना, इमे चत्तारो इद्धिपादा, इमानि पञ्चिन्द्रियानि, इमानि पञ्च बलानि, इमे सत्त बोज्झङ्गा, अयं अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, अयं समथो, अयं विपस्सना, अयं विज्जा, अयं विमुत्ती' ति; ततो योगावचरो सेवितब्बे धम्मे सेवति, असेवितब्बे धम्मे न सेवति; भजितब्बे धम्मे भजति, अभजितब्बे धम्मे न भजति। एवं खो, महाराज, अपिलापनलक्खणा सती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स भण्डागारिको राजानं चक्कवत्तिं सायम्पातं यसं सरापेति—'एत्तका, देव, ते हत्थी, एत्तका अस्सा, एत्तका रथा, एत्तका पत्ती, एत्तकं हिरञ्ञं, एत्तकं सुवण्णं, एत्तकं सापतेय्यं, तं देवो सरतू' ति रञ्ञो सापतेय्यं अपिलापेति, एवमेव खो, महाराज, सति उप्पज्जमाना कुसला-

कुसलसावज्जानवज्जहीनप्पणीतकण्हसुक्कसप्पटिभागअप्पटिभागधम्मे अपिलापेति—'इमे चत्तारो सतिपट्ठाना, इमे चत्तारो सम्मप्पधाना, इमे चत्तारो इद्धिपादा, इमानि पञ्चिन्द्रियानि, इमानि पञ्च बलानि, इमे सत्त बोज्झङ्गा, अयं अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, अयं समथो, अयं विपस्सना, अयं विज्जा, अयं विमुत्ती' ति; ततो योगावचरो सेवितब्बे धम्मे सेवति, असेवितब्बे धम्मे न सेवति; भजितब्बे धम्मे भजति, अभजितब्बे धम्मे न भजति। एवं खो, महाराज, अपिलापनलक्खणा, सती" ति।

"कथं, भन्ते, उपग्गण्हनलक्खणा सती"ति ? "सति, महाराज, उप्पज्जमाना हिताहितानं धम्मानं गतियो समन्वेति—'इमे धम्मा हिता, इमे धम्मा अहिता, इमे धम्मा उपकारा, इमे धम्मा अनुपकारा' ति; ततो योगावचरो अहिते धम्मे अपनुदेति, हिते धम्मे उपग्गण्हाति; अनुपकारे धम्मे अपनुदेति, उपकारे धम्मे उपग्गण्हाति। एवं खो, महाराज, उपग्गण्हनलक्खणा सती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स परिणायकरतनं रञ्ञो हिताहिते जानाति—'इमे रञ्ञो हिता, इमे अहिता, इमे उपकारा, इमे अनुपकारा' ति; ततो अहिते अपनुदेति, हिते उपग्गण्हाति; अनुपकारे अपनुदेति, उपकारे उपग्गण्हाति। एवमेव खो, महाराज, सति उप्पज्जमाना हिताहितानं धम्मानं गतियो समन्वेति—'इमे धम्मा हिता, इमे धम्मा अहिता, इमे धम्मा उपकारा, इमे धम्मा अनुपकारा' ति; ततो योगावचरो अहिते धम्मे अपनुदेति, हिते धम्मे उपग्गण्हाति; अनुपकारे धम्मे अपनुदेति, उपकारे धम्मे उपग्गण्हाति। एवं खो, महाराज, उपग्गण्हनलक्खणा सति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सतिं च ख्वाहं, भिक्खवे, सब्बत्थिकं वदामी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१३. समाधिलक्खणपञ्हो

१४. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किंलक्खणो समाधी" ति ?

"पमुखलक्खणो, महाराज, समाधि। ये केचि कुसला धम्मा सब्बे ते समाधिपमुखा होन्ति समाधिनिन्ना समाधिपोणा समाधिपब्भारा" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कूटागारस्स या काचि गोपानसियो सब्बा ता कूटङ्गमा होन्ति कूटनिन्ना कूटसमोसरणा, कूटं तासं अग्गमक्खायति; एवमेव खो, महाराज, ये केचि कुसला धम्मा सब्बे ते समाधिपमुखा होन्ति समाधिनिन्ना समाधिपोणा समाधिपब्भारा" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचि राजा चतुरङ्गिनिया सेनाय सद्धिं सङ्गामं ओतरेय्य। सब्बा व सेना हत्थी च अस्सा च रथा च पत्ती च तप्पमुखा भवेय्युं तन्निन्ना तप्पोणा तप्पब्भारा, तं येव अनुपरियायेय्युं; एवमेव खो, महाराज, ये केचि कुसला धम्मा सब्बे ते समाधिपमुखा होन्ति समाधिनिन्ना समाधिपोणा समाधिपब्भारा। एवं खो, महाराज, पमुखलक्खणो समाधि। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'समाधिं, भिक्खवे, भावेथ। समाहितो, भिक्खवे, भिक्खु यथाभूतं पजानाती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१४. पञ्ञालक्खणपञ्हो

१५. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किंलक्खणा पञ्ञा" ति ?

"पुब्बेव खो, महाराज, मया वुत्तं—'छेदनलक्खणा पञ्ञा' ति। अपि च "ओभासनलक्खणा पञ्ञा" ति। "कथं भन्ते, ओभासनलक्खणा पञ्ञा" ति ? "पञ्ञा, महाराज, उप्पज्जमाना अविज्जन्धकारं विधमेति, विज्जोभासं जनेति, ञाणालोकं विदंसेति, अरियसच्चानि पाकटानि करोति। ततो योगावचरो अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा सम्मप्पञ्ञाय पस्सती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, पुरिसो अन्धकारे गेहे पदीपं पवेसेय्य। पविट्ठो पदीपो अन्धकारं विधमेति, ओभासं जनेति, आलोकं विदंसेति, रूपानि पाकटानि करोति; एवमेव खो, महाराज, पञ्ञा उप्पज्जमाना अविज्जन्धकारं विधमेति, विज्जोभासं जनेति, ञाणालोकं विदंसेति, अरियसच्चानि पाकटानि करोति। ततो योगावचरो अनिच्चं ति दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा सम्मप्पञ्ञाय पस्सति। एवं खो, महाराज, ओभासनलक्खणा पञ्ञा" ति।

"कल्लो सि, भन्ते नागसेना" ति।

१५. नानाधम्मानं एककिच्चनिप्फादनपञ्हो

१६. राजा आह-"भन्ते नागसेन, इमे धम्मा नाना सन्ता एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ती" ति ? "आम, महाराज, इमे धम्मा नाना सन्ता एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ति—किलेसे हनन्ती" ति।

"कथं, भन्ते, इमे धम्मा नाना सन्ता एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ति—किलेसे हनन्ति ? ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज सेना नाना सन्ता हत्थी च अस्सा च रथा च पत्ती च एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ति—सङ्गामे परसेनं अभिविजिनन्ति; एवमेव खो

महाराज, इमे धम्मा नाना सन्ता एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ति—किलेसे हनन्ती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

(इमस्मिं वग्गे सोळस पञ्हा) पठमवग्गो निट्ठितो।

२. अद्धानवग्गो

१. धम्मसन्ततिपञ्हो

१ राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो उप्पज्जति सो एव सो, उदाहु अञ्ञो" ति? थेरो आह—"न च सो, न च अञ्ञो" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा त्वं दहरो तरुणो मन्दो उत्तानसेय्यको अहोसि, सो एव त्वं एतरहि महन्तो" ति? "न हि भन्ते। अञ्ञो सो दहरो तरुणो मन्दो उत्तानसेय्यको अहोसि, अञ्ञो अहं एतरहि महन्तो" ति। "एवं सन्ते खो, महाराज, माता ति पि न भविस्सति, पिता ति पि न भविस्सति, आचरियो ति पि न भविस्सति, सिप्पवा ति पि न भविस्सति, सीलवा ति पि न भविस्सति, सीलवा ति पि न भविस्सति, पञ्ञवा ति पि न भविस्सति। किं नु खो, महाराज, अञ्ञा येव कललस्स माता, अञ्ञा अब्बुदस्स माता; अञ्ञा पेसिया माता, अञ्ञा घनस्स माता; अञ्ञा खुद्दकस्स माता, अञ्ञा महन्तस्स माता; अञ्ञो सिप्पं सिक्खति, अञ्ञो सिक्खितो भवति; अञ्ञो पापकम्मं करोति, अञ्ञस्स हत्थपादा छिज्जन्ती" ति? "न हि, भन्ते। त्वं पन, भन्ते, एवं वुत्ते किं वदेय्यासी" ति? थेरो आह–"अहञ्ञेव खो, महाराज, दहरो अहोसिं तरुणो मन्दो उत्तानसेय्यको, अहञ्ञेव एतरहि महन्तो; इममेव कायं निस्साय सब्बे ते एकसङ्गहिता" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा महाराज, कोचिदेव पुरिसो पदीपं पदीपेय्य। किं सो सब्बरत्तिं पदीपेय्या" ति? "आम, भन्ते, सब्बरत्तिं पदीपेय्या" ति। "किं नु खो, महाराज, या पुरिमे यामे अच्चि, सा मज्झिमे यामे अच्ची" ति? "न हि, भन्ते" ति। "या मज्झिमे यामे अच्चि, सा पच्छिमे यामे अच्ची" ति? "न हि, भन्ते" ति। "किं नु खो, महाराज, अञ्ञो सो अहोसि पुरिमे यामे पदीपो, अञ्ञो मज्झिमे यामे पदीपो, अञ्ञो पच्छिमे यामे पदीपो" ति? "न हि, भन्ते। तं येव निस्साय सब्बरत्तिं पदीपितो" ति। "एवमेव खो, महाराज, धम्मसन्तति सन्दहति। अञ्ञो उप्पज्जति, निरुज्झति, अपुब्बं अचरिमं विय सन्दहति।

तेन न च सो, न च अञ्ञो; पुरिमविञ्ञाणे पच्छिमविञ्ञाणं सङ्गहं गच्छती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, खीरं दुय्हमानं कालन्तरेन दधि परिवत्तेय्य, दधितो नवनीतं, नवनीततो घतं परिवत्तेय्य। यो नु खो, महाराज, एवं वदेय्य-'यं येव दधि, तं येव नवनीतं, यं येव नवनीतं तं येव घतं' ति। सम्मा नु खो सो, महाराज, वदमानो वदेय्या" ति? "न हि, भन्ते, तं येव निस्साय सम्भूतं" ति। "एवमेव खो, महाराज, धम्मसन्तति सन्दहति। अञ्ञो उप्पज्जति, अञ्ञो निरुज्झति; अपुब्बं अचरिमं विय सन्दहति। तेन न च सो, न च अञ्ञो; पुरिमविञ्ञाणे पच्छिमविञ्ञाणं सङ्गहं गच्छती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते, नागसेना" ति।

२. पटिसन्दहनपञ्हो

२. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो न पटिसन्दहति, जानाति सो—'न पटिसन्दहिस्सामी" ति। "कथं भन्ते, जानाती"ति? "यो हेतु यो पच्चयो, महाराज, पटिसन्दहनाय, तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स उपरमा जानाति सो-'न पटिसन्दहिस्सामी" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

'यथा, महाराज, कस्सको गहपतिको कसित्वा च वपित्वा च धञ्ञागारं परिपूरेय्य। सो अपरेन समयेन नेव कस्सेय्य, न वपेय्य; यथासम्भतं च धञ्ञं परिभुञ्जेय्य वा विसज्जेय्य वा यथापच्चयं वा करेय्य। जानेय्य सो, महाराज, कस्सको गहपतिको-'न मे धञ्ञागारं परिपूरेस्सती" ति। "आम, भन्ते, जानेय्या" ति। "कथं जानेय्यासी"ति? "यो हेतु यो पच्चयो धञ्ञागारस्स परिपूरणाय, तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स उपरमा जानाति-'न मे धञ्ञागारं परिपूरेस्सती" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो हेतु यो पच्चयो पटिसन्दहनाय, तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स उपरमा जानाति सो-न पटिसन्दहिस्सामी" ति।

"कल्लो'सि.भन्ते नागसेना" ति।

३. ञाणपञ्ञापञ्हो

३. राजा आह-"भन्ते नागसेन, यस्स ञाणं उप्पन्नं, तस्स पञ्ञा उप्पन्ना" ति? "आम, महाराज, यस्स ञाणं उप्पन्नं तस्स पञ्ञा उप्पन्ना"ति। "किं, भन्ते, यञ्ञेव ञाणं सा येव पञ्ञा" ति। "आम, महाराज, यञ्ञेव ञाणं सा येव पञ्ञा" ति। "यस्स पन, भन्ते, तं येव ञाणं सा येव पञ्ञा उप्पन्ना, किं सम्मुय्हेय्य सो, उदाहु न सम्मुय्हेय्या" ति? "कत्थचि, महाराज, सम्मुय्हेय्य,

कत्थचि न सम्मुय्हेय्या" ति। "कुहिं, भन्ते, सम्मुय्हेय्या" ति? "अञ्ञातपुब्बेसु वा, महाराज, सिप्पट्ठानेसु, अगतपुब्बाय वा दिसाय, अस्सुतपुब्बाय वा नामपञ्ञत्तिया सम्मुय्हेय्या" ति। "कुहिं न सम्मुय्हेय्या" ति? "यं खो पन, महाराज, ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा, तहिं न सम्मुय्हेय्या" ति। "मोहो पन स्स, भन्ते, कुहिं गच्छती" ति? "मोहो खो, महाराज, ञाणे उप्पन्नमत्ते तत्थेव निरुज्झती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो अन्धकारगेहे पदीपं आरोपेय्य, ततो अन्धकारो निरुज्झेय्य आलोको पातुभवेय्य; एवमेव खो, महाराज, ञाणे उप्पन्नमत्ते मोहो तत्थेव निरुज्झती" ति।

"पञ्ञा पन, भन्ते, कुहिं गच्छती" ति? "पञ्ञा पि खो, महाराज, सकिच्चयं कत्वा तत्थेव निरुज्झति। यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा तं न निरुज्झती" ति।

"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'पञ्ञा सकिच्चयं कत्वा तत्थेव निरुज्झति। यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा तं न निरुज्झती' ति, तस्स ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, यो कोचि पुरिसो रत्तिं लेखं पेसेतुकामो लेखकं पक्कोसापेत्वा पदीपं आरोपेत्वा लेखं लिखापेय्य, लिखिते पन लेखे पदीपं विज्झापेय्य, विज्झापिते पि पदीपे लेखं न विनस्सेय्य; एवमेव खो, महाराज, पञ्ञा सकिच्चयं कत्वा तत्थेव निरुज्झति, यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा तं न निरुज्झती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, पुरत्थिमेसु जनपदेसु मनुस्सा अनुघरं पञ्च पञ्च उदकघटकानि ठपेन्ति आलिम्पनं विज्झापेतुं। घरे पदित्ते तानि पञ्च उदकघटकानि घरस्सूपरि खिपन्ति। ततो अग्गि विज्झायति। किन्नु खो, महाराज, तेसं मनुस्सानं एवं होति–'पुन तेहि घटेहि घटकिच्चं करिस्सामा'" ति? "न हि भन्ते! अलं तेहि घटेहि। किं तेहि घटेही" ति! "यथा, महाराज, पञ्च उदकघटकानि, एवं पञ्चिन्द्रियानि दट्ठब्बानि—सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं। यथा ते मनुस्सा, एवं योगावचरो दट्ठब्बो। यथा अग्गि, एवं किलेसा दट्ठब्बा। यथा पञ्चहि उदकघटकेहि अग्गि विज्झापियति, एवं पञ्चिन्द्रियेहि किलेसा विज्झापियन्ति। विज्झापिता पि किलेसा न पुन सम्भवन्ति। एवमेव खो, महाराज, पञ्ञा सकिच्चयं

कत्वा तत्थेव निरुज्झति, यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा तं न निरुज्झती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, वेज्जो पञ्चमूलभेसज्जानि गहेत्वा गिलानकं उपसङ्कमित्वा तानि पञ्चमूलभेसज्जानि पिसित्वा गिलानकं पायेय्य, तेहि न दोसा निद्धमेय्युं। किं नु खो महाराज, तस्स वेज्जस्स एवं होति-'पुन तेहि पञ्चमलभेसज्जेहि भेसज्जकिच्चं करिस्सामी'" ति? "न हि, भन्ते? अलं तेहि पञ्चमूलभेसज्जानि। किं तेहि पञ्चमूलभेसज्जेही" ति! "यथा, महाराज, पञ्चमूलभेसज्जानि एवं पञ्चिन्द्रियानि दट्ठब्बानि—सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं। यथा वेज्जो, एवं योगावचरो दट्ठब्बो। यथा ब्याधि, एवं किलेसा दट्ठब्बा। यथा ब्याधितो पुरिसो, एवं पुथुज्जनो दट्ठब्बो। यथा पञ्चमूलभेसज्जेहि गिलानस्स दोसा निद्धन्ता, दोसे निद्धन्ते गिलानो अरोगो होति; एवं पञ्चिन्द्रियेहि किलेसा निद्धमीयन्ति, निद्धमिता च किलेसा न पुन सम्भवन्ति। एवमेव खो, महाराज, पञ्ञा सकिच्चयं कत्वा तत्थेव निरुज्झति। यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ताति वा तं न निरुज्झती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, सङ्गामावचरो योधो पञ्च कण्डानि गहेत्वा सङ्गामं ओतरेय्य परसेनं विजेतुं। सो सङ्गामगतो तानि पञ्च कण्डानि खिपेय्य। तेहि च परसेना भिज्जेय्य। किन्नु खो, महाराज, तस्स सङ्गामावचरस्स योधस्स एवं होति—'पुन तेहि कण्डेहि कण्डकिच्चं करिस्सामी" ति? 'न हि, भन्ते! अलं तेहि कण्डेहि, किं तेहि कण्डेही" ति! "यथा, महाराज, पञ्च कण्डानि, एवं पञ्चिन्द्रियानि दट्ठब्बानि–सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं। यथा, महाराज, सङ्गामावचरो योधो, एवं, महाराज, योगावचरो दट्ठब्बो। यथा परसेना, एवं किलेसा दट्ठब्बा। यथा पञ्चहि कण्डेहि परसेना भिज्जति, एवं पञ्चिन्द्रियेहि किलेसा भिज्जन्ति, भग्गा च किलेसा न पुन सम्भवन्ति। एवमेव खो, महाराज, पञ्ञा सकिच्चयं कत्वा तत्थेव निरुज्झति, यं पन ताय पञ्ञाय कतं अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा अनत्ता ति वा तं न निरुज्झती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

४. पटिसन्दहनपुग्गलवेदियनपञ्हो

राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो न पटिसन्दहति, वेदेति सो किञ्चि दुक्खं वेदनं" ति? थेरो आह–"किञ्चि वेदेति, किञ्चि न वेदेती" ति। "किं वेदेति, किं न

वेदेती" ति ? "कायिकं, महाराज, वेदनं वेदेति, चेतसिकं वेदनं न वेदेती" ति। "कथं, भन्ते, कायिकं वेदनं वेदेति, कथं चेतसिकं वेदनं न वेदेती" ति ? "यो हेतु यो पच्चयो कायिकाय दुक्खवेदनाय उप्पत्तिया, तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स अनुपरमा कायिकं दुक्खवेदनं वेदेति; यो हेतु यो पच्चयो चेतसिकाय दुक्खवेदनाय उप्पत्तिया, तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स उपरमा चेतसिकं दुक्खवेदनं न वेदेति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सो एकं वेदनं वेदेति कायिकं, न चेतसिकं'" ति।

"भन्ते नागसेन, या दुक्खं वेदनं वेदेति, कस्मा सो न परिनिब्बायती" ति ? "नत्थि, महाराज, अरहतो अनुनयो वा पटिघो वा। न च अरहन्तो अपक्कं पातेन्ति। परिपाकं आगमेन्ति पण्डिता। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना–

'नाभिनन्दामि मरणं, नाभिनन्दामि जीवितं।
कालं च पटिकङ्खामि, निब्बिसं भतको यथा'॥
'नाभिनन्दामि मरणं, नाभिनन्दामि जीवितं।
कालं च पटिकङ्खामि, सम्पजानो पटिस्सुतो'" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

५. वेदनापञ्हो

५. राजा आह–"भन्ते नागसेन, सुखा वेदना कुसला वा अकुसला वा अब्याकता वा" ति ? "सिया, महाराज, कुसला, सिया अकुसला, सिया अब्याकता" ति। "यदि, भन्ते, कुसला न दुक्खा, यदि दुक्खा न कुसला, 'कुसलं दुक्खं' ति नुप्पज्जती" ति ? "तं किं मञ्ञसि, महाराज, इध पुरिसस्स हत्थे तत्तं अयोगुळं निक्खिपेय्य, दुतिये हत्थे सीतं हिमपिण्डं निक्खिपेय्य। किं नु खो, महाराज, उभो पि ते दहेय्युं" ति ? "आम, भन्ते, उभो पि ते दहेय्युं" ति। "किं नु खो ते, महाराज, उभो पि उण्हा" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किं पन ते, महाराज, उभो पि सीतला" ति ? "न हि, भन्ते" ति।

"आजानाहि निग्गहं। यदि तत्तं दहति, न च ते उभो पि उण्हा। तेन नुप्पज्जति। यदि सीतलं दहति, न च ते उभो पि सीतला। तेन नुप्पज्जति। किस्स पन ते, महाराज, उभो पि दहन्ति न च ते उभो पि उण्हा, न च ते उभो पि सीतला। एकं उण्हं, एकं सीतलं, उभो पि ते दहन्ति। तेन नुप्पज्जती" ति।

"नाहं पटिबलो तया वादिना सद्धिं सल्लपितुं। साधु, अत्थं जप्पेही" ति।

ततो थेरो अभिधम्मसंयुत्ताय कथाय राजानं मिलिन्दं सञ्ञापेसि–'छयिमानि, महाराज, गेहनिस्सितानि सोमनस्सानि, छ नेक्खम्मनिस्सितानि सोमन-

स्सानि; छ गेहनिस्सितानि दोमनस्सानि, छ नेक्खम्मनिस्सितानि दोमनस्सानि; छ गेहनिस्सिता उपेक्खा, छ नेक्खम्मनिस्सिता उपेक्खा ति इमानि छ छक्कानि। अतीता पि छत्तिंसविधा वेदना, अनागता पि छत्तिंसविधा वेदना, पच्चुप्पन्ना पि छत्तिंसविधा वेदना, तदेकज्झं अभिसञ्ञूहित्वा अभिसम्पिण्डेत्वा अट्ठसतं वेदना होन्ती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

६. नामरूपएकत्तनानत्तपञ्हो

६. राजा आह—"भन्ते नागसेन, को पटिसन्दहती" ति? थेरो आह—"नामरूपं खो, महाराज, पटिसन्दहती" ति। "किं इमं येव नामरूपं पटिसन्दहती" ति? "न खो, महाराज, इमं येव नामरूपं पटिसन्दहति। इमिना पन, महाराज, नामरूपेन कम्मं करोति सोभनं वा पापकं वा। तेन कम्मेन अञ्ञं नामरूपं पटिसन्दहती" ति। "यदि, भन्ते, न इमं येव नामरूपं पटिसन्दहति, ननु सो मुत्तो भविस्सति पापकेहि कम्मेही" ति? थेरो आह—"यदि न पटिसन्दहेय्य मुत्तो भवेय्य पापकेहि कम्मेहि। यस्मा च खो, महाराज, पटिसन्दहति, तस्मा न मुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो अञ्ञतरस्स पुरिसस्स अम्बं अवहरेय्य। तमेनं अम्बसामिको गहेत्वा रञ्ञो दस्सेय्य—'इमिना, देव, पुरिसेन मय्हं अम्बा अवहटा' ति। सो एवं वदेय्य—'नाहं, देव, इमस्स अम्बे अवहरामि। अञ्ञे ते अम्बा ये इमिना रोपिता। अञ्ञे ते अम्बा ये मया अवहटा। नाहं दण्डप्पत्तो' ति। किं नु खो सो, महाराज, पुरिसो दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति? "आम, भन्ते, दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति। "केन कारणेना" ति? "किञ्चा पि सो एवं वदेय्य, 'पुरिमं, भन्ते, अम्बं अप्पच्चक्खाय पच्छिमेन अम्बेन सो पुरिसो दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, इमिना नामरूपेन कम्मं करोति सोभनं वा पापकं वा। तेन कम्मेन अञ्ञं नामरूपं पटिसन्दहति, तस्मा न मुत्तो पापकेहि कम्मेहो" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो अञ्ञतरस्स पुरिसस्स सालिं अवहरेय्य ··· पे० ··· उच्छुं अवहरेय्य ··· पे० ··· यथा, महाराज, कोचि पुरिसो हेमन्तकाले अग्गिं जालेत्वा विसिब्बेत्वा अविज्झापेत्वा पक्कमेय्य। अथ खो सो अग्गि अञ्ञतरस्स पुरिसस्स खेत्तं डहेय्य। तमेनं खेत्तसामिको गहेत्वा रञ्ञो दस्सेय्य—'इमिना, देव, पुरिसेन मय्हं खेत्तं दड्ढं' ति। सो एवं वदेय्य—'नाहं, देव, इमस्स

खेत्तं झापेमि। अञ्ञो सो अग्गि यो मया अविज्झापितो, अञ्ञो सो अग्गि येनिमस्स खेत्तं दड्ढं। नाहं दण्डप्पत्तो' ति। किंनु खो सो, महाराज, पुरिसो दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति? "आम, भन्ते, दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति। "केन कारणेना" ति? "किञ्चापि सो एवं वदेय्य, पुरिमं, भन्ते, अग्गिं अप्पच्चक्खाय पच्छिमेन अग्गिना सो पुरिसो दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, इमिना नामरूपेन कम्मं करोति सोभनं वा पापकं वा, तेन कम्मेन अञ्ञं नामरूपं पटिसन्दहति, तस्मा न मुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो पदीपं आदाय पासादं अभिरूहित्वा भुञ्जेय्य। पदीपो झायमानो तिणं झापेय्य, तिणं झायमानं घरं झापेय्य। घरं झायमानं गामं झापेय्य। गामजनो तं पुरिसं गहेत्वा एवं वदेय्य–'किस्स त्वं, भो पुरिस, गामं झापेसी' ति? सो एवं वदेय्य—"नाहं, भो, गामं झापेसिं, अञ्ञो सो पदीपग्गि यस्साहं आलोकेन भुञ्जिं, अञ्ञो सो अग्गि येन गामो झापितो' ति। ते विवदमाना तव सन्तिके आगच्छेय्युं। कस्स त्वं, महाराज, अत्थं धारेय्यासी" ति? "गामजनस्स, भन्ते" ति। "किंकारणा" ति? "किञ्चापि सो एवं वदेय्य, अपि च ततो एव सो अग्गि निब्बत्तो" ति। "एवमेव खो, महाराज, किञ्चापि अञ्ञं मारणान्तिकं नामरूपं, अञ्ञं पटिसन्धिस्मिं नामरूपं, अपि च ततो येव तं निब्बत्तं; तस्मा न मुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो दहरिं दारिकं वारेत्वा सुङ्कं दत्वा पक्कमेय्य। सा अपरेन समयेन महती अस्स वयप्पत्ता, ततो अञ्ञो पुरिसो सुङ्कं दत्वा विवाहं करेय्य। इतरो आगन्त्वा एवं वदेय्य—'किस्स पन मे त्वं, अम्भो पुरिस, भरियं नेसी' ति? सो एवं वदेय्य—'नाहं तव भरियं नेमि। अञ्ञा सा दारिका दहरी तरुणी, या तया वारिता च दिन्नसुङ्का च, अञ्ञायं दारिका महती वयप्पत्ता मया वारिता च दिन्नसुङ्का चा' ति। ते विवदमाना तव सन्तिके आगच्छेय्युं। कस्स त्वं महाराज, अत्थं धारेय्यासी" ति? "पुरिमस्स, भन्ते" ति। "किं कारणा" ति? "किं चापि सो एवं वदेय्य, अपि च ततो एव सा महती निब्बत्ता" ति। "एवमेव खो, महाराज, किञ्चापि अञ्ञं मारणन्तिकं नामरूपं, अञ्ञं पटिसन्धिस्मिं नामरूपं। अपि च ततो येव तं निब्बत्तं; तस्मा न परिमुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो गोपालकस्स हत्थो खीरघटं किणित्वा तस्सेव हत्थे निक्खिपित्वा पक्कमेय्य—'स्वे गहेत्वा गमिस्सामी" ति। तं अपरज्जु दधि सम्पज्जेय्य। सो आगन्त्वा एवं वदेय्य—'देहि मे खीरघटं" ति। सो दधिं दस्सेय्य। इतरो एवं वदेय्य—'नाहं तव हत्थतो दधिं किणामि, देहि मे खीरघटं' ति। सो एवं वदेय्य–'अजानतो ते खीरं दधिभूतं' ति। विवदमाना तव सन्तिके आगच्छेय्युं। कस्स त्वं, महाराज, अत्थं धारेय्यासी" ति? "गोपालकस्स, भन्ते" ति। "किंकारणा" ति? "किञ्चापि सो एवं वदेय्य–'अपि च ततो येव तं निब्बत्तं" ति। "एवमेव खो, महाराज, किञ्चापि अञ्ञं मारणन्तिकं नामरूपं, अञ्ञं पटिसन्धिस्मिं नामरूपं। अपि च ततो येव तं निब्बत्तं। तस्मा न परिमुत्तो पापकेही कम्मेही" ति?

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. थेरपटिसन्दहनापटिसन्दहनपञ्हो

७. राजा आह—"भन्ते नागसेन, त्वं पन पटिसन्दहिस्ससी" ति? "अलं, महाराज, किं ते तेन पुच्छितेन! ननु मया पटिगच्चेव अक्खातं—'सचे, महाराज, सउपादानो भविस्सामि, पटिसन्दहिस्सामि; सचे अनुपादानो भविस्सामि, न पटिसन्दहिस्सामी" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो रञ्ञो अधिकारं करेय्य, राजा तुट्ठो अधिकारं ददेय्य, सो तेन अधिकारेन पञ्चहि कामगुणेहि समप्पितो समङ्गीभूतो परिचरेय्य, सो चे जनस्स आरोचेय्य—'न मे किञ्चि पटिकरोती' ति। किं नु खो सो, महाराज, पुरिसो युत्तकारी भवेय्या" ति? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, किं ते तेन पुच्छितेन! ननु मया पटिगच्चेव अक्खातं–'सचे सउपादानो भविस्सामि पटिसन्दहिस्सामि; सचे अनुपादानो भविस्सामि, न पटिसन्दहिस्सामी'" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

८. नामरूपपटिसन्दहनपञ्हो

८. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि—'नामरूपं' ति, तत्थ कतमं नामं, कतमं रूपं" ति? "यं तत्थ, महाराज, ओळारिकं–एतं रूपं। ये तत्थ सुखुमा चित्तचेतसिका धम्मा—एतं नामं" ति। "भन्ते नागसेन, केन कारणेन नामं येव न पटिसन्दहति, रूपं येव वा" ति? "अञ्ञमञ्ञूपनिस्सिता, महाराज, एते धम्मा एकतो व उप्पज्जन्ती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कुक्कुटिया कललं न भवेय्य, अण्डं पि न भवेय्य, यं च तत्थ कललं, यं च अण्डं—उभो पेते अञ्ञमञ्ञूपनिस्सिता, एकतो व नेसं उप्पत्ति होति; एवमेव खो, महाराज, यदि तत्थ नामं न भवेय्य, रूपं पि न भवेय्य, यञ्चेव तत्थ नामं, यञ्चेव तत्थ रूपं—उभो पेते अञ्ञमञ्ञूपनिस्सिता। एकतो व नेसं उप्पत्ति होति। एवमेतं दीघमद्धानं सन्धावितं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

९. अद्धानपञ्हो

९. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'दीघमद्धानं' ति, किमेतं अद्धानं नामा" ति? "अतीतो, महाराज, अद्धा, अनागतो अद्धा, पच्चुप्पन्नो अद्धा" ति। "किं पन, भन्ते, सब्बे अद्धा अत्थी" ति? "कोचि, महाराज, अद्धा अत्थि, कोचि नत्थी" ति। "कतमो पन, भन्ते, अत्थि, कतमो नत्थी" ति? "ये ते, महाराज, सङ्खारा अतीता विगता निरुद्धा विपरिणता, सो अद्धा नत्थि। ये धम्मा विपाका, ये च विपाकधम्मधम्मा, ये च अञ्ञत्र पटिसन्धिं देन्ति, सो अद्धा अत्थि। ये सत्ता कालङ्कता अञ्ञत्र उप्पन्ना, सो च अद्धा अत्थि। ये च सत्ता परिनिब्बुता, सो च अद्धा नत्थि, परिनिब्बुतत्ता" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

(इमस्मिं वग्गे नव पञ्हा।) **दुतिया अद्धानवग्गो निट्ठितो।**

३. विचारवग्गो

१. अद्धानमूलपञ्हो

१. राजा आह–"भन्ते नागसेन, अतीतस्स अद्धानस्स किं मूलं, अनागतस्स अद्धानस्स किं मूलं, पच्चुप्पन्नस्स अद्धानस्स किं मूलं" ति? "अतीतस्स च, महाराज, अद्धानस्स अविज्जा मूलं। अविज्जापच्चया सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं, विञ्ञाणपच्चया नामरूपं, नामरूपपच्चया सळायतनं, सळायतनपच्चया फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति, जातिपच्चया जरामरणं सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपयासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स अद्धानस्स पुरिमा कोटि न पञ्ञायती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

२. पुरिमकोटिपञ्हो

२. राजा आह–"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'पुरिमा कोटि न पञ्ञायती' ति, तस्स ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, पुरिसो परित्तं बीजं पठवियं निक्खिपेय्य, ततो अंकुरो उट्ठहित्वा अनुपुब्बेन वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जित्वा फलं ददेय्य, ततो बीजं गहेत्वा पुन रोपेय्य, ततो पि अङ्कुरो उट्ठहित्वा अनुपुब्बेन वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जित्वा फलं ददेय्य। एवमेतिस्सा सन्ततिया अत्थि अन्तो" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अद्धानस्सा पि पुरिमा कोटि न पञ्ञायती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कुक्कुटिया अण्डं भवेय्य, अण्डतो कुक्कुटी, कुक्कुटिया अण्डं ति, एवमेतिस्सा सन्ततिया अत्थि अन्तो" ति? "नत्थि भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अद्धानस्सापि पुरिमा कोटि न पञ्ञायती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

थेरो पठविया चक्कं लिखित्वा मिलिन्दं राजानं एतदवोच–"अत्थि, महाराज, इमस्स चक्कस्स अन्तो" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, इमानि चक्कानि वुत्तानि भगवता—'चक्खुं च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं, तिण्णं सङ्गति फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया कम्मं, कम्मतो पुन चक्खुं जायती' ति एवमेतिस्सा सन्ततिया अत्थि अन्तो" ति? "नत्थि भन्ते" ति।

"सोतं च पटिच्च सद्दे च···पे०···मनं च पटिच्च धम्मे च उप्पज्जति मनोविञ्ञाणं, तिण्णं सङ्गति फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया कम्मं, कम्मतो पुन मनो जायती ति एवमेतिस्सा सन्ततिया अत्थि अन्तो" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अद्धानस्सापि पुरिमा कोटि न पञ्ञायती" ति।

"कल्लो सि, भन्ते नागसेना" ति।

३. कोटिपञ्ञायनपञ्हो

३. राजा आह–"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'पुरिमा कोटि न पञ्ञायती' ति, कतमा च सा पुरिमा कोटी" ति। "यो खो, महाराज, अतीतो अद्धा, एसा पुरिमा कोटी" ति।

"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'पुरिमा कोटि न पञ्ञायती' ति, किं पन, भन्ते, सब्बा पि पुरिमा कोटि न पञ्ञायती" ति? "काचि, महाराज, पञ्ञा-

यति, काचि न पञ्ञायती" ति। "कतमा, भन्ते, पञ्ञायति, कतमा न पञ्ञायती" ति ? "इतो पुब्बे, महाराज, सब्बेन सब्बं सब्बथा सब्बं अविज्जा नाहोसी ति एसा पुरिमा कोटि न पञ्ञायति, यं अहुत्वा सम्भोति हुत्वा पटिविगच्छति, एसा पुरिमा कोटि पञ्ञायती" ति।

"भन्ते, नागसेन यं अहुत्वा सम्भोति, हुत्वा पटिविगच्छति, ननु तं उभतो छिन्नं अत्थं गच्छती" ति। "यदि, महाराज, उभतो छिन्नं अत्थं गच्छति, उभतो छिन्ना सक्का वड्ढेतुं" ति ? "आम, सा पि सक्का वड्ढेतुं" ति। "नाहं, भन्ते, एतं पुच्छामि, कोटितो सक्का वड्ढेतुं ति ? "आम, सक्का वड्ढेतुं" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

थेरो तस्स रुक्खूपमं अकासि—खन्धा च केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स बीजानी' ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

४. सङ्खारजायमानपञ्हो

४. राजा आह–"भन्ते नागसेन, अत्थि केचि सङ्खारा, ये जायन्ती" ति ? "आम, महाराज, अत्थि सङ्खारा, ये जायन्ती" ति। "कतमे ते, भन्ते" ति ? "चक्खुस्मिं च खो, महाराज, सति रूपेसु च चक्खुविञ्ञाणं होति, चक्खुविञ्ञाणे सति चक्खुसम्फस्सो होति, चक्खुसम्फस्से सति वेदना होति, वेदनाय सति तण्हा होति, तण्हाय सति उपादानं होति, उपादाने सति भवो होति, भवे सति जाति होति, जातिया सति जरामरणं सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति। चक्खुस्मिं च खो, महाराज, असति रूपेसु च असति चक्खुविञ्ञाणं न होति, चक्खुविञ्ञाणे असति चक्खुसम्फस्सो न होति, चक्खुसम्फस्से असति वेदना न होति, वेदनाय असति तण्हा न होति, तण्हाय असति उपादानं न होति, उपादाने असति भवो न होति, भवे असति जाति न होति, जातिया असति जरामरणं सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा न होन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

५. भवन्तसङ्खारजायमानपञ्हो

५. राजा आह–"भन्ते नागसेन, अत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ती" ति ? "नत्थि, महाराज, केचि सङ्खारा, ये अभवन्ता जायन्ति। भवन्ता येव खो, महाराज, सङ्खारा जायन्ती" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, इदं गेहं अभवन्तं जातं, यत्थ त्वं निसिन्नो सी" ति ? "नत्थि किञ्चि, भन्ते इध अभवन्तं जातं, भवन्तं येव जातं। इमानि खो, भन्ते, दारूनि वने अहेसुं, अयं च मत्तिका पठवियं अहोसि, इत्थीनं च पुरिसानं च तज्जेन वायामेन एवमिदं गेहं निब्बत्तं" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, ये केचि बीजगामभूतगामा पठवियं निक्खित्ता अनुपुब्बेन वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जमाना पुप्फानि च फलानि च ददेय्युं, न ते रुक्खा अभवन्ता जाता, भवन्ता येव रुक्खा जाता। एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव ते सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कुम्भकारो पठविया मत्तिकं उद्धरित्वा नानाभाजनानि करोति, न तानि भाजनानि अभवन्तानि जातानि, भवन्तानि येव जातानि; एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, वीणाय पत्तं न सिया, चम्मं न सिया, दोणि न सिया, दण्डो न सिया, उपवीणो न सिया, तन्तियो न सियुं, कोणो न सिया, पुरिसस्स च तज्जो वायामो न सिया, जायेय्य सद्दो" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "यतो च खो महाराज, वीणाय पत्तं सिया, चम्मं सिया, दोणि सिया, दण्डो सिया, उपवीणो सिया, तन्तियो सियुं, कोणो सिया, पुरिसस्स तज्जो वायामो सिया, जायेय्य सद्दो" ति ? "आम, भन्ते, जायेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा, ये अभवन्ता जायन्ति। भवन्ता येव खो सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, अरणि न सिया, अरणिपोतको न सिया, अरणियोत्तकं न सिया, उत्तरारणि न सिया, चोळकं न सिया, पुरिसस्स च तज्जो वायामो न सिया, जायेय्य सो अग्गी" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "यतो च खो, महाराज, अरणि सिया, अरणिपोतको सिया, अरणियोत्तकं सिया, उत्तरारणि सिया, चोळकं सिया, पुरिसस्स च तज्जो वायामो सिया, जायेय्य सो अग्गी"

ति ? "आम, भन्ते, जायेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा, ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव खो सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, मणि न सिया, आतपो न सिया, गोमयं न सिया, जायेय्य सो अग्गी" ति ? "नहि भन्ते" ति। "यतो च खो, महाराज, मणि सिया, आतपो सिया, गोमयं सिया, जायेय्य सो अग्गी" ति ? "आम, भन्ते जायेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव खो सङ्खारा जायन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, आदासो न सिया, आभा न सिया, मुखं न सिया, जायेय्य अत्ता" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "यतो च खो, महाराज, आदासो सिया, आभा सिया, मुखं सिया, जायेय्य अत्ता" ति ? "आम, भन्ते, जायेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि केचि सङ्खारा ये अभवन्ता जायन्ति, भवन्ता येव खो सङ्खारा जायन्ति" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति!

६. वेदगूपञ्हो

६. राजा आह-"भन्ते नागसेन, वेदगू उपलब्भती" ति ? "को पनेस महाराज, वेदगू नामा" ति ? "यो, भन्ते अब्भन्तरो जीवो चक्खुना रूपं पस्सति, सोतेन सद्दं सुणाति, घानेन गन्धं घायति, जिव्हाय रसं सायति, कायेन फोट्ठब्बं फुसति, मनसा धम्मं विजानाति, यथा मयं इध पासादे निसिन्ना येन येन वातपानेन इच्छेय्याम पस्सितुं, तेन तेन वातपानेन पस्सेय्याम—पुरत्थिमेन पि वातपानेन पस्सेयाम, पच्छिमेन पि वातपानेन पस्सेय्याम, उत्तरेन पि वातपानेन पस्सेय्याम, दक्खिणेन पि वातपानेन पस्सेय्याम; एवमेव खो, भन्ते अयं अब्भन्तरे जीवो येन येन द्वारेन इच्छति पस्सितुं, तेन तेन द्वारेन पस्सती" ति।

थेरो आह-"पञ्चद्वारं, महाराज, भणिस्सामि तं सुणोहि, साधुकं मनसि करोहि। यदि अब्भन्तरे जीवो चक्खुना रूपं पस्सति, यथा मयं इध पासादे निसिन्ना येन येन वातपानेन इच्छेय्याम पस्सितुं, तेन तेन वातपानेन रूपं येव पस्सेय्याम—पुरत्थिमेन पि वातपानेन रूपं येव पस्सेय्याम, पच्छिमेन पि वातपानेन रूपं येव पस्सेय्याम, उत्तरेन पि वातपानेन रूपं येव पस्सेय्याम, दक्खिणेन पि वातपानेन रूपं येव पस्सेय्याम; एवमेतेन अब्भन्तरे जीवेन सोतेन पि रूपं येव पस्सितब्बं, घानेन पि रूपं येव पस्सितब्बं, जिव्हाय पि रूपं येव पस्सितब्बं, कायेन पि रूपं येव पस्सितब्बं, मनसापि रूपं येव

पस्सितब्बं; चक्खुना पि सद्दो येव सोतब्बो, घानेन पि सद्दो येव सोतब्बो, जिव्हाय पि सद्दो येव सोतब्बो, कायेन पि सद्दो येव सोतब्बो, मनसा पि सद्दो येव सोतब्बो; चक्खुना पि गन्धो येव घायितब्बो, सोतेन पि गन्धो येव घायितब्बो, जिव्हाय पि गन्धो येव घायितब्बो, कायेन पि गन्धो येव घायितब्बो, मनसा पि गन्धो येव घायितब्बो; चक्खुना पि रसो येव सायितब्बो, सोतेन पि रसो येव सायितब्बो, घानेन पि रसो येव सायितब्बो, कायेन पि रसो येव सायितब्बो, मनसा पि रसो येव सायितब्बो; चक्खुना पि फोट्ठब्बं येव फुसितब्बं, सोतेन पि फोट्ठब्बं येव फुसितब्बं, घानेन पि फोट्ठब्बं येव फुसितब्बं, जिव्हाय पि फोट्ठब्बं येव फुसितब्बं, मनसा पि फोट्ठब्बं येव फुसितब्बं; चक्खुना पि धम्मं येव विजानितब्बं, सोतेना पि धम्मं येव विजानितब्बं, घानेना पि धम्मं येव विजानितब्बं, जिह्वाय पि धम्मं येव विजानितब्बं, कायेना पि धम्मं येव विजानितब्बं" ति? "न हि, भन्ते" ति।

"न खो ते, महाराज, युज्जति पुरिमेन वा पच्छिमं, पच्छिमेन वा पुरिमं। यथा वा पन, महाराज, मयं इध पासादे निसिन्ना इमेसु जालवातपानेसु उग्घाटितेसु महन्तेन आकासेन बहिमुखा सुट्ठुतरं रूपं पस्साम; एवमेतेन अब्भन्तरे जीवेना पि चक्खुद्वारेसु उग्घाटितेसु महन्तेन आकासेन सुट्ठुतरं रूपं पस्सितब्बं, सोतेसु उग्घाटितेसु, घाने उग्घाटिते, जिह्वाय उग्घाटिताय, काये उग्घाटिते महन्तेन आकासेन सुट्ठुतरं सद्दो सोतब्बो, गन्धो घायितब्बो, रसो सायितब्बो, फोट्ठबो फुसितब्बो" ति? "न हि, भन्ते" ति।

"न खो ते, महाराज, युज्जति पुरिमेन वा पच्छिमेन वा पुरिमं। यथा वा पन, महाराज, अयं दिन्नो निक्खमित्वा बहिद्वारकोट्ठके तिट्ठेय्य, जानासि त्वं, महाराज—अयं दिन्नो निक्खमित्वा बहिद्वारकोट्ठके ठितो" ति? "आम, भन्ते, जानामी" ति।

यथा वा पन, महाराज, अयं दिन्नो अन्तो पविसित्वा तव पुरतो तिट्ठेय्य, जानासि त्वं, महाराज—'अयं दिन्नो अन्तो पविसित्वा मम पुरतो ठितो" ति? "आम, भन्ते, जानामी" ति।

"एवमेव खो, महाराज, अब्भन्तरे सो जीवो जिव्हाय रसे निक्खित्ते जानेय्य अम्बिलत्तं वा लवणत्तं वा तित्तकत्तं वा, कटुकत्तं वा कसायत्तं वा मधुरत्तं वा" ति? "आम, भन्ते, जानेय्या" ति। "ते रसे अन्तो पविट्ठे जानेय्य अम्बिलत्तं वा लवणत्तं वा तित्तकत्तं वा कटुकत्तं वा कसायत्तं वा मधुरत्तं वा" ति? "न हि, भन्ते" ति।

"न खो ते, महाराज, युज्जति पुरिमेन वा पच्छिमं, पच्छिमेन वा पुरिमं। यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो मधुघटसतं आहरापेत्वा मधुदोणिं पूरापेत्वा पुरिसस्स मुखं पिदहित्वा मधुदोणिया पक्खिपेय्य। जानेय्य, महाराज, सो पुरिसो मधुं सम्पन्नं वा न सम्पन्नं वा" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेना" ति ? "न हि तस्स, भन्ते, मुखे मधु पविट्ठं" ति। "न खो ते, महाराज, युज्जति पुरिमेन वा पच्छिमं, पच्छिमेन वा पुरिमं" ति। "नाहं, भन्ते, पटिबलो तया वादिना सद्धिं सल्लपितुं। साधु, भन्ते, अत्थं जप्पेही" ति।

थेरो अभिधम्मसंयुत्ताय कथाय राजानं मिलिन्दं सञ्ञापेसि-"इध, महाराज, चक्खुं च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं। तंसहजाता फस्सो वेदना सञ्ञा चेतना एकग्गता जीवितिन्द्रियं मनसिकारो ति एवमेते धम्मा पच्चयतो जायन्ति, न हेत्थ वेदगू उपलब्भति। सोतं च पटिच्च सद्दे च···पे०··· मनञ्च पटिच्च धम्मे च उप्पज्जति मनोविञ्ञाणं, तंसहजाता फस्सो वेदना सञ्ञा चेतना एकग्गता जीवितिन्द्रियं, मनसिकरोति, एवमेते धम्मा पच्चयतो जायन्ति। न हेत्थ वेदगू उपलब्भती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. चक्खुविञ्ञाणादिपञ्हो

७. राजा आह-"भन्ते नागसेन, यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जती" ति ? "आम, महाराज, यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं उत्पज्जति" ति।

"किं नु खो, भन्ते नागसेन, पठमं चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति पच्छा मनोविञ्ञाणं, उदाहु मनोविञ्ञाणं पठमं उप्पज्जति, पच्छा चक्खुविञ्ञाणं" ति ? "पठमं, महाराज, चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, पच्छा मनोविञ्ञाणं" ति।

"किं नु खो, भन्ते नागसेन, चक्खुविञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं आणापेति—'यत्थाहं उप्पज्जामि त्वं पि तत्थ उप्पज्जाही' ति, उदाहु मनोविञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं आणापेति-'यत्थ त्वं उप्पज्जिस्ससि, अहं पि तत्थ उप्पज्जिसामी" ति ? "न हि, महाराज, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेही" ति।

"कथं, भन्ते नागसेन, यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जती" ति ? "निन्नत्ता च, महाराज, द्वारत्ता च चिण्णत्ता च समुदाचरितत्ता चा" ति।

(क) "कथं, भन्ते नागसेन, निन्नत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति ? ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, देवे वस्सन्ते कतमेन उदकं गच्छेय्या" ति ? "येन, भन्ते, निन्नं, तेन गच्छेय्या" ति। "अथापरेन समयेन देवो वस्सेय्य, कतमेन तं उदकं गच्छेय्या" ति ? "येन, भन्ते, पुरिमं उदकं गतं, तं पि तेन गच्छेय्या" ति। "किं नु खो, महाराज, पुरिमं उदकं पच्छिमं उदकं आणापेति–'येनाहं गच्छामि त्वं पि तेन गच्छाही' ति, पच्छिमं वा उदकं पुरिमं उदकं आणापेति–'येन त्वं गच्छिस्ससि अहं पि तेन गच्छिस्सामी" ति ? "न हि, भन्ते, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। निन्नत्ता गच्छन्ती" ति। "एवमेव खो, महाराज, निन्नत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति। न चक्खुविञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थाहं उप्पज्जामि त्वं पि तत्थ उप्पज्जाही' ति। नापि मनोविञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं आणापेति–यत्थ त्वं उप्पज्जिस्ससि अहं पि तत्थ उप्पज्जिस्सामी' ति, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। निन्नत्ता उप्पजन्ती" ति।

(ख) "कथं, भन्ते नागसेन, द्वारत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति ? ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, रञ्ञो पच्चन्तिमं नगरं अस्स दळ्हपाकार-तोरणं एकद्वारं। ततो पुरिसो निक्खमितुकामो भवेय्य, कतमेन निक्खमेय्या" ति ? "द्वारेन, भन्ते, निक्खमेय्या" ति। "अथापरो पुरिसो निक्खमितुकामो भवेय्य, कतमेन सो निक्खमेय्या" ति ? "येन, भन्ते, पुरिमो पुरिसो निक्खन्तो सो पि तेन निक्खमेय्या" ति।

"किन्नु खो, महाराज, पुरिमो पुरिसो पच्छिमं पुरिसं आणापेति—'येनाहं गच्छामि त्वं पि तेन गच्छाही' ति, पच्छिमो वा पुरिसो पुरिमं पुरिसं आणापेति–'येन त्वं गच्छिस्ससि, अहं पि तेन गच्छिस्सामी'" ति ? "न हि, भन्ते, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। द्वारत्ता गच्छन्ती" ति। "एवमेव खो, महाराज, द्वारत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति। न चक्खुविञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थाहं उप्पज्जामि त्वं पि तत्थ उपज्जाही' ति। नापि मनोविञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थ त्वं उप्पज्जिस्ससि अहं पि तत्थ उप्पज्जिस्सामी' ति। अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। द्वारत्ता उप्पज्जन्ती" ति।

(ग) "कथं, भन्ते नागसेन, चिण्णत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति ? ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, पठमं एकं सकटं गच्छेय्य, अथ दुतियं सकटं कतमेन गच्छेय्या" ति ? "येन, भन्ते, पुरिमं सकटं गतं, तं पि तेन

गच्छेय्या'' ति। ''किं नु खो, महाराज, पुरिमं सकटं पच्छिमं सकटं आणापेति—'येनाहं गच्छामि, त्वं पि तेन गच्छाही' ति। पच्छिमं वा सकटं पुरिमं सकटं आणापेति–'येन त्वं गच्छिस्ससि, अहं पि तेन गच्छिस्सामी' ति ? ''न हि, भन्ते, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। चिण्णत्ता गच्छन्ती'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, चिण्णत्ता, यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति। न चक्खुविञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थाहं उप्पज्जामि त्वं पि तत्थ उप्पज्जाही' ति। नापि मनोविञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थ त्वं उप्पज्जिस्ससि अहं पि तत्थ उप्पज्जिस्सामी' ति, अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। चिण्णत्ता उप्पज्जन्ती'' ति।

(घ) ''कथं, भन्ते नागसेन, समुदाचरितत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति ? आपम्मं करोही'' ति।

''यथा, महाराज, मुद्दागणनासङ्ख्यालेखासिप्पट्ठानेसु आदिकम्मिकस्स दन्धायना भवति, अथापरेन समयेन निसम्मकिरियाय समुदाचरितत्ता अदन्धायना भवति; एवमेव खो, महाराज, समुदाचरितत्ता यत्थ चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जति। न चक्खुविञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं आणापेति–'यत्थाहं उप्पज्जामि त्वं पि तत्थ उपज्जाही' ति। नापि मनोविञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं आणापेति–''यत्थ त्वं उप्पज्जिस्ससि अहं पि तत्थ उप्पज्जिस्सामी' ति। अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। समुदाचरितत्ता उप्पज्जती'' ति।

''भन्ते नागसेन, यत्थ सोतविञ्ञाणं उप्पजति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जती ति…पे०… यत्थ घानविञ्ञाणं उप्पज्जति…यत्थ जिव्हाविञ्ञाणं उप्पज्जति…यत्थ कायविञ्ञाणं उप्पज्जति, तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जती'' ति ? ''आम, महाराज, यत्थ कायविञ्ञाणं उप्पज्जति तत्थ मनोविञ्ञाणं पि उप्पज्जती'' ति।

''किं नु खो, भन्ते नागसेन, पठमं कायविञ्ञाणं उप्पज्जति पच्छा मनोविञ्ञाणं, उदाहु मनोविञ्ञाणं पठमं उप्पज्जति पच्छा कायविञ्ञाणं'' ति ? ''कायविञ्ञाणं, महाराज, पठमं उप्पज्जति, पच्छा मनोविञ्ञाणं'' ति।

''किं नु खो, भन्ते नागसेन…पे०…अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेहि। समुदाचरितत्ता उप्पज्जन्ती'' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

८. फस्सलक्खणपञ्हो

८. राजा आह—''भन्ते नागसेन, यत्थ मनोविञ्ञाणं उप्पज्जति, फस्सो पि वेदना पि तत्थ उप्पज्जती'' ति ? ''आम महाराज, यत्थ मनोविञ्ञाणं

उप्पज्जति, फस्सो पि तत्थ उप्पज्जति, वेदना पि तत्थ उप्पज्जति, सञ्ञा पि तत्थ उप्पज्जति, चेतना पि तत्थ उप्पज्जति, वितक्को पि तत्थ उप्पज्जति, विचारो पि तत्थ उप्पजति। सब्बे पि फस्सप्पमुखा धम्मा तत्थ उप्पज्जन्ती'' ति।

"भन्ते नागसेन, किंलक्खणो फस्सो'' ति? "फुसनलक्खणो, महाराज, फस्सो'' ति।

"ओपम्मं करोही'' ति।

"यथा, महाराज, द्वे मेण्डा युज्झेय्युं। तेसु यथा एको मेण्डो एवं चक्खु दट्ठब्बं, यथा दुतियो मेण्डो एवं रूपं दट्ठब्बं, यथा तेसं सन्निपातो एवं फस्सो दट्ठब्बो'' ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही'' ति।

"यथा, महाराज, द्वे पाणी वज्जेय्युं। तेसु यथा एको पाणि एवं चक्खु दट्ठब्बं, यथा दुतियो पाणि एवं रूपं दट्ठब्बं, यथा तेसं सन्निपातो एवं फस्सो दट्ठब्बो'' ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही'' ति।

"यथा, महाराज, द्वे सम्मा वज्जेय्युं। तेसु यथा एको सम्मो एवं चक्खु दट्ठब्बं, यथा दुतियो सम्मो एवं रूपं दट्ठब्बं, यथा तेसं सन्निपातो एवं फस्सो दट्ठब्बो'' ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

९. वेदनालक्खणपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणा वेदना'' ति? "वेदयितलक्खणा, महाराज, वेदना, अनुभवनलक्खणा चा'' ति।

"ओपम्मं करोही'' ति।

"यथा महाराज, कोचिदेव पुरिसो रञ्ञो अधिकारं करेय्य। तस्स राजा तुट्ठो अधिकारं ददेय्य। सो तेन अधिकारेन पञ्चहि कामगुणेहि समप्पितो समङ्गीभूतो परिचरेय्य। तस्स एवमस्स—'मया खो पुब्बे रञ्ञो अधिकारो कतो, तस्स मे राजा तुट्ठो अधिकारं अदासि। स्वाहं ततोनिदानं इमं एवरूपं वेदनं वेदियामी' ति। यथा वा पन, महाराज, कोचिदेव पुरिसो कुसलं कम्मं कत्वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जेय्य। सो च तत्थ दिब्बेहि पञ्चहि कामगुणेहि समप्पितो समङ्गीभूतो परिचरेय्य। तस्स एवमस्स—'स्वाहं खो पुब्बे कुसलं कम्मं अकासिं, सोहं ततोनिदानं इमं एवरूपं वेदनं वेदियामी' ति। एवमेव खो, महाराज, वेदयितलक्खणा वेदना, अनुभवनलक्खणा चा'' ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

१० सञ्ञालक्खणपञ्हो

१०. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणा सञ्ञा" ति? "सञ्जाननलक्खणा, महाराज, सञ्ञा" ति। "किं सञ्जानाति"? "नीलं पि सञ्जानाति, पीतं पि सञ्जानाति, लोहितं पि सञ्जानाति, ओदातं पि सञ्जानाति, मञ्जिट्ठं पि सञ्जानाति। एवमेव खो, महाराज, सञ्जाननलक्खणा सञ्ञा"।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, रञ्ञो भण्डागारिको भण्डागारं पविसित्वा नीलपीतलोहितोदातमञ्जिट्ठानि राजभोगानि रूपानि पस्सित्वा सञ्जानाति, एवमेव खो, महाराज, सञ्जाननलक्खणा सञ्ञा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

११. चेतनालक्खणपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणा चेतना" ति? "चेतयितलक्खणा, महाराज, चेतना, अभिसङ्खरणलक्खणा चा" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो विसं अभिसङ्खरित्वा अत्तना च पिवेय्य, परे च पायेय्य। सो अत्तना पि दुक्खितो भवेय्य, परे पि दुक्खिता भवेय्युं। एवमेव खो, महाराज, इधेकच्चो पुग्गलो अकुसलं कम्मं चेतनाय चेतयित्वा कायस्य भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जेय्य। ये पि तस्स अनुसिक्खन्ति, ते पि कायस्य भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जन्ति।

"यथा वा पन, महाराज, कोचिदेव पुरिसो सप्पि-नवनीत-तेल-मधु-फाणितं एकज्झं अभिसङ्खरित्वा अत्तना च पिवेय्य, परे च पायेय्य। सो अत्तना सुखितो भवेय्य, परे पि सुखिता भवेय्युं। एवमेव खो, महाराज, इधेकच्चो पुग्गलो कुसलं कम्मं चेतनाय चेतयित्वा कायस्य भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। ये पि तस्स अनुसिक्खन्ति, ते पि कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्ति। एवमेव, खो महाराज, चेतयितलक्खणा चेतना, अभिसङ्खरणलक्खणा चा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१२. विञ्ञाणलक्खणपञ्हो

१२. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणं विञ्ञाणं" ति? "विजाननलक्खणं, महाराज, विञ्ञाणं" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, नगरगुत्तिको मज्झे नगरसिङ्घाटके निसिन्नो पस्सेय्य पुरत्थिमदिसतो पुरिसं आगच्छन्तं, पस्सेय्य दक्खिणदिसतो पुरिसं आगच्छन्तं, पस्सेय्य पच्छिमदिसतो पुरिसं आगच्छन्तं, पस्सेय्य उत्तरदिसतो पुरिसं आगच्छन्तं; एवमेव खो, महाराज, यं च पुरिसो चक्खुना रूपं पस्सति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं च सोतेन सद्दं सुणाति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं च घानेन गन्धं घायति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं च जिव्हाय रसं सायति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं च कायेन फोट्ठब्बं फुसति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं च मनसा धम्मं विजानाति तं विञ्ञाणेन विजानाति । एवं, खो, महाराज विजाननलक्खणं विञ्ञाणं" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते, नागसेना" ति ।

१३. वितक्कलक्खणपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणो वितक्को" ति ? "अप्पनालक्खणो, महाराज, वितक्को" ति ।

"ओपम्मं करोही" ति ।

"यथा, महाराज, वड्ढकी सुपरिकम्मकतं दारुं सन्धिस्मिं अप्पेति; एवमेव खो, महाराज, अप्पनालक्खणो वितक्को" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

१४. विचारलक्खणपञ्हो

१४. "भन्ते नागसेन, किंलक्खणो विचारो" ति ?

"अनुमज्जनलक्खणो, महाराज, विचारो" ति ।

"ओपम्मं करोही" ति ।

"यथा, महाराज, कंसथालं आकोटितं पच्छा अनुरवति, अनुसद्दायति ; यथा, महाराज, आकोटना एवं वितक्को दट्ठब्बो, यथा अनुरवना एवं विचारो" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

(इमस्मिं वग्गे चुद्दस पञ्हा)　　**ततियो निट्ठितो विचारवग्गो ।**

४. निब्बानवग्गो

१. फस्सादिविनिब्भुजनपञ्हो

१. राजा आह—"भन्ते नागसेन, सक्का इमेसं धम्मानं एकतो भावगतानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं—'अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं विञ्ञाणं, अयं वितक्को, अयं विचारो'" ति ? "न सक्का, महाराज, इमेसं धम्मानं एकतो भावगतानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भु-

जित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं—'अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं विञ्ञाणं, अयं वितक्को, अयं विचारो''' ति ।

"ओपम्मं करोही'' ति ।

"यथा, महाराज, रञ्ञो सूदो अरसं वा रसं वा करेय्य । सो तत्थ दधिं पि पक्खिपेय्य, लोणं पि पक्खिपेय्य, सिङ्गिवेरं पि पक्खिपेय्य, जीरकं पि पक्खिपेय्य, मरिचं पि पक्खिपेय्य, अञ्ञानि पि पकारानि पक्खिपेय्य, तमेनं राजा एवं वदेय्य–'दधिस्स मे रसं आहर, लोणस्स मे रसं आहर, सिङ्गिवेरस्स मे रसं आहर, जीरकस्स मे रसं आहर, मरिचस्स मे रसं आहर, सब्बेसं मे पक्खित्तानं रसं आहरा' ति । सक्का नु खो, महाराज तेसं रसानं एकतो भावगतानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा रसं आहरितुं–अम्बिलत्तं वा, लवणत्तं वा, तित्तकत्तं वा, कटुकत्तं वा, कसायत्तं वा, मधुरत्तं वा'' ति ? "न हि, भन्ते, सक्का तेसं रसानं एकतो भावगतानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा रसं आहरितुं —अम्बिलत्तं वा, लवणत्तं वा, तित्तकत्तं वा, कटुकत्तं वा, कसायत्तं वा, मधुरत्तं वा । अपि च खो पन सकेन सकेन लक्खणेन उपट्ठहन्ती'' ति । "एवमेव खो, महाराज, न सक्का इमेसं धम्मानं एकतो भावगतानं विनिब्भुजित्वा विनिब्भुजित्वा नानाकरणं पञ्ञापेतुं—'अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं विञ्ञाणं, अयं वितक्को, अयं विचारो' ति । अपि च खो पन सकेन सकेन लक्खणेन उपट्ठहन्ती'' ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति ।

२. नागसेनपञ्हो

२. थेरो आह—"लोणं, महाराज, चक्खुविञ्ञेय्यं'' ति ? "आम, भन्ते, चक्खुविञ्ञेय्यं'' ति । "सुट्ठु खो, महाराज, जानाही'' ति । "किं पन, भन्ते, जिव्हाविञ्ञेय्यं'' ति ? "आम, महाराज, जिव्हाविञ्ञेय्यं'' ति । "किं पन, भन्ते, सब्बं लोणं जिव्हाय विजानाती'' ति ? "आम, महाराज, सब्बं लोणं जिव्हाय विजानाती'' ति ।

"यदि, भन्ते, सब्बं लोणं जिव्हाय विजानाति, किस्स पन तं सकटेहि बलीवद्दा आहरन्ति ? ननु लोणमेव आहरितब्बं'' ति ?

"न सक्का, महाराज, लोणमेव आहरितुं । एकतो भावगता एते धम्मा गोचरनानत्तगता लोणं गरुभावो चा'' ति । "सक्का पन, महाराज, लोणं तुलाय तुलयितुं'' ति ? "आम, भन्ते, सक्का'' ति । "न सक्का, महाराज, लोणं तुलाय तुलयितुं, गरुभावो तुलाय तुलियती'' ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति ।

नागसेनपञ्हो निट्ठितो ।

(ख) विमतिच्छेदनपञ्हो

३. पञ्चायतनकम्मनिब्बत्तपञ्हो

३. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यानिमानि पञ्चायतनानि, किं नु तानि नानाकम्मेहि निब्बत्तानि, उदाहु एकेन कम्मेना" ति ? "नानाकम्मेहि, महाराज, निब्बत्तानि, न एकेन कम्मेना" ति ।

"ओपम्मं करोही" ति ।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, एकस्मिं खेत्ते नानाबीजानि वप्पेय्युं, तेसं नानाबीजानं नानाफलानि निब्बत्तेय्युं" ति ? "आम, भन्ते, निब्बत्तेय्युं" ति । "एवमेव खो, महाराज, यानि यानि पञ्चायतनानि तानि तानि नानाकम्मेहि निब्बत्तानि, न एकेन कम्मेना" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

ग्रन्थ संख्या ...15.1.0...

४. कम्मनानाकरणपञ्हो

४. राजा आह—"भन्ते नागसेन, केन कारणेन मनुस्सा न सब्बे समका। अञ्ञे अप्पायुका, अञ्ञे दीघायुका; अञ्ञे बव्हाबाधा, अञ्ञे अप्पाबाधा; अञ्ञे दुब्बण्णा, अञ्ञे वण्णवन्तो; अञ्ञे अप्पेसक्खा, अञ्ञे महेसक्खा; अञ्ञे अप्पभोगा, अञ्ञे महाभोगा; अञ्ञे नीचकुलीना, अञ्ञे महाकुलीना; अञ्ञे दुप्पञ्ञा, अञ्ञे पञ्ञवन्तो" ति ?

थेरो आह—'कस्स पुन, महाराज, रुक्खा न सब्बे समका । अञ्ञे अम्बिला, अञ्ञे लवणा, अञ्ञे तित्तका, अञ्ञे कटुका, अञ्ञे कसावा, अञ्ञे मधुरा" ति ? "मञ्ञामि, भन्ते, बीजानं नानाकरणेना" ति । "एवमेव खो, महाराज, कम्मानं नानाकरणेन मनुस्सा न सब्बे समका । अञ्ञे अप्पायुका, अञ्ञे दीघायुका, अञ्ञे बव्हाबाधा, अञ्ञे अप्पाबाधा; अञ्ञे दुब्बण्णा, अञ्ञे वण्णवन्तो; अञ्ञे अप्पेसक्खा, अञ्ञे महेसक्खा; अञ्ञे अप्पभोगा, अञ्ञे महाभोगा; अञ्ञे नीचकुलीना, अञ्ञे महाकुलीना; अञ्ञे दुप्पञ्ञा, अञ्ञे पञ्ञवन्तो । भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'कम्मस्सका, माणव, सत्ता, कम्मदायादा कम्मयोनी कम्मबन्धू कम्मपटिसरणा । कम्मं सत्ते विभजति, यदिदं हीनप्पणीतताया" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

५. वायामकरणपञ्हो

५. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'किं ति इमं दुक्खं निरुज्झेय्य, अञ्ञञ्च दुक्खं नुप्पज्जेय्या' ति एतदत्था, महाराज, अम्हाकं पब्बज्जा' ति । किं पटिगच्चेव वायमितेन ! ननु सम्पत्ते काले वायमितब्बं" ति ? थेरो आह—"सम्पत्ते काले, महाराज, वायामो अकिच्चकरो भवति । पटिगच्चेव वायामो किच्चकरो भवती" ति ।

"ओपम्मं करोही" ति ।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा त्वं पिपासितो भवेय्यासि तदा त्वं उदपानं खणापेय्यासि, तळाकं खणापेय्यासि—पानीयं पिविस्सामी" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, सम्पत्ते काले वायामो अकिच्चकरो भवति, पटिगच्चेव वायामो किच्चकरो भवती" ति ।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति ।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा त्वं बुभुक्खितो भवेय्यासि तदा त्वं खेत्तं कस्सापेय्यासि, सालिं रोपापेय्यासि, धञ्ञं अतिहरापेय्यासि—भत्तं भुञ्जिस्सामी" ति ? "न हि, भन्ते" ति । एवमेव खो, महाराज, सम्पत्ते काले वायामो अकिच्चकरो भवति, पटिगच्चेव वायामो किच्चकरो भवती" ति ।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति ।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा ते सङ्गामो पच्चुपट्ठितो भवेय्य, तदा त्वं परिखं खणापेय्यासि, पाकारं कारापेय्यासि, गोपुरं कारापेय्यासि, अट्टालकं कारापेय्यासि, धञ्ञं अतिहरापेय्यासि, तदा त्वं हत्थिस्मिं सिक्खेय्यासि, अस्सस्मिं सिक्खेय्यासि, रथस्मिं सिक्खेय्यासि, धनुस्मिं सिक्खेय्यासि, थरुस्मिं सिक्खेय्यासी" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, सम्पत्ते काले वायामो अकिच्चकरो भवति, पटिगच्चेव वायामो किच्चकरो भवति । भासितं पेतं, महाराज, भगवता—

'पटिगच्चेव तं कयिरा यं जञ्ञा हितमत्तनो ।
न साकटिकचिन्ताय मन्ता धीरो परक्कमे ॥
'यथा साकटिको मट्ठं समं हित्वा महापथं ।
विसमं मग्गमारुय्ह अक्खच्छिन्नो व झायति ॥
'एवं धम्मा अपक्कम्म अधम्ममनुवत्तिय ।
मन्दो मच्चुमुखं पत्तो अक्खच्छिन्नो व झायती'" ति ॥

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

६. नेरयिकग्गिउण्हभावपञ्हो

६. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'पाकतिकअग्गितो नेरयिको अग्गि महाभितापतरो होति । खुद्दको पि पासाणो पाकतिके अग्गिम्हि पक्खित्तो दिवसं पि पच्चमानो न विलयं गच्छति, कूटागारमत्तो पि पासाणो नेरयिकग्गिम्हि पक्खित्तो खणेन विलयं गच्छती' ति । एतं वचनं न सद्दहामि । एवं च पन वदेथ—'ये च तत्थ उप्पन्ना सत्ता ते अनेकानि पि वस्ससहस्सानि निरये पच्चमाना न विलयं गच्छन्ती' ति । तं पि वचनं न सद्दहामी" ति ।

थेरो आह—"तं किं मञ्ञसि, महाराज, या ता सन्ति मकरिनियो पि सुंसुमारिनियो पि कच्छपिनियो पि मोरिनियो पि कपोतिनियो पि, किं नु ता कक्खळानि पासाणानि सक्खरायो च खादन्ती" ति? "आम, भन्ते, खादन्ती" ति। "किं पन तानि तासं कुच्छियं कोट्ठब्भन्तरगतानि विलयं गच्छन्ती" ति? "आम, भन्ते, विलयं गच्छन्ती" ति। "यो पन तासं कुच्छियं गब्भो सो पि विलयं गच्छती" ति? "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेना" ति? "मञ्ञामि, भन्ते, कम्माधिकतेन न विलयं गच्छती" ति। "एवमेव खो, महाराज, कम्माधिकतेन नेरयिका सत्ता अनेकानि पि वस्ससहस्सानि निरये पच्चमाना न विलयं गच्छन्ति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सो न ताव कालङ्करोति, याव न तं पापं कम्मं ब्यन्तीहोती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, या ता सन्ति सीहिनियो पि ब्यग्घिनियो पि दीपिनियो पि कुक्कुरिनियो पि, किं नु ता कक्खळानि अट्ठिकानि मंसानि खादन्ती" ति? "आम भन्ते, खादन्ती" ति। "किं पन तानि तासं कुच्छियं कोट्ठब्भन्तरगतानि विलयं गच्छन्ती" ति? "आम, भन्ते, विलयं गच्छन्ती" ति। "यो पन तासं कुच्छियं गब्भो सो पि विलयं गच्छती" ति? "न हि भन्ते" ति। "केन कारणेना" ति? "मञ्ञामि, भन्ते, कम्माधिकतेन न विलयं गच्छती" ति। "एवमेव खो, महाराज, कम्माधिकतेन नेरयिका सत्ता अनेकानि पि वस्ससहस्सानि निरये पच्चमाना न विलयं गच्छन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, या ता सन्ति योनकसुखुमालिनियो पि खत्तियसुखुमालिनियो पि ब्राह्मणसुखुमालिनियो पि गहपतिसुखुमालिनियो पि, किं नु ता कक्खळानि खज्जकानि मंसानि खादन्ती" ति? "आम, भन्ते, खादन्ती" ति। "किं पन तानि तासं कुच्छियं कोट्ठब्भन्तरगतानि विलयं गच्छन्ती" ति? "आम, भन्ते, विलयं गच्छन्ती" ति। "यो पन तासं कुच्छियं गब्भो सोपि विलयं गच्छती" ति। "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेना" ति? "मञ्ञामि, भन्ते, कम्माधिकतेन न विलयं गच्छती" ति। "एवमेव खो, महाराज, कम्माधिकतेन नेरयिका सत्ता अनेकानि पि वस्ससहस्सानि निरये पच्चमाना न विलयं गच्छन्ति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सो न ताव कालङ्करोति, याव न तं पापं कम्मं ब्यन्तीहोती'" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. पथविसन्धारणकथा

७. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ–'अयं महापथवी उदके पतिट्ठिता, उदकं वाते पतिट्ठितं, वातो आकासे पतिट्ठितो' ति, एतं पि वचनं न सद्दहामी" ति। थेरो धम्मकरकेन उदकं गहेत्वा राजानं मिलिन्दं सञ्ञापेसि—"यथा, महाराज, इमं उदकं वातेन आधारितं, एवं तं पि उदकं व.तेन आधारितं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेन!" ति।

८. निरोधनिब्बानपञ्हो

८. राजा आह—"भन्ते नागसेन, निरोधो निब्बानं" ति? "आम, महाराज, निरोधो निब्बानं" ति। "कथं, भन्ते नागसेन, निरोधो निब्बानं" ति? "सब्बे बालपुथुज्जना खो, महाराज, अज्झत्तिकबाहिरे आयतने अभिनन्दन्ति अभिवदन्ति, अज्झोसाय तिट्ठन्ति; ते तेन सोतेन वुय्हन्ति, न परिमुच्चन्ति जातिया जराय मरणेन सोकेन परिदेवेन दुक्खेहि दोमनस्सेहि उपायासेहि, न परिमुच्चन्ति दुक्खस्मा ति वदामि। सुतवा च खो, महाराज, अरियसावको अज्झत्तिकबाहिरे आयतने नाभिनन्दति, नाभिवदति नाज्झोसाय तिठ्ठति। तस्स तं अनभिनन्दतो अनभिवदतो अनज्झोसाय तिट्ठतो तण्हा निरुज्झति, तण्हानिरोधा उपादाननिरोधो, उपादाननिरोधा भवनिरोधो, भवनिरोधा जातिनिरोधो, जातिनिरोधा जरामरणसोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा निरुज्झन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति। एवं खो, महाराज, निरोधो निब्बानं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेनो" ति।

९. निब्बानलभनपञ्हो

९. राजा आह—"भन्ते नागसेन, सब्बेव लभन्ति निब्बानं" ति? "न खो, महाराज, सब्बेव लभन्ति निब्बानं ति; अपि च खो, महाराज, यो सम्मा पटिपन्नो अभिञ्ञेय्ये धम्मे अभिजानाति, परिञ्ञेय्ये धम्मे परिजानाति, पहातब्बे धम्मे पजहति, भावेतब्बे धम्मे भावेति, सच्छिकातब्बे धम्मे सच्छिकरोति, सो लभति निब्बानं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१०. निब्बानसुखजाननपञ्हो

१०. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो न लभति निब्बानं, जानाति सो—'सुखं निब्बानं'" ति? "आम, महाराज, यो न लभति निब्बानं, जानाति सो—'सुखं निब्बानं'" ति। "कथं, भन्ते नागसेन, अलभन्तो जानाति—'सुखं

निब्बानं''' ति ? ''तं किं मञ्ञसि, महाराज, येसं नच्छिन्ना हत्थपादा, जानेय्युं ते, महाराज—'दुक्खं हत्थपादच्छेदनं''' ति ? ''आम, भन्ते, जानेय्युं'' ति। ''कथं जानेय्युं'' ति ? ''अञ्ञेसं, भन्ते, छिन्नहत्थपादानं परिदेवितसद्दं सुत्वा जानन्ति—'दुक्खं हत्थपादछेदनं''' ति। ''एवमेव खो, महाराज, येसं दिट्ठं निब्बानं तेसं सद्दं सुत्वा जानाति—'सुखं निब्बानं''' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

(इमम्हि वग्गे दस पञ्हा) चतुत्थो निब्बानवग्गो निट्ठितो।

५. बुद्धवग्गो

१. बुद्धस्सअत्थिनत्थिभावपञ्हो

१. राजा आह—''भन्ते नागसेन, बुद्धो तया दिट्ठो'' ति ? ''न हि, महाराजा'' ति। ''अथ ते आचरियेहि बुद्धो दिट्ठो'' ति ? ''न हि, महाराजा'' ति। ''तेन हि, भन्ते नागसेन, नत्थि बुद्धो'' ति ! ''किं पन, महाराज, हिमवति ऊहा नदी तया दिट्ठा'' ति ? 'न हि, भन्ते'' ति। ''अथ ते पितरा ऊहा नदी दिट्ठा'' ति ? ''न हि, भन्ते'' ति। 'तेन हि, महाराज, नत्थि ऊहा नदी'' ति ? ''अत्थि, भन्ते, किञ्चा पि तया ऊहा नदी न दिट्ठा, पितरा पि ते ऊहा नदी न दिट्ठा, अपि च अत्थि ऊहा नदी'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, किञ्चा पि मया भगवा न दिट्ठा, आचरियेहि पि मे भगवा न दिट्ठो; अपि च अत्थि भगवा'' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

२. बुद्धस्सअनुत्तरभावपञ्हो

२. राजा आह—भन्ते नागसेन, बुद्धो अनुत्तरो'' ति ? ''आम, महाराज, भगवा अनुत्तरो'' ति। ''कथं भन्ते नागसेन, अदिट्ठपुब्बं जानासि—बुद्धो अनुत्तरो'' ति ? ''तं किं मञ्ञसि, महाराज, येहि अदिट्ठपुब्बो महासमुद्दो, जानेय्युं ते, महाराज—महन्तो खो महासमुद्दो गम्भीरो अप्पमेय्यो दुप्परियोगाहो, यत्थिमा पञ्च महानदियो सततं समितं अप्पेन्ति, सेय्यथीदं—गङ्गा, यमुना, अचिरवती, सरभू, मही। नेव तस्स ऊनत्तं वा पूरत्तं वा पञ्ञायती'' ? ''आम, भन्ते, जानेय्युं'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, सावके महन्ते परिनिब्बुते पस्सित्वा जानामि—भगवा अनुत्तरो'' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

३. बुद्धस्सअनुत्तरभावजानन्नपञ्हो

राजा आह—"भन्ते नागसेन, सक्का जानितुं—बुद्धो अनुत्तरो" ति? "आम, महाराज, सक्का जानितुं—भगवा अनुत्तरो" ति। "कथं, भन्ते नागसेन, सक्का जानितुं—बुद्धो अनुत्तरो" ति? "भूतपुब्बं, महाराज, तिस्सत्थेरो नाम लेखाचरियो अहोसि। बहूनि वस्सानि अब्भतीतानि कालङ्कतस्स, कथं सो ञायती" ति? "लेखेन, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो धम्मं पस्सति सो भगवन्तं पस्सति। धम्मो, हि महाराज, भगवता देसितो" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

४. धम्मदिट्ठपञ्हो

राजा आह–"भन्ते नागसेन, धम्मो तया दिट्ठो" ति? "बुद्धनेत्तिया, खो, महाराज, बुद्धपञ्ञत्तिया यावजीवं सावकेहि वत्तितब्बं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते, नागसेना" ति।

५. असङ्कमनपटिसन्दहनपञ्हो

राजा आह—भन्ते नागसेन, न च सङ्कमति पटिसन्दहति चा" ति? "आम, महाराज, न च सङ्कमति पटिसन्दहति चा" ति।

"कथं, भन्ते नागसेन, न च सङ्कमति पटिसन्दहति च? ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो पदीपतो पदीपं पदीपेय्य, किं नु खो सो, महाराज पदीपो पदीपम्हा सङ्कन्तो" ति? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, न च सङ्कमति पटिसन्दहति चा" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"अभिजानासि नु त्वं, महाराज, दहरको सन्तो सिलोकाचरियस्स सन्तिके किञ्चि सिलोकं गहितं" ति? "आम, भन्ते" ति। "किं नु खो, महाराज, सो सिलोको आचरियम्हा सङ्कन्तो" ति? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, न च सङ्कमति पटिसन्दहति च." ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

६. वेदगूपञ्हो

राजा आह–"भन्ते नागसेन, वेदगू उपलब्भती" ति? थेरो आह–"परमत्थेन खो, महाराज, वेदगू नूपलब्भती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. अञ्ञकायसङ्कमनपञ्हो

"राजा आह–"भन्ते नागसेन, अत्थि कोचि सत्तो यो इमम्हा काया अञ्ञ कायं सङ्कमती" ति? "न हि, महाराजा" ति। "यदि, भन्ते, नागसेन,

इमम्हा काया अञ्ञं कायं सङ्कमन्तो नत्थि, ननु मुत्तो भविस्सति पापकेहि कम्मेही" ति ? "आम, महाराज, यदि न पटिसन्दहेय्य, मुत्तो भविस्सति पापकेहि कम्मेही ति। यस्मा च खो, महाराज, पटिसन्दहति, तस्मा न परिमुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो अञ्ञतरस्स पुरिसस्स अम्बं अवहरेय्य। किं सो दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति ? "आम, भन्ते, दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति। "न खो, सो, महाराज, तानि अम्बानि अवहरि, यानि तेन रोपितानि, कस्मा दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति ? "तानि, भन्ते, अम्बानि निस्साय जातानि, तस्मा दण्डप्पत्तो भवेय्या" ति।

"एवमेव खो, महाराज, इमिना नामरूपेन कम्मं करोति सोभनं वा असोभनं वा, तेन कम्मेन अञ्ञे नामरूपं पटिसन्दहति, तस्मा न परिमुत्तो पापकेहि कम्मेही" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

८. कम्मफलअत्थिभावपञ्हो

"राजा आह—"भन्ते नागसेन, इमिना नामरूपेन कम्मं कतं कुसलं वा अकुसलं वा, कुहिं तानि कम्मानि तिट्ठन्ती" ति ? "अनुबन्धेय्युं खो, महाराज, तानि कम्मानि छाया व अनपायिनी" ति। "सक्का पन, भन्ते, तानि कम्मानि दस्सेतुं—'इध वा इध वा तानि कम्मानि तिट्ठन्ती'" ति ? 'न सक्का, महाराज, तानि कम्मानि दस्सेतुं—'इध वा इध वा तानि कम्मानि तिट्ठन्ती'" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यानिमानि रुक्खानि अनिब्बत्तफलानि, सक्का तेसं फलानि दस्सेतुं—'इध वा इध वा तानि फलानि तिट्ठन्ती'" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अब्भोच्छिन्नाय सन्ततिया न सक्का तानि कम्मानि दस्सेतुं—'इध वा इध वा तानि कम्मानि तिट्ठन्ती'" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

९. उप्पज्जतिजाननपञ्हो

राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो उप्पज्जति जानाति सो 'उप्पज्जिस्सामी'" ति ? "आम, महाराज, यो उपज्जति जानाति सो 'उपज्जिसामि'" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कस्सको गहपतिको बीजानि पथवियं निक्खिपित्वा सम्मा

देवे वस्सन्ते जानाति 'धञ्ञं निब्बत्तिस्सती'' ? ''आम, भन्ते, जानेय्या'' ति।
''एवमेव खो, महाराज, यो उपज्जति जानाति सो 'उप्पज्जिस्सामी'' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

१०. बुद्धनिदस्सनपञ्हो

राजा आह-''भन्ते नागसेन, बुद्धो अत्थी'' ति ? ''आम, महाराज, भगवा अत्थी'' ति। ''सक्का पन, भन्ते नागसेन, बुद्धो निदस्सेतुं—इध वा इध वा'' ति ?

''परिनिब्बुतो, महाराज, भगवा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया। न सक्का भगवा निदस्सेतुं—'इध वा इध वा'' ति।

''ओपम्मं करोही'' ति।

''तं किं मञ्ञसि, महाराज, महतो अग्गिक्खन्धस्स जलमानस्स या अच्चि अत्थङ्गता, सक्का सा अच्चि दस्सेतुं—'इध वा इध वा''' ति ? ''न हि, भन्ते, निरुद्धा सा अच्चि अप्पञ्ञत्तिं गता'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, भगवा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतो अत्थङ्गतो, न सक्का भगवा निदस्सेतुं—'इध वा इध वा' ति। धम्मकायेन पन खो, महाराज, सक्का भगवा निदस्सेतुं। धम्मो हि, महाराज, भगवता देसितो'' ति।

''कल्लोसि, भन्ते नागसेना'' ति।

(इमस्मिं वग्गे दस पञ्हा) **पञ्चमो बुद्धवग्गो निट्ठितो।**

६. सतिवग्गो

१. कायपियायनपञ्हो

१. राजा आह-''भन्ते नागसेन, पियो पब्बजितानं कायो'' ति ? ''न खो, महाराज, पियो पब्बजितानं कायो''ति। ''अथ किस्स नु खो, भन्ते, केलायथ ममायथा'' ति। ''किं पन ते, महाराज, कदाचि करहचि सङ्गामगतस्स कण्डप्पहारो होति'' ति ? ''आम, भन्ते, होति'' ति। ''किं नु खो, महाराज, सो वणो आलेपेन च आलिम्पीयति, तेलेन च मक्खीयति, सुखुमेन च चोळपट्टेन पलिवेठीयति'' ति ? ''आम, भन्ते, आलेपेन च आलिम्पीयति तेलेन च मक्खीयति सुखुमेन च चोळपट्टेन पलिवेठीयती'' ति। ''किं नु खो, महाराज, पियो ते वणो, आलेपेन च आलिम्पीयति, तेलेन च मक्खीयति, सुखुमेन च चोळपट्टेन पलिवेठीयती'' ति ? ''न मे, भन्ते, पियो वणो, अपि च मंसस्स रूहनत्थाय आलेपेन च आलिम्पीयति, तेलेन च मक्खीयति, सुखुमेन च चोळपट्टेन पलिवेठीयती'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, अप्पियो पब्बजितानं कायो। अथ च पब्बजिता अनज्झोसिता कयं परिहरन्ति ब्रह्मचरियानुग्गहाय। अपि च खो, महाराज, वणूपमो कायो वुत्तो भगवता। तेन पब्बजिता वणमिव कायं परिहरन्ति अनज्झोसिता। भासितं पेतं, महाराज, भगवता—

'अल्लचम्मप्पटिच्छन्नो नवद्वारो महावणो ।
समन्ततो पग्घरति असुचि पूतिगन्धियो''' ति ॥

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

२. सब्बञ्ञुभावपञ्हो

२. राजा आह–"भन्ते नागसेन, बुद्धो सब्बञ्ञू सब्बदस्सावी" ति ? "आम, महाराज, भगवा सब्बञ्ञू सब्बदस्सावी" ति । "अथ किस्स नु खो, भन्ते नागसेन, सावकानं अनुपुब्बेन सिक्खापदं पञ्ञापेसी" ति ? "अत्थि पन ते, महाराज, कोचि वेज्जो यो इमिस्सं पठवियं सब्बभेसज्जानि जानाती" ति ? आम, भन्ते, अत्थी" ति । "किन्नु खो, महाराज, सो वेज्जो गिलानकं सम्पत्ते काले भेसज्जं पायेति, उदाहु असम्पत्ते काले" ति ? "सम्पत्ते काले, भन्ते, गिलानकं भेसज्जं पायेति, नो असम्पत्ते काले" ति । "एवमेव खो, महाराज, भगवा सब्बञ्ञू सब्बदस्सावी न असम्पत्ते काले सावकानं सिक्खापदं पञ्ञापेति, सम्पत्ते काले सावकानं सिक्खापदं पञ्ञापेति यावजीवं अनतिक्कमनीयं" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

३. महापुरिसलक्खणपञ्हो

३. राजा आह—"भन्ते नागसेन, बुद्धो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागतो असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जितो सुवण्णवण्णो कञ्चनसन्निभत्तचो ब्यामप्पभो" ति ? "आम, महाराज, भगवा द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागतो, असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जितो, सुवण्णवण्णो, कञ्चनसन्निभत्तचो, ब्यामप्पभो" ति ।

"किं पनस्स, भन्ते, मातापितरो पि द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागता असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जिता सुवण्णवण्णा कञ्चनसन्निभत्तचा ब्यामप्पभा" ति ? "नो चस्स, महाराज, मातापितरो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागता, असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जिता, सुवण्णवण्णा कञ्चनसन्निभत्तचा ब्यामप्पभा" ति ।

"एवं सन्ते खो, भन्ते नागसेन, न उप्पज्जति बुद्धो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागतो, असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जितो, सुवण्णवण्णो, कञ्चनसन्निभत्तचो, ब्यामप्पभो ति । अपि च मातुसदिसो वा पुत्तो होति मातुपक्खो वा, पितुसदिसो वा पुत्तो होति पितुपक्खो वा" ति । थेरो आह—'अत्थि पन, महाराज, किञ्चि पदुमं सतपत्तं" ति ? "आम, भन्ते, अत्थी" ति । "तस्स पन, कुहिं सम्भवो" ति ? "कद्दमे जायति, उदके आसीयती" ति । "किन्नु खो, महाराज, पदुमं कद्दमेन सदिसं वण्णेन वा गन्धेन वा रसेन वा" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "अथ उदकेन सदिसं वण्णेन वा गन्धेन वा रसेन वा" ति ? "न

हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, भगवा द्वत्तिसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागतो असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जितो, सुवण्णवण्णो, कञ्चनसन्निभत्तचो, ब्यामप्पभो ति। नो चस्स मातापितरो द्वत्तिसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागता असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जिता सुवण्णवण्णा कञ्चनसन्निभत्तचा ब्यामप्पभा" ति।

'कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

४. भगवतोब्रह्मचारीपञ्हो

४. राजा आह—"भन्ते नागसेन, बुद्धो ब्रह्मचारी" ति ? "आम, महाराज, भगवा ब्रह्मचारी" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, बुद्धो ब्रह्मुनो सिस्सो" ति ? "अत्थि पन ते, महाराज, हत्थिपामोक्खो" ति ? "आम, भन्ते, अत्थी" ति। "किं नु खो, महाराज, सो हत्थी कदाचि करहचि कोञ्चनादं नदति" ति ? "आम, भन्ते नदती" ति। "तेन हि महाराज, सो हत्थी कोञ्चसकुणस्स सिस्सो" ति। "न हि, भन्ते" ति। "किं पन, महाराज, ब्रह्मा सबुद्धिको अबुद्धिको" ति ? "सबुद्धिको, भन्ते" ति। "तेन हि महाराज, ब्रह्मा भगवतो सिस्सो" ति !

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

५. बुद्धस्सउपसम्पदापञ्हो

५. राजा आह—"भन्ते, नागसेन, उपसम्पदा सुन्दरा" ति ? "आम, महाराज, उपसम्पदा सुन्दरा" ति। "अत्थि पन, भन्ते बुद्धस्स उपसम्पदा, उदाहु नत्थी" ति ? "उपसम्पन्नो खो, महाराज, भगवा बोधिरुक्खमूले सह सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन, नत्थि भगवतो उपसम्पदा अञ्ञेहि दिन्ना। यथा सावकानं, महाराज, भगवा सिक्खापदं पञ्ञापेति यावजीवं अनतिक्कमनीयं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

६. अस्सुभेसज्जाभेसज्जपञ्हो

६. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो च मातरि मताय रोदति, यो च धम्मपेमेन रोदति, उभिन्नं तेसं रोदन्तानं कस्स अस्सु भेसज्जं, कस्स न भेसज्जं" ति ? "एकस्स खो, महाराज, अस्सु रागदोसमोहेहि समलं उण्हं, एकस्स पीतिसोमनस्सेन विमलं सीतलं। यं खो, महाराज, सीतलं तं भेसज्जं; यं उण्हं तं न भेसज्जं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. सरागवीतरागनानाकरणपञ्हो

७. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किं नानाकरणं सरागस्स च वीतरागस्स चा" ति ? "एको खो, महाराज, अज्झोसितो,, एको अनज्झोसितो" ति। "किं एतं, भन्ते, अज्झोसितो अनज्झसितो नामा" ति ? "एको खो, महाराज,

अत्थिको, एको अनत्थिको" ति। "पस्सामहं, भन्ते एवरूपं यो च सरागो यो च वीतरागो, सब्बो पेसो सोभनं येव इच्छति खादनीयं वा भोजनीयं वा, न कोचि पापकं इच्छती" ति। "अवीतरागो खो, महाराज, रसपटिसंवेदी च रसरागप्पटिसंवेदी च भोजनं भुञ्जति, नो च खो रसरागपटिसंवेदी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

८. पञ्ञापतिट्ठानपञ्हो

८. राजा आह–"भन्ते नागसेन, पञ्हा कुहिं पटिवसती" ति ? "न कत्थचि, महाराज" ति। "तेन, हि भन्ते नागसेन, नत्थि पञ्ञा" ति। "वातो, महाराज, कुहिं पटिवसती" ति ? "न कत्थचि, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, नत्थि वातो" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

९. सङ्खारपञ्हो

९. राजा आह–"भन्ते नागसेन, यं पनेतं ब्रूसि–'संसारो' ति, कतमो सो संसारो" ति ? "इध, महाराज, जातो इधेव मरति, इध मतो अञ्ञत्र उप्पज्जति, तहिं जातो तहिं येव मरति, तहिं मतो अञ्ञत्र उप्पज्जति। एवं खो, महाराज, संसारो होति" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो पक्कं अम्बं खादित्वा अट्ठिं रोपेय्य। ततो महन्तो अम्बरुक्खो निब्बत्तित्वा फलानि ददेय्य। अथ सो पुरिसो ततो पि पक्कं अम्बं खादित्वा अट्ठिं रोपेय्य। ततो पि महन्तो अम्बरुक्खो निब्बत्तित्वा फलानि ददेय्य। एवमेतेसं रुक्खानं कोटि न पञ्ञायति। एवमेव खो, महाराज, इध जातो इधेव मरति, इध मतो अञ्ञत्र उप्पज्जति। तहिं जातो तहिं येव मरति, तहिं मतो अञ्ञत्र उप्पज्जति, एवं खो, महाराज, संसारो होति" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१० चिरकतसरणपञ्हो

१०. राजा आह—"भन्ते नागसेन, केन अतीतं चिरकतं सरती" ति ? "सतिया, महाराजा" ति। "ननु, भन्ते नागनेन, चित्तेन सरति, नो सतिया" ति। "अभिजानासि नु त्वं, महाराज, किंचिदेव करणीयं कत्वा पमुट्ठं" ति ? "आम, भन्ते" ति। "किं नु खो त्वं, महाराज, तस्मि समये अचित्तको अहोसी" ति ? "न हि, भन्ते, सति तस्मि समये नाहोसी" ति।

"अथ कस्मा त्वं, महाराज, एवमाह–'चित्तेन सरति, नो सतिमा'" ति !

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

११. अभिजानन्तसतिपञ्हो

राजा आह–"भन्ते नागसेन, सब्बा सति अभिजानन्ता उप्पज्जति, उदाहु कटुमिका व सती" ति ? "अभिजानन्ता पि, महाराज, सति उपज्जति कटुमिका पि सती" ति । "एवं खो, भन्ते नागसेन, सब्बा सति अभिजानन्ता, नत्थि कटुमिका सती" ति । "यदि नत्थि, महाराज, कटुमिका सति, नत्थि किञ्चि सिप्पिकानं कम्मायतनेहि वा सिप्पायतनेहि वा विज्जाट्ठानेहि वा करणीयं, निरत्थिका आचरिया । यस्मा च खो, महाराज, अत्थि कटुमिका सति, तस्मा अत्थि कम्मायतनेहि वा सिप्पायतनेहि वा विज्जाट्ठानेहि वा करणीयं, अत्थो च आचरियेही" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

(इमस्मि वग्गो एकादस पञ्हा) छट्ठो सतिवग्गो निट्ठितो ।

७. अरूपधम्मववत्थानवग्गो

१. सतिउप्पज्जनपञ्हो

१. राजा आह—"भन्ते नागसेन, कतिहाकारेहि सति उप्पज्जती" ति ? "सत्तरसहाकारेहि, महाराज, सति उप्पज्जती" ति । "कतमेहि सत्तरसहाकारेही" ति ? "अभिजानतो पि, महाराज, सति उप्पज्जति, कटुमिकाय पि सति उप्पज्जति, ओळारिकविञ्ञाणतो पि सति उपज्जति, हितविञ्ञाणतो पि सति उप्पज्जति, अहितविञ्ञाणतो पि सति उप्पज्जति, सभागनिमित्ततो पि सति उप्पज्जति, विसभागनिमित्ततो पि सति उप्पज्जति, कथाभिञ्ञाणतो पि सति उप्पज्जति, लक्खणतो पि सति उप्पज्जति, सारणतो पि सति उप्पज्जति, मुद्दातो पि सति उप्पज्जति, गणनातो सति उप्पज्जति, धारणतो पि सति उप्पज्जति, भावनातो पि सति उप्पज्जति, पोत्थकनिबन्धनतो पि सति उप्पज्जति, उपनिक्खेपतो पि सति उप्पज्जति, अनुभूततो पि सति उप्पज्जती" ति ।

"कथं अभिजानतो सति उप्पज्जति ? यथा, महाराज, आयस्मा च आनन्दो खुज्जुत्तरा च उपासिका । ये वा पनञ्ञे पि केचि जातिस्सरा जातिं सरन्ति, एवं अभिजानतो सति उप्पज्जति । (१)

"कथं कटुमिकाय सति उप्पज्जति ? यो पकतिया मुट्ठस्सतिको, परे च तं सरापनत्थं निबन्धन्ति, एवं कटुमिकाय सति उप्पज्जति । (२)

"कथं ओळारिकविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति ? यदा रज्जे वा अभिसित्तो होति, सोतापत्तिफलं वा पत्तो होति, एवं ओळारिकविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति । (३)

"कथं हितविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति ? यम्हि सुखापितो 'अमुकस्मि एवं सुखापितो' ति सरति, एवं हितविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति । (४)

"कथं अहितविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति ? यम्हि दुक्खापितो 'अमुकस्मि एवं दुक्खापितो' ति सरति, एवं अहितविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति। (५)

"कथं सभागनिमित्ततो सति उप्पज्जति ? सदिसं पुग्गलं दिस्वा मातरं वा पितरं वा भातरं वा भगिनिं वा सरति; ओट्ठं वा गोणं वा गद्रभं वा दिस्वा अञ्ञं तादिसं ओट्ठं वा गोणं वा गद्रभं वा सरति, एवं सभागनिमित्ततो सति उप्पज्जति। (६)

"कथं विसभागनिमित्ततो सति उप्पज्जति ? असुकस्स नाम वण्णो एदिसो, सद्दो एदिसो, गन्धो एदिसो, रसो एदिसो, फोट्ठब्बो एदिसो ति सरति, एवं विसभागनिमित्ततो पि सति उप्पज्जति। (७)

"कथं कथाभिञ्ञाणतो सति उप्पज्जति ? यो पकतिया मुट्ठस्सतिको होति तं परे सरापेन्ति, तेन सो सरति, एवं कथाभिञ्ञाणतो सति उप्पज्जति। (८)

"कथं लक्खणतो सति उप्पज्जति ? यो पकतिया बलीवद्दानं अङ्केन जानाति, लक्खणेन जानाति, एवं लक्खणतो सति उप्पज्जति। (९)

"कथं सारणतो सति उप्पज्जति ? यो पकतिया मुठ्ठस्सतिको होति, यो तं—'सराहि भो, सराहि, भो' ति पुनप्पुनं सरापेति, एवं सारणतो सति उप्पज्जति। (१०)

"कथं मुद्दातो सति उप्पज्जति ? लिपिया सिक्खितत्ता जानाति—'इमस्स अक्खरस्स अनन्तरं इमं अक्खरं कातब्बं' ति, एवं मुद्दातो सति उप्पज्जति। (११)

"कथं गणनातो सति उप्पज्जति ? गणनाय सिक्खितत्ता गणका बहुं पि गणेन्ति, एवं गणनातो सति उप्पज्जति। (१२)

"कथं धारणतो सति उप्पज्जति ? धारणाय सिक्खितत्ता धारणका बहुं पि धारेन्ति, एवं धारणतो सति उप्पज्जति। (१३)

"कथं भावनातो सति उप्पज्जति ? इध भिक्खु अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, सेय्यथीदं—एकं पि जातिं, द्वे पि जातियो···पे०···इति साकारं सउद्देसं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, एवं भावनातो सति उप्पज्जति। (१४)

"कथं पोत्थकनिबन्धनतो सति उप्पज्जति। राजानो अनुसासनियं अस्सरन्ता 'एकं पोत्थकं आरहथा' ति, तेन पोत्थकेन अनुस्सरन्ति, एवं पोत्थकनिबन्धनतो सति उप्पज्जति। (१५)

"कथं उपनिक्खेपतो सति उप्पज्जति ? उपनिक्खित्तं भण्डं दिस्वा सरति, एवं उपनिक्खेपतो सति उप्पज्जति। (१६)

"कथं अनुभूततो सति उप्पज्जति ? दिट्ठत्ता रूपं सरति, सुतत्ता सद्दं सरति घायितत्ता गन्धं सरति, सायितत्ता रसं सरति, फुट्ठत्ता फोट्ठब्बं सरति,

विञ्ञातत्ता धम्मं सरति, एवं अनुभूततो सति उप्पज्जति। इमेहि खो, महाराज, सत्तरसहाकारेहि सति उप्पज्जती" ति। (१७)

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

२. बुद्धगुणसतिपटिलाभपञ्हो

२. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे एवं भणथ—'यो वस्ससतं अकुसलं करेय्य, मरणकाले च एकं बुद्धगुणं सतिं पटिलभेय्य, सो देवेसु उप्पज्जेय्या' ति, एतं न सद्दहामि। एवं च पन वदेथ—'एकेन पाणातिपातेन निरये उप्पज्जेय्या' ति, एतं पि न सद्दहामी" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, खुद्दको पि पासाणो विना नावाय उदके उप्पिलवेय्या" ति? "न हि, भन्ते" ति। "किं नु खो, महाराज, वाहसतं पि पासाणानं नावाय आरोपितं उदके उप्पिलवेय्या" ति? "आम, भन्ते" ति। "यथा, महाराज, नावा, एवं कुसलानि कम्मानि दट्ठब्बानी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

३. दुक्खनिरोधवायामपञ्हो

३. राजा आह—"भन्ते नागसेन, किं तुम्हे अतीतस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथा" ति? "न हि, महाराजा" ति। "किं पन, भन्ते, अनागतस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथा" ति? "न हि, महाराजा" ति। "किं पन पच्चुप्पन्नस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथा" ति? "न हि, महाराजा" ति।

"यदि तुम्हे न अतीतस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथ, न अनागतस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथ, न पच्चुप्पन्नस्स दुक्खस्स पहानाय वायमथ, अथ किमत्थाय वायमथा" ति? थेरो आह—'किन्ति, महाराज, इदं च दुक्खं निरुज्झेय्य, अञ्ञं च दुक्खं नुप्पज्जेय्या' ति, एतदत्थाय वायमामा" ति।

"अत्थि पन ते, भन्ते नागसेन, अनागतं दुक्खं" ति? "नत्थि, महाराजा" ति। "तुम्हे खो, भन्ते नागसेन, अतिपण्डिता, ये तुम्हे असन्तानं अनागतानं दुक्खानं पहानाय वायमथा" ति। "अत्थि पन ते, महाराज, केचि पटिराजानो पच्चत्थिका पच्चामित्ता पच्चुपट्ठिता होन्ती" ति? "आम, भन्ते, अत्थी" ति।

"किं नु खो, महाराज, तदा तुम्हे परिखं खणापेय्याथ, पाकारं चिनापेय्याथ, गोपुरं कारापेय्याथ, अट्टालकं कारापेय्याथ, धञ्ञं अतिहरापेय्याथा" ति? "न हि, भन्ते पटिगच्चेव तं पटियत्तं होती" ति।

"किं तुम्हे, महाराज, तदा हत्थिस्मिं सिक्खेय्याथ, अस्सस्मिं सिक्खेय्याथ, रथस्मिं सिक्खेय्याथ, धनुस्मिं सिक्खेय्याथ, थरुस्मिं सिक्खेय्याथा" ति?

"न हि, भन्ते, पटिगच्चेव तं सिक्खितं होती" ति। "किस्सत्थाया" ति? "अनागतानं, भन्ते, भयानं पटिबाहनत्थाया" ति। "किं नु खो, महाराज, अत्थि अनागतं भयं" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "तुम्हे च खो, महाराज, अतिपण्डिता, ये तुम्हे असन्तानं अनागतानं भयानं पटिबाहनत्थाय पटियादेथा" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा त्वं पिपासितो भवेय्यासि तदा त्वं उदपानं खणापेय्यासि, पोक्खरणिं खणापेय्यासि, तळाकं खणापेय्यासि—'पानीयं पिविस्सामी'" ति? "न हि, भन्ते, पटिगच्चेव तं पटियत्तं होती" ति।

"किस्सत्थाय।" ति? "अनागतानं भन्ते, पिपासानं पटिबाहनत्थाय पटियत्तं होती" ति। "अत्थि पन, महाराज, अनागता पिपासा" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "तुम्हे खो, महाराज, अतिपण्डिता, ये तुम्हे असन्तानं अनागतानं पिपासानं पटिबाहनत्थाय तं पटियादेथा" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, यदा त्वं बुभुक्खितो भवेय्यासि तदा त्वं खेत्तं कसापेय्यासि, सालिं वपापेय्यासि—'भत्तं भुञ्जिस्सामी'" ति? "न हि, भन्ते, पटिगच्चेव तं पटियत्तं होती" ति। "किस्सत्थाया" ति? "अनागतानं, भन्ते, बुभुक्खानं पटिबाहनत्थाया" ति। "अत्थि पन, महाराज, अनागता बुभुक्खा" ति? "नत्थि, भन्ते" ति। "तुम्हे खो, महाराज, अतिपण्डिता ये तुम्हे असन्तानं अनागतानं बुभुक्खानं पटिबाहनत्थाय पटियादेथा" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

४. ब्रह्मलोकपञ्हो

४. राजा आह—"भन्ते नागसेन, कीवदूरो इतो ब्रह्मलोको" ति? "दूरो खो, महाराज, इतो ब्रह्मलोको—कूटागारमत्ता सिला तम्हा पतिता अहोरत्तेन अट्ठचत्तालीसयोजनसहस्सानि भस्समाना चतूहि मासेहि पथवियं पतिट्ठहेय्या" ति।

"भन्ते नागसेन, तुम्हे एवं भणथ—'सेय्यथापि बलवा पुरिसो सम्मिञ्जितं वा बाहं पसारेय्य, पसारितं वा बाहं सम्मिञ्जेय्य; एवमेव इद्धिमा भिक्खु चेतोवसिप्पत्तो जम्बुदीपे अन्तरहितो ब्रह्मलोके पातुभवेय्या' ति, एतं वचनं न सद्दहामि; एवं अतिसीघं ताव बहूनि योजनसतानि गच्छिस्सती" ति?

थेरो आह—"कुहिं पन, महाराज, तव जातभूमी" ति? "अत्थि, भन्ते, अलसन्दो नाम दीपो, तत्थाहं जातो" ति। "कीव दूरो, महाराज, इतो

अलसन्दो होती" ति ? "द्विमत्तानि, भन्ते, योजनसतानी" ति। "अभिजानासि नु त्वं, महाराज, तत्थ किञ्चिदेव करणीयं करित्वा सरिता" ति ? "आम, भन्ते, सरामी" ति। "लहुं खो त्वं, महाराज, गतोसि द्विमत्तानि योजनसतानी" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

५. द्विन्नं लोकुप्पन्नानं समकभावपञ्हो

५ राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो इध कालङ्कतो ब्रह्मलोके उप्पजेय्य, यो च इध कालङ्कतो कस्मीरे उप्पज्जेय्य, को चिरतरं, को सीघतरं" ति ? "समकं, महाराजा" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"कुहिं पन, महाराज, तव जातनगरं" ति ? "अत्थि, भन्ते, कलसिगामो नाम, तत्थाहं जातो" ति। "कीव दूरो, महाराज, इतो कलसिगामो होती" ति ? "द्विमत्तानि, भन्ते, योजनसतानी" ति। "कीव दूरं, महाराज, इतो कस्मीरं होती" ति ? "द्वादस, भन्ते, योजनानी" ति। "इङ्घ त्वं, महाराज, कलसिगामं चिन्तेही" ति। "चिन्तितो, भन्ते" ति। "इङ्घ त्वं, महाराज, कस्मीरं चिन्तेही" ति। "चिन्तितं, भन्ते" ति।

"कतमं नु खो, महाराज, चिरेन चिन्तितं, कतमं सीघतरं" ति ? "समकं, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो इध कालङ्कतो ब्रह्मलोके उप्पज्जेय्य, यो च इध कालङ्कतो कस्मीरे उप्पज्जेय्य, समकं येव उप्पज्जन्ती" ति।

"भिय्यो ओपम्मं करोही" ति।

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, द्वे सकुणा आकासेन गच्छेय्युं। तेसु एको उच्चे रुक्खे निसीदेय्य, एको नीचे रुक्खे निसीदेय्य। तेसं समकं पतिट्ठितानं कतमस्स छाया पठमतरं पथवियं पतिट्ठहेय्य, कतमस्स छाया चिरेन पथवियं पतिट्ठहेय्या" ति ? "समकं, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो इध कालङ्कतो ब्रह्मलोके उप्पज्जेय्य, यो च इध कालङ्कतो कस्मीरे उप्पज्जेय्य, समकं येव उप्पज्जन्ती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

६. बोज्झङ्गपञ्हो

६. राजा आह–"कति नु खो, भन्ते नागसेन, बोज्झङ्गा" ति ? "सत्त खो, महाराज, बोज्झङ्गा" ति। "कतिहि पन, भन्ते, बोज्झङ्गेहि बुज्झती" ति ? "एकेन खो, महाराज, बोज्झङ्गेन बुज्झति धम्मविचयसम्बोज्झङ्गेना" ति।

"अथ किस्स नु खो, भन्ते, वुच्चन्ति—'सत्त बोज्झङ्गा'" ति ? "तं किं मञ्ञसि, महाराज, असि कोसिया पक्खित्तो अग्गहितो हत्थेन उस्सहति छेज्जं छिन्दितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, धम्मविचयसम्बोज्झङ्गेन विना छहि बोज्झङ्गेहि न बुज्झती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

७. पापपुञ्ञानं अप्पानप्पभावपञ्हो

७. राजा आह—"भन्ते नागसेन, कतरं नु खो बहुतरं पुञ्ञं वा अपुञ्ञं वा" ति ? "पुञ्ञं खो, महाराज, बहुतरं, अपुञ्ञं थोकं" ति।

"केन कारणेना" ति ? "अपुञ्ञं, खो महाराज, करोन्तो विप्पटिसारी होति—'पापकम्मं मया कतं' ति, तेन पापं न वड्ढति। पुञ्ञं खो, महाराज, करोन्तो अविप्पटिसारी होति, अविप्पटिसारिनो पामोज्जं जायते, पमुदितस्स पीति जायति, पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति, पस्सद्धकायो सुखं वेदेति, सुखिनो चित्तं समाधियति, समाहितो यथाभूतं पजानाति, तेन कारणेन पुञ्ञं वड्ढति। पुरिसो खो, महाराज, छिन्नहत्थपादो भगवतो एकं उप्पलहत्थं दत्वा एकनवुतिकप्पानि विनिपातं न गच्छिस्सति। इमिना पि, महाराज, कारणेन भणामि—'पुञ्ञं बहुतरं अपुञ्ञं थोकं'" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

८. जानन्ताजानन्तपापकरणभावपञ्हो

८. राजा आह—"भन्ते नागसेन, यो जानन्तो पापकम्मं करोति, यो अजानन्तो पापकम्मं करोति, कस्स बहुतरं अपुञ्ञं" ति ? थेरो आह—"यो खो, महाराज, अजानन्तो पापकम्मं करोति, तस्स बहुतरं अपुञ्ञं" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, यो अम्हाकं राजपुत्तो वा राजमहामत्तो वा अजानन्तो पापकम्मं करोति, तं मयं दिगुणं दण्डेमा" ति ? "तं किं मञ्ञसि, महाराज, तत्तं अयोगुळं आदित्तं सम्पज्जलितं सजोतिभूतं एको अजानन्तो गण्हेय्य, एको जानन्तो गण्हेय्य, कतमो बलवतरं डय्हेय्या" ति ? "यो खो, भन्ते, अजानन्तो गण्हेय्य सो बलवतरं डय्हेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो अजानन्तो पापकम्मं करोति, तस्स बहुतरं अपुञ्ञं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

९. उत्तरकुरुकादिगमनपञ्हो

९. राजा आह—"भन्ते नागसेन, अत्थि कोचि, यो इमिना सरीरेन उत्तरकुरुं वा गच्छेय्य, ब्रह्मलोकं वा, अञ्ञं वा पन दीपं" ति ? "अत्थि, महाराज,

यो इमिना चातुम्महाभूतिकेन कायेन उत्तरकुरुं वा गच्छेय्य, ब्रह्मलोकं वा, अञ्ञं वा दीपं" ति ।

"कथं, भन्ते नागसेन, इमिना चातुम्महाभूतिकेन कायेन उत्तरकुरुं वा गच्छेय्य, ब्रह्मलोकं वा, अञ्ञं वा पन दीपं" ति ? "अभिजानासि नु त्वं महाराज, इमिस्सा पथविया विदत्थिं वा रतनिं वा लङ्घिता" ति ? "आम, भन्ते, अभिजानामि—'अहं, भन्ते नागसेन, अट्ठ पि रतनियो लङ्घेमी'" ति । "कथं त्वं, महाराज, अट्ठ पि रतनियो लङ्घेसी" ति ? "अहं हि, भन्ते, चित्तं उप्पादेमि—'एत्थ निपतिस्सामी' ति । सह चित्तुप्पादेन कायो मे लहुको होती" ति । "एवमेव खो, महाराज, इद्धिमा भिक्खु चेतोवसिप्पत्तो कायं चित्ते समारोपेत्वा चित्तवसेन वेहासं गच्छती" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

१०. दीघट्ठिपञ्हो

१०. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे एवं भणथ—'अट्ठिकानि दीघानि योजनसतिकानि पी' ति । रुक्खो पि ताव नत्थि योजनसतिको । कुतो पन अट्ठिकानि दीघानि योजनसतिकानि भविस्सन्ती" ति ?

"तं किं मञ्ञसि, महाराज, सुतं ते महासमुद्दे पञ्चयोजनसतिका पि मच्छा अत्थी" ति ? "आम, भन्ते, सुतं" ति । "ननु, महाराज, पञ्चयोजनसतिकस्स मच्छस्स अट्ठिकानि दीघानि भविस्सन्ति योजनसतिकानि पी" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

११. अस्सासपस्सासनिरोधपञ्हो

११. राजा आह—"भन्ते नागसेन, तुम्हे एवं भणथ—'सक्का अस्सासपस्सासे निरोधेतुं'" ति ? "आम, महाराज सक्का अस्सासपस्सासे निरोधेतुं" ति । 'कथं भन्ते नागसेन, सक्का अस्सासपस्सासे निरोधेतुं" ति ? "तं किं मञ्ञसि, महाराज, सुतपुब्बो ते कोचि काकच्छमानो" ति ? "आम भन्ते सुतपुब्बो" ति । "किं नु महाराज, सो सद्दो काये नमिते विरमेय्या" ति ? "आम, भन्ते विरमेय्या" ति । "सो हि नाम, महाराज, सद्दो अभावितकायस्स अभावितसीलस्स अभावितचित्तस्स अभावितपञ्ञस्स काये नमिते विरमिस्सति, किं पन भावितकायस्स भावितसीलस्स भावितचित्तस्स भावितपञ्ञस्स चतुत्थज्झानं समापन्नस्स अस्सासपस्सासा न निरुज्झिस्सन्ती" ति ।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति ।

१२. समुद्दपञ्हो

१२. राजा आह—"भन्ते नागसेन, 'समुद्दो समुद्दो' ति वुच्चति, केन कारणेन

उदकं 'समुद्दो' ति वुच्चती" ति ? थेरो आह—"यत्तकं महाराज, उदकं तत्तकं लोणं, यत्तकं लोणं तत्तकं उदकं, तस्मा 'समुद्दो' ति वुच्चती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१३. समुद्दएकरसपञ्हो

१३. राजा आह—"भन्ते नागसेन, केन कारणेन समुद्दो एकरसो लोणरसो" ति ? चिरसण्ठितत्ता खो, महाराज, उदकस्स समुद्दो एकरसो लोणरसो" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१४. सुखुमपञ्हो

१४. राजा आह—"भन्ते नागसेन, सक्का सब्बं सुखुमं छिन्दितुं" ति ? "आम, महाराज, सक्का सब्बं सुखुमं छिन्दितुं" ति। "किं पन, भन्ते, सब्बं सुखुमं" ति ? "धम्मो खो, महाराज, सब्बसुखुमो। न खो, महाराज, धम्मा सब्बे सुखुमा, 'सुखुमं' ति वा 'थूलं' ति वा धम्मानमेतमधिवचनं। यं किञ्चि छिन्दितब्बं सब्बं तं पञ्ञाय छिन्दति, नत्थि दुतियं पञ्ञाय छेदनं" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१५. विञ्ञाणनानत्तपञ्हो

१५. राजा आह—"भन्ते नागसेन, 'विञ्ञाणं' ति वा 'पञ्ञा' ति वा 'भूतस्मिं जीवो' ति वा, इमे धम्मा नानत्था चेव नानाब्यञ्जना च, उदाहु एकत्था, ब्यञ्जनमेव नानं" ति ? "विजाननलक्खणं, महाराज, विञ्ञाणं। पजानन-लक्खणा पञ्ञा। भूतस्मिं जीवो नूपलब्भती" ति। "यदि जीवो नूपलब्भति अथ को चरहि चक्खुना रूपं पस्सति, सोतेन सद्दं सुणाति, घानेन गन्धं घायति, जिव्हाय रसं सायति, कायेय फोट्ठब्बं फुसति, मनसा धम्मं विजानाती" ति ? थेरो आह—"यदि जीवो चक्खुना रूपं पस्सति…पे० … मनसा धम्मं विजानाति, सो जीवो चक्खुद्वारेसु उप्पाटितेसु महन्तेन आकासेन बहिमुखो सुट्ठुतरं रूपं पस्सेय्य, सोतेसु उप्पाटितेसु…घाने उप्पाटिते…जिव्हाय उप्पाटिताय…काये उप्पाटिते महन्तेन आकासेन सुट्ठुतरं सद्दं सुणेय्य, गन्धं घायेय्य, रसं सायेय्य, फोट्ठब्बं फुसेय्या" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, भूतस्मिं जीवो नूपलब्भती" ति।

"कल्लोसि, भन्ते नागसेना" ति।

१६. अरूपधम्मववत्थानदुक्करपञ्हो

१६. राजा आह—"भन्ते नागसेन, दुक्करं नु खो भगवता कतं" ति ? थेरो आह—"दुक्करं, महाराज, भगवता कतं" ति। "किं पन, भन्ते नागसेन, दुक्करं भगवता कतं" ति ? "दुक्करं, महाराज, भगवता कतं—इमेसं अरूपीनं

चित्तचेतसिकानं धम्मानं एकारम्मणे वत्तमानानं ववत्थानं अक्खातं--'अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं चित्तं" ति।

"ओपम्मं करोही" ति।

"यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो नावाय महासमुद्दं अज्झोगाहेत्वा हत्थपुटेन उदकं गहेत्वा जिव्हाय सायित्वा जानेय्य नु खो, महाराज, सो पुरिसो 'इदं गङ्गाय उदकं, इदं यमुनाय उदकं, इदं अचिरवतिया उदकं, इदं सरभुया उदकं, इदं महिया उदकं"' ति? "दुक्करं, भन्ते, जानितुं" ति। "इतो दुक्करतरं खो, महाराज, भगवता कतं इमेसं अरूपीनं चित्तचेतसिकानं धम्मानं एकारम्मणे वत्तमानानं ववत्थानं अक्खातं-अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं चित्तं" ति।

"सुट्ठु, भन्ते" ति राजा अब्भनुमोदी ति।

(इमस्मिं वग्गे सोळस पञ्हा) सत्तमो वग्गो निट्ठितो।

मिलिन्दपञ्हपुच्छाविसज्जना

थेरो आह--"जानासि खो, महाराज, सम्पति का वेला" ति? "आम, भन्ते, जानामि सम्पति पठमो यामो अतिक्कन्तो, मज्झिमो यामो पवत्तति, उक्का पदीपियन्ति, चत्तारि पटाकानि आणत्तानि, गमिस्सन्ति भण्डतो राजदेय्यानि" ति।

योनका एवमाहंसु—"कल्लोसि, महाराज, पण्डितो थेरो" ति।

"आम, भणे, पण्डितो थेरो। एदिसो आचरियो भवेय्य, मादिसो च अन्तेवासी; न चिरस्सेव पण्डितो धम्मं आजानेय्या" ति।

तस्स पञ्हवेय्याकरणेन तुट्ठो राजा थेरं नागसेनं सतसहस्सग्घनकेन कम्बलेन अच्छादेत्वा—"भन्ते नागसेन, अज्जतग्गे ते अट्ठसतं भत्तं पञ्ञापेमि, यं किञ्चि अन्तेपुरे कप्पियं तेन च पवारेमी" ति आह। "अलं, महाराज; जीवामी" ति।

"जानामि, भन्ते नागसेन, जीवसि। अपि च अत्तानं च रक्ख, ममं च रक्खाहीति। कथं अत्तानं रक्खसि? 'नागसेनो मिलिन्दं राजानं पसादेसि, न च किञ्चि अलभी' ति परापवादो आगच्छेय्या ति एवं अत्तानं रक्ख। कथं ममं रक्खसि? 'मिलिन्दो राजा पसन्नो पसन्नाकारं न करोती' ति परापवादो आगच्छेय्या ति एवं ममं रक्खाही" ति। "तथा होतु, महाराजा" ति। "सेय्यथापि, भन्ते, सीहो मिगराजा सुवण्णपञ्जरे पक्खित्तो पि बहिमुखो येव होति; एवमेव खो अहं, भन्ते, किञ्चापि अगारं अज्झावसामि बहिमुखो

येव पन अच्छामि। सचे अहं, भन्ते, अगारस्मा अनागारियं पब्बजेय्यं, न चिरं जीवेय्यं, बहू मे पच्चत्थिका'' ति।

अथ खो आयस्मा नागसेनो मिलिन्दस्स रञ्ञो पञ्हं विसज्जेत्वा उट्ठायासना सङ्घारामं अगमासि। अचिरपक्कन्ते च आयस्मन्ते नागसेने मिलिन्दस्स रञ्ञो एतदहोसि—"किं मया पुच्छितं, किं भदन्तेन नागसेनेन विसज्जितं'' ति? अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो एतदहोसि—"सब्बं मया सुपुच्छितं, सब्बं भदन्तेन नागसेनेन सुविसज्जितं'' ति।

आयस्मतो पि नागसेनस्स सङ्घारामगतस्स एतदहोसि—"किं मिलिन्देन रञ्ञा पुच्छितं, किं मया विसज्जितं'' ति। अथ खो आयस्मतो नागसेनस्स एतदहोसि—"सब्बं मिलिन्देन रञ्ञा सुपुच्छितं सब्बं मया सुविसज्जितं'' ति।

अथ खो आयस्मा नागसेनो तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन मिलिन्दस्स रञ्ञो निवेसनं तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"मा खो भदन्तस्स एवं अहोसि—'नागसेनो मया पञ्हं पुच्छितो ति तेनेव सोमनस्सेन तं रत्तावसेसं वीतिनामेसी' ति, न ते एवं दट्ठब्बं। तस्स मय्हं, भन्ते, तं रत्तावसेसं एतदहोसि—'किं मया पुच्छितं, किं भदन्तेन विस्सज्जितं ति? सब्बं मया सुपुच्छितब्बं भदन्तेन सुविस्सज्जितं''' ति।

थेरो पि एवमाह—"मा खो महाराजस्स एवं अहोसि—'मिलिन्दस्स रञ्ञो मया पञ्हो विसज्जितो ति तेनेव सोमनस्सेन तं रत्तावसेसं वीतिनामेसी' ति, न ते एवं दट्ठब्बं। तस्स मय्हं, महाराज, तं रत्तावसेसं एतदहोसि—'किं मिलिन्देन रञ्ञा पुच्छितं, किं मया विस्सज्जितं। सब्बं मिलिन्देन रञ्ञा सुपुच्छितं, सब्बं मया सुविस्सज्जितं''' ति।

इति ह ते महानागा अञ्ञमञ्ञस्स सुभासितं समनुमोदिंसू ति।

मिलिन्दपञ्हपुच्छाविसज्जना निट्ठिता।

मेण्डकपञ्हो

मेण्डकपञ्हारम्भणकथा

१. भस्सप्पवेदी वेतण्डी, अतिबुद्धि विचक्खणो।
मिलिन्दो ञाणभेदाय, नागसेनमुपागमि॥
वसन्तो तस्स छायाय, परिपुच्छि पुनप्पुनं।
पभिन्नबुद्धि हुत्वान, सो पि आसि तिपेटको॥
नवङ्गमनुमज्जन्तो, रत्तिभागे रहोगतो।
अद्दक्खि मेण्डके पञ्हे, दुन्निवेठे सनिग्गहे॥
परियायभासितं अत्थि, अत्थि सन्धायभासितं।
सभावभासितं अत्थि, धम्मराजस्स सासने॥
तेसमत्थं अविञ्ञाय, मेण्डके जिनभासिते।
अनागतम्हि अद्धाने, विग्गहो तत्थ हेस्सति॥
हन्द कथि पसादेत्वा, छेज्जापेस्सामि मेण्डके।
तस्स निद्दिट्ठमग्गेन, निद्दिसिस्सन्त्यनागते ति॥

२. अथ खो मिलिन्दो राजा पभाताय रत्तिया उग्गते अरुणे सीसं न्हात्वा सिरसि अञ्जलि पग्गहेत्वा अतीतानागतपच्चुप्पन्ने सम्मासम्बुद्धे अनुस्सरित्वा अट्ठ वत्तपदानि समादियि—"इतो मे अनागतानि सत्त दिवसानि अट्ठ गुणे समादियित्वा तपो चरितब्बो भविस्सति। सोहं चिण्णतपो समानो आचरियं आराधेत्वा मेण्डके पञ्हे पुच्छिस्सामी" ति।

अथ खो मिलिन्दो राजा पकतिदुस्सयुगं अपनेत्वा, आभरणानि च ओमुञ्चित्वा, कासावं निवासेत्वा, मुण्डकपटिसीसकं सीसे पटिमुञ्चित्वा, मुनिभावमुपगन्त्वा अट्ठगुणे समादियि—"इमं सत्ताहं मया न राजत्थो अनुसासितब्बो, न रागूपसंहितं चित्तं उप्पादेतब्बं, न दोसूपसंहितं चित्तं उप्पादेतब्बं, न मोहूपसंहितं चित्तं उप्पादेतब्बं, दासकम्मकरपोरिसे जने पि निवातवुत्तिना भवितब्बं। कायिकं वाचसिकं अनुरक्खितब्बं, छ पि आयतनानि निरवसेसतो अनुरक्खितब्बानि, मेत्ताभावनाय मानसं पक्खिपितब्बं" ति। इमे अट्ठगुणे समादियित्वा तेस्वेव अट्ठसु गुणेसु मानसं पतिट्ठपेत्वा बहि अनिक्खमित्वा सत्ताहं वीतिनामेत्वा अट्ठमे दिवसे पभाताय रत्तिया पगेव पातरासं कत्वा ओक्खित्तचक्खु मितभाणी

सुसण्ठितेन इरियापथेन अविक्खित्तेन चित्तेन हट्ठेन उदग्गेन विप्पसन्नेन थेरं नागसेनं उपसङ्कमित्वा थेरस्स पादे सिरसा वन्दित्वा एकमन्तं ठितो इदमवोच—

३. "अत्थि मे, भन्ते नागसेन, कोचि पञ्हो तुम्हेहि सद्धिं मन्तयितब्बो, न तत्थ अञ्ञो कोचि ततियो इच्छितब्बो, सुञ्ञे ओकासे पविवित्ते अरञ्ञे अट्ठगुणूपगते समणसारुप्पे। तत्थ सो पञ्हो पुच्छितब्बो भविस्सति, तत्थ मे गुय्हं न कातब्बं न रहस्सकं, अरहामहं रहस्सकं सुणितुं सुमन्तने उपगते। उपमाय पि सो अत्थो उपपरिक्खितब्बो। यथा किं विय ? यथा नाम, भन्ते नागसेन, महापथवी निक्खेपं अरहति निक्खेपे उपगते; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, अरहामहं रहस्सकं सुणितुं सुमन्तने उपगते" ति ॥

१ अट्ठ मन्तपरिवज्जनियठानानि

४. गरुना पि सह पविवित्तपवनं पविसित्वा इदमवोच—"भन्ते नागसेन, इध पुरिसेन मन्तयितुकामेन अट्ठट्ठानानि परिवज्जयितब्बानि भवन्ति, न तेसु ठानेसु विञ्ञू पुरिसो अत्थं मन्तेति, मन्तितो पि अत्थो परिपतति, न सम्भवति। कतमानि अट्ठ ठानानि ? विसमट्ठानं परिवज्जनियं, सभयं परिवज्जनियं, अतिवातट्ठानं परिवज्जनियं, पटिच्छन्नट्ठानं परिवज्जनियं, देवट्ठानं परिवज्जनियं, पन्थो परिवज्जनियो, सङ्कमो परिवज्जनियो, उदकतित्थं परिवज्जनीयं—इमानि अट्ठट्ठानानि परिवज्जनीयानी' ति।

थेरो आह—"को दोसो विसमट्ठाने, सभये, अतिवाते, पटिच्छन्ने, देवट्ठाने, पन्थे, सङ्कमे, उदकतित्थे" ति ? "विसमे, भन्ते नागसेन, मन्तितो अत्थो विकिरति विधमति पग्घरति न सम्भवति। सभये मनो सन्तसति, सन्तसितो न सम्मा अत्थं समनुपस्सति। अतिवाते सद्दो अविभूतो होति। पटिच्छन्ने उपस्सुतिं तिट्ठन्ति। देवट्ठाने मन्तितो अत्थो गरुकं परिणमति। पन्थे मन्तितो अत्थो तुच्छो भवति। सङ्कमे चलाचलो भवति। उदकतित्थे पाकटो भवति। भवतीह—

'विसमं सभयमतिवातो, पटिच्छन्नं देवनिस्सितं।
पन्थो च सङ्कमो तित्थं, अट्ठेते परिवज्जया''' ति ॥

२. अट्ठ मन्तविनासकपुग्गला

५. "भन्ते नागसेन, अट्ठिमे पुग्गला मन्तियमाना मन्तितं अत्थं ब्यापादेन्ति। कतमे अट्ठ ? रागचरितो, दोसचरितो, मोहचरितो, मानचरितो, लुद्धो, अलसो, एकचिन्तो, बालो ति। इमे अट्ठ पुग्गला मन्तितं अत्थं ब्यापादेन्ती" ति। थेरो आह—"तेसं को दोसो" ति ? रागचरितो, भन्ते नागसेन, रागवसेन मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, दोसचरितो दोसवसेन मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, मोहचरितो मोहवसेन मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, मानचरितो मानवसेन मन्तितं अत्थं ब्यापा-

देति, लुद्धो लोभवसेन मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, अलसो अलसताय मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, एकचिन्ती एकचिन्तिताय मन्तितं अत्थं ब्यापादेति, बालो बालताय मन्तितं अत्थ ब्यापादेति । भवतीह—

'रत्तो दुट्ठो च मूळ्हो च, मानी लुद्धो तथालसो ।
एकचिन्ती च बालो च, एते अत्थविनासका''' ति ॥

३. नव गुय्हमन्तविधंसका

६. "भन्ते नागसेन, नविमे पुग्गला मन्तितं गुय्हं विवरन्ति न धारेन्ति । कतमे नव ? रागचरितो, दोसचरितो, मोहचरितो, भीरुको, आमिसगरुको, इत्थी, सोण्डो, पण्डको, दारको' ति । थेरो आह—"तेसं को दोसो" ति ? रागचरितो, भन्ते नागसेन, रागवसेन मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । दुट्ठो दोसवसेन मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । मूळ्हो मोहवसेन मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । भीरुको भयवसेन गुय्हं विवरति न धारेति । आमिसगरुको आमिसहेतु मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । इत्थी पञ्ञाय इत्तरताय मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । सोण्डिको सुरालोलताय मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । पण्डको अनेकंसिकताय मन्नितं गुय्हं विवरति न धारेति । दारको चपलताय मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति । भवतीह—

'रत्तो दुट्ठो च मूळ्हो च, भीरु आमिसचक्खुको ।
इत्थी सोण्डो च पण्डको, नवमो भवति दारको ॥
नवेते पुग्गला लोके, इत्तरा चलिता चला ।
एतेहि मन्तितं गुय्हं, खिप्पं भवति पाकटं''' ति ॥

४. अट्ठ पञ्ञापटिलाभकारणानि

७. "भन्ते नागसेन, अट्ठहि कारणेहि बुद्धि परिणमति, परिपाकं गच्छति । कतमेहि अट्ठहि ? वयपरिणामेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । यसपरिणामेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । परिपुच्छाय बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । तित्थसंवासेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । योनिसोमनसिकारेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । साकच्छाय बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । स्नेहूपसेवनेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । पतिरूपदेसवासेन बुद्धि परिणमति परिपाकं गच्छति । भवतीह—

'वयेन यस-पुच्छाहि, तित्थवासेन योनिसो ।
साकच्छा स्नेहसंसेवा, पतिरूपवसेन च ॥
एतानि अट्ठ ठानानि, बुद्धिविसदकारणा ।
येसं एतानि सम्भोन्ति, तेसं बुद्धि पभिज्जती''' ति ॥

८. "भन्ते नागसेन, अयं भूमिभागो अट्ठमन्तदोसविवज्जितो, अहं च लोके परमो मन्तिसहाया, गुय्हमनुरक्खो चाहं । यावाहं जीविस्सामि ताव गुय्हमनुरक्खिस्सामि । अट्ठहि च मे कारणेहि बुद्धि परिणामं गता, दुल्लभो एतरहि मादिसो अन्तेवासी ।

५. पञ्चवीसति आचरियगुणा

९. "सम्मापटिपन्ने अन्तेवासिके ये आचरियानं पञ्चवीसति आचरियगुणा तेहि गुणेहि आचरियेन सम्मा पटिपज्जितब्बं । कतमे पञ्चवीसति गुणा ? इध, भन्ते नागसेन, आचरियेन अन्तेवासिम्हि सततं समितं आरक्खा उपट्ठपेतब्बा, असेवनसेवना जानितब्बा, पमत्ताप्पमत्तता जानितब्बा, सेय्यावकासो जानितब्बो, गेलञ्ञं जानितब्बं, भोजनस्स लद्धालद्धं जानितब्बं, विसेसो जानितब्बो, पत्तगतं संविभजितब्बं, अस्सासेतब्बो—'मा भायि, अत्थो ते अभिक्कमती' ति, 'इमिना पुग्गलेन पटिचरती' ति पटिचारो जानितब्बो, गामे पटिचारो जानितब्बो, न तेन हासो वादो कातब्बो, न तेन सह आलापो कातब्बो, न तेन सह सल्लापो कातब्बो । छिद्दं दिस्वा अधिवासेतब्बं, सक्कच्चकारिना भवितब्बं, अखण्डकारिना भवितब्बं, अरहस्सकारिना भवितब्बं, निरवसेसकारिना भवितब्बं, 'जनेमिमं सिप्पेसू' ति जनकचित्तं उपट्ठपेतब्बं, 'कथं अयं न परिहायेय्या' ति वड्ढिचित्तं उपट्ठपेतब्बं, 'बलवं इमं करोमि सिक्खाबलेना' ति चित्तं उपट्ठपेतब्बं, मेत्तंचित्तं उपट्ठपेतब्बं, आपदासु न विजहितब्बं, करणीये न पमज्जितब्बं, खलिते धम्मेन पग्गहेतब्बो ति । इमे खो, भन्ते, पञ्चवीसति आचरियस्स आचरिगुणा, तेहि गुणेहि मयि सम्मा पटिपज्जस्सु । संसयो मे, भन्ते, उप्पन्नो, अत्थि मेण्डकपञ्हा जिनभासिता, अनागते अद्धाने तत्थ विग्गहो उप्पज्जिस्सति, अनागते च अद्धाने दुल्लभा भविस्सन्ति तुम्हादिसा बुद्धिमन्तो, तेसु मे पञ्हेसु चक्खुं देहि परवादानं निग्गहाया" ति ।

६. दस उपासकगुणा

१०. थेरो 'साधू'ति सम्पटिच्छित्वा दस उपासकस्स उपासकगुणे परिदीपेसि—"दस इमे, महाराज, उपासकस्स उपासकगुणा । कतमे दस ? इध, महाराज, उपासको सङ्घेन समानसुखदुक्खो होति, धम्माधिपतेय्यो होति, यथाबलं संविभागरतो होति, जिनसासनपरिहानिं दिस्वा अभिवड्ढिया वायमति सम्मादिट्ठिको होति, अपगतकोतूहलमङ्गलिको जीवितहेतु पि न अञ्ञ सत्थारं उद्दिसति, कायिकं वाचसिकं चस्स रक्खितं होति, समग्गारामो होति समग्गरतो, अनुसूयको होति न च कुहनवसेन सासने चरति । बुद्धं सरणं गतो होति, धम्मं सरणं गतो होति, सङ्घं सरणं गतो होति । इमे खो, महाराज, दस उपासकस्स उपासकगुणा । ते सब्बे गुणा तयि संविज्जन्ति, तं ते युत्तं वत्तं अनुच्छविकं पतिरूपं

यं त्वं जिनसासनपरिहानिं दिस्वा अभिवड्ढिं इच्छसि, करोमि ते ओकासं, पुच्छ मं त्वं यथासुखं" ति ।

मेण्डकपञ्हारम्मणकथा निट्ठिता ।

१. इद्धिबलवग्गो

कताधिकारसफलपञ्हो

११. अथ खो मिलिन्दो राजा कतावकासो निपच्च गरुनो पादे सिरसि अञ्जलिं कत्वा एतदवोच—"भन्ते नागसेन, इमे तित्थिया एवं भणन्ति—'यदि बुद्धो पूजं सादियति न परिनिब्बुतो बुद्धो संयुत्तो लोकेन अन्तोभविको लोकस्मिं लोकसाधारणो, तस्मा तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो। यदि परिनिब्बुतो, विसंयुत्तो लोकेन निस्सटो सब्बभवेहि, तस्स पूजा नुप्पज्जति, परिनिब्बुतो न किञ्चि सादयति, असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो' ति । उभतोकोटिको एसो पञ्हो, नेसो विसयो अप्पत्तमानसानं, महन्तानं येवेसो विसयो, भिन्देतं दिट्ठिजातं, एकंसे ठपय, तवेसो पञ्हो अनुप्पत्तो, अनागतानं जिनपुत्तानं चक्खुं देहि परप्पवादनिग्गहाया" ति ?

थेरो आह—"परिनिब्बुतो, महाराज, भगवा । न च भगवा पूजं सादियति, बोधिमूले येव तथागतस्स सादियना पहीना, किं पन अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतस्स ! भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'पूजियन्ता असमसमा, सदेवमानुसेहि ते ।
न सादियन्ति सक्कारं, बुद्धानं एस धम्मता''' ति ॥

१२. राजा आह—"भन्ते नागसेन, पुत्तो वा पितुनो वण्णं भासति, पिता वा पुत्तस्स वण्णं भासति । न चेतं कारणं परप्पवादानं निग्गहाय, पसादप्पकासनं नामेतं, इङ्घ मे त्वं तत्थ कारणं सम्मा ब्रूहि सकवादस्स पतिट्ठापनाय दिट्ठिजालविनिवेठनाया" ति ?

थेरो आह—"परिनिब्बुतो, महाराज, भगवा । न च भगवा पूजं सादियति, असादियन्तस्सेव तथागतस्स देवमनुस्सा धातुरतनं वत्थुं करित्वा तथागतस्स ञाणरतनारम्मणेन सम्मापटिपत्तिं सेवन्ता तिस्सो सम्पत्तियो पटिलभन्ति ।

यथा, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो पज्जलित्वा निब्बायेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, अग्गिक्खन्धो सादियति तिणकट्ठुपादानं" ति ? "जलमानो पि सो, भन्ते, महाअग्गिक्खन्धो तिणकट्ठुपादानं न सादियति, किं पन

निब्बुतो उपसन्तो अचेतनो सादियती'' ति ! ''तस्मिं पन, महाराज, अग्गिक्खन्धे उपरते उपसन्ते लोके अग्गि सुञ्ञो होती'' ति ? ''न हि, भन्ते, कट्ठं अग्गिस्स वत्थु होति उपादानं, ये केचि मनुस्सा अग्गिकामा ते अत्तनो थामबलविरियेन पच्चत्तपुरिसकारेन कट्ठं मन्थयित्वा अग्गिं निब्बत्तेत्वा तेन अग्गिना अग्गिकरणीयानि कम्मानि करोन्ती'' ति । ''तेन हि, महाराज, तित्थियानं वचनं मिच्छा भवति—'असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो' ति ।

यथा, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो पज्जलि, एवमेव भगवा दससहस्सिया लोकधातुया बुद्धसिरिया पज्जलि ।

यथा, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो पज्जलित्वा निब्बुतो; एवमेव भगवा दससहस्सियाह लोकधातुया बुद्धसिरिया पज्जलित्वा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतो । यथा, महाराज, निब्बुतो अग्गिक्खन्धो तिणकट्ठुपादानं न सादियति; एवमेव खो लोकहितस्स सादियना पहीना उपसन्ता । यथा, महाराज, मनुस्सा निब्बुते अग्गिक्खन्धे अनुपादाने अत्तनो थामबलविरियेन पच्चत्तपुरिसकारेन कट्ठं मन्थयित्वा अग्गिं निब्बत्तेत्वा तेन अग्गिना अग्गिकरणीयानि कम्मानि करोन्ति; एवमेव खो देवमनुस्सा तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव धातुरतनं वत्थुं करित्वा तथागतस्य ञाणरतनारम्मणेन सम्मापटिपत्तिं सेवन्ता तिस्सो सम्पत्तियो पटिलभन्ति । इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ।

१३. ''अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो । यथा, महाराज, महतिमहावातो वायित्वा उपरमेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, उपरतो वातो सादियति पुन निब्बत्तापनं''' ति ? ''न हि, भन्ते, उपरतस्स वातस्स आभोगो वा मनसिकारो वा पुन निब्बत्तापनाय । किङ्कारणं ? अचेतना सा वायोधातू'' ति । ''अपि नु तस्स, महाराज, उपरतस्स वातस्स 'वातो' ति समञ्ञा अपगच्छती ति ? ''न हि, भन्ते, तालवण्टविधूपनानि वातस्स उप्पत्तिया पच्चया, ये केचि मनुस्सा उण्हाभितत्ता परिळाहपरिपीळिता ते तालवण्टेन वा विधूपनेन वा अत्तनो थामबलविरियेन पच्चत्तपुरिसकारेन वा तं निब्बत्तेत्वा तेन वातेन उण्हं निब्बापेन्ति परिळाहं वूपसमेन्ती'' ति । ''तेन हि, महाराज, तित्थियानं वचनं मिच्छा भवति—असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो' । यथा, महाराज, महतिमहावातो वायि, एवमेव भगवा दससहस्सिया लोकधातुया सीतलमधुरसन्तसुखुममेत्तावातेन उपवायि ।

यथा, महाराज, महतिमहावातो वायित्वा उपरतो; एवमेव भगवा सीतलमधुरसन्तसुखुममेत्तावातेन उपवायित्वा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतो। यथा, महाराज, उपरतो वातो पुन निब्बत्तापनं न सादियति; एवमेव लोकहितस्स सादियना पहीना उपसन्ता। यथा, महाराज, ते मनुस्सा उण्हाभितत्ता परिळाहपरिनिब्बुता; एवमेव देवमनुस्सा तिविधग्गिसन्तापपरिळाहपरिपीळिता। यथा तालवण्टविधूपनानि वातस्स निब्बत्तिया पच्चया होन्ति; एवमेव तथागतस्स धातुं च ञाणरतनं च पच्चयो होति तिस्सन्नं सम्पत्तीनं पटिलाभाय। यथा मनुस्सा उण्हाभितत्ता परिळाहपरिपीळिता तालवण्टेन वा विधूपनेन वा वातं निब्बत्तेत्वा उण्हं निब्बापेन्ति परिळाहं वूपसमेन्ति; एवमेव देवमनुस्सा तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव धातुं च ञाणरतनं च पूजेत्वा कुसलं निब्बत्तेत्वा तेन कुसलेन तिविधग्गिसन्तापपरिळाहं निब्बापेन्ति वूपसमेन्ति। इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति ।।

१४. "अपरं पि, महाराज, उत्तरिं, कारणं सुणोहि परवादानं निग्गहाय। यथा, महाराज, पुरिसो भेरिं आकोटेत्वा सद्दं निब्बत्तेय्य, यो सो भेरिसद्दो पुरिसेन निब्बत्तितो सो सद्दो अन्तरधायेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, सद्दो सादियति पुन निब्बत्तापनं" ति ? "न हि, भन्ते; अन्तरहितो सो सद्दो, न हि तस्स पुन उप्पादाय आभोगो वा मनसिकारो वा। सकिं निब्बत्ते भेरिसद्दे अन्तरहिते सो भेरिसद्दो समुच्छिन्नो होति, भेरी पन, भन्ते, पच्चयो होति सद्दस्स निब्बत्तिया, अथ पुरिसो पच्चये सति अत्तजेन वायामेन भेरिं आकोटेत्वा सद्दं निबत्तेती" ति। "एवमेव खो, महाराज, भगवा सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्तिविमुत्तिञाणदस्सनपरिभावितं धातुरतनं च धम्मं च विनयं च अनुसिट्ठं च सत्थारं ठपयित्वा सयं अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतो। न च परिनिब्बुते भगवति सम्पत्तिलाभो उपच्छिन्नो होति। भवदुक्खपटिपीळिता सत्ता धातुरतनं च धम्मविनयं च पच्चयं करित्वा सम्पत्तिकामा सम्पत्तियो पटिलभन्ति। इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति।

"दिट्ठं चेतं, महाराज, भगवता अनागतमद्धानं कथितं च भणितं च आचिक्खितं च—'सिया खो पनानन्द, तुम्हाकं एवमस्स—अतीतसत्थुकं पावचनं, नत्थि नो सत्था ति। न खो पनेतं, आनन्द, एवं दट्ठब्बं, यो वो, आनन्द, मया धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो, सो वो ममच्चयेन सत्था' ति। परिनिब्बुतस्स तथागतस्स असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो' ति।

तं तेसं तित्थियानं वचनं मिच्छा अभूतं वितथं विफलं अलीकं विरुद्धं विपरीतं दुक्खदायकं दुक्खविपाकं अपायगमनीयं ति ॥

१५. "अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो। सादियति नु खो, महाराज, अयं महापठवी 'सब्बबीजानि मयि संविरूहन्तू' ति ?" "न हि भन्ते" ति। "किस्स पन तानि, महाराज, बीजानि असादियन्तिया महापठविया संविरूहित्वा दळ्हमूळजटापतिट्ठिता खन्धसारसाखापरिवित्थिण्णा पुप्फफलधरा होन्ती" ति ? "असादियन्ती पि, भन्ते, महापठवी तेसं बीजानं वत्थु होति पच्चयं देति विरूहनाय, तानि बीजानि तं वत्थुं निस्साय तेन पच्चयेन संविरूहित्वा दळ्हमूलजटापतिट्ठिता खन्धसार-साखापरिवित्थिण्णा पुप्फफलधरा होन्ती' ति। "तेन हि, महाराज, तित्थिया सके वादे नट्ठा होन्ति हता विरुद्धा, सचे ते भणन्ति—'असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो' ति।

यथा, महाराज, महापठवी एवं तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो। यथा, महाराज, महापठवी न किञ्चि सादियति, एवं तथागतो न किञ्चि सादियति। यथा, महाराज, तानि बीजानि पठविं निस्साय विरूहित्वा दळ्हमूलजटापतिट्ठिता खन्धसारसाखापरिवित्थिण्णा पुप्फफलधरा होन्ति, एवं देवमनुस्सा तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव धातुं च ञाणरतनं च निस्साय दळ्हकुसलमूल-पतिट्ठिता समाधिक्खन्धधम्मसारसीलसाखापरिवित्थिण्णा विमुत्तिपुप्फसामञ्ञ-फलधरा होन्ति। इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति।

१६. अपरं पि, महाराज; उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो। सादियन्ति नु खो, महाराज, इमे ओट्ठा, गोणा, गद्रभा, अजा, पसू, मनुस्सा अन्तोकुच्छिस्मिं किमिकुलानं सम्भवं ति ?" "न हि भन्ते" ति। किस्स पन ते, महराज, किमयो तेसं असादिगन्तानं अन्तोकुच्छिस्मिं सम्भवित्वा बहुपुत्तनत्ता वेपुल्लत्तं पापुणन्ती" ति ? "पापस्स, भन्ते, कम्मस्स बलवताय असादियन्तानं येव तेसं सत्तानं अन्तोकुच्छिस्मिं किमयो सम्भवित्वा बहुपुत्तनत्ता वेपुल्लतं पापुणन्ती ति; एवमेव खो महाराज, तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव धातुस्स च ञाणारम्मणस्स च बलवताय तथागते कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो" ति।

१७. अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो।

सादियन्ति नु खो, महाराज, इमे मनुस्सा—इमे अट्ठनवुतिरोगा काये निब्बत्तन्तू" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "किस्स पन ते, महाराज, रोगा असादियन्तानं काये निपतन्ती" ति ? "पुब्बे कतेन, भन्ते, दुच्चरितेना" ति । "यदि, महाराज, पुब्बे कतं अकुसलं इध वेदनीयं होति, तेन हि, महाराज, पुब्बे कतं पि इध कतं पि कुसलाकुसलं कम्मं अवञ्झं भवति सफलं ति । इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति ।

१८. "सुतपुब्बं तया, महाराज, नन्दको नाम यक्खो थेरं सारिपुतं आसादयित्वा पठविं पविट्ठो" ति । "आम, भन्ते, सूयति, लोके पाकटो एसो" ति । "अपि नु खो, महाराज, थेरो सारिपुत्तो सादियि नन्दकस्स यक्खस्स महापठवीगिलनं" ति । "उब्बत्तियन्ते पि, भन्ते, सदेवके लोके, पतमाने पि छमायं चन्दिमसुरिये, विकिरन्ते पि सिनेरुपब्बतराजे थेरो सारिपुत्तो न परस्स दुक्खं सादियेय्य, तं किस्स हेतु" ? "येन हेतुना थेरो सारिपुत्तो कुज्झेय्य वा दुस्सेय्य वा सो हेतु थेरस्स सारिपुत्तस्स समूहतो समुच्छिन्नो, हेतुनो समुग्घातितत्ता, भन्ते, थेरो सारिपुत्तो जीवितहारके पि कोपं न करेय्या" ति । "यदि, महाराज, थेरो सारिपुत्तो नन्दकस्स यक्खस्स पठवीगिलनं न सादियति, किस्स पन नन्दको यक्खो पठविं पविट्ठो" ति ? "अकुसलस्स, भन्ते, कम्मस्स बलवताया" ति । "यदि, महाराज, अकुसलस्स कम्मस बलवताय नन्दको यक्खो पठविं पविट्ठो, असादियन्तस्सा पि कतो अपराधो अवञ्झो भवति सफलो ति । तेन हि, महाराज, अकुसलस्सापि कम्मस्स बलवताय असादियन्तस्स कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति । इमिना पि, महाराज, कारणेन तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो ति ।

१९. "कति नु खो ते, महाराज, मनुस्सा ये एतरहि महापठविं पविट्ठा, अत्थि ते तत्थ सवणं" ति ? "आम, भन्ते, सूयती" ति । "इङ्घ त्वं, महाराज, सावेही" ति ? "चिञ्चमाणविका, भन्ते, सुप्पबुद्धो च सक्को, देवदत्तो च थेरो, नन्दको च यक्खो, नन्दो च माणवको ति । सुतमेतं, भन्ते, इमे पञ्चजना महापठविं पविट्ठा" ति । "किस्मि ते, महाराज, अपरद्धा" ति ? "भगवति च, भन्ते, सावकेसु चा" ति । "अपि नु खो, महाराज, भगवा वा सावका वा सादियिसु इमेसं महापठविपविसनं" ति । "न हि भन्ते" ति । "तेन हि, महाराज, तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो" ति ।

"सुविञ्ञापितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो गम्भीरो उत्तानीकतो, गुय्हं विदंसितं, गण्ठि भिन्ना, गहनं अगहनं कतं, नट्ठा परवादा, भग्गा कुदिट्ठी, निप्पभा जाता कुतित्थिया, त्वं गणिवरपवरमासज्जा" ति ।

२. सब्बञ्ञुभावपञ्हो

२०. "भन्ते नागसेन, बुद्धो सब्बञ्ञू" ति ? "आम, महाराज, भगवा सब्बञ्ञू। न च भगवतो सततं समितं ञाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं, आवज्जनपटिबद्धं भगवतो सब्बञ्ञुतञाणं, आवज्जित्वा यदिच्छितं जानाती" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, बुद्धो असब्बञ्ञू, यदि तस्स परियेसनाय सब्बञ्ञुतञाणं होती" ति। "वाहसतं खो, महाराज, वीहीनं, अड्ढचूळं च वाहा वीहिसत्तम्मणानि द्वे च तुम्बा एकच्छराक्खणे पवत्तचित्तस्स एत्तका वीही लक्खं ठपिययमाने परिक्खयं परिदानं गच्छेय्युं।

२१. "तत्रिमे सत्तविधा चित्ता पवत्तन्ति। ये ते, महाराज, सरागा सदोसा समोहा सकिलेसा अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा तेसं तं चित्तं गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति, किङ्कारणं ? अभावितत्ता चित्तस्स। यथा, महाराज, वंसनालस्स विततस्स विसालस्स वित्थिण्णस्स संसिब्बितविसिब्बितस्स साखाजटाजटितस्स आकड्ढियन्तस्स गरुकं होति आगमनं दन्धं, किङ्कारणा ? संसिब्बितविसिब्बितत्ता साखानं; एवमेव खो, महाराज, ये ते सरागा सदोसा समोहा सकिलेसा अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा तेसं तं चित्तं गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति, किङ्कारणं ? संसिब्बितविसिब्बितत्ता किलेसेहि। इदं **पठमं चित्तं**।

"तत्रिदं दुतियं चित्तं विभत्तिमापज्जति—ये ते, महाराज, सोतापन्ना पिहितापाया दिट्ठिप्पत्ता विञ्ञातसत्थुसासना, तेसं तं चित्तं तीसु ठानेसु लहुकं उप्पज्जति, लहुकं पवत्तति। उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणा ? तीसु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता, उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। यथा, महाराज, वंसनालस्स तिपब्बगण्ठिपरिसुद्धस्स उपरि साखाजटाजटितस्स आकड्ढियन्तस्स याव तिपब्बं ताव लहुकं एति, ततो उपरि थद्धं। किङ्कारणं ? हेट्ठा परिसुद्धत्ता, उपरि साखाजटाजटितत्ता; एवमेव खो, महाराज, ये ते सोतापन्ना पिहितापाया दिट्ठिप्पत्ता विञ्ञातसत्थुसासना तेसं तं चित्तं तीसु ठानेसु लहुकं उप्पज्जति, लहुकं पवत्तति, उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणा ? तीसु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता, उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। इदं **दुतियं चित्तं**।

"तत्रिदं ततियं चित्तं विभत्तिमापज्जति—ये ते, महाराज, सकदागामिनो, येसं रागदोसमोहा तनुभूता, तेसं तं चित्तं पञ्चसु ठानेसु लहुकं उपज्जति लहुकं पवत्तति, उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? पञ्चसु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। यथा, महाराज, वंसनाळस्स पञ्चपब्बगण्ठिपरिसुद्धस्स उपरि साखाजटाजटितस्स आकड्ढियन्तस्स याव

पञ्चपब्बं ताव लहुकं एति, ततो उपरि थद्धं, किङ्कारणं ? हेट्ठा परिसुद्धत्ता उपरिसाखाजटाजटितत्ता; एवमेव खो, महाराज, ये ते सकदागामिनो, येसं रागदोसमोहा तनुभूता, तेसं तं चित्तं पञ्चसु ठानेसु लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति। उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? पञ्चसु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता, उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। इदं **ततियं चित्तं**।

"तत्रिदं चतुत्थं चित्तं विभत्तिमापज्जति—ये ते, महाराज, अनागामिनो, येसं पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानि पहीनानि, तेसं तं चित्तं दससु ठानेसु लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति। उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? दससु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता, उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। यथा, महाराज, वंसनाळस्स दसपब्बगण्ठिपरिसुद्धस्स उपरिसाखाजटाजटितस्स आकड्ढियन्तस्स याव दसपब्बं ताव लहुकं एति, ततो उपरि थद्धं, किं कारणं ? हेट्ठापरिसुद्धत्ता उपरिसाखाजटाजटितत्ता; एवमेव खो, महाराज, ये ते अनागामिनो, येसं पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानि पहीनानि, तेसं तं चित्तं दससु ठानेसु लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, उपरिभूमिसु गरुकं उप्पज्जति, दन्धं पवत्तति। किं कारणं ? दससु ठानेसु चित्तस्स परिसुद्धत्ता, उपरि किलेसानं अप्पहीनत्ता। इदं **चतुत्थं चित्तं**।

"तत्रिदं पञ्चमं चित्तं विभत्तिमापज्जति—ये ते, महाराज, अरहन्तो खीणासवा धोतमला वन्तकिलेसा वुसितवन्तो कतकरणीया ओहितभारा अनुप्पत्तसदत्था परिक्खीणभवसंयोजना पत्तपटिसम्भिदा सावकभूमिसु परिसुद्धा, तेसं तं चित्तं सावकविसये लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति। पच्चेकबुद्धभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? परिसुद्धत्ता सावकविसये, अपरिसुद्धत्ता पच्चेकबुद्धविसये। यथा, महाराज, वंसनाळस्स सब्बपब्बगण्ठिपरिसुद्धस्स आकड्ढियन्तस्स लहुकं होति आगमनं अदन्धं, किङ्कारणं ? सब्बपब्बगण्ठिपरिसुद्धत्ता, अगहनत्ता वंसस्स; एवमेव खो, महाराज, ये ते अरहन्तो खीणासवा धोतमला वन्तकिलेसा वुसितवन्तो कतकरणीया ओहितभारा अनुप्पत्तसदत्था परिक्खीणभवसंयोजना पत्तपटिसम्भिदा सावकभूमिसु परिसुद्धा, तेसं तं चित्तं सावकविसये लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, पच्चेकबुद्धभूमिसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? परिसुद्धत्ता सावकविसये, अपरिसुद्धत्ता पच्चेकबुद्धविसये। इदं **पञ्चमं चित्तं**।

"तत्रिदं छट्ठं चित्तं विभत्तिमागच्छति—ये ते, महाराज, पच्चेकबुद्धा सयम्भुनो अनाचरियका, एकचारिनो खग्गविसाणकप्पा, सकविषये परिसुद्धविमलचित्ता, तेसं तं चित्तं सकविसये लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, सब्बञ्ञुबुद्धभूमीसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति। किङ्कारणं ? परिसुद्धत्ता सकविसये,

महन्तत्ता सब्बञ्ञुबुद्धविसयस्स । यथा, महाराज, पुरिसो सकविसयं परित्तं नदिं रत्तिं पि दिवा पि यदिच्छकं अच्छम्भितो ओतरेय्य, अथ परतो महासमुद्दं गम्भीरं वित्थतं अगाधमपारं दिस्वा भायेय्य, दन्धायेय्य न विसहेय्य ओतरितुं, किङ्कारणं ? तिण्णत्ता सकविसयस्स, महन्तत्ता च महासमुद्दस्स; एवमेव खो, महाराज, ये ते पच्चेकबुद्धा, सयम्भुनो, अनाचरियका, एकचारिनो खग्गविसाणकप्पा, सकविसये परिसुद्धत्ता तेसं तं चित्तं सकविसये लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, सब्बञ्ञुबुद्धभूमीसु गरुकं उप्पज्जति दन्धं पवत्तति, किङ्कारणं ? परिसुद्धत्ता सकविसयस्स, महन्तत्ता सब्बञ्ञबुद्धविसयस्स । इदं छट्ठं चित्तं ।

"तत्रिदं सत्तमं चित्तं विभत्तिमापज्जति—ये ते, महाराज, सम्मासम्बुद्धा सब्बञ्ञुनो दसबलधरा चतुवेसारज्जविसारदा, अट्ठारसहि बुद्धधम्मेहि समन्नागता, अनन्तजिना अनावरणञाणा, तेसं तं चित्तं सब्बत्थ लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, किङ्कारणं ? सब्बत्थ परिसुद्धत्ता । अपि नु खो, महाराज, नाराचस्स सुधोतस्स विमलस्स निग्गण्ठिस्स सुखुमधारस्स अजिम्हस्स अवङ्कस्स अकुटिलस्स दळ्हचापसमारूळ्हस्स खोमसुखुमे वा कप्पाससुखुमे वा कम्बलसुखुमे वा बलवनिपातितस्स दन्धायितत्तं वा लग्गनं वा होती" ति ? "न हि, भन्ते" । "किङ्कारणं" ? सुखुमत्ता नाराचस्स, निपातस्स च बलवत्ता ति । "एवमेव खो, महाराज, ये ते सम्मासम्बुद्धा सब्बञ्ञुनो दसबलधरा चतुवेसारज्जविसारदा, अट्ठारसहि बुद्धधम्मेहि समन्नागता, अनन्तजिना, अनावरणञाणा, तेसं तं चित्तं सब्बत्थ लहुकं उप्पज्जति लहुकं पवत्तति, किङ्कारणं ? सब्बत्थ परिसुद्धत्ता । इदं सत्तमं चित्तं ।

२२. "तत्र, महाराज, यदिदं सब्बञ्ञुबुद्धानं चित्तं तं छन्नं पि चित्तानं गणनं अतिक्कमित्वा असङ्ख्येय्येन गुणेन परिसुद्धं च लहुकं च । यस्मा च भगवतो चित्तं परिसुद्धं च लहुकं च, तस्मा, महाराज, भगवा यमकपाटिहीरं दस्सेसि । यमकपाटिहीरे, महाराज, ञातब्बं बुद्धानं भगवन्तानं चित्तं एवं लहुपरिवत्तं' ति, न तत्थ सक्का उत्तरिं कारणं वत्तुं । ते पि, महाराज, पाटिहीरा सब्बञ्ञुबुद्धानं चित्तं उपादाय गणनं पि संखं पि कलं पिकलभागं पि न उपेन्ति, आवज्जनपटिबद्धं, महाराज, भगवतो सबञ्ञुतञाणं आवज्जित्वा यदिच्छकं जानाति ।

"यथा, महाराज, पुरिसो हत्थे ठपितं यं किञ्चि दुतिये हत्थे ठपेत्वा विवटेन मुखेन वाचं निच्छारेय्य, मुखगतं भोजनं गिलेय्य, उम्मीलेत्वा वा निमीलेय्य, निमीलेत्वा वा उम्मीलेय्य, सम्मिञ्जितं वा बाहं पसारेय्य, पसारितं वा बाहं सम्मिञ्जेय्य, चिरतरं एतं महाराज, लहुतरं भगवतो सब्बञ्ञुतञाणं, लहुतरं आवज्जनं, आवज्जित्वा यदिच्छकं जानाति, आवज्जनविकलमत्तकेन न तावता बुद्धा भगवन्तो असब्बञ्ञुनो नाम होन्ती" ति ।

२३. "आवज्जनं पि, भन्ते नागसेन, परियेसनाय कातब्बं । इङ्घ मं तत्थ कारणेन सञ्ञापेही" ति ? "यथा, महाराज, पुरिसस्स अड्ढस्स सालिवीहियवतण्डुलतिलमुग्गमासपुब्बण्णापरण्णसप्पितेलनवनीतखीरदधिमधुगुळफाणिता च खळोपिकुम्भिपीठरकोट्ठभाजनगता भवेय्युं, तस्स पुरिसस्स पाहुनको आगच्छेय्य भत्तारहो भत्ताभिकङ्खी, तस्स च गेहे यं रन्धं भोजनं तं परिनिट्ठितं भवेय्य, कुम्भितो तण्डुले नीहरित्वा भोजनं रन्धेय्य । अपि नु खो सो, महाराज, तावतकेन भोजनवेकल्लमत्तकेन अधनो नाम कपणो नाम भवेय्या" ति ? "न हि भन्ते, चक्कवत्तिरञ्ञो घरे पि भन्ते अकाले भोजनवेकल्लं होति, किं पन गहपतिकस्सा" ति । "एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स आवज्जनविकलमत्तकं सब्बञ्ञुतञाणं, आवज्जित्वा यदिच्छकं जानाति ।

"यथा वा पन, महाराज, रुक्खो अस्स फलितो ओणतविनतो पिण्डिभारभरितो, न किञ्चि तत्थ पतितं फलं भवेय्य । अपि नु खो सो, महाराज, रुक्खो तावतकेन पतितफलवेकल्लमत्तकेन अफलो नाम भवेय्या' ति ? "न हि, भन्ते, पतनपटिबद्धानि तानि रुक्खफलानि, पतिते यदिच्छकं लभती" ति । "एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स आवज्जनपटिबद्धं सब्बञ्ञुतञाणं आवज्जेत्वा यदिच्छकं जानाती" ति । "भन्ते नागसेन, आवज्जेत्वा आवज्जेत्वा बुद्धो यदिच्छकं जानाती" ति ? "आम, महाराज, भगवा आवज्जेत्वा आवज्जेत्वा यदिच्छकं जानाती" ति ।

"यथा, महाराज, चक्कवत्ती राजा यदा चक्करतनं सरति—'उपेतु मे चक्करतनं' ति, सरिते चक्करतनं उपेति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो आवज्जेत्वा आवज्जेत्वा यदिच्छकं जानाती" ति । "दळ्हं, भन्ते नागसेन, कारणं, बुद्धो सब्बञ्ञू,सम्पटिच्छाम—"बुद्धो सब्बञ्ञू" ति ॥

३. देवदत्तपब्बज्जपञ्हो

२४. "भन्ते नागसेन, देवदत्तो केन पब्बाजितो" ति ? "छयिमे, महाराज, खत्तियकुमारा—भद्दियो च, अनुरुद्धो च, आनन्दो च, भगु च, किम्बिलो च, देवदत्तो च उपालिकप्पको सत्तमो अभिसम्बुद्धे सत्थरि सक्यकुलानन्दजनने भगवन्तं अनुब्बजन्ता निक्खमिंसु, ते भगवा पब्बाजेसी" ति । "ननु, भन्ते, देवदत्तेन पब्बजित्वा सङ्घो भिन्नो" ति ? "आम, महाराज, देवदत्तेन पब्बजित्वा सङ्घो भिन्नो । न गिही सङ्घं भिन्दति, न भिक्खुनी, न सिक्खमाना, न सामणेरो, न सामणेरी सङ्घं भिन्दति, भिक्खु पकतत्तो समानसंवासको समानसीमायं ठितो सङ्घं भिन्दती" ति । "सङ्घभेदको, भन्ते, पुग्गलो किं कम्मं फुसती" ति ? "कप्पट्ठितिकं महाराज, कम्मं फुसती" ति ।

"किं पन, भन्ते नागसेन, बुद्धो जानाति—देवदत्तो पब्बजित्वा सङ्घं भिन्दिस्सति, सङ्घं भिन्दित्वा कप्पं निरये पच्चिस्सती" ति ? "आम, महाराज, तथागतो जानाति—'देवदत्तो पब्बजित्वा सङ्घं भिन्दिस्सति, सङ्घं भिन्दित्वा कप्पं निरये पच्चिस्सती" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, बुद्धो जानाति—'देवदत्तो पब्बजित्वा सङ्घं भिन्दिस्सति, सङ्घं भिन्दित्वा कप्पं निरये पच्चिस्सती" ति, तेन हि, भन्ते नागसेन, 'बुद्धो कारुणिको अनुकम्पको हितेसी सब्बसत्तानं अहितं अपनेत्वा हितमुपदहती' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तं अजानित्वा पब्बाजितो ति, तेन हि बुद्धो असब्बञ्ञू। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो। विजटेहि एतं महाजटं, भिन्द परापवादं, अनागते अद्धाने तया सदिसा बुद्धिमन्तो भिक्खू दुल्लभा भविस्सन्ति, एत्थ तव बलं पकासेही" ति ?

२५. "कारुणिको, महाराज, भगवा सब्बञ्ञू च। कारुञ्ञेन, महाराज, भगवा सब्बञ्ञुतञाणेन देवदत्तस्स गतिं ओलोकेन्तो अद्दसा देवदत्तं आपायिकं कम्मं आयूहित्वा अनेकानि कप्पकोटिसतसहस्सानि निरयेन निरयं विनिपातेन विनिपातं गच्छन्तं। तं भगवा सब्बञ्ञुतञाणेन जानित्वा 'इमस्स अपरियन्तकतं कम्मं मम सासने पब्बजितस्स परियन्तकतं भविस्सति, पुरिमं उपादाय परियन्तकतं दुक्खं भविस्सति, अपब्बजितो पि अयं मोघपुरिसो कप्पट्ठियमेव कम्मं आयूहिस्सती' ति कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसी" ति।

"तेन हि, भन्ते नागसेन, बुद्धो वधित्वा तेलेन मक्खेति, पपाते पातेत्वा हत्थं देति, मारेत्वा जीवितं परियेसति, यं सो पठमं दुक्खं दत्वा पच्छा सुखं उपदहती" ति ? "वधेति पि, महाराज, तथागतो सत्तानं हितवसेन, पातेति पि सत्तानं हितवसेन, मारेति पि सत्तानं हितवसेन; वधित्वा पि, महाराज, तथागतो सत्तानं हितमेव उपदहति, पातेत्वा पि सत्तानं हितमेव उपदहति, मारेत्वा पि सत्तानं हितमेव उपदहति। यथा, महाराज, मातापितरो नाम वधित्वा पि पातयित्वा पि पुत्तानं हितमेव उपदहन्ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो वधेति पि सत्तानं हितवसेन, पातेति पि सत्तानं हितवसेन, मारेति पि सत्तानं हितवसेन, वधित्वा पि, महाराज, तथागतो सत्तानं हितमेव उपदहति, पातेत्वा पि सत्तानं हितमेव उपदहति, मारेत्वा पि सत्तानं हितमेव उपदहति, येन येन योगेन सत्तानं गुणवड्ढि होति, तेन तेन योगेन सब्बसत्तानं हितमेव उपदहति। सचे, महाराज, देवदत्तो न पब्बजेय्य, गिहिभूतो समानो निरयसंवत्तनिकं बहुं पापकम्मं कत्वा अनेकानि कप्पकोटिसतसहस्सानि निरयेन निरयं विनिपातेन विनिपातं गच्छन्तो बहुं दुक्खं वेदयिस्सति। तं भगवा जानमानो कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसि। 'मम सासने पब्बजितस्स दुक्खं परियन्तकतं भविस्सती' ति कारुञ्ञेन गरुकं दुक्खं लहुकं अकासि।

"यथा वा, महाराज, धनयससिरिञातिबलेन बलवा पुरिसो अत्तनो ञातिं वा मित्तं वा रञ्ञा गरुकं दण्डं धारेन्तं अत्तनो बहुविस्सत्थभावेन समत्थताय गरुकं दण्डं लहुकं कारेति; एवमेव खो, महाराज, भगवा बहूनि कप्पकोटिसतसहस्सानि दुक्खं वेदयमानं देवदत्तं पब्बाजेत्वा सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्तिबलसमत्थभावेन गरुकं दुक्खं लहुकमकासि।

"यथा वा, पन, महाराज, कुसलो भिसक्को सल्लकत्तो गरुकं रोगं बलवोसधबलेन लहुकं करोति; एवमेव खो, महाराज, बहूनि कप्पकोटिसतसहस्सानि दुक्खं वेदियमानं देवदत्तं भगवा रोगञ्ञुताय पब्बाजेत्वा कारुञ्ञबलो पत्थद्धधम्मोसधबलेन गरुकं दुक्खं लहुकमकासि। अपि नु खो सो, महाराज, भगवा बहुवेदनीयं देवदत्तं अप्पवेदनीयं करोन्तो किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या" ति? "न किञ्चि, भन्ते, अपुञ्ञं आपज्जेय्य अन्तमसो गद्दूहनमत्तं पी" ति! "इमं पि खो, महाराज, कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ, येन कारणेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि।

२६. "अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि येन कारणेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि। यथा, महाराज, चोरं आगुचारिं गहेत्वा रञ्ञो दस्सेय्युं—'अयं खो, देव, चोरो आगुचारी, इमस्स यं इच्छसि तं दण्डं पणेही' ति, तमेनं राजा एवं वदेय्य—'तेन हि, भणे, इमं चोरं बहिनगरं नीहरित्वा आघातने सीसं छिन्दथा' ति। 'एवं, देवा' ति खो ते रञ्ञो पटिस्सुत्वा तं बहिनगरं नीहरित्वा आघातनं नयेय्युं। तमेनं पस्सेय्य कोचिदेव पुरिसो रञ्ञो सन्तिका लद्धवरो लद्धयसधनभोगो आदेय्यवचनो बलविच्छितकारी, सो तस्स कारुञ्ञं कत्वा ते पुरिसे एवं वदेय्य—'अलं, भो, किं तुम्हाकं इमस्स सीसच्छेदनेन, तेन हि, भो, इमस्सं हत्थं वा पादं वा छिन्दित्वा जीवितं रक्खथ, अहमेतस्स कारणा रञ्ञो सन्तिके पटिवचनं करिस्सामी' ति। ते तस्स बलवतो वचनेन तस्स चोरस्स हत्थं वा पादं वा छिन्दित्वा जीवितं रक्खेय्युं। अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो एवंकारी तस्स चोरस्स किच्चकारी अस्सा" ति? "जीवितदायको खो, भन्ते, तस्स चोरस्स, जीविते दिन्ने किं तस्स अकतं नाम अत्थी" ति! "या पन तस्स हत्थपादच्छेदने वेदना सो ताय वेदनाय किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या' ति? अत्तना कतेन सो, भन्ते, चोरो दुक्खवेदनं वेदियति, जीवितदायको पन पुरिसो न किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, भगवा कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसि—'मम सासने पब्बजितस्स दुक्खं परियन्तकतं भविस्सती' ति। परियन्तकतं च, महाराज, देवदत्तस्स दुक्खं। देवदत्तो, महाराज, मरणकाले—

'इमेहि अट्ठीहि तमग्गपुग्गलं, देवातिदेवं नरदम्मसारथिं।
समन्तचक्खुं सतपुञ्ञलक्खणं, पाणेहि बुद्धं सरणं उपेमी' ति॥

पाणुपेतं सरणमगमासि । देवदत्तो, महाराज, छ कोट्ठासे कते कप्पे, अतिक्कन्ते पठमकोट्ठासे सङ्घं भिन्दि, पञ्चकोट्ठासे निरये पच्चित्वा ततो मुच्चित्वा अट्ठिस्सरो नाम पच्चेकबुद्धो भविस्सति । अपि नु खो सो, महाराज, भगवा एवंकारी देवदत्तस्स किच्चकारी अस्सा" ति । "सब्बददो, भन्ते नागसेन, तथागतो देवदत्तस्स, यं तथागतो देवदत्तं पच्चेकबोधिं पापेस्सति, किं तथागतेन देवदत्तस्स अकतं नाम अत्थी" ति । "यं पन, महाराज, देवदत्तो सङ्घं भिन्दित्वा निरये दुक्खवेदनं वेदयति, अपि नु खो, महाराज, भगवा ततोनिदानं किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या" ति ? "नहि, भन्ते । अत्तना कतेन, भन्ते, देवदत्तो कप्पं निरये पच्चति, दुक्खपरियन्तकारको सत्था न किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जती" ति । "इमं पि खो त्वं, महाराज, कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ, येन कारणेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि ।

२७. "अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि । यथा, महाराज, कुसलो भिसक्को सल्लकत्तो वातपित्तसेम्हसन्निपातउतुपरिणामविसमपरिहारओपक्कमिकोपक्कन्तं पूतिकुणपदुग्गन्धाभिसञ्छन्नं अन्तोसल्लं सुसिरगतं पुब्बरुधिरसम्पुण्णं वणं वूपसमेन्तो वणमुखं कक्खळतिखिणखारकटुकेन भेसज्जेन अनुलिम्पति परिपच्चनाय, परिपच्चित्वा मुदुभावमुपगतं सत्थेन विकन्तयित्वा डहति सलाकाय, दड्ढे खारलवणं देति, भेसज्जेनानुलिम्पति वणरूहनाय, व्याधितस्स सोत्थिभावमनुप्पत्तिया । अपि नु खो सो, महाराज, भिसक्को सल्लकत्तो अहितचित्तो भेसज्जेनानुलिम्पति, सत्थेन विकन्तति, डहति सलाकाय, खारलवणं देती" ति ? "नहि, भन्ते । हितचित्तो सोत्थिकामो तानि किरियानि करोती" ति । "या पनस्स भेसज्जकिरियाकरणेन उप्पन्ना दुक्खवेदना ततोनिदानं सो भिसक्को सल्लकत्तो किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या" ति ? "हितचित्तो, भन्ते, सोत्थिकामो भिसक्को सल्लकत्तो तानि किरियानि करोति, किं सो ततोनिदानं अपुञ्ञं आपज्जेय्य; सग्गगामी सो, भन्ते, भिसक्को सल्लकत्तो" ति ! "एवमेव खो, महाराज, कारुञ्ञेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि दुक्खपरिमुत्तिया ।

२८. "अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन भगवा देवदत्तं पब्बाजेसि । यथा, महाराज, पुरिसो कण्टकेन विद्धो अस्स, अथञ्ञतरो पुरिसो तस्स हितकामो सोत्थिकामो तिण्हेन कण्टकेन वा सत्थमुखेन समन्ततो छिन्दित्वा पग्घरन्तेन लोहितेन तं कण्टकं नीहरेय्य । अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो अहितकामो तं कण्टकं नीहरती" ति ? "नहि भन्ते । हितकामो सो, भन्ते, पुरिसो सोत्थिकामो तं कण्टकं नीहरति । सचे सो, भन्ते, तं कण्टकं न

नीहरेय्य, मरणं वा सो तेन पापुणेय्य मरणन्तिकं वा दुक्ख" ति। "एवमेव खो, महाराज, तथागतो कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसि दुक्खपरिमुत्तिया। सचे, महाराज, भगवा देवदत्तं न पब्बाजेय्य, कप्पकोटिसतसहस्सं पि देवदत्तो भवपरम्पराय निरये पच्चेय्या" ति।

"अनुसोतगामिं, भन्ते नागसेन, देवदत्तं तथागतो पटिसोतं पापेसि, विपन्थपटिपन्नं देवदत्तं पन्थे पटिपादेसि, पपाते पतितस्स देवदत्तस्स पतिट्ठं अदासि, विसमगतं देवदत्तं तथागतो समं आरोपेसि। इमे च, भन्ते नागसेन, हेतू इमानि, च कारणानि न सक्का अञ्ञेन सन्दस्सेतुं अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता" ति।

४. पथविचलनपञ्हो

२९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'अट्ठिमे, भिक्खवे, हेतू अट्ठ पच्चया महतो भूमिचालस्स पातुभावाया' ति। असेसवचनं इदं, निस्सेसवचनं इदं, निप्परियायवचनं इदं, नत्थञ्ञो नवमो हेतु भवेय्य महतो भूमिचालस्स पातुभावाय। यदि, भन्ते नागसेन, अञ्ञो नवमो हेतु भवेय्य महतो भूमिचालस्स पातुभावाय, तं पि हेतुं भगवा कथेय्य। यस्मा च खो, भन्ते नागसेन, नत्थञ्ञो नवमो हेतु महतो भूमिचालस्स पातुभावाय, तस्मा अनाचिक्खितो भगवता। अयं च नवमो हेतु दिस्सति महतो भूमिचालस्स पातुभावाय, यं वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने दीयमाने सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता। यदि, भन्ते नागसेन, अट्ठेव हेतू अट्ठ पच्चया महतो भूमिचालस्स पातुभावाय, तेन हि 'वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने दीयमाने सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने दीयमाने सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता, तेन हि 'अट्ठेव हेतू अट्ठ पच्चया महतो भूमिचालस्स पातुभावाया' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो सुखुमो दुन्निवेठियो अन्धकरणो चेव गम्भीरो च, सो तवानुप्पत्तो, नेसो इत्तरपञ्ञेन सक्का विस्सज्जेतुं अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता" ति?

३०. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'अट्ठिमे, भिक्खवे, हेतू अट्ठ पच्चया महतो भूमिचालस्स पातुभावाया' ति। यं वेस्सन्तरेन पि रञ्ञा महादाने दीयमाने सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता, तं च पन अकालिकं कदाचुप्पत्तिकं अट्ठहि हेतूहि विप्पमुत्तं, तस्मा अगणितं अट्ठहि हेतूहि। यथा, महाराज, लोके तयो येव मेघा गणीयन्ति—वस्सिको, हेमन्तिको, पावुसिको ति। यदि ते मुञ्चित्वा अञ्ञो मेघो पवस्सति न सो मेघो गणीयति सम्मतेहि मेघेहि, अकालमेघो त्वेव संखं गच्छति। एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने

दीयमाने यं सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता, अकालिकं एतं कदाचुप्पत्तिकं, अट्ठहि हेतूहि विप्पमुत्तं, न तं गणीयति अट्ठहि हेतूहि ।

"यथा वा पन, महाराज, हिमवन्ता पब्बता पञ्च नदीसतानि सन्दन्ति, तेसं, महाराज, पञ्चन्नं नदीसतानं दसेव नदीगणनाय गणीयन्ति, सेय्यथीदं–गङ्गा, यमुना, अचिरवती, सरभू, मही, सिन्धु, सरस्सती, वेत्रवती, वीतंसा, चन्द्रभागा। अवसेसा नदियो नदीगणनाय अगणिता, किंकारणा? न ता नदियो धुवसलिला। एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने दीयमाने यं सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता अकालिकं एतं कदाचुप्पत्तिकं अट्ठहि हेतूहि विप्पमुत्तं, न तं गणीयति अट्ठहि हेतूहि ।

३१. "यथा वा पन, महाराज, रञ्ञो सतं पि द्विसतं पि तिसतं पि अमच्चा होन्ति, तेसं छ येव जना अमच्चगणनाय गणीयन्ति, सेय्यथीदं—सेनापति, पुरोहितो, अक्खदस्सो, भण्डागारिको, छत्तग्गाहको, खग्गग्गाहको। एते येव अमच्चगणनाय गणीयन्ति, किंकारणा? युत्तत्ता राजगुणेहि, अवसेसा अगणिता, सब्बे अमच्चा त्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति। एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरेन रञ्ञा महादाने दीयमाने यं सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता अकालिकं एतं कदाचुप्पत्तिकं अट्ठहि हेतूहि विप्पमुत्तं, न तं गणीयति अट्ठहि हेतूहि ।

३२. "सूयति नु खो, महाराज, एतरहि जिनसासने कताधिकारानं दिट्ठधम्मसुखवेदनीयकम्मं, कित्ति च येसं अब्भुग्गता देवमनुस्सेसू" ति ? "आम, भन्ते, सूयति एतरहि जिनसासने कताधिकारानं दिट्ठधम्मसुखवेदनियकम्मं कित्ति च येसं अब्भुग्गता देवमनुस्सेसु, सत्त ते जना" ति। "के ते महाराजा" ति ? "सुमनो च, भन्ते, मालाकारो, एकसाटको च ब्राह्मणो, पुण्णो च भतको, मल्लिका च देवी, गोपालमाता च देवी, सुप्पिया च उपासिका, पुण्णा च दासी ति। इमे सत्त दिट्ठधम्मसुखवेदनीया सत्ता। कित्ति च इमेसं अब्भुग्गता देवमनुस्सेसू" ति। "अपरे पि सूयन्ति नु खो अतीते मानुसकेनेव सरीरदेहेन तिदसभवनं गता" ति ? "आम, भन्ते, सूयन्ती" ति। "के च ते महाराजा" ति ? "गुत्तिलो च गन्धब्बो, साधीनो च राजा, निमि च राजा, मन्धाता च राजा ति इमे चतुरो जना सूयन्ति तेनेव मानुसकेन सरीरदेहेन तिदसभवनं गता" ति। "सुचिरं पि कतं सूयति सुकतदुक्कटं ति। सुतपुब्बं पन तया, महाराज, अतीते वा अद्धाने वत्तमाने वा अद्धाने इत्थन्नामस्स दाने दीयमाने सकिं वा द्विक्खत्तुं वा तिक्खत्तुं महापथवी कम्पिता' ति ? "नहि भन्ते" ति। "अत्थि मे, महाराज, आगमो, अधिगमो, परियत्ति, सवणं, सिक्खाबलं, सुस्सूसा, परिपुच्छा, आचरियुपासनं, मयापि न सुतपुब्बं—'इत्थन्नामस्स दाने दीयमाने सकिं व द्विक्खत्तुं वा तिक्खत्तुं वा महा-

पथवी कम्पिता' ति, ठपेत्वा वेस्सन्तरस्स राजवसभस्स दानवरं। भगवतो च, महाराज, कस्सपस्स भगवतो च सक्यमुनिनो ति द्विन्नं बुद्धानं अन्तरे गणनपथं वीतिवत्ता वस्सकोटियो अतिक्कन्ता। तत्थ पि मे सवणं नत्थि—'इत्थन्नामस्स दाने दीयमाने सकिं वा द्विक्खत्तुं वा तिक्खत्तुं वा महापथवी कम्पिता' ति। न, महाराज, तावतकेन वीरियेन तावतकेन परक्कमेन महापथवी कम्पति। गुण-भारभरिता, महाराज, सब्बसोचेय्यकिरियगुणभारभरिता धारेतुं न विसहन्ती महापथवी चलति कम्पति पवेधति।

यथा, महाराज, सकटस्स अतिभारभरितस्स नाभियो च नेमियो च फलन्ति अक्खो भिज्जति; एवमेव खो, महाराज, सब्बसोचेय्यकिरियगुणभार-भरिता महापथवी धारेतुं न विसहन्ती चलति कम्पति पवेधति।

यथा वा पन, महाराज, गगनं अनिलजलवेगसञ्छादितं उस्सन्नजल-भारभरितं अतिवातेन फुटितत्ता नदति, रवति, गळगळायति; एवमेव खो महा-पथवी रञ्ञो वेस्सन्तरस्स दानबलविपुलउस्सन्नभारभरिता धारेतुं न विसहन्ती चलति कम्पति पवेधति। नहि, महाराज, रञ्ञो वेस्सन्तरस्स चित्तं रागवसेन पवत्तति, न दोसवसेन पवत्तति, न मोहवसेन पवत्तति, न मानवसेन पवत्तति, न दिट्ठिवसेन पवत्तति, न किलेसवसेन पवत्तति, न वितक्कवसेन पवत्तति, न अरतिवसेन पवत्तत्ति, अथ खो दानवसेन बहुलं पवत्तति। किं ति? 'अनागता याचका मम सन्तिके आगच्छेय्युं, आगता च याचका यथाकामं लभित्वा अत्तमना भवेय्युं' ति सततं समितं दानं पति मानसं ठपितं होति। रञ्ञो, महाराज, वेस्सन्त-रस्स सततं समितं दससु ठानेसु मानसं ठपितं होति—दमे समे खन्तियं संवरे यमे नियमे अक्कोधे अविहिंसाय सच्चे सोचेय्ये। रञ्ञो, महाराज, वेस्सन्तरस्स कामेसना पहीना, भवेसना पटिप्पस्सद्धा, ब्रह्मचरियेसनाय येव उस्सुक्कं आपन्नो। रञ्ञो, महाराज, वेस्सन्तरस्स अत्तरक्खा पहीना, सब्बसत्तरक्खाय उस्सुक्कं आपन्नो। किं ति?'इमे सत्ता समग्गा अस्सु अरोगा सधना दीघायुका' ति बहुलं येव मानसं पवत्तति। ददमानो च, महाराज, वेस्सन्तरो राजा तं दानं न भवसम्पत्तिहेतु देति, न धनहेतु देति, न पटिदानहेतु देति, न उपलापनहेतु देति, न आयुहेतु देति, न वण्णहेतु देति, न सुखहेतु देति, न बलहेतु देति, न यसहेतु देति, न पुत्तहेतु देति, न धीतुहेतु देति; अथ खो सब्बञ्ञुतञाण-हेतु सब्बञ्ञुतञाणरतनस्स कारणा एवरूपे अतुलविपुलानुत्तरे दानवरे अदासि। सब्बञ्ञुतं पत्तो च इमं गाथं अभासि—

'जालिं कण्हाजिनं धीतं, मद्दीदेविं पतिब्बतं।
चजमानो न चिन्तेसिं, बोधिया येव कारणा' ति॥

"वेस्सन्तरो, महाराज, राजा अक्कोधेन कोधं जिनाति, असाधुं साधुना

जिनाति, कदरियं दानेन जिनाति, अलीकवादिनं सच्चेन जिनाति, सब्बं अकुसलं कुसलेन जिनाति ।

३३. "तस्स एवं ददमानस्स धम्मानुगतस्स धम्मसीसकस्स दाननिस्सन्दबलवविरियविपुलविप्फारेन हेट्ठा महावाता सञ्चलन्ति, सणिकं सणिकं सकिं सकिं आकुलाकुला वायन्ति, ओनमन्ति उन्नमन्ति विनमन्ति, छिन्नपत्ता पादपा पपतन्ति, गुम्बं गुम्बं वलाहका गगने सन्धावन्ति, रजोसञ्चिता वाता दारुणा होन्ति, गगनं उप्पीळिता वाता वायन्ति, सहसा धमधमायन्ति, महाभीमो सद्दो निच्छरति, तेसु वातेसु उदकं सणिकं सणिकं चलति, उदके चलिते खुब्भन्ति मच्छकच्छपा, दिस्सन्ति यमकयमका ऊमियो, तसन्ति जलचरा सत्ता, जलवीचि युनगद्धो वत्तति, वीचिनादो पवत्तति, घोरा बुब्बुळा उट्ठहन्ति, फेणमाला सवन्ति, उत्तरति महासमुद्दो, दिसाविदिसं धावति उदकं, उद्धंसोतपटिसोतमुखा सन्दन्ति सलिलधारा, तसन्ति असुरा गरुला नागा यक्खा, उब्बिज्जन्ति–'किन्नु खो कथं नु खो सागरो विपरिवत्तती' ति । गमनपथमेसन्ति भीतचित्ता, खुभिते लुळिते जलधरे पकम्पति महापथवी सनगा ससागरा, परिवत्तति सिनेरुगिरि कूटसेलसिखरो विनममानो होति । विमना होन्ति अहिनकुलबिलारकोत्थुकसूकरमिगपक्खिनो, रुदन्ति यक्खा अप्पेसक्खा, हसन्ति यक्खा महेसक्खा कम्पमानाय महापथविया ।

३४. यथा, महाराज, महतिमहापरियोगे उद्धनगते उदकसम्पुण्णे आकिण्णतण्डुले हेट्ठतो अग्गि जलमानो पठमं ताव परियोगं सन्तापेति, परियोगो सन्तत्तो उदकं सन्तापेति, उदकं सन्तत्तं तण्डुलं सन्तत्तं उम्मुज्जति, निमुज्जति, बुब्बुलकजातं होति, फेणमाला उत्तरति; एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरो राजा यं लोके दुच्चजं तं चजि, तस्स दुच्चजं चजन्तस्स दानस्स सभावनिस्सन्देन हेट्ठा महावाता धारेतुं न विसहन्ता परिकुप्पिंसु । महावातेसु परिकुपितेसु उदकं कम्पि, उदके कम्पिते महापथवी कम्पि, इति तदा महावाता च उदकं च महापथवी चा ति इमे तयो एकमना विय अहेसुं महादाननिस्सन्देन विपुलबलविरियेन । नत्थेदिसो, महाराज, अञ्ञस्स दानानुभावो यथा वेस्सन्तरस्स रञ्ञो महादानानुभावो । यथा, महाराज, महिया बहुविधा मणयो विज्जन्ति, सेय्यथीदं—इन्दनीलो, महानीलो, जोतिरसो, वेळुरियो, उम्मापुप्फो, सिरीसपुप्फो, मनोहरो, सुरियकन्तो, चन्दकन्तो, वजिरो, खज्जोपनको, फुस्सरागो, लोहितङ्को, मसारगल्लो ति । एते सब्बे अतिक्कम्म चक्कवत्तिमणि अग्गमक्खायति । चक्कवत्तिमणि, महाराज, समन्ता योजनं ओभासेति; एवमेव खो, महाराज, यं किञ्चि महिया दानं विज्जति अपि असदिसदानं परमं,

तं सब्बं अतिक्कम्म वेस्सन्तरस्स रञ्ञो महादानं अग्गमक्खायति। वेस्सन्तरस्स, महाराज, रञ्ञो महादाने दीयमाने सत्तक्खत्तुं महापथवी कम्पिता'' ति।

३५. ''अच्छरियं, भन्ते नागसेन, बुद्धानं, यं तथागतो बोधिसत्तो समानो असमो लोकेन एवंखन्ति एवंचितो एवंअधिमुत्ति एवंअधिप्पायो। बोधिसत्तानं, भन्ते नागसेन, परक्कमो दक्खापितो, पारमी च जिनानं भिय्यो ओभासिता, चरियं चरतो पि ताव तथागतस्स सदेवके लोके सेट्ठभावो अनुदस्सितो। साधु, भन्ते नागसेन, थोमितं जिनसासनं, जोतिता जिनपारमी, छिन्ना तित्थियानं वादगण्ठि, भिन्ना परापवादकुम्भा, पञ्हो गम्भीरो उत्तानीकतो, गहनं अगहनं कतं, सम्मा लद्धं जिनपुत्तानं निब्बाहनं, एवमेतं गणिवरपवर, तथा सम्पटिच्छामी'' ति।

५. सिविराजचक्खुदानपञ्हो

३६. ''भन्ते नागसेन, तुम्हे एवं भणथ–'सिविराजेन याचकस्स चक्खानि दिन्नानि, अन्धस्स सतो पन दिब्बचक्खूनि उप्पन्नानी' ति। एतं पि वचनं सकसटं सनिग्गहं सदोसं। 'हेतुसमुग्घाते अहेतुस्मिं अवत्थुस्मिं नत्थि दिब्बचक्खुस्स उप्पादो' ति सुत्ते वुत्तं। यदि, भन्ते नागसेन, सिविराजेन याचकस्स चक्खूनि दिन्नानि, तेन हि पुन 'दिब्बचक्खूनि उप्पन्नानी' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि दिब्बचक्खूनि उप्पन्नानि, तेन हि 'सिविराजेन याचकस्स चक्खूनि दिन्नानी'ति यं वचनं तं पि मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो गण्ठितो पि गण्ठितरो, वेठतो पि वेठतरो, गहनतो पि गहनतरो, सो तवानुप्पत्तो। तत्थ छन्दमभिजनेहि निब्बाहनाय, परवादानं निग्गहाया' ति?

''दिन्नानि, महाराज, सिविराजेन याचकस्स चक्खूनि, तत्थ मा विमतिं उप्पादेहि। पुन दिब्बानि च चक्खूनि उप्पन्नानि, तत्थापि च मा विमतिं जनेही'' ति। ''अपि नु खो, भन्ते नागसेन, हेतुसमुग्घाते अहेतुस्मिं अवत्थुम्हि दिब्बचक्खु उप्पज्जती' ति? ''नहि महाराजा'' ति। किं पन, भन्ते, एत्थ कारणं येन कारणेन हेतुसमुग्घाते अहेतुस्मिं अवत्थुस्मिं दिब्बचक्खु उप्पज्जति। इङ्घ ताव कारणेन मं सञ्ञापेही'' ति?

३७. किं पन, महाराज, अत्थि लोके सच्चं नाम येन सच्चवादिनो सच्चकिरियं करोन्ती ति''? ''आम, भन्ते, अत्थि लोके सच्चं नाम। सच्चेन, भन्ते नागसेन, सच्चवादिनो सच्चकिरियं कत्वा देवं वस्सापेन्ति, अग्गिं निब्बापेन्ति, विसं पटिहनन्ति, अञ्ञं पि विविधं कत्तब्बं करोन्ती'' ति। ''तेन हि, महाराज, युज्जति समेति—'सिविराजस्स सच्चबलेन दिब्बचक्खूनि उप्पन्नानी' ति। सच्चबलेन, महाराज, अवत्थुम्हि दिब्बचक्खु उप्पज्जति, सच्चं येव तत्थ वत्थु भवति दिब्बचक्खुस्स उप्पादाय।

''यथा, महाराज, ये केचि सिद्धा सच्चमनुगायन्ति—'महामेघो पवस्सतू'

ति, तेसं सह सच्चमनुगीतेन महामेघो पवस्सति। अपि नु खो, महाराज, अत्थि आकासे वस्सहेतु सन्निचितो येन हेतुना महामेघो पवस्सती' ति ? "नहि भन्ते, सच्चं येव तत्थ हेतु भवति महतो मेघस्स पवस्सनाया" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि तस्स पकतिहेतु, सच्चं येवेत्थ वत्थु भवति दिब्बचक्खुस्स उप्पादाया" ति।

३८. "यथा वा पन, महाराज, ये केचि सिद्धा सच्चमनुगायन्ति—'जलितपज्जलितमहाअग्गिक्खन्धो पटिनिवत्ततू' ति, तेसं सह सच्चमनुगीतेन जलितपज्जलितमहाअग्गिक्खन्धो खणेन पटिनिवत्तति। अपि नु खो महाराज, अत्थि तस्मि जलितपज्जलिते महाअग्गिक्खन्धे हेतु सन्निचितो येन हेतुना जलितपज्जलितमहाअग्गिक्खन्धो खणेन पटिनिवत्तती' ति ? "नहि, भन्ते। सच्चं येव तत्थ वत्थु होति तस्स जलितपज्जलितस्स महाअग्गिक्खन्धस्स खणेन पटिनिवत्तनाया" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि तस्स पकतिहेतु, सच्चं येव तत्थ वत्थु भवति दिब्बचक्खुस्स उप्पादाया ति।

३९. "यथा वा पन, महाराज, ये केचि सिद्धा सच्चमनुगायन्ति 'विसं हलाहलं अगदं भवतू' ति, तेसं सह सच्चमनुगीतेन विसं हलाहलं खणेन अगदं भवति। अपि नु खो, महाराज, अत्थि तस्मि हलाहलविसे हेतु सन्निचितो येन हेतुना विसं हलाहलं खणेन अगदं भवती" ति ? "नहि, भन्ते। सच्चं येव तत्थ हेतु भवति विसस्स हलाहलस्स खणेन पटिघाताया" ति। "एवमेव, खो, महाराज, विना पकतिहेतुं सच्चं येवेत्थ वत्थु भवति दिब्बचक्खुस्स उप्पादाया ति।

४०. "चतुन्नं पि, महाराज, अरियसच्चानं पटिवेधाय नत्थञ्ञं वत्थु, सच्चं वत्थुं कत्वा चत्तारि अरियसच्चानि पटिविज्झन्ती ति।

"अत्थि, महाराज, चीनविसये चीनराजा। सो महासमुद्दे बलिं कीळितुकामो चतुमासे चतुमासे सच्चकिरियं कत्वा सह रथेन अन्तोमहासमुद्दे योजनं पविसति, तस्स रथसीसस्स पुरतो पुरतो महावारिक्खन्धो पटिक्कमति, निक्खन्तस्स पुन ओत्थरति। अपि नु खो, महाराज, सो महासमुद्दो सदेवमनुस्सेन पि लोकेन पकतिकायबलेन सक्का पटिक्कमापेतुं ति" ? "अतिपरित्ते पि, भन्ते, तळाके उदकं न सक्का सदेवमनुस्सेन पि लोकेन पकतिकायबलेन पटिक्कमापेतुं, किं पन महासमुद्दे उदकं" ति। "इमिना पि, महाराज, कारणेन सच्चबलं ञातब्बं—नत्थि तं ठानं यं सच्चेन न पत्तब्बं ति।

४१. "नगरे, महाराज, पाटलिपुत्ते असोको धम्मराजा सनेगमजानपदअमच्चभटबलमहामत्तेहि परिवुतो गङ्गानदिं नवसलिलसम्पुण्णं समतित्थिकं सम्भरितं पञ्चयोजनसतायामं योजनपुथुलं सन्दमानं दिस्वा अमच्चे एवमाह—'अत्थि कोचि, भणे, समत्थो इमं महानदिं पटिसोतं सन्दापेतुं' ति ? अमच्चा आहंसु—'दुक्करं देवा' ति।

"तस्मिं येव गङ्गाकूले ठिता बिन्दुमती नाम गणिका अस्सोसि–रञ्ञा किर एवं वुत्तं—'सक्का नु खो महागङ्गं पटिसोतं सन्दापेतुं' ति। सा एवमाह —'अहं हि नगरे पाटलिपुत्ते गणिका रूपूपजीविनी अन्तिमजीविका, मम ताव राजा सच्चकिरियं पस्सतू' ति। अथ सा सच्चकिरियं अकासि। सह तस्सा सच्चकिरियाय खणेन सा महागङ्गा गळगळन्ती पटिसोतं सन्दित्थ, महतो जनकायस्स पस्सतो।

"अथ राजा गङ्गाय आवट्टऊमिवेगजनितं हलाहलसद्दं सुत्वा विम्हितो अच्छरियब्भुतजातो अमच्चे एवमाह—'किस्सायं, भणे, महागङ्गा पटिसोतं सन्दती' ति? 'बिन्दुमती, महाराज, गणिका तव वचनं सुत्वा सच्चकिरियं अकासि, तस्सा सच्चकिरियतो महागङ्गा उद्धमुखा सन्दती' ति। अथ संविग्गहदयो राजा सयं गन्त्वा तं गणिकं पुच्छि—'सच्चं किर, जे, तया सच्चकिरियाय अयं गङ्गा पटिसोतं सन्दापिता' ति? 'आम देवा' ति। राजा आह–'किं ते तत्थ बलं अत्थि को वा ते वचनं आदियति अनुम्मत्तो, केन त्वं बलेन इमं महागङ्गं पटिसोतं सन्दापेसी' ति? सा आह—'सच्चबलेनाहं, महाराज, इमं महागङ्गं पटिसोतं सन्दापेसिं' ति। राजा आह—'किं ते सच्चबलं अत्थि चोरिया धुत्तिया असतिया छिन्निकाय पापिया भिन्नसीलाय हिरिअतिक्कन्तिकाय अन्धजनपलोभिकाया' ति? 'सच्चं, महाराज, तादिसिका अहं, तादिसिकाय पि मे, महाराज, सच्चकिरिया अत्थि, यायाहं इच्छमाना सदेवकं पि लोकं परिवत्तेय्यं' ति। राजा आह—'कतमा पन सा होति सच्चकिरिया, इङ्घ मं सावेही' ति? 'यो मे, महाराज, धनं देति खत्तियो वा ब्राह्मणो वा वेस्सो वा सुद्दो वा अञ्ञो वा कोचि, तेसं समकं येव उपट्ठहामि। खत्तियो ति विसेसो नत्थि, सुद्दो ति अतिमञ्ञना नत्थि, अनुनयपटिघविप्पमुत्ता धनसामिकं परिचरामि, एसा मे, देव, सच्चकिरिया, यायाहं इमं महागङ्गं पटिसोतं सन्दापेसिं' ति।

४२. "इति पि, महाराज, सच्चे ठिता न किञ्चि अत्थं न विन्दन्ति। दिन्नानि च, महाराज, सिविराजेन याचकस्स चक्खूनि, दिब्बचक्खूनि च उप्पन्नानि, तं च सच्चकिरियाय। यं पन सुत्ते वुत्तं—'मंसचक्खुस्मिं नट्ठे अहेतुस्मिं अवत्थुह्मि नत्थि दिब्बचक्खुस्स उप्पादो' ति, 'तं भावनामयं चक्खुं सन्धाय वुत्तं' ति एवमेतं, महाराज, धारेही' ति। 'साधु, भन्ते नागसेन, सुनिब्बेठितो पञ्हो, सुनिद्दिट्ठो निग्गहो, सुमद्दिता परवादा, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

६. गब्भावक्कन्तिपञ्हो

४३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'तिण्णं खो पन, भिक्खवे, सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होति, इध मातापितरो च सन्निपतिता होन्ति, माता च उतुनी होति, गन्धब्बो च पच्चुपट्ठितो होति। इमेसं खो, भिक्खवे, तिण्णं सन्निपाता

गब्भस्स अवक्कन्ति होती' ति। असेसवचनमेतं, निस्सेसवचनमेतं, निप्परियायवचनमेतं, अरहस्सवचनमेतं, सदेवनुस्सानं मज्झे निसीदित्वा भणितं। अयं च द्विन्नं सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति दिस्सति—दुकूलेन तापसेन पारिकाय तापसिया उतुनीकाले दक्खिणेन हत्थङ्गुट्ठेन नाभि परामट्ठा, तस्स तेन नाभिपरामसनेन सामकुमारो निब्बत्तो। मातङ्गेना पि इसिना ब्राह्मणकञ्ञाय उतुनीकाले दक्खिणेन हत्थङ्गुट्ठेन नाभि परामट्ठा, तस्स तेन नाभिपरामसनेन मण्डब्यो माणवको निब्बत्तो ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं–'तिण्णं खो पन, भिक्खवे, सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होती' ति, तेन हि 'सामो च कुमारो मण्डब्यो च माणवको उभो पि ते नाभिपरामसनेन निब्बत्ता' ति यं वचनं, तं मिच्छा? यदि भन्ते नागसेन, भणितं–'सामो च कुमारो मण्डब्यो च माणवको नाभिपरामसनेन निब्बत्ता' ति, तेन हि 'तिण्णं खो पन, भिक्खवे, सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होती' ति यं वचनं तं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो सुगम्भीरो सुनिपुणो विसयो बुद्धिमन्तानं, सो तवानुप्पत्तो, छिन्द विमतिपथं, धारेहि ञाणवरप्पज्जोतं" ति?

४४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'तिण्णं खो पन, भिक्खवे, सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होति—इध मातापितरो च सन्निपतिता होन्ति, माता च उतुनी होति, गन्धब्बो च पच्चुपट्ठितो होति; एवं तिण्णं सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होती' ति। भणितं च—'सामो च कुमारो, मण्डब्यो च माणवको नाभिपरामसनेन निब्बत्ता'" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, येन कारणेन पञ्हो सुविनिच्छितो होति तेन कारणेन मं सञ्ञापेही" ति? "सुतपुब्बं पन तया, महाराज, सङ्किचो च कुमारो इसिसिङ्गो च तापसो थेरो च कुमारकस्सपो "इमिना नाम ते निब्बत्ता' ति? "आम, भन्ते, सूयति। अब्भुग्गता तेसं जाति—द्वे मिगधेनुयो ताव उतुनीकाले द्विन्नं तापसानं पस्सावट्ठानं आगन्त्वा ससम्भवं पस्सावं पिविंसु, तेन पस्सावसम्भवेन सङ्किच्चो च कुमारो इसिसिंगो च तापसो निब्बत्ता। थेरस्स उदायिस्स भिक्खुनुपस्सयं उपगतस्स रत्तचित्तेन भिक्खुनिया अङ्गजातं उपनिज्झायन्तस्स सम्भवं कासावे मुच्चि। अथ खो आयस्मा उदायि तं भिक्खुनिं एतदवोच—'गच्छ, भगिनि, उदकं आहर, अन्तरवासकं धोविस्सामी' ति। 'आहर, अय्य, अहमेव धोविस्सामी' ति। ततो सा भिक्खुनी उतुनीसमये तं सम्भवं एकदेसं मुखेन अग्गहेसि, एकदेसं अङ्गजाते पक्खिपि, तेन थेरो कुमारकस्सपो निब्बत्तो ति एवं जनो आहा" ति। "अपि नु खो त्वं, महाराज, सद्दहसि तं वचनं" ति? "आम, भन्ते, बलवं तत्थ मयं कारणं उपलभाम, येन मयं कारणेन सद्दहाम—'इमिना कारणेन निब्बत्ता" ति। "किं पनेत्थ, महाराज, कारणं" ति? 'सुपरिकम्मकते, भन्ते, कलले बीजं निपतित्वा खिप्पं संविरूहती' ति। "आम,

महाराजा" ति। "एवमेव खो, भन्ते, सा भिक्खुनी उतुनी समाना सण्ठिते कलले रुहिरे पच्छिन्नवेगे ठिताय धातुया तं सम्भवं गहेत्वा तस्मिं कलले पक्खिपि, तेन तस्सा गब्भो सण्ठासि। एवं तत्थ कारणं पच्चेम तेसं निब्बत्तिया" ति। "एवमेतं, महाराज, तथा सम्पटिच्छामि—'योनिप्पवेसेन गब्भो सम्भवती' ति। सम्पटिच्छसि पन त्वं, महाराज, थेरस्स कुमारकस्सपस्स गब्भावक्कमनं" ति? "आम, भन्ते" ति। "साधु, महाराज, पच्चागतोसि मम विसयं, एकविधेनपि गब्भावक्कन्ति कथयन्तो ममानुबलं भविस्ससि। अथ या पन ता द्वे मिगधेनुयो पस्सावं पिवित्वा गब्भं पटिलभिंसु, तासं त्वं सद्दहसि गब्भस्सावक्कमनं" ति? "आम, भन्ते। यं किञ्चि भुत्तं पीतं खायितं लेहितं सब्बं तं कललं ओसरति, ठानगतं वुड्ढिमापज्जति। यथा, भन्ते नागसेन, या काचि सरिता नाम सब्बा ता महासमुद्दं ओसरन्ति, ठानगता वुड्ढिमापज्जन्ति; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यं किञ्चि भुत्तं पीतं खायितं लेहितं सब्बं तं कललं औसरति, ठानगतं वुड्ढिमापज्जति। तेनाहं कारणेन सद्दहामि—मुखगतेन पि गब्भस्सावक्कन्ति होती" ति। "साधु, महाराज, गाळ्हतरं उपगतोसि मम विसयं, मुखपानेन पि द्वयसन्निपाता भवति। सङ्किच्चस्स च, महाराज, कुमारस्स इसिसिङ्गस्स तापसस्स थेरस्स च कुमारकस्सपस्स गब्भावक्कमनं सम्पटिच्छसी" ति। "आम, भन्ते, सन्निपातो ओसरती" ति।

४५. "सामो पि, महाराज, कुमारो मण्डब्यो च माणवको तीसु सन्निपातेसु अन्तोगधा एकरसा येव पुरिमेन, तत्थ कारणँ वक्खामि। दुकूलो च, महाराज, तापसो पारिका च तापसी—उभोपि ते अरञ्ञवासा पविवेकाधिमुत्ता उत्तमत्थगवेसका, तपतेजेन ताव ब्रह्मलोकं सन्तापेसुं। तेसं तदा सक्को देवानमिन्दो सायपातं उपट्ठानं आगच्छति। सो तेसं गरुकतमेत्तताय उपधारेन्तो अद्दस अनागतमद्धाने द्विन्नं पि तेसं चक्खूनं अन्तरधानं, दिस्वा ते एवमाह—'एकं मे भोन्तो वचनं करोथ, साधु, एकं पुत्तं जनेय्याथ, सो तुम्हाकं उपट्ठाको भविस्सति आलम्बनो चा' ति। 'अलं, कोसिय, मा एवं भणो' ति। ते तस्स तं वचनं न सम्पटिच्छिंसु। अनुकम्पको अत्थकामो सक्को देवानमिन्दो दुतियं पि, ततियं पि ते एवमाह—'एकं मे भोन्तो वचनं करोथ, साधु, एकं पुत्तं जनेय्याथ। सो तुम्हाकं उपट्ठाको भविस्सति आलम्बनो चा' ति। ततियं पि ते आहंसु—'अलं कोसिय, मा त्वं खो अम्हे अनत्थे नियोजेहि, कदायं कायो न भिज्जिस्सति, भिज्जतु अयं कायो भेदनधम्मो, भिज्जन्तिया पि चन्दिमसुरिये नेव मयं लोकधम्मेहि मिस्सयिस्साम। मा त्वं अम्हाकं सम्मुखभावं उपगच्छ। उपगतस्स ते एसो विस्सासो, अनत्थचरो त्वं मञ्ञे' ति।

"ततो सक्को देवानमिन्दो तेसं मनं अलभमानो गरुकतो पञ्जलिको पुन याचि-

'यदि मे वचनं न उस्सहथ कातुं, यदा तापसी उतुनी होति पुप्फवती तदा त्वं, भन्ते, दक्खिणेन हत्थङ्गुट्ठेन नाभिं परामसेय्यासि, तेन सा गब्भं लच्छति, सन्निपातो येवेस गब्भावक्कन्तिया' ति। 'सक्कोमहं, कोसिय, तं वचनं कातुं, न तावतकेन अम्हाकं तपो भिज्जति, 'होतू' ति सम्पटिच्छिंसु। ताय च पन वेलाय देवभवने अत्थि देवपुत्तो उस्सन्नकुसलमूलो खीणायुको, आयुक्खयप्पत्तो यदिच्छकं समत्थो ओक्कमितुं, अपि चक्कवत्तिकुले पि। अथ सक्को देवानमिन्दो तं देवपुत्तं उपसङ्कमित्वा एवमाह—'एहि खो, मारिस, सुप्पभातो ते दिवसो, अत्थसिद्धि उपगता यमहं ते उपट्ठानमागमिं, रमणीये ते ओकासे वासो भविस्सति, पतिरूपे कुले पटिसन्धि भविस्सति, सुन्दरेहि मातापितूहि वड्ढेतब्बो भविस्ससि। एहि, मे वचनं करोही' ति याचि। दुतियं पि, ततियं पि याचि सिरसि पञ्जलिकतो।

"ततो सो देवपुत्तो एवमाह—'कतमं तं, मारिस, कुलं यं त्वं अभिक्खणं कित्तयसि पुनप्पुनं' ति? 'दुकूलो च तापसो, पारिका च तापसी' ति। सो तस्स वचनं सुत्वा तुट्ठो सम्पटिच्छि—साधु, मारिस, यो तव छन्दो सो होतु। आकङ्खमानो अहं, मारिस, पत्थिते कुले उप्पज्जेय्यं, किम्हि कुले उप्पज्जामि—अण्डजे वा जलाबुजे वा संसेदजे वा ओपपातिके वा' ति? 'जलाबुजाय, मारिस, योनिया उप्पज्जाही' ति। अथ सक्को देवानमिन्दो उप्पत्तिदिवसं विगणेत्वा दुकूलस्स तापसस्स आरोचेसि–'असुकस्मिं नाम दिवसे तापसी उतुनी भविस्सति पुप्फवती, तदा त्वं, भन्ते, दक्खिणेन हत्थङ्गुट्ठेन नाभिं परामसेय्यासी' ति। तस्मिं, महाराज, दिवसे तापसो च उतुनी पुप्फवती अहोसि, देवपुत्तो च तत्थुपगतो पच्चुपट्ठितो अहोसि, तापसो च दक्खिणेन हत्थङ्गुट्ठेन तापसिया नाभिं परामसि। इति ते तयो सन्निपाता अहेसुं। नाभिपरामसनेन तापसिया रागो उदपादि। सो पनस्सा रागो नाभिपरामसनं पटिच्च, मा त्वं सन्निपातं अज्झाचारमेव मञ्ञि। ऊहसनं पि सन्निपातो, उल्लपनं पि सन्निपातो, उपनिज्झायनं पि सन्निपातो। पुब्बभागभावतो रागस्स उप्पादाय आमसनेन सन्निपातो जायति, सन्निपाता ओक्कमनं होती ति।

"अनज्झाचारे पि, महाराज, परामसनेन गब्भावक्कन्ति होति। यथा, महाराज, अग्गि जलमानो अपरामसनो पि उपगतस्स सीतं ब्यपहन्ति; एवमेव खो, महाराज, अनज्झाचारे पि परामसनेन गब्भावक्कन्ति होति।

४७. "चतुन्नं, महाराज, वसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति--कम्मवसेन, योनिवसेन, कुलवसेन, आयाचनवसेन। अपि च सब्बे पेते सत्ता कम्मसम्भवा कम्मसमुट्ठाना।

"कथं, महाराज, कम्मवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति? उस्सन्न-कुसलमूला, महाराज, सत्ता यदिच्छकं उप्पज्जन्ति—खत्तियमहासालकुले वा ब्राह्मणमहासालकुले वा गहपतिमहासालकुले वा देवेसु वा अण्डजाय वा योनिया जलाबुजाय वा योनिया संसेदजाय वा योनिया ओपपातिकाय वा योनिया। यथा, महाराज, पुरिसो अड्ढो महद्धनो महाभोगो पहूतजातरूप-रजतो पहूतवित्तूपकरणो पहूतधनधञ्ञो पहूतञातिपक्खो दासिं वा दासं वा खेत्तं वा वत्थुं वा गामं वा निगमं वा जनपदं वा यं किञ्चि मनसा अभिपत्थितं, यदिच्छकं द्विगुणतिगुणं पि धनं दत्वा किणाति; एवमेव खो, महाराज, उस्सन्न-कुसलमूला सत्ता यदिच्छकं उपज्जन्ति-खत्तियमहासालकुले वा ब्राह्मणमहासाल-कुले वा गहपतिमहासालकुले वा, देवेसु वा, अण्डजाय वा योनिया, जलाबुजाय वा योनिया, संसेदजाय वा योनिया, ओपपातिकाय वा योनिया। एवं कम्मवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति। (क)

४८. "कथं योनिवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति? कुक्कुटानं, महाराज, वातेन गब्भावक्कन्ति होति, बलाकानं मेघसद्देन गब्भावक्कन्ति होति, सब्बे पि देवा अगब्भसेय्यका सत्ता येव, तेसं नानावण्णेन गब्भावक्कन्ति होति। यथा, महाराज, मनुस्सा नानावण्णेन महिया चरन्ति—केचि पुरतो पटिच्छादेन्ति, केचि पच्छतो पटिच्छादेन्ति, केचि नग्गा होन्ति, केचि भण्डू होन्ति सेतपटधरा, केचि मोळिबद्धा होन्ति, केचि भण्डू कासाववसना होन्ति, केचि कासाववसना मोळिबद्धा होन्ति, केचि जटिनो वाकचीरा होन्ति, केचि चम्मवसना होन्ति, केचि रस्मियो निवासेन्ति; सब्बे पेते मनुस्सा नानावण्णेन महिया चरन्ति। एवमेव खो, महाराज, सत्ता येव ते सब्बे, तेसं नानावण्णेन गब्भावक्कन्ति होन्ति। एवं योनिवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति। (ख)

४९. "कथं कुलवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति? कुलं नाम, महाराज, चत्तारि कुलानि—अण्डजं, जलाबुजं, संसेदजं, ओपपातिकं। यदि तत्थ गन्धब्बो यतो कुतोचि आगन्त्वा अण्डजे कुले उप्पज्जति सो तत्थ अण्डजो होति...पे०.... जलाबुजे कुले....संसेदजे कुले...ओपपातिके कुले उप्पज्जति सो तत्थ ओपपातिको होति, तेसु तेसु कुलेसु तादिसा येव सत्ता सम्भवन्ति। यथा, महाराज, हिमवतो नेरुपब्बतं केचि मिगपक्खिनो उपेन्ति, सब्बे ते सकवण्णं विजहित्वा सुवण्णवण्णा होन्ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि गन्धब्बो यतो कुतो चि आगन्त्वा अण्डजं योनिं उपगन्त्वा सभाववण्णं विजहित्वा अण्डजो होति...पे०...जरायुजं.... संसेदजं...ओपपातिकं योनिं उपगन्त्वा सभाववण्णं विजहित्वा ओपपातिको होति। एवं कुलवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति। (ग)

५०. "कथं आयाचनवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति? इध, महाराज,

कुलं होति अपुत्तकं बहुसापतेय्यं सद्धं पसन्नं सीलवन्तं कल्याणधम्मं तपनिस्सितं, देवपुत्तो च उस्सन्नकुसलमूलो चवनधम्मो होति, अथ सक्को देवानमिन्दो तस्स अनुकम्पाय तं देवपुत्तं आयाचति—'पणिधेहि, मारिस, असुकस्स महेसिया कुच्छि' ति। सो तस्स आयाचनहेतु तं कुलं पणिधेति। यथा, महाराज, मनुस्सा पुञ्ञकामा समणं मनोभावनीयं आयाचित्वा गेहं उपनेन्ति–'अयं उपगन्त्वा सब्बस्स कुलस्स सुखावहो भविस्सति'; एवमेव खो, महाराज, सक्को देवानमिन्दो तं देवपुत्तं आयाचित्वा तं कुलं उपनेति। एवं आयाचनवसेन सत्तानं गब्भावक्कन्ति होति। (घ)

५१. "सामो, महाराज, कुमारो सक्केन देवानमिन्देन आयाचितो पारिकाय तापसिया कुच्छिं ओक्कन्तो। सामो, महाराज, कुमारो कतपुञ्ञो, मातापितरो सीलवन्तो, कल्याणधम्मो, आयाचको सक्को, तिण्णं चेतोपणिधिया सामो कुमारो निब्बत्तो। इध, महाराज, नयकुसलो पुरिसो सुकट्ठे अनूपखेत्ते बीजं रोपेय्य, अपि नु तस्स बीजस्स अन्तरायं विवज्जेन्तस्स वुड्ढिया कोचि अन्तरायो भवेय्या" ति ? "नहि, भन्ते। निरुपघातं, भन्ते, बीजं खिप्पं संविरूहेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, सामो कुमारो मुत्तो उप्पन्नन्तरायेहि तिण्णं चेतोपणिधिया निब्बत्तो।

५२. "अपि नु खो, महाराज, सुतपुब्बं तया इसीनं मनोपदोसेन इद्धो फीतो महाजनपदो सजनो समुच्छिन्नो" ति ? "आम, भन्ते, सुय्यति—महिया दण्डकारञ्ञं, मेज्झारञ्ञं कालिङ्गारञ्ञं, मातङ्गारञ्ञं, सब्बं तं अरञ्ञं अरञ्ञभूतं, सब्बे पेते जनपदा इसीनं मनोपदोसेन खयं गता"ति। "यदि, महाराज, तेसं मनोपदोसेन सुसमिद्धा जनपदा उच्छिज्जन्ति, अपि नु खो तेसं मनोपसादेन किञ्चि निब्बत्तेय्या" ति ? "आम, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, 'सामो कुमारो तिण्णं बलवन्तानं चेतोपसादेन निब्बत्तो—इसिनिम्मितो देवनिम्मितो पुञ्ञनिम्मितो' ति एवमेतं, महाराज, धारेहि। तयो इमे, महाराज, देवपुत्ता सक्केन देवानं इन्देन आयाचितं कुलं उप्पन्ना। कतमे तयो ? सामो कुमारो, महापनादो, कुसराजा, तयो पेते बोधिसत्ता" ति।

"सुनिद्दिट्ठा, भन्ते नागसेन, गब्भावक्कन्ति, सुकथितं कारणं, अन्धकारो आलोको कतो, जटा विजटिता, निच्छुद्धा परवादा, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

७. सद्धम्मन्तरधानपञ्हो

५३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति। पुन च परिनिब्बानसमये सुभद्देन परिब्बाजकेन पञ्हं पुट्ठेन भगवता भणितं—'इमे च, सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो

लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति। अनवसेसवचनमिदं, निस्सेसवचनमिदं, निप्परियायवचनमिदं। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतेन भणितं—'पञ्चेव दानि वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति, तेन हि—'असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति, तेन हि—'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति तं पि वचनं मिच्छा? अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो गहनतो पि गहनतरो, बलवतो पि बलवतरो, गण्ठितो पि गण्ठितरो, सो तवानुप्पत्तो, तत्थ ते ञाणबलविप्फारं दस्सेहि मकरो विय सागरब्भन्तरगतो" ति?

५४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता-'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति। परिनिब्बानसमये च सुभद्दस्स परिब्बाजकस्स भणितं—'इमे च, सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति। तं च पन, महाराज, भगवतो वचनं नानत्थं चेव होति नानाब्यञ्जनं च। अयं सासनपरिच्छेदो, अयं पटिपत्तिपरिदीपना ति दूरं विवज्जिता ते उभो अञ्ञमञ्ञं। यथा, महाराज, नभं पथवितो दूरं विवज्जितं, निरयं सग्गतो दूरं विवज्जितं, कुसलं अकुसलतो दूरं विवज्जितं, सुखं दुक्खतो दूरं विवज्जितं; एवमेव खो, महाराज, ते उभो अञ्ञमञ्ञं दूरं विवज्जिता।

५५. "अपि च, महाराज, मा ते पुच्छा मोघा अस्स, रसतो ते संसन्देत्वा कथयिस्सामि। 'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति यं वचनं भगवा आह, तं खयं परिदीपयन्तो सेसकं परिच्छिन्दि—'वस्ससहस्सं, आनन्द, सद्धम्मो तिट्ठेय्य सचे भिक्खुनियो न पब्बाजेय्युं, पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति। अपि नु खो, महाराज, भगवा एवं वदन्तो सद्धम्मस्स अन्तरधानं वा वदेति अभिसमयं वा पटिक्कोसती' ति? "नहि, भन्ते" ति। "नट्ठं, महाराज, परिकित्तयन्तो सेसकं परिदीपयन्तो परिच्छिन्दि। यथा, महाराज, पुरिसो, नट्ठायिको सब्बसेसकं गहेत्वा जनस्स परिदीपेय्य—'एत्तकं मे भण्डं नट्ठं इदं सेसकं' ति; एवमेव खो, महाराज, भगवा नट्ठं परिदीपयन्तो सेसकं देवमनुस्सानं कथेसि-'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति। यं पन, महाराज, भगवता भणितं—'पञ्चेव दानि, आनन्द, वस्ससतानि सद्धम्मो ठस्सती' ति, सासनपरिच्छेदो एसो।

५६. "यं पन परिनिब्बानसमये सुभद्दस्स परिब्बाजकस्स समणे परिकित्तयन्तो आह—'इमे च, सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति, पटिपत्तिपरिदीपना एसा। त्वं पन तं परिच्छेदं च परिदीपनं च एकरसं करोसि। यदि पन ते छन्दो, एकरसं कत्वा कथयिस्सामि, साधुकं सुणोहि मनसिकरोहि अविक्खित्तमानसो।

"इध, महाराज, तळाको भवेय्य नवसलिलसम्पुण्णो सम्मुखमुत्तरियमानो परिच्छिन्नो परिवटुमकतो, अपरियादिण्णे येव तस्मिं तळाके उदकूपरि महामेघो अपरापरं अनुप्पबन्धन्तो अभिवस्सेय्य, अपि नु खो, महाराज, तस्मिं तळाके उदकं परिक्खयं परियादानं गच्छेय्या" ति ? "नहि भन्ते" ति "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "मेघस्स, भन्ते, अनुप्पबन्धनताया' ति । "एवमेव खो, महाराज, जिनसासनवरसद्धम्मतळाको आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिविमलनवसलिलसम्पुण्णो उत्तरियमानो भवग्गमभिभवित्वा ठितो। यदि तत्थ बुद्धपुत्ता आचारसीलगुण-वत्तपटिपत्तिमेघवस्सं अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं, एवमिदं जिनसासनवरसद्धम्मतळाको चिरं दीघमद्धानं तिट्ठेय्य, अरहन्तेहि लोको असुञ्ञो भवेय्य। इममत्थं भगवता सन्धाय भासितं—'इमे च, सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्ते हि अस्सा' ति ।

"इध पन, महाराज, महति महाअग्गिक्खन्धे जलमाने अपरापरं सुक्खतिण-कट्ठगोमयानि उपसंहरेय्युं, अपि नु खो, महाराज, अग्गिक्खन्धो निब्बापेय्या" ति ? "नहि, भन्ते। भिय्यो भिय्यो सो अग्गिक्खन्धो जलेय्य, भिय्यो भिय्यो पभासेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, दससहस्सिया लोकधातुया जिनसासनवरं पि आचारसील-गुणवत्तपटिपत्तिया जलति पभासति । यदि पन, महाराज, तदुत्तरिं बुद्धपुत्ता पञ्चहि पधानियङ्गेहि समन्नागता सततमप्पमत्ता पदहेय्युं, तीसु सिक्खासु छन्दजाता सिक्खेय्युं, चारित्तं च सीलं समत्तं परिपूरेय्युं, एवमिदं जिनसासनवरं भिय्यो भिय्यो चिरं दीघमद्धानं तिट्ठेय्य, 'असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति इममत्थं भगवता सन्धाय भासितं—'इमे च, सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति ।

"इध पन, महाराज, सिनिद्धसमसुमज्जितसप्पभासविमलादासं सण्हसुखुमगेरुक-चुण्णेन अपरापरं मज्जेय्युं । अपि नु खो, महाराज, तस्मिं आदासे मलकद्दमरजो-जल्लं जायेय्या" ति ? "नहि, भन्ते। अञ्ञदत्थु विमलतरंयेव भवेय्या" ति । "एवमेव खो, महाराज, जिनसासनवरं पकतिनिम्मलं ब्यपगतकिलेसमल-रजोजल्लं। यदि तं बुद्धपुत्ता आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिसल्लेखधुतगुणेन जिनसासनवरं सल्लक्खेय्युं, एवमिदं जिनसासनवरं चिरं दीघमद्धानं तिट्ठेय्य, 'असुञ्ञो च लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति इममत्थं भगवता सन्धाय भासितं—'इमे च सुभद्द, भिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा' ति । पटिपत्तिमूलकं, महाराज, सत्थुसासनं पटिपत्तिकारणं, पटिपत्तिया अनन्तरहिताय तिट्ठती" ति ।

"भन्ते नागसेन, 'सद्धम्मन्तरधानं' ति यं वदेसि, कतमं तं सद्धम्मन्तरधानं" ति ? "तीणिमानि, महाराज, सासनन्तरधानानि, कतमानि तीणि ? अधिगमन्तरधानं,

पटिपत्तन्तरधानं, लिङ्गन्तरधानं। अधिगमे, महाराज, अन्तरहिते सुप्पटिपन्नस्सा पि धम्माभिसमयो न होति, पटिपत्तिया अन्तरहिताय सिक्खापदपञ्ञत्ति अन्तरधायति, लिङ्गं येव तिट्ठति, लिङ्गे अन्तरहिते पवेणुपच्छेदो होति। इमानि खो, महाराज, तीणि अन्तरधानानी" ति।

"सुविञ्ञापितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो, गम्भीरो उत्तानीकतो, गण्ठि भिन्नो, नट्ठा परवादा भग्गा निप्पभा कता, त्वं गणिवरवसभमासज्जा" ति।

८. अकुसलच्छेदनपञ्हो

५७. "भन्ते नागसेन, तथागतो सब्बं अकुसलं झापेत्वा सब्बञ्ञुतं पत्तो, उदाहु सावसेसे अकुसले सब्बञ्ञुतं पत्तो" ति ? "सब्बं, महाराज, अकुसलं झापेत्वा भगवा सब्बञ्ञुतं पत्तो। नत्थि भगवतो सेसकं अकुसलं" ति।

"किं पन, भन्ते, दुक्खा वेदना तथागतस्स काये उप्पन्नपुब्बा" ति ? "आम, महाराज, राजगहे भगवतो पादो सकलिकाय खतो, लोहितपक्खन्दिकाबाधो उप्पन्नो, काये अभिसन्ने जीवकेन विरेको कारितो, वाताबाधे उप्पन्ने उपट्ठाकेन थेरेन उण्होदकं परियिट्ठं" ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो सब्बं अकुसलं झापेत्वा सब्बञ्ञुतं पत्तो, तेन हि 'भगवतो पादो सकलिकाय खतो, लोहितपक्खन्दिका च आबाधो उप्पन्नो'ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतस्स पादो सकलिकाय खतो, लोहितपक्खन्दिका च आबाधो उप्पन्नो, तेन हि—'तथागतो सब्बं अकुसलं झापेत्वा सब्बञ्ञुतं पत्तो' ति तं पि वचनं मिच्छा। नत्थि, भन्ते, विना कम्मेन वेदयितं, सब्बं तं वेदयितं कम्ममूलकं, तं कम्मेनेव वेदियति। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

५८. "न हि, महाराज, सब्बं तं वेदयितं कम्ममूलकं। अट्ठहि, महाराज, कारणेहि वेदयितानि उप्पज्जन्ति, येहि कारणेहि पुथुसत्ता वेदना वेदियन्ति। कतमेहि अट्ठहि ? वातसमुट्ठानानि पि खो, महाराज, इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति, पित्तसमुट्ठानानि पि खो, महाराज पे०⋯सेम्हसमुट्ठानानि पि खो, महाराज⋯ पे०⋯सन्निपातिकानि पि खो, महाराज⋯पे०⋯उतुपरिणामजानि पि खो, महाराज⋯पे०⋯विसमाहारजानि पि खो, महाराज⋯पे०⋯ओपक्कमिकानि पि खो महाराज⋯पे० कम्मविपाकजानि पि खो, महाराज, इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। इमेहि खो, महाराज, अट्ठहि कारणेहि पुथुसत्ता वेदना वेदयन्ति। तत्थ ये ते पुग्गला 'सत्ते कम्मं विबाधन्ती'ति वदेय्युं ते इमे सत्तासत्तकारणं पटिबाहन्ति, तेसं तं वचनं मिच्छा" ति ? "भन्ते नागसेन, यञ्च वातिकं यञ्च पित्तिकं यञ्च सेम्हिकं यञ्च सन्निपातिकं यञ्च उतुपरिणामजं यञ्च विसमाहारजं यञ्च ओपक्कमिकं सब्बे ते कम्मसमुट्ठाना येव, कम्मेनेव ते सब्बे सम्भवन्ती" ति।

"यदि, महाराज, ते पि सब्बे कम्मसमुट्ठाना व आबाधा भवेय्युं, न तेसं कोट्ठासतो लक्खणानि भवेय्युं। वातो खो, महाराज, कुप्पमानो दसविधेन कुप्पति—सीतेन, उण्हेन, जिघच्छाय, पिपासाय, अतिभुत्तेन, ठानेन, पधानेन, आधावनेन, उपक्कमेन, कम्मविपाकेन। तत्र ये ते नवविधा, न ते अतीते न अनागते, वत्तमानके भवे उप्पज्जन्ति, तस्मा न वत्तब्बा—'कम्मसम्भवा सब्बा वेदना' ति। पित्तं, महाराज, कुप्पमानं तिविधेन कुप्पति-सीतेन, उण्हेन, विसमभोजनेन। सेम्हं, महाराज, कुप्पमानं तिविधं कुप्पति—सीतेन, उण्हेन, अन्नपानेन। यो च, महाराज, वातो, यञ्च पित्तं, यञ्च सेम्हं, तेहि तेहि कारणेहि कुप्पित्वा मिस्सीहुत्वा सकं सकं वेदनं आकड्ढति। उतुपरिणामजा, महाराज, वेदना उतुपरिणामेन उप्पज्जति, विसमाहारजा वेदना विसमाहारेन उप्पज्जति। ओपक्कमिका, महाराज, वेदना अत्थि किरिया, अत्थि कम्मविपाका, कम्मविपाकजा वेदना पुब्बे कतेन कम्मेन उप्पज्जति। इति खो, महाराज, अप्पं कम्मविपाकजं, बहुतरं अवसेसं। तत्थ बाला 'सब्बं कम्मविपाकजं येवा' ति अतिधावन्ति। तं सब्बं न सक्का विना बुद्धञाणेन ववत्थानं कातुं।

"यं पन, महाराज, भगवतो पादो सकलिकाय खतो, तं वेदयितं नेव वातसमुट्ठानं, न पित्तसमुट्ठानं, न सेम्हसमुट्ठानं, न सन्निपातिकं, न उतुपरिणामजं, न विसमाहारजं, न कम्मविपाकजं, ओपक्कमिकं येव। देवदत्तो हि, महाराज, बहूनि जातिसतसहस्सानि तथागते आघातं बन्धि। सो तेन आघातेन महतिं गरुं सिलं गहेत्वा—'मत्थके पातेस्सामी' ति मुञ्चि। अथञ्ञे द्वे सेला आगन्त्वा तं सिलं तथागतं असम्पत्तं येव सम्पटिच्छिसु, तासं पहारेन पपटिका भिज्जित्वा भगवतो पादे रुहिरं उप्पादेसि। कम्मविपाकतो वा, महाराज, भगवतो एसा वेदना निब्बत्ता, किरियतो वा, तदुद्धं नत्थञ्ञा वेदना।

"यथा, महाराज, खेत्तदुट्ठताय वा बीजं न सम्भवति बीजदुट्ठताय वा; एवमेव खो, महाराज, कम्मविपाकतो वा भगवतो एसा वेदना निब्बत्ता, किरियतो वा, तदुद्धं नत्थञ्ञा वेदना।

"यथा वा पन, महाराज, कोट्ठदुट्ठताय वा भोजनं विसमं परिणमति, आहारदुट्ठताय वा; एवमेव खो, महाराज, कम्मविपाकतो वा भगवतो एसा वेदना निब्बत्ता, किरियतो वा, तदुद्धं नत्थञ्ञा वेदना। अपि च, महाराज, नत्थि भगवतो कम्मविपाकजा वेदना, नत्थि विसमाहारजा वेदना, अवसेसेहि समुट्ठानेहि भगवतो वेदना उप्पज्जति। ताय च पन वेदनाय न सक्का भगवन्तं जीविता वोरोपेतुं।

५९. "निपतन्ति, महाराज, चातुमहाभूतिके काये इट्ठानिट्ठा सुभासुभवेदना। इध, महाराज, आकासे खित्तो लेड्डु महापथविया निपतति, अपि नु खो सो, महाराज,

लेड्डु पुब्बे कतेन महापथविया निपतती''ति ? ''न हि, भन्ते। नत्थि सो, भन्ते, हेतु महापथविया, येन हेतुना महापथवी कुसलाकुसलविपाकं पटिसंवेदेय्य। पच्चुप्पन्नेन, भन्ते, अकम्मकेन हेतुना सो लेड्डु महापथवियं निपतति''। ''यथा, महाराज, महापथवी, एवं तथागतो दट्ठब्बो, यथा लेड्डु पुब्बे अकतेन महापथवियं निपतति; एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स पुब्बे अकतेन सा सकलिका पादे निपतिता।

''इध पन, महाराज, मनुस्सा महापथविं भिन्दन्ति च खणन्ति च, अपि नु खो ते, महाराज, मनुस्सा पुब्बे कतेन महापथविं भिन्दन्ति च खणन्ति चा' ति ? ''न हि, भन्ते'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, या सा सकलिका भगवतो पादे निपतिता न सा सकलिका पुब्बे कतेन भगवतो पादे निपतिता। यो पि, महाराज, भगवतो लोहितपक्खन्दिकाबाधो उप्पन्नो सो पि आबाधो न पुब्बे कतेन उप्पन्नो, सन्निपातिकेन उप्पन्नो। ये केचि, महाराज, भगवतो कायिका आबाधा उप्पन्ना न ते कम्माभिनिब्बत्ता, छन्नं एतेसं समुट्ठानानं अञ्ञतरतो निब्बत्ता।

६०. ''भासितं पेतं महाराज भगवता देवाधिदेवेन संयुत्तनिकायवरलञ्छके मोळियसीवके वेय्याकरणे—

'पित्तसमुट्ठानानि पि खो, सीवक, इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। सामं पि खो एतं, सीवक, वेदितब्बं—यथा पित्तसमुट्ठानानि पि इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। लोकस्स पि खो एतं, सीवक, सच्चसम्मतं, यथा पित्तसमुट्ठानानि पि इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। तत्र, सीवक, ये ते समणब्राह्मणा एवंवादिनो एवंवादिनो एवंदिट्ठिनो—यं किञ्चायं पुरिसपुग्गलो पटिसंवेदेति सुखं वा दुक्खं वा अदुक्खमसुखं व सब्बं तं पुब्बेकतहेतूही ति, यञ्च सामं ञातं तञ्च अतिधावन्ति, यञ्च लोके सच्चसम्मतं तञ्च अतिधावन्ति, तस्मा तेसं समणब्राह्मणानं मिच्छा ति वदामि। सेम्हसमुट्ठानानि पि खो, सीवक, इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। वातसमुट्ठानानि पि खो, सीवक... पे०....सन्निपातिकानि पि खो, सीवक....पे०...उतुपरिणामजानि पि खो, सीवक....पे०....विसमाहारजानि पि खो, सीवक....पे०....ओपक्कमिकानि पि खो, सीवक....पे०....कम्मविपाकजानि पि खो, सीवक, इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ती ति। सामं पि खो एतं, सीवक, वेदितब्बं—यथा कम्मविपाकजानि पि इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति, लोकस्स पि खो एतं, सीवक, सब्बसम्मतं यथा कम्मविपाकजानि पि इधेकच्चानि वेदयितानि उप्पज्जन्ति। तत्र, सीवक, ये ते समणब्राह्मणा एवंवादिनो एवन्दिट्ठिनो—यं किञ्चायं पुरिसपुग्गलो पटिसंवेदेति सुखं वा दुक्खं वा अदुक्खमसुखं वा सब्बं तं पुब्बे कतहेतूही ति। यं च सामं ञातं तं च अतिधावन्ति, यं च लोके सच्चसम्मतं तं च अतिधावन्ति, तस्मा तेसं समणब्राह्मणानं मिच्छा ति वदामी' ति।

"इति पि, महाराज, न सब्बा वेदना कम्मविपाकजा। 'सब्बं, महाराज, अकुसलं झापेत्वा भगवा सब्बञ्ञुतं पत्तो' ति एवमेतं धारेही" ति। "साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ति।

९. उत्तरिकरणीयपञ्हो

६१. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'यं किञ्चि करणीयं तथागतस्स सब्बं तं बोधिया येव मूले परिनिट्ठितं, नत्थि तथागतस्स उत्तरिं करणीयं, कतस्स वा पटिचयो'ति। इदं च तेमासं पटिसल्लानं दिस्सति। यदि, भन्ते नागसेन, यं किञ्चि करणीयं तथागतस्स सब्बं तं बोधिया येव मूले परिनिट्ठितं, नत्थि तथागतस्स उत्तरिं करणीयं कतस्स वा पटिचयो। तेन हि 'तेमासं पटिसल्लीनो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तेमासं पटिसल्लीनो, तेन हि—'यं किञ्चि करणीयं तथागतस्स सब्बं तं बोधिया येव मूले परिनिट्ठितं' ति तं पि वचनं मिच्छा। नत्थि कतकरणीयस्स पटिसल्लानं, सकरणीयस्सेव पटिसल्लानं। यथा नाम ब्याधितस्स भेसज्जेन करणीयं होति, अब्याधितस्स किं भेसज्जेन! छातस्सेव भोजनेन करणीयं होति, अछातस्स किं भोजनेन! एवमेव खो, भन्ते नागसेन, नत्थि कतकरणीयस्स पटिसल्लानं, सकरणीयस्सेव पटिसल्लानं। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

"यं किञ्चि, महाराज, करणीयं तथागतस्स सब्बं तं बोधिया येव मूले परिनिट्ठितं, नत्थि तथागतस्स उत्तरिं करणीयं, कतस्स वा पटिचयो। भगवा च तेमासं पटिसल्लीनो। पटिसल्लानं खो, महाराज, बहुगुणं, सब्बे पि तथागता पटिसल्लीयित्वा सब्बञ्ञुतं पत्ता। तं ते सुकतगुणमनुस्सरन्ता पटिसल्लानं सेवन्ति। यथा, महाराज, पुरिसो रञ्ञो सन्तिका लद्धवरो पटिलद्धभोगो तं सुकतगुणमनुसरन्तो अपरापरं रञ्ञो उपट्ठानं एति; एवमेव खो, महाराज, सब्बे पि तथागता पटिसल्लीयित्वा सब्बञ्ञुतं पत्ता, तं ते सुकतगुणमनुस्सरन्ता पटिसल्लानं सेवन्ति।

यथा वा पन, महाराज, पुरिसो आतुरो दुक्खितो बाळ्हगिलानो भिसक्कमुपसेवित्वा सोत्थिमनुप्पत्तो तं सुकतगुणमनुस्सरन्तो अपरापरं भिसक्कमुपसेवति; एवमेव खो, महाराज, सब्बे पि तथागता पटिसल्लीयित्वा सब्बञ्ञुतं पत्ता, तं ते सुकतगुणमनुस्सरन्ता पटिसल्लानं सेवन्ति।

६२. "अट्ठवीसति खो पनिमे, महाराज, पटिसल्लानगुणा, ये गुणे समनुपस्सन्ता तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति। कतमे अट्ठवीसति? इध, महाराज, पटिसल्लानं पटिसल्लीयमानं रक्खति, आयुं वड्ढेति, बलं देति, वज्जं पिदहति, अयसमपनेति, यसमुपनेति, अरतिं विनोदेति, रतिमुपदहति, भयमपनेति, वेसारज्जं करोति, कोसज्जमपनेति, विरियमभिजनेति, रागमपनेति, दोसमपनेति, मोहमपनेति, मानं निहन्ति, वितक्कं भञ्जति, चित्तं एकग्गं करोति, मानसं स्नेहयति, हासं जनेति,

गरुकं करोति, लाभमुप्पादयति, नमस्सियं करोति, पीतिं पापेति, पामोज्जं करोति, सङ्खारानं सभावं दस्सयति, भवप्पटिसन्धिं उग्घाटेति, सब्बसामञ्ञं देति। इमे खो, महाराज, अट्ठवीसति पटिसल्लानगुणा, ये गुणे समनुपस्सन्ता तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति।

६३. "अपि च खो, महाराज, तथागता सन्तं सुखं समापत्तिरतिं अनुभवितुकामा पटिसल्लानं सेवन्ति परियोसितसङ्कप्पा। चतूहि खो, महाराज, कारणेहि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति। कतमेहि चतूहि? विहारफासुताय पि, महाराज, तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति, अनवज्जगुणबहुलताय पि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति, असेसअरियवीथितो पि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति, सब्बबुद्धानं थुतथोमितवण्णितपसत्थतो पि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति। इमेहि खो, महाराज, चतूहि कारणेहि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति। इति खो, महाराज, तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति; न करणीयताय, न कतस्स वा पटिचयाय, अथ खो गुणविसेसदस्साविताय तथागता पटिल्लानं सेवन्ती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं, तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१०. इद्धिबलदस्सनपञ्हो

६४. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता— 'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता बहुलीकता यानीकता वत्थुकता अनुट्ठिता परिचिता सुसमारद्धा। आकङ्खमानो, आनन्द, तथागतो कप्पं वा तिट्ठेय्य कप्पावसेसं वा' ति। पुन च भणितं—'इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता....पे०....कप्पावसेसं वा'ति; तेन हि तेमासपरिच्छेदो मिच्छा। यदि, भन्ते, तथागतेन भणितं—'इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती'ति, तेन हि—'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता....पे०....कप्पावसेसं वा' ति तं पि वचनं मिच्छा। नत्थि तथागतानं अट्ठाने गज्जितं। अमोघवचना बुद्धा भगवन्तो, तथवचना, अद्वेज्झवचना। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो गम्भीरो सुनिपुणो दुन्निज्झापयो सो तवानुप्पत्तो, भिन्देतं दिट्ठिजालं, एकंसे ठपय, भिन्द परवादं" ति?

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता....पे०....कप्पावसेसं वा' ति, तेमासपरिच्छेदो च भणितो। सो च पन कप्पो आयुकप्पो वुच्चति। न, महाराज, भगवा अत्तानो बलं कित्तयमानो एवमाह, इद्धिबलं पन, महाराज, भगवा परिकित्तयमानो एवमाह—'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता....पे०.... कप्पावसेसं वा' ति।

"यथा, महाराज, रञ्ञो अस्साजानियो भवेय्य सीघगति अनिलजवो, तस्स

राजा जवबलं परिकित्तायन्तो सनेगमजानपदभटबलब्राह्मणगहपतिकअमच्चजनमज्झे एवं वदेय्य—'आकङ्खमानो मे, भो, अयं हयवरो सागरजलपरियन्तं महिं अनुविचरित्वा खणेन इधागच्छेय्या' ति । न च तं जवगतिं तस्सं परिसायं दस्सेय्य, विज्जति च खो जवो तस्स, समत्थो च सो खणेन सागरजलपरियन्तं महिं अनुविचरितुं। एवमेव खो, महाराज, भगवा अत्तनो इद्धिबलं परिकित्तयमानो एवमाह, तं पि तेविज्जानं छळभिञ्ञानं अरहन्तानं विमलखीणासवानं देवमनुस्सानं च मज्झे निसीदित्वा भणितं—'तथागतस्स खो, आनन्द, चत्तारो इद्धिपादा भाविता बहुलीकता यानीकता वत्थुकता अनुट्ठिता परिचिता सुसमारद्धा । आकङ्खमानो, आनन्द, तथागतो कप्पं वा तिट्ठेय्य कप्पावसेसं वा' ति । विज्जति च तं, महाराज, इद्धिबलं भगवतो, समत्थो च भगवा इद्धिबलेन कप्पं वा ठातुं कप्पावसेसं वा । न च भगवा तं इद्धिबलं तस्सं परिसायं दस्सेति । अनत्थिको, महाराज, भगवा सब्बभवेहि, गरहिता च भगवता सब्बभवा । भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सेय्यथापि, भिक्खवे, अप्पमत्तको पि गूथो दुग्गन्धो होति; एवमेव खो अहं, भिक्खवे, अप्पमत्तं पि भवं न वण्णेमि, अन्तमसो अच्छरासङ्घातमत्तं पी' ति । अपि नु खो, महाराज, भगवा सब्बभवगतियोनियो गूथसमं दिस्वा इद्धिबलं निस्साय भवेसु छन्दरागं करेय्या' ति ? "न हि, भन्ते" ति । "तेन हि, महाराज, भगवता इद्धिबलं परिकित्तयमानो एवरूपं बुद्धसीहनादमभिनदी" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ति ।

(इमस्मिं वग्गे दस पञ्हा) **पठमो इद्धिबलवग्गो निट्ठितो ।**

२. अभेज्जवग्गो

१. खुद्दानुखुद्दपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'अभिञ्ञायाहं, भिक्खवे, धम्मं देसेमि, नो अनभिञ्ञाया' ति । पुन च विनयपञ्ञत्तिया एवं भणितं—आकङ्खमानो, आनन्द, सङ्घो ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनतू' ति । किं नु खो, भन्ते नागसेन, खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि दुप्पञ्ञत्तानि, उदाहु अवत्थुस्मिं अजानित्वा पञ्ञत्तानि, यं भगवा अत्तनो अच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनापेति ? यदि भन्ते नागसेन, भगवता भणितं –'अभिञ्ञायाहं, भिक्खवे, धम्मं देसेमि नो अनभिञ्ञाया' ति, तेन हि–'आकङ्खमानो, आनन्द, सङ्घो ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनतू' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि तथागतेन विनयपञ्ञत्तिया एवं भणितं—'आकङ्खमानो ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनतू' ति, तेन हि—'अभिञ्ञायाहं, भिक्खवे,

धम्मं देसेमि नो अनभिञ्ञाया' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो सुखुमो निपुणो गम्भीरो सुगम्भीरो दुन्निज्झापयो, सो तवानुप्पत्तो, तत्थ ते ञाणबलविप्फारं दस्सेही" ति ?

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'अभिञ्ञायाहं, भिक्खवे, धम्मं देसेमि, नो अनभिञ्ञाया' ति। विनयपञ्ञत्तिया पि एवं भणितं—'आकङ्खमानो, आनन्द, सङ्घो ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनतू' ति। तं पन, महाराज, तथागतो भिक्खू वीमंसमानो आह—'उक्कलेस्सन्ति नु खो मम सावका मया विस्सज्जापियमाना ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि उदाहु आदियिस्सन्ती' ति।

"यथा, महाराज, चक्कवत्ती राजा पुत्ते एवं वदेय्य—'अयं खो, ताता, महाजनपदो सब्बदिसासु सागरपरियन्तो, दुक्करो, ताता, तावतकेन बलेन धारेतुं, एथ तुम्हे, ताता, ममच्चयेन पच्चन्ते पच्चन्ते देसे पजहथा' ति। अपि नु खो ते, महाराज, कुमारा पितु अच्चयेन हत्थगते जनपदे सब्बे ते पच्चन्ते देसे मुञ्चेय्युं" ति ? "नहि, भन्ते। राजानो, भन्ते, लुद्धतरा, कुमारा रज्जलोभेन तदुत्तरि दिगुणतिगुणजनपदं परिग्गण्हेय्युं, किं पन ते हत्थगतं जनपदं मुञ्चेय्युं" ति ! "एवमेव खो, महाराज, तथागतो भिक्खू वीमंसमानो एवमाह—'आकङ्खमानो, आनन्द, सङ्घो ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि समूहनतू' ति। दुक्खपरिमुत्तिया, महाराज, बुद्धपुत्ता धम्मलोभेन अञ्ञं पि उत्तरिं दियड्ढं सिक्खापदसतं गोपेय्युं। किं पन पकतिपञ्ञत्तं सिक्खापदं मुञ्चेय्युं" ति।

"भन्ते नागसेन, यं भगवा आह—'खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानी' ति, एत्थायं जनो सम्मूळ्हो विमतिजातो अधिकतो संसयपक्खन्दो—'कतमानि तानि खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि, कतमानि अनुसिक्खापदानी' ति ? "दुक्कटं, महाराज, खुद्दकं सिक्खापदं, दुब्भासितं अनुखुद्दकं सिक्खापदं, इमानि द्वे खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि। पुब्बकेहि पि, महाराज, महाथेरेहि एत्थ विमति उप्पादिता, तेहि पि एकज्झं न कतो धम्मसण्ठितिपरियाये भगवता एसो पञ्हो उपदिट्ठो" ति।

"चिरनिक्खित्तं, भन्ते नागसेन, जिनरहस्सं अज्जेतरहि लोके विवटं पाकटं कतं" ति।

२. अब्याकरणीयपञ्हो

२. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'नत्थानन्द, तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठी' ति। पुन च थेरेन मालुंक्यापुत्तेन पञ्हं पुट्ठो न ब्याकासि। एसो खो, भन्ते नागसेन, पञ्हो द्वयन्तो एकन्तनिस्सितो भविस्सति—अजानन्तेन वा गुय्हकरणेन वा। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'नत्थानन्द, तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठी' ति, तेन हि थेरस्स मालुंक्यापुत्तस्स अजानन्तेन न ब्याकतं।

यदि जानन्तेन न ब्याकतं, तेन हि अत्थि तथागतस्स आचरियमुट्ठी। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो ति" ?

"भासितं पेतं, महाराज भगवता—'नत्थानन्द, तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठी' ति। अब्याकतो च थेरेन मालुंक्यापुत्तेन पुच्छितो पञ्हो, तं च पन न अजानन्तेन न गुय्हकरणेन।

४. "चत्तारिमानि, महाराज, पञ्हब्याकरणानि। कतमानि चत्तारि ? एकंसब्याकरणीयो पञ्हो, विभज्जब्याकरणीयो पञ्हो, पटिपुच्छाब्याकरणीयो पञ्हो, ठपनीयो पञ्हो ति।

"कतमो च, महाराज, एकंसब्याकरणीयो पञ्हो ? 'रूपं अनिच्चं' ति एकंसब्याकरणीयो पञ्हो, 'वेदना अनिच्चा' ति... पे०... सञ्ञा अनिच्चा' ति पे०.... 'सङ्खारा अनिच्चा' ति... पे०....'विञ्ञाणं अनिच्चं' ति एकंसब्याकरणीयो पञ्हो। अयं एकंसब्याकरणीयो पञ्हो।

"कतमो विभज्जब्याकरणीयो पञ्हो ? 'अनिच्चं पन रूपं' ति विभज्जब्याकरणीयो पञ्हो, 'अनिच्चा पन वेदना' ति, 'अनिच्चा पन सञ्ञा' ति, 'अनिच्चा पन सङ्खारा' ति...'अनिच्चं पन विञ्ञाणं' ति विभज्जब्याकरणीयो पञ्हो। अयं विभज्जब्याकरणीयो पञ्हो।

"कतमो परिपुच्छाब्याकरणीयो पञ्हो ? 'किं नु खो चक्खुना सब्बं विजानाती' ति अयं पटिपुच्छाब्याकरणीयो पञ्हो।

"कतमो ठपनीयो पञ्हो ? 'सस्सतो लोको' ति ठपनीयो पञ्हो, 'असस्सतो लोको' ति, अन्तवा लोको' ति, 'अनन्तवा लोको' ति, 'अन्तवा च अनन्तवा च लोको' ति, 'नेवन्तवा नानन्तवा लोको' ति, 'तं जीवं तं सरीरं' ति, 'अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं' ति, 'होति तथागतो परं मरणा' ति, न होति तथागतो परं मरणा' ति, 'होति च न च होति तथागतो परं मरणा' ति, 'नेव होति न न होति तथागतो परं मरणा' ति ठपनीयो पञ्हो। अयं ठपनीयो पञ्हो।

५. "भगवा, महाराज, थेरस्स मालुंक्यापुत्तस्स तं ठपनीयं पञ्हं न व्याकासि। सो पन पञ्हो किंकारणा ठपनीयो ? न तस्स दीपनाय हेतु वा कारणं वा अत्थि, तस्मा सो पञ्हो ठपनीयो। नत्थि भगवन्तानं बुद्धानं अकारणमहेतुकं गिरमुदीरणं" ति। "साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

३. मच्चुभायनाभायनपञ्हो

६. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता–'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति। पुन भणितं—'अरहा सब्बभयमतिक्कन्तो' ति। किं नु खो, भन्ते नागसेन, अरहा दण्डभया तसति ? निरये वा नेरयिका सत्ता जलिता कुथिता तत्ता सन्तत्ता तम्हा जलितग्गिजालका महानिरया चवमाना मच्चुनो भायन्ति।

यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति, तेन हि 'अरहा सब्बभयमतिक्कन्तो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि भगवता भणितं—'अरहा सब्बभयमतिक्कन्तो' ति तेन हि—'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

७. "नेतं, महाराज, वचनं भगवता अरहन्ते उपादाय भणितं—"सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति, ठपितो अरहा तस्मिं वत्थुस्मिं, समूहतो भयहेतु अरहतो। ये ते, महाराज, सत्ता सकिलेसा, येसं च अधिमत्ता अत्तानुदिट्ठि, ये च सुखदुक्खेसु उन्नतावनता, ते उपादाय भगवता भणितं—'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति। अरहतो, महाराज, सब्बगति उपच्छिन्ना, योनि विद्धंसिता, पटिसन्धि उपहता, भग्गा फासुका, समूहता सब्बभवालया, समुच्छिन्ना सब्बसङ्खारा, हतं कुसलाकुसलं, विहता अविज्जा, अबीजं विञ्ञाणं कतं, दड्ढा सब्बकिलेसा, अतिवत्ता लोकधम्मा। तस्मा अरहा न सन्तसति सब्बभयेहि।

"इध, महाराज, रञ्ञो चत्तारो महामत्ता भवेय्युं, अनुरक्खा लद्धयसा विस्सासिका, ठपिता महति इस्सरिये ठाने, अथ राजा किस्मिञ्चिदेव करणीये समुप्पन्ने यावता सकविजिते सब्बजनस्स आणापेय्य—'सब्बे व मे बलिं करोन्तु, साधेथ तुम्हे चत्तारो महामत्ता तं करणीयं' ति। अपि तु खो, महाराज, तेसं चतुन्नं महामत्तानं बलिभया सन्तासो उप्पज्जेय्या' ति ? "न हि भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "ठपिता ते, भन्ते, रञ्ञा उत्तमे ठाने, नत्थि तेसं बलि, समतिक्कन्तबलिनो ते। अवसेसे उपादाय रञ्ञा आणापितं—'सब्बेव मे बलिं करोन्तू" ति। "एवमेव खो, महाराज, नेतं वचनं भगवता अरहन्ते उपादाय भणितं, ठपितो अरहा तस्मिं वत्थुस्मिं, समूहतो भयहेतु अरहतो। ये ते, महाराज, सत्ता सकिलेसा येसं च अधिमत्ता अत्तानुदिट्ठि, ये च सुखदुक्खेसु उन्नतावनता, ते उपादाय भगवता भणितं—'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति। तस्मा अरहा न तसति सब्बभयेही" ति।

८. "नेतं, भन्ते नागसेन, वचनं सावसेसं, निरवसेसवचनमेतं—'सब्बे' ति, तत्थ मे उत्तरिं कारणं ब्रूहि तं वचनं पतिट्ठापेतुं" ति।

"इध, महाराज, गामे गामसामिको आणापकं आणापेय्य—'एहि, भो आणापक, यावता गामे गामिका, ते सब्बे सीघं मम सन्तिके सन्निपातेही' ति। सो 'साधु सामी' ति सम्पटिच्छित्वा गाममज्झे ठत्वा तिक्खत्तुं सद्दमनुस्सावेय्य—'यावता गामे गामिका, ते सब्बे सीघं सीघं सामिनो सन्तिके सन्निपतन्तू' ति। ततो ते गामिका आणापकस्स वचनेन तुरिततुरिता सन्निपतित्वा गामसामिकस्स आरो-

चेन्ति—'सन्निपतिता, सामि, सब्बे गामिका, यं ते करणीयं तं करोही' ति । इति सो, महाराज, गामसामिको कुटिपुरिसे सन्निपातेन्तो सब्बे गामिके आणापेति, ते च आणत्ता न सब्बे सन्निपतन्ति, कुटिपुरिसा येव सन्निपतन्ति—"एत्तका येव मे गामिका' ति । गामसामिको च तथा सम्पटिच्छति । अञ्ञे वहुतरा अनागता इत्थिपुरिसा दासिदासा भतका कम्मकरा गामिका गिलाना गोमहिंसा अजेळका सुवाना, ये अनागता सब्बे ते अगणिता, कुटिपुरिसा येव उपादाय आणापितत्ता—'सब्बे सन्निपतन्तू' ति । एवमेव खो, महाराज, नेतं वचनं भगवता अरहन्ते उपादाय भणितं, ठपितो अरहा तस्मिं वत्थुस्मिं, समूहतो भयहेतु अरहतो । ये ते, महाराज, सत्ता सकिलेसा, येसं च अधिमत्ता अत्तानुदिट्ठि, ये च सुखदुक्खेसु उन्नतावनता, ते उपादाय भगवता भणितं—'सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो' ति । तस्मा अरहा न तसति सब्बभयेहि ।

"अत्थि, महाराज, सावसेसं वचनं सावसेसो अत्थो, अत्थि सावसेसं वचनं निरवसेसो अत्थो, अत्थि निरवसेसं वचनं सावसेसो अत्थो, अत्थि निरवसेसं वचनं निरवसेसो अत्थो, तेन तेन अत्थो सम्पटिच्छितब्बो ।

पञ्चविधेहि, महाराज, कारणेहि अत्थो सम्पटिच्छितब्बो—आहच्चपदेन, रसेन, आचरियवंसताय, अधिप्पाया, कारणुत्तरियताय । एत्थ हि—'आहच्चपदं' ति सुत्तं अधिप्पेतं, 'रसो' हि सुत्तानुलोमं, 'आचरियवंसो'ति आचरियवादो, 'अधिप्पायो'ति अत्तनो मति, 'कारणुत्तरियता' ति इमेहि चतूहि समेन्तं कारणं । इमेहि खो, महाराज, पञ्चहि कारणेहि अत्थो सम्पटिच्छितब्बो । एवमेसो पञ्हो सुविनिच्छितो होती" ति ।

९. "होतु, भन्ते नागसेन, तथा तं सम्पिटिच्छामि । ठपितो होतु अरहा तस्मिं वत्थुस्मिं, तसन्तु अवसेसा सत्ता । निरये पन नेरयिका सत्ता, दुक्खा तिब्बा कटुका वेदना वेदियमाना जलितपज्जलितसब्बङ्गपच्चङ्गा रुण्णकारुञ्ञकन्दितपरिदेवितलालप्पितमुखा असय्हतिब्बदुक्खाभिभूता अताणा असरणा असरणीभूता अनप्पसाकातुरा अन्तिमपच्छिमगतिका एकन्तसोकपरायणा उण्हतिखिणचण्डखरतपनतेजवन्तो भीमभयजनकनिनादमहासद्दा संसिब्बितछब्बिधजालामालाकुला समन्ता सतयोजनानुफरणच्चिवेगा कदरिया तपना महानिरया चवमाना मच्चुनो भायन्ती"ति । "आम, महाराजा' ति ।

१०. 'ननु, भन्ते नागसेन, निरयो एकन्तदुक्खवेदनियो, किस्स पन ते नेरयिका सत्ता एकन्तदुक्खवेदनिया निरया चवमाना मच्चुनो भायन्ति, किस्स निरये रमन्ती" ति ? "न ते, महाराज, नेरयिका सत्ता निरये रमन्ति, मुच्चितुकामा व ते निरया । मरणस्सेव सो, महाराज, आनुभावो येन तेसं सन्तासो उप्पज्जती" ति । "एतं खो, भन्ते नागसेन, न सद्दहामि यं मुच्चितुकामानं चुतिया सन्तासो उपज्जती

ति। हासनीयं, भन्ते नागसेन, तं ठानं, यं ते पत्थितं लभन्ति। कारणेन मं सञ्ञापेही" ति ?

"मरणं ति खो, महाराज, एतं अदिट्ठसच्चानं तासनीयट्ठानं। एत्थायं जनो तसति च उब्बिज्जति च। यो च, महाराज, कण्हसप्पस्स भायति सो मरणस्स भायन्तो कण्हसप्पस्स भायति, यो च हत्थिस्स भायति…पे०…सीहस्स, ब्यग्घस्स, दीपिस्स, अच्छस्स, तरच्छस्स, महिसस्स, गवयस्स, अग्गिस्स, उदकस्स, खाणुकस्स, कण्टकस्स भायति, यो च सत्तिया भायति, सो मरणस्स भायन्तो सत्तिया भायति। मरणस्सेसो, महाराज, सरसभावतेजो। तस्स सरसभावतेजेन सकिलेसा सत्ता मरणस्स तसन्ति भायन्ति। मुच्चितुकामा पि, महाराज, नेरयिका सत्ता मरणस्स तसन्ति भायन्ति।

"इध, महाराज, पुरिसस्स काये मेदोगण्ठि उप्पज्जेय्य, सो तेन रोगेन दुक्खितो उपद्दवा परिमुच्चितुकामो भिसक्कं सल्लकत्तं आमन्तापेय्य, तस्स वचनं सो भिसक्को सल्लकत्तो सम्पटिच्छित्वा तस्स रोगस्स उद्धरणाय उपकरणं उपट्ठापेय्य—सत्थकं तिखिणं करेय्य, यमकसलाकं अग्गिम्हि पक्खिपेय्य, खारलवणं निसदाय पिंसापेय्य। अपि नु खो, महाराज, तस्स आतुरस्स तिखिणसत्थकच्छेदनेन यमकसलाकादहनेन खारलोणप्पवेसनेन तासो उप्पज्जेय्या"ति ? "आम भन्ते"ति। "इति, महाराज, तस्स आतुरस्स रोगा मुच्चितुकामस्सा पि वेदनाभया सन्तासो उपज्जति; एवमेव खो, महाराज, निरया मुच्चितुकामानं पि नेरयिकानां सत्तानं मरणभया सन्तासो उप्पज्जति।

"इध, महाराज, पुरिसो इस्सरापराधिको बद्धो संखलिकबन्धनेन गब्भे पक्खित्तो परिमुच्चितुकामो अस्स, तमेनं सो इस्सरो मोचेतुकामो पक्कोसापेय्य। अपि नु खो, महाराज, इस्सरापराधिकस्स पुरिसस्स 'कतदोसो अहं' ति जानन्तस्स इस्सरदस्सनेन सन्तासो उप्पज्जेय्या" ति ? "आम भन्ते" ति। "इति महाराज, तस्स इस्सरापराधिकस्स पुरिसस्स परिमुच्चितुकामस्सा पि इस्सरभया सन्तासो उप्पज्जति; एवमेव खो, महाराज, निरया मुच्चितुकामानं पि नेरयिकानं सत्तानं मरणभया सन्तासो उप्पज्जती" ति।

११. "अपरं पि, भन्ते, उत्तरिं कारणं ब्रूहि येन हि कारणेन ओकप्पेय्यं"ति ?

"इध, महाराज, पुरिसो दट्ठविसेन आसीविसेन दट्ठो भवेय्य, सो तेन विसविकारेन पतेय्य उप्पतेय्य, वट्टेय्य पवट्टेय्य, अथञ्ञतरो पुरिसो बलवन्तेन मन्तपदेन तं दट्ठविसं आसीविसं आनेत्वा तं दट्ठविसं पच्चाचमापेय्य; अपि नु खो, महाराज, तस्स विसगतस्स पुरिसस्स तस्मिं दट्ठविसे सप्पे सोत्थिहेतु उपगच्छन्ते सन्तासो उप्पज्जेया" ति ? "आम भन्ते" ति। "इति, महाराज, तथारूपे अहिम्हि सोत्थिहेतु पि उपगच्छन्ते तस्स सन्तासो उप्पज्जति; एवमेव खो, महाराज,

निरया मुच्चितुकामानं पि नेरयिकानं सत्तानं मरणभया सन्तासो उप्पज्जति। अनिट्ठं, महाराज सब्बसत्तानं मरणं, तस्मा नेरयिका सत्ता निरया परिमुच्चितुकामा पि मच्चुनो भायन्ती''ति।

''साधु भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी'' ति।

४. मच्चुपासमुत्तिपञ्हो

१२. ''भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे, न पब्बतानं विवरं पविस्स।
न विज्जती सो जगतिप्पदेसो यत्थ ठ्ठितो मुच्चेय्य मच्चुपासा' ति॥

पुन भगवता परित्ता च उद्दिट्ठा। सेय्यथीदं—रतनसुत्तं, मेत्तसुत्तं, खन्धपरित्तं, मोरपरित्तं, धजग्ग-परित्तं, आटानाटियपरित्तं, अंगुलिमालपरित्तं। यदि, भन्ते नागसेन, आकासगतो पि समुद्दमज्झगतो पि पासादकुटिलेणगुहापब्भारदरिबिलविवरपब्बतन्तरगतो पि न मुच्चति मच्चुपासा, तेन हि परित्तकम्मं मिच्छा। यदि परित्तकरणेन मच्चुपासा परिमुत्ति भवति, तेन हि—'न अन्तलिक्खे ...पे०... मच्चुपासा' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो गण्ठितो पि गण्ठितरो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो'' ति?

१३ ''भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'न अन्तलिक्खे .. पे० .. मच्चुपासा'ति। परित्ता च भगवता उद्दिट्ठा ति। तं च पन सावसेसायुकस्स वयसम्पन्नस्स अपेतकम्मावरणस्स; नत्थि, महाराज, खीणायुकस्स ठितिया किरिया वा उपक्कमो वा।

''यथा, महाराज, मतस्स रुक्खस्स सुक्खस्स कोळापस्स निस्नेहस्स उपरुद्धजीवितस्स गतायुसंखारस्स कुम्भसहस्सेन पि उदके आकिरन्ते अल्लत्तं वा पल्लवितहरितभावो वा न भवेय्य; एवमेव खो, महाराज, भेसज्जपरित्तकम्मेन नत्थि खीणायुकस्स ठितिया किरिया वा उपक्कमो वा। यानि तानि, महाराज, महिया ओसधानि भेसज्जानि, तानि पि खीणायुकस्स अकिच्चकरानि भवन्ति। सावसेसायुकं, महाराज, वयसम्पन्नं अपेतकम्मावरणं परित्तं रक्खति, गोपेति। तस्सत्थाय भगवता परित्ता उद्दिट्ठा।

''यथा, महाराज, कस्सको परिपक्के धञ्ञे मते सस्सनाले उदकप्पवेसनं वारेय्य, यं पन सस्सं तरुणं मेघसन्निभं वयसम्पन्नं तं उदकवड्डिया वड्डति; एवमेव खो, महाराज, खीणायुकस्स भेसज्जपरित्तकिरिया ठपिता पटिक्खित्ता। ये पन ते मनुस्सा सावसेसायुका वयसम्पन्ना तेसं अत्थाय परित्तभेसज्जानि भणितानि, ते परित्तभेसज्जेहि वड्ढन्ती'' ति।

''यदि, भन्ते नागसेन, खीणायुको मरति सावसेसायुको जीवति, तेन हि परित्तभेसज्जानि निरत्थकानि होन्ती'' ति? ''दिट्ठपुब्बो पन तया, महाराज, कोचि रोगो

भेसज्जेहि पटिनिवत्तितो"ति ? "आम, महाराज, अनेकसतानि दिट्ठानी"ति। "तेन हि, महाराज, 'परित्तभेसज्जकिरिया निरत्थिका'ति यं वचनं तं मिच्छा भवती"ति ?

"दिस्सन्ति, भन्ते नागसेन, वेज्जानं उपक्कमे भेसज्जपानानुलेपा, तेन तेसं उपक्कमेन रोगा पतिनिवत्तन्ती" ति। "परित्तानं पि, महाराज, पवत्तियमानानं सद्दो सूयति, जिव्हा सुक्खति, हदयं व्यावट्टति, कण्ठो आतुरति। तेन तेसं पवत्तेन सब्बा व्याधयो वूपसमन्ति, सब्बा ईतियो अपगच्छन्ती' ति।

"दिट्ठपुब्बो पन तया, महाराज, कोचि अहिना दट्ठो मन्तपदेन विसं पातियमानो विसं चिक्खस्सन्तो उद्धमधो आचमयमानो" ति ? "आम, भन्ते, अज्जेतरहि पि तं लोके वत्तती" ति। "तेन हि, महाराज, परित्तभेसज्जकिरिया निरत्थिका' ति यं वचनं तं मिच्छा भवति। कतपरित्तं हि, महाराज, पुरिसं डसितुकामो अहि न डसति, विवटं मुखं पिदहति चोरानं उक्खित्तलगुळं पि न सम्भवति, ते लगुळं मुञ्चित्वा पेमं करोन्ति कुपितो पि हत्थिनागो समागन्त्वा उपरमति, पज्जलितमहाअग्गिक्खन्धो पि उपगन्त्वा निब्बायति, विसं हलाहलं पि खायितं अगदं सम्पज्जति, आहारत्थं वा फरति, वधका हन्तुकामा उपगन्त्वा दासभूता सम्पज्जन्ति, अक्कन्तो पि पासो न संवरति।

"सुतपुब्बं पन तया, महाराज, मोरस्स कतपरित्तस्स सत्तवस्ससतानि लुद्दको नासक्खि पासं उपनेतुं, अकतपरित्तस्स तं येव दिवसं पासं उपनेसी" ति ? "आम भन्ते, सूयति। अब्भुग्गतो सो सद्दो सदेवके लोके" ति। "तेन हि, महाराज, 'परित्तभेसज्जकिरिया निरत्थिका' ति यं वचनं तं मिच्छा भवति।

१४. "सुतपुब्बं पन तया, महाराज, दानवो भरियं परिरक्खन्तो समुग्गे पक्खिपित्वा गिलित्वा कुच्छिना परिहरति, अथेको विज्जाधरो तस्स दानवस्स मुखेन पविसित्वा ताय सद्धिं अभिरमति, यदा सो दानवो अञ्ञासि, अथ समुग्गं वमित्वा विवरि, सह समुग्गे विवटे विज्जाधरो येन कामं पक्कामी' ति ? "आम भन्ते, सूयति। अब्भुग्गतो सो पि सद्दो सदेवके लोके" ति। "ननु खो, महाराज, विज्जाधरो परित्तबलेन गहणा मुत्तो" ति ? "आम, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, अत्थि परित्तबलं।

"सुतपुब्बं तया, महाराज, अपरो विज्जाधरो बाराणसिरञ्ञो अन्तेपुरे महेसिया सद्धिं सम्पदुट्ठो गहणपत्तो समानो खणेन अदस्सनं गतो मन्तबलेना" ति ? "आम भन्ते, सूयती" ति। 'ननु सो, महाराज, विज्जाधरो परित्तबलेन गहणा मुत्तो" ति ? "आम, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, अत्थि परित्तबलं" ति।

१५. "भन्ते नागसेन, किं सब्बे येव परित्तं रक्खती" ति ? "एकच्चे, महाराज, रक्खति, एकच्चे न रक्खती" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, परित्तं न सब्बत्थिकं" ति ? "अपि नु खो, महाराज, भोजनं जीवितं रक्खती" ति ? एकच्चे, भन्ते,

रक्खति, एकच्चे न रक्खती" ति। "किंकारणा' ति? "यतो, भन्ते, एकच्चे तं येव भोजनं अतिभुञ्जित्वा विसूचिकाय मरन्ती" ति। "तेन हि, महाराज, भोजनं सब्बेसं जीवितं न रक्खती" ति। "द्वीहि, भन्ते नागसेन, कारणेहि भोजनं जीवितं हरति– अतिभुत्तेन वा उस्माादुब्बलताय वा। आयुददं, भन्ते नागसेन, भोजनं दुरुपचारेन जीवितं हरती" ति। "एवमेव खो, महाराज, परित्तं एकच्चे रक्खति, एकच्चे न रक्खति।

"तीहि, महाराज, कारणेहि परित्तं न रक्खति– कम्मावरणेन, किलेसावरणेन, असद्दहनताय। सत्तानुरक्खणं, महाराज, परित्तं अत्तना कतेन आरक्खं जहति। यथा, महाराज, माता पुत्तं कुच्छिगतं पोसेति, हितेन उपचारेन जनेति, जनयित्वा असुचिमलसिंघाणिकमपनेत्वा उत्तमवरसुगन्धं उपलिम्पति; सो अपरेन समयेन परेसं पुत्ते अक्कोसन्ते वा पहरन्ते वा पहारं देति, ते तस्स कुज्झित्वा परिसाय आकड्ढित्वा तं गहेत्वा सामिनो उपनेन्ति, यदि पन तस्सा पुत्तो अपरद्धो होति वेलातिवत्तो। अथ नं सामिनो मनुस्सा आकड्ढयमाना दण्डमुग्गरजाणुमुट्ठीहि ताळेन्ति पोथेन्ति, अपि नु खो, महाराज, तस्स माता लभति आकड्ढन परिकड्ढनं गाहं सामिनो उपनयनं कातुं"ति? "न हि, भन्ते"ति! "केन कारणेन, महाराजा" ति? "अत्तनो भन्ते अपराधेना"ति। "एवमेव खो, महाराज, सत्तानं आरक्खं परित्तं अत्तनो अपराधेन वञ्झं करोती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, सुविनिच्छितो पञ्हो। गहनं अगहनं कतं, अन्धकारो आलोको कतो, विनिवेठितं दिट्ठिजालं, त्वं गणिवरपवरमासज्जा" ति।

५. बुद्धलाभन्तरायपञ्हो

१६. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ– 'लाभी तथागतो चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं'ति। पुन च—'तथागतो पञ्चसालं ब्राह्मणगामं पिण्डाय पविसित्वा किञ्चिदेव अलभित्वा यथाधोतेन पत्तेन निक्खन्तो' ति। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो लाभी चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारानं, तेन हि—'पञ्चसालं ब्राह्मणगामं पिण्डाय पविसित्वा किञ्चिदेव अलभित्वा यथाधोतेन पत्तेन निक्खन्तो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि पञ्चसालं ब्राह्मणगामं पिण्डाय पविसित्वा किञ्चिदेव अलभित्वा यथाधोतेन पत्तेन निक्खन्तो, तेन हि—'लाभी तथागतो चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारानं' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो सुमहन्तो दुन्निब्बेधो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

"लाभी, महाराज, तथागतो चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। पञ्चसालं च ब्राह्मणगामं पिण्डाय पविसित्वा किञ्चिदेव अलभित्वा यथाधोतेन पत्तेन निक्खन्तो। तं च पन मारस्स पापिमतो कारणा" ति। "तेन

हि, भन्ते नागसेन, भगवतो गणनपथं वीतिवत्तकप्पे अभिसङ्खितं कुसलं किं ति निट्ठितं ? अधुनुट्ठितेन मारेन पापिमता तस्स कुसलस्स वेगविप्फारं किं ति पिहितं ? तेन हि, भन्ते नागसेन, तस्मिं वत्थुस्मिं द्वीसु ठानेसु उपवादो आगच्छति - कुसलतो पि अकुसलं बलवतरं होति, बुद्धबलतो पि मारबलं बलवतरं होती ति। तेन हि रुक्खस्स मूलतो पि अग्गं भारतरं होति, गुणसम्परिकिण्णतो पि पापियं बलवतरं होतौ" ति ?

"न महाराज, तावतकेन कुसलतो पि अकुसलं बलवतरं नाम होति, बुद्धबलतो च मारबलं वलवतरं नाम होति। अपि चेत्थ कारणं इच्छितब्बं।

"यथा, महाराज, पुरिसो रञ्ञो चक्कवत्तिस्स मधुं वा मधुपिण्डिकं वा अञ्ञं वा उपायनं अभिहरेय्य, तमेनं रञ्ञो द्वारपालो एवं वदेय्य—'अकालो, भो, अयं रञ्ञो दस्सनाय, तेन हि, भो, तव उपायनं गहेत्वा सीघसीघं पटिनिवत्त, पुरे तव राजा दण्डं धारेस्सती' ति। ततो सो पुरिसो दण्डभया तसितो उब्बिग्गो तं उपायनं आदाय सीघसीघं पटिनिवत्तेय्य। अपि नु खो सो, महाराज, चक्कवत्ती तावतकेन उपायनविकलमत्तकेन द्वारपालतो दुब्बलतरो होति, अञ्ञं वा पन किंचि उपायनं न लभेय्या" ति ? "न हि, भन्ते। इस्सापकतो सो, भन्ते, द्वारपालो उपायनं निवारेसि। अञ्ञेन पन द्वारेन सतसहस्सगुणं पि रञ्ञो उपायनं उपेती" ति। "एवमेव खो, महाराज, इस्सापकतो मारो पापिमा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि, अञ्ञानि पन अनेकानि देवतासतसहस्सानि अमतं दिब्बं ओजं गहेत्वा उपगतानि—'भगवतो काये ओजं ओदहिस्सामा' ति भगवन्तं नमस्समाना पञ्जलिका ठितानी' ति।

१७. "होतु, भन्ते नागसेन, कुसला भगवतो चत्तारो पच्चया लोके उत्तमपुरिसस्स, याचितो व भगवा देवमनुस्सेहि चत्तारो पच्चये परिभुञ्जति। अपि च खो पन मारस्स यो अधिप्पायो सो तावतकेन सिद्धो, यं सो भगवतो भोजनस्स अन्तरायमकासि। एत्थ मे, भन्ते, कङ्खा न छिज्जति, विमतिजातोहं तत्थ संसयपक्खन्दो, न मे तत्थ मानसं पक्खन्दति, यं तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स सदेवके लोके अग्गपुग्गलवरस्स कुसलवरपुञ्ञसम्भवस्स असमसमस्स अनुपमस्स अप्पटिसमस्स छवकं लामकं परित्तं पापमनरियं विपन्नं मारो लाभन्तरायमकासी"ति।

"चत्तारो खो, महाराज, अन्तराया—अदिट्ठन्तरायो, उद्दिस्सकतन्तरायो, उपक्खटन्तरायो, परिभोगन्तरायो ति।

"तत्थ कतमो अदिट्ठन्तरायो ? अनोदिस्स अदस्सनेन अभिसंखतं कोचि अन्तरायं करोति— किं परस्स दिन्नेना' ति, अयं अदिट्ठन्तरायो नाम।

"कतमो उद्दिस्सकतन्तरायो ? इधेकच्चपुग्गलं उपदिसित्वा उद्दिस्स भोजनं पटियत्तं होति, तं कोचि अन्तरायं करोति, अयं उद्दिस्सकतन्तरायो नाम।

"कतमो उपक्खटन्तरायो ? इध यं किञ्चि उपक्खटं होति अप्पटिग्गहीतं, तत्थ कोचि अन्तरायं करोति, अयं उपक्खटन्तरायो नाम।

"कतमो परिभोगन्तरायो ? इध यं किञ्चि परिभोगं तत्थ कोचि अन्तरायं करोति, अयं परिभोगन्तरायो नाम। इमे खो, महाराज, चत्तारो अन्तराया।

"यं पन मारो पापिमा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि, तं पन भगवतो परिभोगं उपक्खटं न उद्दिस्सकतं, अनागतं असम्पत्तं अदस्सनेन अन्तरायं कतं। तं पन नेकस्स भगवतो येव, अथ खो ये तेन समयेन निक्खन्ता अब्भागता सब्बे पि ते तं दिवसं भोजनं न लभिंसु। नाहं तं, महाराज, पस्सामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय, यो तस्स भगवतो उद्दिस्सकतं उपक्खटं परिभोगं अन्तरायं करेय्य। सचे कोचि इस्साय उद्दिस्स कतं उपक्खटं परिभोगं अन्तरायं करेय्य, फलेय्य तस्स मुद्धा सतधा वा, सहस्सधा वा।

१८. "चत्तारोमे, महाराज, तथागतस्स केनचि अनावरणीया गुणा। कतमे चत्तारो ? **लाभो**, महाराज, भगवतो उद्दिस्सकतो उपक्खटो न सक्का केनचि अन्तरायं कातुं। सरीरानुगता, महाराज, भगवतो **ब्यामप्पभा** न सक्का केनचि अन्तरायं कातुं। **सब्बञ्ञुतं**, महाराज, भगवतो ञाणरतनं न सक्का केनचि अन्तरायं कातुं। **जीवितं**, महाराज, भगवतो न सक्का केनचि अन्तरायं कातुं। इमे खो, महाराज, चत्तारो तथागतस्स केनचि अनावरणीया गुणा। सब्बे पेते, महाराज, गुणा एकरसा अरोगा अकुप्पा अपरूपक्कमा, अफुसानि किरियानि। अदस्सनेन, महाराज, मारो पापिमा निलीयित्वा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि।

"यथा, महाराज, रञ्ञो पच्चन्ते देसे विसमे अदस्सनेन निलीयित्वा चोरा पन्थं दूसेन्ति, यदि पन राजा ते चोरे पस्सेय्य, अपि नु खो ते चोरा सोत्थिं लभेय्युं" ति ? "न हि, भन्ते। फरसुना फालापेय्य सतधा वा सहस्सधा वा" ति। "एवमेव खो, महाराज, अदस्सनेन मारो पापिमा निलीयित्वा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि।

"यथा वा पन, महाराज, इत्थी सपतिका अदस्सनेन निलीयित्वा परपुरिसं सेवति; एवमेव खो, महाराज, अदस्सनेन मारो पापिमा निलीयित्वा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि। यदि, महाराज, इत्थी सामिकस्स सम्मुखा परपुरिसं सेवति, अपि नु खो सा इत्थी सोत्थिं लभेय्या" ति ? "न हि, भन्ते। हनेय्या पि तं, भन्ते, सामिको वधेय्यापि, बन्धेय्यापि, दासित्तं वा उपनेय्या" ति।

"एवमेव खो, महाराज, अदस्सनेन मारो पापिमा निलीयित्वा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि। यदि, महाराज, मारो भगवतो उद्दिस्सकते उपक्खटं परिभोगं अन्तरायं करेय्य, फलेय्य तस्स मुद्धा सतधा वा, सहस्सधा वा" ति।

"एवमेतं, भन्ते नागसेन, चोरिकाय कतं मारेन पापिमता। निलीयित्वा मारो पापिमा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि। सचे सो, भन्ते, मारो पापिमा भगवतो उद्दिस्सकतं परिभोगं अन्तरायं करेय्य, मुद्धा वास्स फलेय्य सतधा वा सहस्सधा वा, कायो वास्स भुसमुट्ठि विय विकिरेय्य। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

६. अपुञ्ञपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ–"यो अजानन्तो पाणातिपातं करोति सो बलवतरं अपुञ्ञं पसवती' ति। पुन च भगवता विनयपञ्ञत्तिया भणितं—'अनापत्ति अजानन्तस्सा' ति। यदि, भन्ते नागसेन, अजानित्वा पाणातिपातं करोन्तो बलवतरं अपुञ्ञं पसवति, तेन हि—'अनापत्ति अजानन्तस्सा' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि अनापत्ति अजानन्तस्स, तेन हि—'अजानित्वा पाणातिपातं करोन्तो बलवतरं अपुञ्ञं पसवती' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो दुरुत्तरो दुरतिक्कमो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'यो अजानन्तो पाणातिपातं करोति सो बलवतरं अपुञ्ञं पसवती' ति। पुन च विनयपञ्ञत्तिया पि भगवता भणितं–'अनापत्ति अजानन्तस्सा' ति। तत्थ अत्थन्तरं अत्थि। कतमं अत्थन्तरं? अत्थि, महाराज, आपत्ति सञ्ञाविमोक्खा, अत्थि आपत्ति नो सञ्ञाविमोक्खा। यायं, महाराज, आपत्ति सञ्ञाविमोक्खा, तं आपत्तिं आरब्भ भगवता भणितं–'अनापत्ति अजानन्तस्सा" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

७. भिक्खुसङ्घपरिहरणपञ्हो

२०. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता–'तथागतस्स खो, आनन्द, न एवं होति—अहं भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सामी ति वा, ममुद्देसिको भिक्खुसङ्घो ति वा' ति। पुन च मेत्तेयस्स भगवतो सभावगुणं परिदीपयमानेन भगवता एवं भणितं—'सो अनेकसहस्सं भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सति, सेय्यथापि अहं एतरहि अनेकसतं भिक्खुसङ्घं परिहरामी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं–'तथागतस्स खो, आनन्द, न एवं होति–अहं भिक्खुसङ्घं परिहरामी ति वा ममुद्देसिको

भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सामी' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'सेय्यथापि अहं एतरहि अनेकसतं भिक्खुसङ्घं परिहरामी' ति, तेन हि—'तथागतस्स खो, आनन्द, न एवं होति—अहं भिक्खुसंघं परिहरामी ति वा, ममुद्देसिको भिक्खुसङ्घो' ति वा ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२१. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'तथागतस्स खो, आनन्द, न एवं होति—अहं भिक्खुसङ्घं परिहरामी ति वा, ममुद्देसिको भिक्खुसङ्घो ति वा' ति। मेत्तेय्यस्सापि भगवतो सभावगुणं परिदीपयमानेन भगवता भणितं—'सो अनेकसहस्सं भिक्खुसंघं परिहरिस्सति सेय्यथापि अहं एतरहि अनेकसतं भिक्खुसङ्घं परिहरामी'। ति एतस्मिं च, महाराज, पञ्हे एको अत्थो सावसेसो, एको अत्थो निरवसेसो। न, महाराज, तथागतो परिसाय अनुगामिको। परिसा पन तथागतस्स अनुगामिका। सम्मुति, महाराज, एसा—'अहं' ति 'ममा' ति। न परमत्थो एसो। विगतं, महाराज, तथागतस्स पेमं, विगतो सिनेहो, 'मय्हं' ति पि तथागतस्स गहणं नत्थि, उपादाय पन अवस्सयो होति।

"यथा, महाराज, पथवी भुम्मट्ठानं सत्तानं पतिट्ठा होति उपस्सयं होति, पथविट्ठा चेते सत्ता। न च महापथविया—'मय्हेते' ति अपेक्खा होति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो सब्बसत्तानं पतिट्ठा होति उपस्सयं, तथागतट्ठा चेते सत्ता, न च तथागतस्स 'मय्हेते' ति अपेक्खा होति। यथा वा पन, महाराज, महतिमहामेघो अभिवस्सन्तो तिणरुक्खपसुमनुस्सानं वुड्ढिं देति सन्ततिमनुपालेति, वुट्ठूपजीविनो चेते सत्ता सब्बे, न च महामेघस्स 'मय्हेते' ति अपेक्खा होति। एवमेव खो, महाराज, तथागतो सब्बसत्तानं कुसलधम्मे जनेति, अनुपालेति, सत्थूपजीविनो चेते सत्ता सब्बे, न च तथागतस्स 'मय्हेते' ति अपेक्खा होति। तं किस्स हेतु ? अत्तानुदिट्ठिया पहीनत्ता" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, सुनिब्बेठितो पञ्हो बहुविधेहि कारणेहि। गम्भीरो उत्तानीकतो, गण्ठि भिन्नो, गहनं अगहनं कतं, अन्धकारो आलोको कतो, भग्गा परवादा, जिनपुत्तानं चक्खुं उप्पादितं" ति।

८. अभेज्जपरिसपञ्हो

२२. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'तथागतो अभेज्जपरिसो' ति। पुन च भणथ—'देवदत्तेन एकप्पहारं पञ्च भिक्खुसतानि भिन्नानी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो अभेज्जपरिसो, तेन हि—'देवदत्तेन एकप्पहारं पञ्च

भिक्खुसतानि भिन्नानी' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि देवदत्तेन एकप्पहारं पञ्च भिक्खुसतानि भिन्नानि, तेन हि—'तथागतो अभेज्जपरिसो' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, गम्भीरो दुन्निवेठियो, गण्ठितो पि गण्ठितरो, एत्थायं जनो आवटो निवुतो ओवुतो पिहितो परियोनद्धो, एत्थ तव ञाणबलं दस्सेहि परवादेसू" ति ?

२३. "अभेज्जपरिसो, महाराज, तथागतो। देवदत्तेन च एकप्पहारं पञ्चभिक्खुसतानि भिन्नानि। तं च पन भेदकस्स बलेन, भेदके विज्जमाने नत्थि, महाराज, अभेज्जं नाम। भेदके सति माता पि पुत्तेन भिज्जति, पुत्तो पि मातरा भिज्जति, पिता पि पुत्तेन भिज्जति, पुत्तो पि पितरा भिज्जति, भाता पि भगिनिया भिज्जति, भगिनी पि भातरा भिज्जति, सहायो पि सहायेन भिज्जति, नावा पि नानादारुसङ्घटिता ऊमिवेगसम्पहारेन भिज्जति, रुक्खो पि मधुकप्पसम्पन्नफलो अनिलबलवेगाहतो भिज्जति, सुवण्णं पि जातिमन्तं लोहेन भिज्जति। अपि च, महाराज, नेसो अधिप्पायो विञ्ञूनं, नेसा बुद्धानं अधिमुत्ति, नेसो पण्डितानं छन्दो—'तथागतो भेज्जपरिसो' ति। अपि चेत्थ कारणं अत्थि, येन कारणेन तथागतो वुच्चति—'अभेज्जपरिसो' ति। कतमं एत्थ कारणं ? 'तथागतस्स, महाराज, कतेन आदानेन वा अप्पियवचनेन वा अनत्थचरियाय वा असमानत्तताय वा यतो कुतोचि चरियं चरन्तस्स पि परिसा भिन्ना' ति न सुतपुब्बं, तेन कारणेन तथागतो वुच्चति—'अभेज्जपरिसो' ति। तया पेतं, महाराज, ञातब्बं—'अत्थि किञ्चि नवङ्गे बुद्धवचने सुत्तागतं—इमिना नाम कारणेन बोधिसत्तस्स कतेन तथागतस्स परिसा भिन्ना" ति!

"नत्थि भन्ते। नो चेतं लोके दिस्सति, नो पि सूयति। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

(इमस्मिं वग्गे अट्ठ पञ्हा) **दुतियो अभेज्जवग्गो निट्ठितो।**

३. पणामितवग्गो

१. सेट्ठधम्मपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'धम्मो हि, वासेट्ठ, सेट्ठो जनेतस्मिं दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्पराये चा' ति। पुन च उपासको गिही सोतापन्नो पिहितापायो दिट्ठिप्पत्तो विञ्ञातसासनो भिक्खुं वा सामणेरं वा पुथुज्जनं अभिवादेति पच्चुट्ठेति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'धम्मो हि, वासेट्ठ, सेट्ठो जनेतस्मिं दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्पराये चा' ति, तेन हि—'उपासको गिही सोतापन्नो पिहितापायो दिट्ठिप्पत्तो विञ्ञातसासनो भिक्खुं वा सामणेरं

वा पुथुज्जनं अभिवादेति पच्चुट्ठेती' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि उपासको गिही सोतापन्नो पिहितापायो दिट्ठिप्पत्तो विञ्ञातसासनो भिक्खुं वा सामणेरं वा पुथुज्जनं अभिवादेति पच्चुट्ठेति, तेन हि—'धम्मो हि, वासेट्ठ, सेट्ठो जनेतस्मिं दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्पराये चा' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'धम्मो हि, वासेट्ठ, सेट्ठो जनेतस्मिं दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्परायिके चा' ति। उपासको च गिही सोतापन्नो पिहितापायो दिट्ठिप्पत्तो विञ्ञातसासनो भिक्खुं वा सामणेरं वा पुथुज्जनं अभिवादेति पच्चुट्ठेति। तत्थ पन कारणं अत्थि, कतमं तं कारणं ?

"वीसति खो पनिमे, महाराज, समणस्स समणकरणा धम्मा, द्वे च लिङ्गानि; येहि समणो अभिवादनपच्चुट्ठानसम्माननपूजनारहो होति। कतमे वीसति समणस्स समणकरणा धम्मा, द्वे च लिङ्गानि ? सेट्ठो यमो, अग्गो नियमो, चारो, विहारो, संयमो, संवरो, खन्ति, सोरच्चं, एकत्तचरिया, एकत्ताभिरति, पटिसल्लानं, हिरिओत्तप्पं, विरियं, अप्पमादो, सिक्खासमादानं, उद्देसो, परिपुच्छा, सीलादि-अभिरति, निरालयता, सिक्खापदपारिपूरिता, कासावधारणं, भण्डुभावो—इमे खो, महाराज, वीसति समणस्स समणकरणा धम्मा, द्वे च लिङ्गानि। एते गुणे भिक्खु समादाय वत्तति। सो तेसं धम्मानं अनूनत्ता परिपुण्णत्ता सम्पन्नत्ता समन्नागतत्ता असेखभूमिं अरहन्तभूमिं ओक्कमति, सेट्ठं भुम्मन्तरं ओक्कमति, अरहत्तासन्नगतो ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"खीणासवेहि सो सामञ्ञं उपगतो, 'नत्थि मे सो समयो' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"अग्गपरिसं सो उपगतो, 'नाहं तं ठानं उपगतो' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"लभति सो पातिमोक्खुद्देसं सोतुं, 'नाहं तं लभामि सोतुं' ति अरहति उपासको भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"सो अञ्ञे पब्बाजेति, उपसम्पादेति, जिनसासनं वड्ढेति, 'अहमेतं न लभामि कातुं' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"अप्पमाणेसु सो सिक्खापदेसु समत्तकारी, 'नाहं तेसु वत्तामी' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं। 'उपगतो सो समणलिङ्गं, बुद्धाधिप्पाये ठितो, तेनाहं लिङ्गेन दूरमपगतो' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"परूळ्हकच्छलोमो सो अनञ्जित-अमण्डितो, अनुलित्तसीलगन्धो, 'अहं पन मण्डनविभूसनाभिरतो' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"अपि च, महाराज, ये ते वीसति समणकरणा धम्मा द्वे च लिङ्गानि, सब्बेव ते धम्मा भिक्खुस्स संविज्जन्ति, सो येव ते सब्बे धारेति, अञ्ञे पि तत्थ सिक्खापेति, 'सो मे आगमो सिक्खापनं च नत्थी' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"अपि च यथा, महाराज, राजकुमारो पुरोहितस्स सन्तिके विज्जं अधीयति, खत्तियधम्मं सिक्खति, सो अपरेन समयेन अभिसित्तो आचरियं अभिवादेति पच्चुट्ठेति—'सिक्खापको मे अयं' ति; एवमेव खो, महाराज, 'सिक्खापको वंसधरो' ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं।

"अपि च, महाराज, इमिना पेतं परियायेन जानाहि भिक्खुभूमिया महन्ततं असमविपुलभावं—यदि, महाराज, उपासको सोतापन्नो अरहत्तं सच्छिकरोति, द्वे व तस्स गतियो भवन्ति, अनञ्ञातस्मिं येव दिवसे परिनिब्बायेय्य वा, भिक्खुभावं वा उपगच्छेय्य। अचला हि सा, महाराज, पब्बज्जा महती अच्चुग्गता, यदिदं भिक्खुभूमी" ति। "ञाणगतो, भन्ते नागसेन, पञ्हो सुनिब्बेठितो बलवता अतिबुद्धिना तया, न यिमं पञ्हं समत्थो अञ्ञो एवं विनिवेठेतुं अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता" ति।

२. सब्बसत्तहितफरणपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'तथागतो सब्बसत्तानं अहितमपनेत्वा हितमुपदहती' ति। पुन च भणथ—'अग्गिक्खन्धूपमे धम्मपरियाये भञ्ञमाने सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं उण्हलोहितं मुखतो उग्गतं' ति। अग्गिक्खन्धूपमं, भन्ते, धम्मपरियायं देसेन्तेन तथागतेन सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं हितमपनेत्वा अहितमुपदहितं। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो सब्बसत्तानं अहितमपनेत्वा हितमुपदहति, तेन हि—'अग्गिक्खन्धूपमे धम्मपरियाये भञ्ञमाने सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं उण्हलोहितं मुखतो उग्गतं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि अग्गिक्खन्धूपमे धम्मपरियाये भञ्ञमाने सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं उण्णलोहितं मुखतो उग्गतं, तेन हि—'तथागतो सब्बसत्तानं अहितमपनेत्वा हितमुपदहती' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

४. "तथागतो, महाराज, सब्बसत्तानं अहितमपनेत्वा हितमुपदहति। अग्गिक्खन्धूपमे च धम्मपरियाये भञ्ञमाने सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं उण्हलोहितं मुखतो उग्गतं। तं च पन न तथागतस्स कतेन, तेसं येव अत्तनो कतेना" ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो अग्गिक्खन्धूपमं धम्मपरियायं न भासेय्य, अपि नु तेसं उण्णलोहितं मुखतो उग्गच्छेय्या' ति ? "नहि, महाराज । मिच्छापटिपन्नानं तेसं भगवतो धम्मपरियायं सुत्वा परिळाहो काये उप्पज्जि, तेन हि तेसं परिळाहेन उण्णलोहितं मुखतो उग्गतं" ति । "तेन हि, भन्ते, नागसेन, तथागतस्सेव कतेन तेसं उण्णलोहितं मुखतो उग्गतं, तथागतो येव तत्थ अधिकारो तेसं नासनाय । यथा नाम, भन्ते नागसेन, अहि वम्मीकं पविसेय्य; अथञ्तरो पंसुकामो पुरिसो वम्मीकं भिन्दित्वा पंसुं हरेय्य, तस्स पंसुहरणेन वम्मीकस्स सुसिरं पिदहेय्य, अथ तत्थेव सो अस्सासं अलभमानो मरेय्य, ननु सो, भन्ते, अहि तस्स पुरिसस्स कतेन मरणप्पत्तो" ति ? "आम, महाराजा" ति । "एवमेव खो, भन्ते, नागसेन, तथागतो येव तत्थ अधिकारो तेसं नासनाया" ति ?

५. "तथागतो, महाराज, धम्मं देसयमानो अनुनयप्पटिघं न करोति, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो धम्मं देसेति, एवं धम्मे देसियमाने ये तत्थ सम्मापटिपन्ना ते बुज्झन्ति, ये पन मिच्छापटिपन्ना ते पतन्ति । यथा, महाराज, पुरिसस्स अम्बं वा जम्बुं वा चालयमानस्स यानि तत्थ फलानि सारानि दळ्हबन्धनानि तानि तत्थेव अच्चुतानि तिट्ठन्ति, यानि पन तत्थ फलानि पूतिवण्टमूलानि दुब्बलबन्धनानि तानि पतन्ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो धम्मं देसयमानो अनुनयप्पटिघं न करोति, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो धम्मं देसेति, एवं धम्मे देसियमाने ये तत्थ सम्मापटिपन्ना ते बुज्झन्ति, ये पन मिच्छापटिपन्ना ते पतन्ति ।

"यथा वा पन, महाराज, कस्सको धञ्ञं रोपेतुकामो खेत्तं कसति । तस्स कसन्तस्स अनेकसतसहस्सानि तिणानि मरन्ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो परिपक्कमानसे सत्ते बोधेन्तो अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो धम्मं देसेति । एवं धम्मे देसियमाने ये तत्थ सम्मापटिपन्ना ते बुज्झन्ति, ये पन मिच्छापटिपन्ना ते पन तिणानि विय मरन्ति ।

"यथा वा पन, महाराज, मनुस्सा रसहेतु यन्तेन उच्छुं पीळयन्ति, तेसं उच्छुं पीळयमानानं ये तत्थ यन्तमुखगता किमयो ते पीळियन्ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो परिपक्कमानसे सत्ते बोधेन्तो धम्मयन्तमभिपीळयति, ये तत्थ मिच्छापटिपन्ना ते किमी विय मरन्ती" ति ।

"ननु, भन्ते नागसेन, ते भिक्खू ताय धम्मदेसनाय पतिता" ति ? "अपि नु खो, महाराज, तच्छको रुक्खं तच्छन्तो उजुकं परिसुद्धं करोती" ति ? "नहि, भन्ते; वज्जनीयं, भन्ते, अपनेत्वा अपनेत्वा तच्छको रुक्खं उजुकं परिसुद्धं करोती" ति । "एवमेव खो, महाराज, तथागतो परिसं रक्खन्तो न सक्कोति बोधनेय्ये सत्ते बोधेतुं, मिच्छापटिपन्ने पन सत्ते अपनेत्वा एवमेते बोधनेय्ये सत्ते बोधेति । अत्तकतेन पन ते, महाराज, मिच्छापटिपन्ना पतन्ति ।

"यथा, महाराज, कदली वेळु अस्सतरी अत्तजेन हञ्ञन्ति; एवमेव खो महाराज, ये ते मिच्छापटिपन्ना ते अत्तकतेन हञ्ञन्ति पतन्ति ।

"यथा, महाराज, चोरा अत्तकतेन चक्खुप्पाटनं सूलारोपनं सीसच्छेदनं पापुणन्ति; एवमेव खो, महाराज, ये ते मिच्छापटिपन्ना ते अत्तकतेन हञ्ञन्ति जिनसासना पतन्ति । येसं, महाराज, सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं उण्हलोहितं मुखतो उग्गतं तेसं तं नेव भगवतो कतेन, न परेसं कतेन, अथ खो अत्तनो येव कतेन ।

"यथा, महाराज, पुरिसो सब्बजनस्स अमतं ददेय्य, ते तं अमतं असित्वा अरोगा दीघायुका सब्बीतितो परिमुच्चेय्युं, अथञ्ञतरो पुरिसो दुरुपचारेन तं असित्वा मरणं पापुणेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, अमतदायको पुरिसो ततोनिदानं किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या' ति ? "नहि भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, तथागतो दससहस्सिया लोकधातुया देवमनुस्सानं अमतं धम्मदानं देति, ये ते सत्ता भब्बा ते धम्मामतेन बुज्झन्ति, ये पन ते सत्ता अभब्बा ते धम्मामतेन हञ्ञन्ति पतन्ति ।

"भोजनं, महाराज, सब्बसत्तानं जीवितं रक्खति, तमेकच्चे भुञ्जित्वा विसूचिकाय मरन्ति, अपि नु खो सो, महाराज, भोजनदायको परिसो ततोनिदानं किञ्चि अपुञ्ञं आपज्जेय्या" ति ? "नहि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, तथागतो दससहस्सिया लोकधातुया देवमनुस्सानं अमतं धम्मदानं देति । ये ते सत्ता भब्बा, ते धम्मामतेन बुज्झन्ति, ये पन ते सत्ता अभब्बा ते धम्मामतेन हञ्ञन्ति पतन्ती" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

३. वत्थगुय्हनिदस्सनपञ्हो

६. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं तथागतेन—

'कायेन संवरो साधु, साधु वाचाय संवरो ।
मनसा संवरो साधु, साधु सब्बत्थ संवरो' ति ॥

"पुन च तथागतो चतुन्नं परिसानं मज्झे निसीदित्वा पुरतो देवमनुस्सानं सेलस्स ब्राह्मणस्स कोसोहितं वत्थगुय्हं दस्सेसि । यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं–'कायेन संवरो साधू' ति, तेन हि–'सेलस्स ब्राह्मणस्स कोसोहितं वत्थगुय्हं दस्सेसी' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि सेलस्स, ब्राह्मणस्स कोसोहितं वत्थगुय्हं दस्सेसि, तेन हि–'कायेन संवरो साधू' ति तं पि वचनं मिच्छा । अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

७. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'कायेन संवरो साधू' ति । सेलस्स च ब्राह्मणस्स कोसोहितं वत्थगुय्हं दस्सितं । यस्स खो, महाराज, तथागते कङ्खा

उप्पन्ना, तस्स बोधनत्थाय भगवा इद्धिया तप्पटिभागं कायं दस्सेति—सो येव तं पाटिहारियं पस्सतू'' ति। ''को पनेतं, भन्ते नागसेन, सद्दहिस्सति यं परिसगतो एकोयेव तं गुय्हं पस्सति, अवसेसा तत्थेव सन्ता न पस्सन्ती' ति! इङ्घ मे त्वं तत्थ कारणं उपदिस, कारणेन मं सञ्ञापेही'' ति ?

''दिट्ठपुब्बो पन तया, महाराज, कोचि ब्याधितो पुरिसो परिकिण्णो ञातिमित्तेही'' ति ? ''आम, भन्ते'' ति। ''अपि नु खो, महाराज, सा परिसा पस्सतेतं वेदनं याय सो पुरिसो वेदनाय वेदियती'' ति ? ''नहि, भन्ते। अत्तना येव सो, भन्ते, पुरिसो वेदियती'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, यस्सेव तथागते कङ्खा उप्पन्ना तस्सेव तथागतो बोधनाय इद्धिया तप्पटिभागं कायं दस्सेति, सो येव तं पाटिहारियं पस्सति।

''यथा वा पन, महाराज, कञ्चिदेव पुरिसं भूतो आविसेय्य। अपि नु खो सा, महाराज, परिसा पस्सति तं भूतागमनं'' ति ? ''नहि, भन्ते। सो येव आतुरो तस्स भूतस्स आगमनं पस्सती'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, यस्सेव तथागते कङ्खा उप्पन्ना सो येव त पाटिहारियं पस्सती'' ति। ''दुक्करं, भन्ते नागसेन, भगवता कतं यं एकस्स पि अदस्सनीयं तं दस्सन्तेना'' ति। ''न, महाराज, भगवा गुय्हं दस्सेसि, इद्धिया पन छायं दस्सेसी'' ति। 'छायाय पि, भन्ते, दिट्ठाय दिट्ठं येव होति गुय्हं, यं दिस्वा निट्ठं गतो'' ति ?

''दुक्करं चापि, महाराज, तथागतो करोति बोधनेय्ये सत्ते बोधेतुं। यदि, महाराज, तथागतो किरियं हापेय्य, बोधेनेय्या सत्ता न बुज्झेय्युं। यस्मा च खो, महाराज, योगञ्ञू तथागतो बोधनेय्ये सत्ते बोधेतुं, तस्मा तथागतो येन येन योगेन बोधनेय्या बुज्झन्ति, तेन तेन योगेन बोधनेय्ये बोधेति।

''यथा, महाराज, भिसक्को सल्लकत्तो येन येन भेसज्जेन आतुरो अरोगो होति, तेन तेन भेसज्जेन आतुरं उपसङ्कमति—वमनीयं वमेति, विरेचनीयं विरेचेति, अनुलेपनीयं अनुलिम्पति, अनुवासनीयं अनुवासेति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो येन येन योगेन बोधनेय्या सत्ता बुज्झन्ति, तेन तेन योगेन बोधेति।

''यथा वा पन, महाराज, इत्थी मूळ्हगब्भा भिसक्कस्स अदस्सनीयं गुय्हं दस्सेति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो बोधनेय्ये सत्ते बोधेतुं अदस्सनीयं गुय्हं इद्धिया छायं दस्सेसि। नत्थि, महाराज, अदस्सनीयो नाम ओकासो पुग्गलं उपादाय। यदि, महाराज, कोपि भगवतो हदयं दिस्वा बुज्झेय्य, तस्स पि भगवा योगेन हदयं दस्सेय्य। योगञ्ञू, महाराज, तथागतो देसनाकुसलो।

८. ''ननु, महाराज, तथागतो थेरस्स नन्दस्स अधिमुत्तिं जानित्वा तं देवभवनं नेत्वा देवकञ्ञायो दस्सेसि—'इमिनायं कुलपुत्तो बुज्झिस्सती' ति,

तेन च सो कुलपुत्तो बुज्झि। इति खो, महाराज, तथागतो अनेकपरियायेन सुभनिमित्तं हीळेन्तो गरहन्तो जिगुच्छन्तो तस्स बोधाय हेतु ककुटपादिनियो अच्छरायो दस्सेसि। एवं पि तथागतो योगञ्ञू देसनाकुसलो।

"पुन च परं, महाराज, तथागतो थेरस्स चुल्लपन्थकस्स भातरा निकड्ढितस्स दुक्खितस्स दुम्मनस्स उपगन्त्वा सुखुमं चोळखण्डं अदासि—'इमिनायं कुलपुत्तो बुज्झिस्सती' ति। सो च कुलपुत्तो तेन कारणेन जिनसासने वसीभावं पापुणि। एवं पि, महाराज, तथागतो योगञ्ञू देसनाकुसलो।

"पुन च परं, महाराज, तथागतो ब्राह्मणस्स मोघराजस्स यावततियं पञ्हं पुट्ठो न ब्याकासि—'एवमिमस्स कुलपुत्तस्स मानो उपसमिस्सति, मानूपसमा अभिसमयो भविस्सती' ति, तेन च तस्स कुलपुत्तस्स मानो उपसमि, मानूपसमा सो ब्राह्मणो छसु अभिञ्ञासु वसीभावं पापुणि। एवं पि, महाराज, तथागतो योगञ्ञू देसनाकुसलो" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, सुनिब्बेठितो पञ्हो बहुविधेहि कारणेहि, गहनं अगहनं कतं, अन्धकारो आलोको कतो, गण्ठि भिन्ना, भग्गा परवादा, जिनपुत्तानं चक्खु तया उप्पादितं, निप्पटिभाना तित्थिया, त्वं गणिवरपवरमासज्जा" ति।

४. फरुसवाचाभावपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—'परिसुद्धवचीसमाचारो, आवुसो, तथागतो; नत्थि तथागतस्स वचीदुच्चरितं यं तथागतो रक्खेय्य—'मा मे इदं परो अञ्ञासी' ति। पुन च तथागतो थेरस्स सुदिन्नस्स कलन्दपुत्तस्स अपराधे पाराजिकं पञ्ञापेन्तो फरुसाहि वाचाहि मोघपुरिसवादेन समुदाचरि, तेन च सो थेरो मोघपुरिसवादेन संकुचित्तवसेन रुन्धितत्ता विप्पटिसारी नासक्खि अरियमग्गं पटिविज्झितुं। यदि, भन्ते नागसेन, परिसुद्धवचीसमाचारो तथागतो, नत्थि तथागतस्स वचीदुच्चरितं, तेन हि 'तथागतेन थेरस्स सुदिन्नस्स कलन्दपुत्तस्स अपराधे मोघपुरिसवादेन समुदाचिण्णं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि भगवता थेरस्स सुदिन्नस्स कलन्दपुत्तस्स अपराधे मोघपुरिसवादेन समुदाचिण्णं, तेन हि—'परिसुद्धवचीसमाचारो तथागतो, नत्थि तथागतस्स वचीदुच्चरितं' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

१०. "भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—'परिसुद्धवचीसमाचारो, आवुसो, तथागतो; नत्थि तथागतस्स वचीदुच्चरितं यं तथागतो

रक्खेय्य--'मा मे इदं परो अञ्ञासी' ति। आयस्मतो च सुदिन्नस्स कलन्दपुत्तस्स अपराधे पाराजिकं पञ्ञापेन्तेन भगवता मोघपुरिसवादेन समुदाचिण्णं। तं च पन न दुट्ठचित्तेन, असारम्भेन याथावलक्खणेन। किञ्च तत्थ याथावलक्खणं ? यस्स, महाराज, पुग्गलस्स इमस्मिं अत्तभावे चतुसच्चाभिसमयो न होति, तस्स पुरिसत्तनं मोघं, अञ्ञं कयिरमानं अञ्ञेन सम्भवति, तेन वुच्चति 'मोघपुरिसो' ति। इति पि, महाराज, भगवता आयस्मतो सुदिन्नस्स कलन्दपुत्तस्स सभाववचनेन समुदाचिण्णं, नो अभूतवादेना" ति।

"सभावं पि, भन्ते नागसेन, यो अक्कोसन्तो भणति, तस्स मयं कहापणं दण्डं धारेम, अपराधो येव सो, वत्थुं निस्साय विसुं वोहारं आचरन्तो अक्कोसती" ति।

"अत्थि पन, महाराज, सुतपुब्बं तया खलितस्स अभिवादनं वा पच्चुट्ठानं वा सक्कारं वा उपायनानुप्पदानं वा" ति ? "नहि, भन्ते, यतोकुतोचि यत्थकत्थचि खलितो परिभासनारहो होति तज्जनारहो, उत्तमङ्गं पिस्स छिन्दन्ति, हनन्ति पि, बन्धन्ति पि, घातेन्ति पि, झापेन्ति पी" ति। "तेन हि, महाराज, भगवता किरिया येव कता, नो अकिरिया" ति।

"किरियं पि, भन्ते नागसेन, कुरुमानेन पतिरूपेन कातब्बं अनुच्छविकेन, सवणेन पि, भन्ते नागसेन, तथागतस्स सदेवको लोको ओत्तपति हिरियति, भिय्योदस्सनेन, ततुत्तरिं उपसङ्कमनेन पयिरुपासनेना" ति। "अपि नु खो, महाराज, तिकिच्छको अभिसन्ने काये कुपिते दोसे सिनेहनीयानि भेसज्जानि देती" ति ? "नहि, भन्ते, तिण्हानि लेखनीयानि भेसज्जानि देती" ति। "एवमेव खो, महाराज, तथागतो सब्बकिलेसब्याधिवूपसमाय अनुसिट्ठिं देति। फरुसा पि, महाराज, तथागतस्स वाचा सत्ते सिनेहयति, मुदुके करोति। यथा, महाराज, उण्हं पि उदकं यं किञ्चि सिनेहनीयं सिनेहयति, मुदुकं करोति; एवमेव खो, महाराज, फरुसा पि तथागतस्स वाचा अत्थवती होति करुणासहगता।

"यथा, महाराज, पितु वचनं पुत्तानं अत्थवन्तं होति करुणासहगतं; एवमेव खो, महाराज, फरुसा पि तथागतस्स वाचा अत्थवती होति करुणासहगता। फरुसा पि, महाराज, तथागतस्स वाचा सत्तानं किलेसप्पहाना होति। यथा, महाराज, दुग्गन्धं पि गोमुत्तं पीतं विरसं पि अगदं खायितं सत्तानं ब्याधिं हन्ति; एवमेव खो, महाराज, फरुसा पि तथागतस्स वाचा अत्थवती होति करुणासहगता। यथा, महाराज, महन्तो पि तूलपुञ्जो परस्स काये निपतित्वा रुजं न करोति; एवमेव खो, महाराज, फरुसा पि तथागतस्स वाचा न कस्सचि दुक्खं उप्पादेती" ति।

"सुविनिच्छितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो बहूहि कारणेहि। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

५. रुक्ख-अचेतनभावपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, भासितं पेत भगवता तथागतेन—

'अचेतनं, ब्राह्मण, अस्सुणन्तं, जानं अजानन्तमिमं पलासं।
आरद्धविरियो धुवमप्पमत्तो, सुखसेय्यं पुच्छसि किस्स हेतू' ति ॥

पुन च भणितं—

'इति फन्दनरुक्खो पि, तावदे अज्झभासथ।
मय्हं पि वचनं अत्थि, भारद्वाज, सुणोहि मे' ति ॥

यदि, भन्ते नागसेन, रुक्खो अचेतनो, तेन हि–'फन्दनेन रुक्खेन भारद्वाजेन सह सल्लपितं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि फन्दनेन रुक्खेन भारद्वाजेन सद्धिं सल्लपितं, तेन हि—'रुक्खो अचेतनो' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

१२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'रुक्खो अचेतनो' ति। फन्दनेन च रुक्खेन भारद्वाजेन सद्धिं सल्लपितं। तं च पन वचनं लोकसमञ्ञाय भणितं, नत्थि, महाराज, अचेतनस्स रुक्खस्स सल्लापो नाम, अपि च महाराज तस्मिं रुक्खे अधिवत्थाय देवतायेतं अधिवचनं—'रुक्खो' ति। 'रुक्खो सल्लपती' ति चेसा लोकपण्णत्ति।

"यथा, महाराज, सकटं धञ्ञस्स परिपूरितं 'धञ्ञसकटं' ति जनो वोहरति, न च तं धञ्ञमयं सकटं, रुक्खमयं सकटं, तस्मिं सकटे धञ्ञस्स पन आकिरितत्ता 'धञ्ञसकटं' ति जनो वोहरति; एवमेव खो, महाराज, न रुक्खो सल्लपति, रुक्खो अचेतनो। या पन तस्मिं रुक्खे अधिवत्था देवता तस्सा एतं अधिवचनं—'रुक्खो' ति, 'रुक्खो सल्लपती' ति चेसा लोकपण्णत्ति।

"यथा वा पन, महाराज, दधिं मन्थयमानो 'तक्कं मन्थेमी' ति वोहरति, न तं तक्कं यं सो मन्थेति, दधिं येव सो मन्थेन्तो 'तक्कं मन्थेमी' ति वोहरति; एवमेव खो, महाराज, न रुक्खो सल्लपति, रुक्खो अचेतनो। या पन तस्मिं रुक्खे अधिवत्था देवता, तस्सा एतं अधिवचनं–'रुक्खो' ति। 'रुक्खो सल्लपती' ति चेसा लोकपण्णत्ति।

"यथा वा पन, महाराज, असन्तं साधेतुकामो 'सन्तं साधेमी' ति वोहरति, असिद्धं सिद्धं ति वोहरति, एवमेसा लोकसमञ्ञा; एवमेव खो, महाराज, न रुक्खो सल्लपति, रुक्खो अचेतनो। या पन तस्मिं रुक्खे अधिवत्था देवता तस्सा एतं अधिवचनं—'रुक्खो' ति। 'रुक्खो सल्लपती' ति चेसा लोक-

पण्णत्ति। याय, महाराज, लोकसमञ्ञाय जनो वोहरति, तथागतो पि तायेव लोकसमञ्ञाय सत्तानं धम्मं देसेती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

६. पिण्डपातमहप्फलपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं धम्मसङ्गीतिकारकेहि थेरेहि—

'चुन्दस्स भत्तं भुञ्जित्वा, कम्मारस्सा ति मे सुतं।
आबाधं सम्फुसी बुद्धो, पबाळ्हं मारणन्तिकं' ति॥

"पुन च भगवता भणितं—'द्वेमे, आनन्द, पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवतो चुन्दस्स भत्तं भुत्ताविस्स खरो आबाधो उप्पन्नो, पबाळ्हा वेदना पवत्ता मारणन्तिका, तेन हि—'द्वेमे, आनन्द, पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि द्वेमे पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा च, तेन हि—'भगवतो चुन्दस्स भत्तं भुत्ताविस्स खरो आबाधो उप्पन्नो, पबाळ्हा वेदना पवत्ता मारणन्तिका' ति तं पि वचनं मिच्छा। किं नु खो, भन्ते नागसेन, सो पिण्डपातो विसगतताय महप्फलो, रोगुप्पादकताय महप्फलो, आयुविनासकताय महप्फलो, भगवतो जीवितहरणताय महप्फलो! तत्थ मे कारणं ब्रूहि परवादानं निग्गहाय, एत्थायं जनो सम्मूळ्हो—'लोभवसेन अतिबहुं खायितेन लोहितपक्खन्दिका उप्पन्ना' ति। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

१४. "भासितं पेतं, महाराज, धम्मसङ्गीतिकारकेहि थेरेहि—

'चुन्दस्स भत्तं भुञ्जित्वा, कम्मारस्सा ति मे सुतं।
आबाधं सम्फुसी बुद्धो, पबाळ्हं मारणन्तिकं' ति॥

भगवता च भणितं—'द्वेमे, आनन्द, पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा च। कतमे द्वे? यं च पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो, यं च पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा तथागतो अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायति। इमे द्वे पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा' ति।

"सो च पन पिण्डपाता बहुगुणो अनेकानिसंसो। देवता, महाराज, हट्ठा पसन्नमानसा—'अयं भगवतो पच्छिमो पिण्डपातो' ति दिब्बं ओजं सूकरमद्दवे आकिरिंसु। तं च पन सम्मापाकं लहुपाकं मनुञ्ञं बहुरसं जठरग्गितेजस्स

हितं। न, महाराज, ततोनिदानं भगवतो कोचि अनुप्पन्नो रागो उत्पन्नो। अपि च, महाराज, भगवतो पकतिदुब्बले सरीरे खीणे आयुसङ्खारे उप्पन्नो रोगो भिय्यो अभिवड्ढि।

"यथा, महाराज, पकतिया जलमानो अग्गि अञ्ञस्मि उपादाने दिन्ने भिय्यो पज्जलति; एवमेव खो, महाराज, भगवतो पकतिदुब्बले सरीरे खीणे आयुसङ्खारे उप्पन्नो रोगो भिय्यो अभिवड्ढि।

"यथा वा पन, महाराज, सोतो पकतिया सन्दमानो अभिवुट्ठे महामेघे भिय्यो महोघो उदकवाहको होति; एवमेव खो, महाराज, भगवतो पकतिदुब्बले सरीरे खीणे आयुसङ्खारे उप्पन्नो रोगो भिय्यो अभिवड्ढि।

"यथा वा पन, महाराज, पकतिया अभिसन्नधातु कुच्छि अञ्ञस्मि अज्झोहारे भिय्यो आयमेय्य; एवमेव खो, महाराज, भगवतो पकतिदुब्बले सरीरे खीणे आयुसङ्खारे उप्पन्नो रोगो भिय्यो अभिवड्ढि। नत्थि, महाराज, तस्मिं पिण्डपाते दोसो। न च तस्स सक्का दोसो आरोपेतुं" ति।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन ते द्वे पिण्डपाता समा समफला समविपाका, अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा" ति? "धम्मानुमज्जनसमापत्तिवसेन, महाराज, ते द्वे पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा" ति।

"भन्ते नागसेन, कतमेसं धम्मानं अनुमज्जनसमापत्तिवसेन ते द्वे पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसा चा" ति? "नवन्नं, महाराज, अनुपुब्बविहारसमापत्तीनं अनुलोमपटिलोमसमापज्जनवसेन ते द्वे पिण्डपाता समा समफला समविपाका अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा चेव महानिसंसतरा चा" ति।

"भन्ते नागसेन, द्वीसु येव दिवसेसु अधिमत्तं तथागतो नवानुपुब्बविहारसमापत्तियो अनुलोमपटिलोमं समापज्जी" ति? "आम, महाराजा" ति। "अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं, भन्ते नागसेन, यं इमस्मि बुद्धक्खेत्ते असदिसं परमदानं तं पि इमेहि द्वीहि पिण्डपातेहि अगणितं। अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं, भन्ते नागसेन, याव महन्ता नवानुपुब्बविहारसमापत्तियो, यत्र हि नाम नवानुपुब्बविहारसमापत्तिवसेन दानं महप्फलतरं होति महानिसंसतरं च। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

७. बुद्धपूजनपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं तथागतेन—'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति। पुन च भणितं—

'पूजेथ नं पूजनियस्स धातुं, एवङ्करा सग्गमितो गमिस्सथा' ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, तथागतेन भणितं—'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति, तेन हि—'पूजेथ नं पूजनियस्स धातुं, एवङ्करा सग्गमितो गमिस्सथा' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'पूजेथ नं पूजनियस्स धातुं, एवङ्करा सग्गमितो गमिस्सथा' ति, तेन हि 'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

१६. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति। पुन च भणितं—'पूजेथ नं पूजनियस्स धातुं एवङ्करा सग्गमितो गमिस्सथा' ति। तं च पन न सब्बेसं जिनपुत्तानं येव आरब्भ भणितं—'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति। अकम्मं हेतं, महाराज, जिनपुत्तानं यदिदं पूजा। सम्मसनं सङ्खारानं, योनिसो मनसिकारो, सतिपट्ठानानुपस्सना, आरम्मणसारग्गाहो, किलेसयुद्ध, सदत्थमनुयुञ्जना—एतं जिनपुत्तानं करणीयं। अवसेसानं देवमनुस्सान पूजा करणीया।

"यथा, महाराज, महिया राजपुत्तानं हत्थिअस्सधनुथरुलेखमुद्दासिक्खाखग्गमन्तसुतिसम्मुतियुद्धयुज्झापनकिरिया करणीया, अवसेसानं पुथुवेस्ससुद्दानं कसि वणिज्जा गोरक्खा करणीया; एवमेव खो, महाराज, अकम्मं हेतं जिनपुत्तानं यदिदं पूजा। सम्मसनं सङ्खारानं, योनिसो मनसिकारो, सतिपट्ठानानुपस्सना, आरम्मणसारग्गाहो, किलेसयुद्धं, सदत्थमनुयुञ्जना—एतं जिनपुत्तानं करणीयं, अवसेसानं देवमनुस्सानं पूजा करणीया।

"यथा वा पन, महाराज, ब्राह्मणमाणवकानं इरुब्बेदं यजुब्बेदं सामवेदं अथब्बणवेदं लक्खणं इतिहासं पुराणं निघण्डु केटुभं अक्खरप्पभेदं पदं वेय्याकरणं भासमग्गं उप्पातं सुपिनं निमित्तं छळङ्गं चन्दग्गाहं सुरियग्गाहं सुक्कराहुचरितं उळुग्गहयुद्धं देवदुन्दुभिस्सरं ओक्कन्ति उक्कापातं भूमिकम्पं दिसादाहं भुम्मन्तलिक्खं जोतिसं लोकायतिकं साचक्कं मिगचक्कं अन्तरचक्कं मिस्सकुप्पादं सकुणरुतरवितं सिक्खा करणीया, अवसेसानं पुथुवेस्ससुद्दानं कसि वणिज्जा गोरक्खा करणीया; एवमेव खो, महाराज, अकम्मं हेतं जिनपुत्तानं यदिदं पूजा। सम्मसनं सङ्खारानं, योनिसो मनसिकारो, सतिपट्ठानानुपस्सना, आरम्मणसारग्गाहो, किलेसयुद्धं, सदत्थमनुयुञ्जना—एतं जिनपुत्तानं करणीयं, अवसेसानं देवमनुस्सानं पूजा करणीया। तस्मा, महाराज, तथागतो—'मा इमे अकम्मे युञ्जन्तु, कम्मे इमे युञ्जन्तू' ति आह—'अब्यावटा तुम्हे, आनन्द, होथ तथागतस्स सरीरपूजाया' ति। यदेतं, महाराज, तथागतो न भणेय्य, पत्तचीवरं पि अत्तनो परियादापेत्वा भिक्खू बुद्धपूजं येव करेय्युं" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

८. पादसकलिकाहतपञ्हो

१७. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ–'भगवतो गच्छन्तस्स अयं अचेतना महापथवी निन्नं उन्नमति उन्नतं ओणमती' ति। पुन च भणथ–'भगवतो पादो सकलिकाय खतो' ति। या सा सकलिका भगवतो पादे पतिता, किस्स पन सा सकलिका भगवतो पादा न निवत्ता? यदि, भन्ते नागसेन, भगवतो गच्छन्तस्स अयं अचेतना महापथवी निन्नं उन्नमति उन्नतं ओणमति, तेन हि—'भगवतो पादो सकलिकाय खतो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि भगवतो पादो सकलिकाय खतो, तेन हि—'भगवतो गच्छन्तस्स अयं अचेतना महापथवी निन्नं उन्नमति उन्नतं ओणमती' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति?

१८. "सच्चं, महाराज, अत्थेतं–'भगवतो गच्छन्तस्स अयं अचेतना महापथवी निन्नं उन्नमति उन्नतं ओणमति'। 'भगवतो च पादो सकलिकाय खतो'। न च पन सा सकलिका अत्तनो धम्मताय पतिता, देवदत्तस्स उपक्कमेन पतिता। देवदत्तो, महाराज, बहूनि जातिसतसहस्सानि भगवति आघातं बन्धि, सो तेन आघातेन 'महन्तं कूटागारप्पमाणं पासाणं भगवतो उपरि पातेस्सामी' ति मुञ्चि। अथ द्वे सेला पथवितो उट्ठहित्वा तं पासाणं सम्पटिच्छिंसु, अथ नेसं सम्पहारेन पासाणतो पपटिका भिज्जित्वा येन वा तेन वा पतन्ती भगवतो पादे पतिता" ति।

"यथा च, भन्ते नागसेन, द्वे सेला पासाणं सम्पटिच्छिंसु, तथेव पपटिका पि सम्पटिच्छितब्बा' ति?

"सम्पटिच्छितं पि, महाराज इधेकच्चं पग्घरति पसवति न ठानमुपगच्छति। यथा, महाराज, उदकं पाणिना गहितं अङ्गुलन्तरिकाहि पग्घरति पसवति न ठानमुपगच्छति, खीरं तक्कं मधुं सप्पि तेलं मच्छरसं मंसरसं पाणिना गहितं अङ्गुलन्तरिकाहि पग्घरति पसवति न ठानमुपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, सम्पटिच्छनत्थं उपगतानं द्विन्नं सेलानं सम्पहारेन पासाणतो पपटिका भिज्जित्वा येन वा तेन वा पतन्ती भगवतो पादे पतिता।

"यथा वा पन, महाराज, सण्हसुखुमअणुरजसमं पुळिनं मुट्ठिना गहितं अङ्गुलन्तरिकाहि पग्घरति पसवति न ठानमुपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, सम्पटिच्छनत्थं समागच्छन्तानं द्विन्नं सेलानं सम्पहारेन पासाणतो पपटिका भिज्जित्वा येन वा तेन वा पतन्ती भगवतो पादे पतिता।

"यथा वा पन, महाराज, कबळो मुखेन गहितो इधेकच्चस्स मुखतो मुच्चित्वा पग्घरति पसवति न ठानमुपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, सम्पटिच्छनत्थं समागच्छन्तानं द्विन्नं सेलानं सम्पहारेन पासाणतो पपटिका भिज्जित्वा येन वा तेन वा पतन्ती भगवतो पादे पतिता" ति।

"होतु, भन्ते नागसेन, सेलेहि पासाणो सम्पटिच्छितो होतु, अथ पपटिकाय पि अपचिति कातब्बा यथेव महापथविया" ति ?

"द्वादसिमे, महाराज, अपचितिं न करोन्ति। कतमे द्वादस ? रत्तो रागवसेन अपचितिं न करोति, दुट्ठो दोसवसेन, मूळ्हो मोहवसेन, उन्नतो मानवसेन, निग्गुणो अविसेसताय, अतिथद्धो अनिसेधनताय, हीनो हीनसभावताय, वचनकरो अनिस्सरताय, पापो कदरियताय, दुक्खापितो पटिदुक्खापनताय, लुद्धो लोभाभिभूतताय, आयूहितो अत्थसाधनताय अपचितिं न करोति। इमे खो, महाराज, द्वादस अपचितिं न करोन्ति। सा च पन पपटिका पासाणसम्पहारेन भिज्जित्वा अनिमित्तकतदिसा येन वा तेन वा पतमाना भगवतो पादे पतिता।

"यथा वा पन, महाराज, सण्हसुखुमअणुरजो अनिलबलसमाहतो अनिमित्तकतदिसो येन वा तेन वा अभिकिरति; एवमेव खो, महाराज, सा पपटिका पासाणसम्पहारेन भिज्जित्वा अनिमित्तकतदिसा येन वा तेन वा पतमाना भगवतो पादे पतिता। यदि पन, महाराज, सा पपटिका पासाणतो विसुं न भवेय्य, तं पि ते सेला पासाणपपटिकं उप्पतित्वा गण्हेय्युं। एसा पन, महाराज, पपटिका न भुम्मट्ठा न आकासट्ठा, पासाणसम्पहारवेगेन भिज्जित्वा अनिमित्तकतदिसा येन वा तेन वा पतमाना भगवतो पादे पतिता।

"यथा वा पन, महाराज, वातमण्डलिकाय उक्खित्तं पुराणपण्णं अनिमित्तकतदिसं येन वा तेन वा पतति; एवमेव खो, महाराज, एसा पपटिका पासाणसम्पहारवेगेन अनिमित्तकतदिसा येन वा तेन वा पतमाना भगवतो पादे पतिता। अपि च, महाराज, अकतञ्ञुस्स कदरियस्स देवदत्तस्स दुक्खानुभवनाय सा पपटिका भगवतो पादे पतिता" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

९. अग्गसमणपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'आसवानं खया समणो होती' ति। पुन च भणितं—

"चतुब्भि धम्मेहि समङ्गिभूतं, तं वे नरं समणं आहु लोके' ति।

तत्रिमे चत्तारो धम्मा—खन्ति, अप्पाहारता, रतिविप्पहानं, आकिञ्चञ्ञं। सब्बानि पनेतानि अपरिक्खीणासवस्स सकिलेसस्सेव होन्ति। यदि, भन्ते नागसेन, आसवानं खया समणो होति, तेन हि—'चतुब्भि धम्मेहि समङ्गिभूतं तं वे नरं समणं आहु लोके' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि चतुब्भि धम्मेहि समङ्गिभूतो समणो होति, तेन हि—'आसवानं खया समणो होती' ति, तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

२०. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता-'आसवानं खया समणो होती' ति। पुन च भणितं-'चतुब्भि धम्मेहि समङ्गिभूतं तं वे नरं समणं आहु लोके' ति। तदिदं, महाराज, वचनं तेसं तेसं पुग्गलानं गुणवसेन भणितं—'चतुब्भि धम्मेहि समङ्गिभूतं, तं वे नरं समणं आहु लोके' ति। इदं पन निरवसेसवचनं-'आसवानं खया समणो होती' ति।

"अपि च, महाराज, ये केचि किलेसूपसमाय पटिपन्ना ते सब्बे उपादायुपादाय समणो खीणासवो अग्गमक्खायति। यथा, महाराज, यानि कानिचि जलजथलज-पुप्फानि, वस्सिकं तेसं अग्गमक्खायति, अवसेसानि यानि कानिचि विविधानि पुप्फजातानि सब्बानि तानि पुप्फानि येव, उपादायुपादाय पन वस्सिकं येव पुप्फं जनस्स पत्थितं पिहयितं; एवमेव खो, महाराज, ये केचि किलेसूपसमाय पटिपन्ना ते सब्बे उपादायुपादाय समणो खीणासवो अग्गमक्खायति।

"यथा वा पन, महाराज, सब्बधञ्ञानं सालि अग्गमक्खायति। या काचि अवसेसा विविधा धञ्ञजातियो, ता सब्बा उपादायुपादाय भोजनानि सरीर-यापनाय, सालि येव तेसं अग्गमक्खायति; एवमेव खो, महाराज, ये केचि किलेसूपसमाय पटिपन्ना, ते सब्बे उपादायुपादाय समणो खीणासवो अग्गमक्खा-यती" ति। "साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१०. वण्णभणनपञ्हो

२१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता-'ममं वा, भिक्खवे, परे वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा···पे०···सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उप्पिलावितत्तं करणीयं' ति। पुन च तथागतो सेलस्स ब्राह्मणस्स यथाभुच्चे वण्णे भञ्ञमाने आनन्दितो सुमनो उप्पिलावितो भिय्यो उत्तरिं सकगुणं पकित्तेसि—

'राजाहमस्मि, सेल, धम्मराजा अनुत्तरो।
धम्मेन चक्कं वत्तेमि, चक्कं अप्पटिवत्तियं' ति॥

यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'ममं वा, भिक्खवे, परे वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा··पे०···सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उप्पिलावितत्तं करणीयं' ति, तेन हि सेलस्स ब्राह्मणस्स यथाभुच्चे वण्णे भञ्ञमाने आनन्दितो सुमनो उप्पिल्लावितो भिय्यो उत्तरिं सकगुणं पकित्तेती ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि सेलस्स ब्राह्मणस्य यथाभुच्चे वण्णे भञ्ञमाने आनन्दितो सुमनो उप्पिलावितो भिय्यो उत्तरिं सकगुणं पकि-त्तेसि, तेन हि 'ममं वा, भिक्खवे, परे वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा···पे०···सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आनन्दो न सोमनस्सं न चेतसो उप्पिलावितत्तं

करणीयं' ति, तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'ममं वा, भिक्खवे, परे वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा···पे०····सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उप्पिलावितत्तं करणीयं' ति। सेलस्स च ब्राह्मणस्स यथाभुच्चे वण्णे भञ्ञमाने भिय्यो उत्तरिं सकगुणं पकित्तितं—

'राजाहमस्मि, सेल, धम्मराजा अनुत्तरो।
धम्मेन चक्कं वत्तेमि, चक्कं अप्पटिवत्तियं' ति॥

"पठमं, महाराज, भगवता धम्मस्स सभावसरसलक्खणं सभावं अवितथं भूतं तच्छं तथत्थं परिदीपयमानेन भणितं––'ममं वा, भिक्खवे, वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा··· पे०···सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उप्पिलावितत्तं करणीयं' ति। यं पन भगवता सेलस्स ब्राह्मणस्स यथाभुच्चे वण्णे भञ्ञमाने भिय्यो उत्तरिं सकगुणं पकित्तितं—'राजाहमस्मि, सेल, धम्मराजा अनुत्तरो' ति, तं न लाभहेतु न यसहेतु न अत्तहेतु न पक्खहेतु न अन्तेवासिकम्यताय, अथ खो अनुकम्पाय कारुञ्ञेन हितवसेन––'एवं इमस्स धम्माभिसमयो भविस्सति तिण्णं च माणवकसतानं' ति, एवं भिय्यो उत्तरिं सकगुणं भणितं––'राजाहमस्मि, सेल, धम्मराजा अनुत्तरो'" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

११. अहिंसानिग्गहपञ्हो

२३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'अहिंसाय चर लोके, पियो होहिसि मामको' ति।

"पुन च भणितं—'निग्गण्हे निग्गहारहं, पग्गण्हे पग्गहारहं' ति। निग्गहो नाम, भन्ते नागसेन, हत्थच्छेदो पादच्छेदो वधो बन्धनं कारणा मारणं सन्ततिविकोपनं। न एतं वचनं भगवतो युत्तं। न च भगवा अरहति एतं वचनं वत्तुं। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'अहिंसाय चर लोके, पियो होहिसि मामको'ति, तेन हि 'निग्गण्हे निग्गहारहं, पग्गण्हे पग्गहारहं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'निग्गण्हे निग्गहारहं, पग्गण्हे पग्गहारहं'ति, तेन हि—'अहिंसाय चर लोके पियो होहिसि मामको'ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

२४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'अहिंसाय चर लोके पियो होहिसि मामको'ति। भणितं च–'निग्गण्हे निग्गहारहं, पग्गण्हे पग्गहारहं' ति। 'अहिंसाय चर लोके पियो होहिसि मामको' ति, सब्बेसं, महाराज, तथागतानं अनुमतं

एतं, एसा अनुसिट्ठि, एसा धम्मदेसना, धम्मो हि, महाराज, अहिंसालक्खणो, सभाववचनं एतं। यं पन, महाराज, तथागतो आह—'निग्गण्हे निग्गहारहं, पग्गण्हे पग्गहारहं'ति भासा एसा। उद्धतं, महाराज, चित्तं निग्गहेतब्बं, लीनं चित्तं पग्गहेतब्बं। अकुसलं चित्तं निग्गहेतब्बं, कुसलं चित्तं पग्गहेतब्बं। अयोनिसोमनसिकारो निग्गहेतब्बो, योनिसोमनसिकारो पग्गहेतब्बो। मिच्छापटिपन्नो निग्गहेतब्बो, सम्मापटिपन्नो पग्गहेतब्बो। अनरियो निग्गहेतब्बो, अरियो पग्गहेतब्बो। चोरो निग्गहेतब्बो, अचोरो पग्गहेतब्बो" ति।

"होतु, भन्ते नागसेन, इदानि त्वं पच्चागतोसि मम विसयं, यमहं पुच्छामि सो मे अत्थो उपगतो। चोरो पन, भन्ते नागसेन, निग्गण्हन्तेन कथं निग्गहेतब्बो" ति? "चोरो, महाराज, निग्गण्हन्तेन एवं निग्गहेतब्बो—परिभासनीयो परिभासितब्बो, दण्डनीयो दण्डेतब्बो, पब्बाजनीयो पब्बाजेतब्बो, बन्धनीयो बन्धितब्बो, घातनीयो घातेतब्बो ति। "यं पन, भन्ते नागसेन, चोरानं घातनं तं तथागतानं अनुमतं" ति? "न हि, महाराजा" ति। "किस्स पन चोरो अनुसासनीयो अनुमतो तथागतानं" ति? "यो सो, महाराज, घातियति न सो तथागतानं अनुमतिया घातयिति, सयंकतेन सो घातियति, अपि च धम्मानुसिट्ठिया अनुसासीयति, सक्का पन, महाराज, पुरिसं अकारणं अनपराधं वीथियं चरन्तं गहेत्वा मतिमता घातयितुं'ति? "न सक्का, भन्ते" ति! "केन कारणेन, महाराजा" ति? "अकारकत्ता, भन्ते" ति। एवमेव खो, महाराज, न चोरो तथागतानं अनुमतिया हञ्ञति। सयंकतेन सो हञ्ञति, किं पनेत्थ अनुसासको किञ्चि दोसं आपज्जती'ति? "न हि, भन्ते" ति। "तेन हि, महाराज, तथागतानं अनुसिट्ठि सम्मानुसिट्ठि होती"ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१२. भिक्खुपणामितपञ्हो

२५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'अक्कोधनो विगतखिलोहमस्मी' ति। पुन च तथागतो थेरे सारिपुत्तमोग्गलाने सपरिसे पणामेसि। किन्नु खो, भन्ते नागसेन, तथागतो कुपितो परिसं पणामेसि, उदाहु तुट्ठो पणामेसि—'एतं ताव जानाहि इमं नामा' ति। यदि, भन्ते नागसेन, कुपितो परिसं पणामेसि, तेन हि तथागतस्स कोधो अप्पटिवत्तितो। यदि तुट्ठो पणामेसि, तेन हि अवत्थुस्मिं अजानन्तेन पणामिता। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

२६. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'अक्कोधनो विगतखिलोहमस्मि'। पणामिता च थेरा सारिपुत्तमोग्गलाना सपरिसा। तं च पन न कोपेन। इध, महाराज, कोचिदेव पुरिसो महापथविया मूले वा खाणुके वा पासाणे वा कठले

वा विसमे वा भूमिभागे खलित्वा पतति, अपि नु खो, महाराज, महापथवी कुपिता तं पातेती' ति ? "न हि, भन्ते। नत्थि महापथविया कोपो वा पसादो वा, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्ता महापथवी, सयमेव सो अलसो खलित्वा पतितो" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि तथागतानं कोपो वा पसादो वा, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्ता तथागता अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, अथ खो सयंकतेनेव ते अत्तनो अपराधेन पणामिता।

"इध पन, महाराज, महासमुद्दो न मतेन कुणपेन संवसति, यं होति महासमुद्दे मतं कुणपं तं खिप्पमेव निच्छुभति, थलं उस्सादेति। अपि नु खो, महासमुद्दो कुपितो तं कुणपं निच्छुभती' ति ? "नहि, भन्ते, नत्थि महासमुद्दस्स कोपो वा पसादो वा, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो महासमुद्दो" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि तथागतानं कोधो वा पसादो वा, अनुनयप्पटिघविप्पमुत्ता तथागता अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, अथ खो सयंकतेनेव ते अत्तनो अपराधेन पणामिता।

"यथा, महाराज, पथविया खलितो पतीयति, एवं जिनसासनवरे खलितो पणामीयति। यथा, महाराज, समुद्दे मतं कुणपं निच्छुभीयति, एवं जिनसासनवरे खलितो पणामीयति। यं पन ते, महाराज, तथागतो पणामेति, तेसं अत्थकामो हितकामो सुखकामो विसुद्धिकामो–'एवं इमे जातिजराब्याधिमरणेहि परिमुच्चिस्सन्ती' ति पणामेसी" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

(इमस्मिं वग्गे द्वादस पञ्हा) **ततियो पणामितवग्गो निट्ठितो।**

४. सब्बञ्ञुतञाणवग्गो

१. इद्धिकम्मविपाकपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं इद्धिमन्तानं, यदिदं महामोग्गलानो' ति। पुन च किर सो लगुळेहि परिपोथितो भिन्नसीसो सञ्चुण्णितट्ठिमंसधमनिमज्जपरिगत्तो परिनिब्बुतो। यदि, भन्ते नागसेन, थेरो महामोग्गलानो इद्धिया कोटिं गतो, तेन हि–'लगुळेहि परिपोथितो परिनिब्बुतो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि लगुळेहि परिपोथितो परिनिब्बुतो, तेन हि—'इद्धिया कोटिं गतो' ति तं पि वचनं मिच्छा। किं नु न समत्थो इद्धिया अत्तनो उपघातं अपनयितुं, सदेवकस्सपि लोकस्स पटिसरणं भवितुं अरहो' ति। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता – 'एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं इद्धिमन्तानं, यदिदं महामोग्गलानो' ति। आयस्मा च महामोग्गलानो

लगुळहतो परिनिब्बुतो, तं च कम्माधिग्गहितेना'' ति । ''ननु, भन्ते नागसेन, इद्धिमतो इद्धिविसयो पि कम्मविपाको पि द्वे अचिन्तिया, अचिन्तियेन अचिन्तियं अपनयितब्बं । यथा नाम, भन्ते, केचि फलकामा कपित्थेन कपित्थं पोथेन्ति, अम्बेन अम्बं पोथेन्ति; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, अचिन्तियेन अचिन्तियं पोथयित्वा अपनेतब्बं'' ति । ''अचिन्तियानं पि, महाराज, एकं अधिमत्तं बलवतरं । यथा महाराज, महिया राजानो होन्ति समजच्चा, समजच्चानं पि तेसं एको सब्बे अभिभवित्वा आणं पवत्तेति; एवमेव खो, महाराज, तेसं अचिन्तियानं कम्मविपाकं येव अधिमत्तं बलवतरं, कम्मविपाकं येव सब्बे अतिभविय आणं पवत्तेति, कम्माधिग्गहितस्स अवसेसा किरिया ओकासं न लभन्ति ।

''इध पन, महाराज, कोचि पुरिसो किस्मिञ्चिदेव पकरणे अपरज्झति, न तस्स माता वा पिता वा भगिनी वा भातरो वा सखिसहायका वा तायन्ति, अथ खो राजा येव तत्थ अभिभविय आणं पवत्तेति, किं तत्थ कारणं ? अपराधिकता; एवमेव खो, महाराज, तेसं अचिन्तियानं कम्मविपाकं येव अधिमत्तं बलवतरं, कम्मविपाकं येव सब्बे अभिभविय आणं पवत्तेति, कम्माधिग्गहितस्स अवसेसा किरिया ओकासं न लभन्ति ।

''यथा वा पन, महाराज, महिया दवडाहे समुट्ठिते घटसहस्सं पि उदकं न सक्कोति निब्बापेतुं, अथ खो अग्गि येव तत्थ अभिभविय आणं पवत्तेति, किं तत्थ कारणं ? बलवता तेजस्स; एवमेव खो, महाराज, तेसं अचिन्तियानं कम्मविपाकं येव अधिमत्तं बलवतरं, कम्मविपाकं येव सब्बे अभिभविय आणं पवत्तेति, कम्माधिग्गहितस्स अवसेसा किरिया ओकासं न लभन्ति । तस्मा, महाराज, आयस्मतो महामोग्गलानस्स कम्माधिग्गहितस्स लगुळेहि पोथियमानस्स इद्धिया समन्नाहारो नाहोसी'' ति ।

''साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी'' ति ।

२. धम्मविनयपटिच्छन्नापटिच्छन्नपञ्हो

३. ''भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता–'तथागतप्पवेदितो, भिक्खवे, धम्मविनयो विवटो विरोचति नो पटिच्छन्नो' ति । पुन च पातिमोक्खुद्देसो केवलं च विनयपिटकं पिहितं पटिच्छन्नं । यदि, भन्ते, नागसेन, जिनसासने युत्तं वा पत्तं वा समयं लभेथ, विनयपण्णत्ति विवटा सोभेय्य । केन कारणेन ? केवलं तत्थ सिक्खा संयमो नियमो सीलगुणआचारपण्णत्ति अत्थरसो धम्मरसो विमुत्तिरसो । यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'तथागतप्पवेदितो, भिक्खवे, धम्मविनयो विवटो विरोचति नो पटिच्छन्नो' ति, तेन हि—'पातिमोक्खुद्देसो केवलं च विनयपिटकं पिहितं पटिच्छन्नं' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि पतिमोक्खुद्देसो केवलं च विनय-

पिटकं पिहितं पटिच्छन्नं, तेन हि—'तथागतप्पवेदितो, भिक्खवे, धम्मविनयो विवटो विरोचति नो पटिच्छन्नो' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतो-कोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता–तथागतप्पवेदितो, भिक्खवे, धम्मविनयो विवटो विरोचति नो पटिच्छन्नो' ति। पुन च पातिमोक्खुद्देसो केवलं च विनय-पटिकं पिहितं पटिच्छन्नं। तं च पन न सब्बेसं, सीमं कत्वा पिहितं।

"तिविधेन, महाराज, भगवता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो—पुब्बकानं तथागतानं वंसवसेन पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो, धमस्स गरुकत्ता पिहितो, भिक्खुभूमिया गरुकत्ता पिहितो।

"कथं पुब्बकानं तथागतानं वंसवसेन पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो ? वंसो एसो, महाराज, सब्बेसं पुब्बकानं तथागतानं, यदिदं भिक्खुमज्झे पाति-मोक्खुद्देसो, अवसेसानं पिहितो। यथा, महाराज, खत्तियानं खत्तियमाया खत्तियेसु येव चरति, एवमेतं खत्तियानं लोकस्स पवेणि अवसेसानं पिहिता। एवमेव खो, महाराज, वंसो एसो सब्बेसं पुब्बकानं तथागतानं, यदिदं भिक्खुमज्झे पातिमोक्खुद्देसो, अवसेसानं पिहितो।

"यथा वा पन, महाराज, महिया गणा वत्तन्ति, सेय्यथीदं—मल्ला, अतोणा, पब्बता, धम्मगिरिया, ब्रह्मगिरिया, नटका, नच्चका, लङ्घका, पिसाचा, मणिभद्दा, पुण्णभद्दा, चन्दिमसुरिया, सिरिदेवता, कालिदेवता, सिवा, वसुदेवा, घनिका, असिपासा, भद्दिपुत्ता ति, तेसं तेसं रहस्सं तेसु तेसु गणेसुयेव चरति, अव-सेसानं पिहितं; एवमेव खो, महाराज, वंसो एसो सब्बेसं पुब्बकानं तथागतानं, यदिदं भिक्खुमज्झे पातिमोक्खुद्देसो, अवसेसानं पिहितो। एवं पुब्बकानं वंसव-सेन पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो। (क)

"कथं धम्मस्स गरुकत्ता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो ? धम्मो, महाराज, गरुको भारियो, तत्थ सम्मत्तकारी अञ्ञं आराधेति, तं तत्थ परम्परा-सम्मत्तकारिताय पापुणाति। न तं तत्थ परम्परासम्मतकारिताय पापुणाति–'मा चायं सारधम्मो वरधम्मो असम्मत्तकारीनं हत्थगतो ओञातो अवञातो हीळितो खीळितो गरहितो भवतु, मा चायं सारधम्मो वरधम्मो दुज्जनगतो ओञातो अवञ्ञातो हीळितो खीळितो गरहितो भवतू' ति, एवं धम्मस्स गरुकत्ता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो।

यथा, महाराज, सारवरपवरअभिजातजातिमन्तरत्तलोहितचन्दनं नाम सवरपुरमनुगतं ओञातं अवञ्ञातं हीळितं खीळितं गरहितं भवति; एवमेव खो, महाराज, 'मा चायं सारधम्मो वरधम्मो परम्पराअसम्मत्तकारीनं हत्थगतो

ओञातो अवञ्ञातो हीळितो खीळितो गरहितो भवतु, मा चायं सारधम्मो वरधम्मो दुज्जनगतो ओञातो अवञ्ञातो हीळितो खीळितो गरहितो भवतू' ति। एवं धम्मस्स गरुकत्ता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो। (ख)

"कथं भिक्खुभूमिया गरुकत्ता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो? भिक्खुभावो खो, महाराज, लोके अतुलितो अप्पमाणो अनग्घियो, न सक्का केनचि अग्घापेतुं तुलेतुं परिमेतुं. 'मायं एवरूपे भिक्खुभावे ठितो लोकेन समसमो भवतू' ति भिक्खूनं येव अन्तरे पातिमोक्खुद्देसो चरति। यथा, महाराज, लोके वरपवरभण्डं वत्थं वा अत्थरणं वा गजतुरङ्गरथसुवण्णरजतमणिमुत्ताइत्थिरतनादीनि वा निज्जितकम्मसूरा वा, सब्बे ते राजानमुपगच्छन्ति; एवमेव खो, महाराज, यावता लोके सुगतागमपरियत्तिआचारसंयमसीलसंवरगुणा सब्बे ते भिक्खुसङ्घमुपगता भवन्ति। एवं भिक्खुभूमिया गरुकत्ता पातिमोक्खुद्देसो सीमं कत्वा पिहितो" ति। (ग)

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

३. मुसावादगरुलहुभावपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता-'सम्पजानमुसावादे पाराजिको होती' ति। पुन च भणितं—'सम्पजानमुसावादे लहुकं आपत्तिं आपज्जति एकस्स सन्तिके देसनावत्थुकं' ति। भन्ते नागसेन, को पनेत्थ विसेसो, किंकारणं यञ्चेकेन मुसावादेन उच्छिज्जति, यञ्चेकेन मुसावादेन सतेकिच्छो होति? यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'सम्पजानमुसावादे पाराजिको होती' ति, तेन हि –'सम्पजानमुसावादे लहुकं आपत्तिं आपज्जति एकस्स सन्तिके देसनावत्थुकं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'सम्पजानमुसावादे लहुकं आपत्तिं आपज्जति एकस्स सन्तिके देसनावत्थुकं' ति, तेन हि 'सम्पजानमुसावादे पाराजिको होती' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

६. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता-'सम्पजानमुसावादे पाराजिको होती' ति। भणितं च—'सम्पजानमुसावादे लहुकं आपत्तिं आपज्जति एकस्स सन्तिके देसनावत्थुकं' ति। तं च पन वत्थुवसेन गरुकलहुकं होति। तं किं मञ्ञसि, महाराज, इध कोचि पुरिसो परस्स पाणिना पहारं ददेय्य, तस्स तुम्हे किं दण्डं धारेथा" ति? "यदि सो, भन्ते, आह—'नक्खमामी' ति, तस्स मयं अक्खमसाने कहापणं हरापेमा" ति। "इध पन, महाराज, सो येव पुरिसो तव पाणिना पहारं ददेय्य, तस्स पन को दण्डो" ति? "हत्थं पिस्स छेदापेय्याम, पादं पि छेदापेय्याम, यावसीसं कळीरच्छेज्जं छेदापेय्याम, सब्बं पि तं गेहं विलुम्पापेय्याम,

उभतोपस्से याव सत्तमं कुलं समुग्घातापेय्यामा" ति। "को पनेत्थ, महाराज, विसेसो, किंकारणं यं एकस्स पाणिप्पहारे सुखुमो कहापणो दण्डो, यं तव पाणिप्पहारे हत्थच्छेज्जं पादच्छेज्जं याव कलीरच्छेज्जं सब्बगेहादानं उभतोपस्से याव सत्तमकुला समुग्घातो" ति? "मनुस्सन्तरेन, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, सम्पजानमुसावादो वत्थुवसेन गरुकलहुको होती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

४. बोधिसत्तधम्मतापञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता धम्मताधम्मपरियाये—'पुब्बेव बोधिसत्तानं मातापितरो नियता होन्ति, बोधि नियतो होती' ति। पुन च तुम्हे भणथ–'तुसिते काये ठितो बोधिसत्तो अट्ठ महाविलोकनानि विलोकेति–'कालं विलोकेति, दीपं विलोकेति, देसं विलोकेति, कुलं विलोकेति, जनेत्तिं विलोकेति, आयुं विलोकेति, मासं विलोकेति, नेक्खम्मं विलोकेती' ति। भन्ते नागसेन, अपरिपक्के ञाणे बुज्झनं नत्थि, परिपक्के ञाणे न सक्का निमेसन्तरं पि आगमेतुं, अनतिक्कमनीयं परिपक्कमानसं। कस्मा बोधिसत्तो कालं विलोकेति–'किम्हि काले उप्पज्जामी' ति? अपरिपक्के ञाणे बुज्झनं नत्थि, परिपक्के ञाणे न सक्का निमेसन्तरं पि आगमेतुं। कस्मा बोधिसत्तो कुलं विलोकेति—'किम्हि कुले उप्पज्जामी' ति? यदि, भन्ते नागसेन, पुब्बेव बोधिसत्तस्स मातापितरो नियता, तेन हि–'कुलं विलोकेती' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि कुलं विलोकेति, तेन हि–'पुब्बेव बोधिसत्तस्स मातापितरो नियता' ति, तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तथा निब्बाहितब्बो" ति?

८. "नियता महाराज, पुब्बेव बोधिसत्तस्स मातापितरो, कुलं च बोधिसत्तो विलोकेती ति। किं ति पन कुलं विलोकेति? 'ये मे मातापितरो ते खत्तिया उदाहु ब्राह्मणा' ति एवं कुलं विलोकेति।

"अट्ठन्नं, महाराज, पुब्बेव अनागतं ओलोकेतब्बं होति, कतमेसं अट्ठन्नं? वाणिजस्स, महाराज, पुब्बेव विक्कयभण्डं ओलोकेतब्बं होति, हत्थिनागस्स पुब्बेव सोण्डाय अनागतो मग्गो ओलोकेतब्बो होति, साकटिकस्स पुब्बेव अनागतं तित्थं ओलोकेतब्बं होति, नियामकस्स पुब्बेव अनागतं तीरं ओलोकेत्वा नावा पेसेतब्बा होति, भिसक्कस्स पुब्बेव आयुं ओलोकेत्वा आतुरो उपसङ्कमितब्बो होति, उत्तरसेतुस्स पुब्बेव थिराथिरभावं जानित्वा अभिरूहितब्बं होति, भिक्खुस्स पुब्बेव अनागतं कालं पच्चवेक्खित्वा भोजनं भुञ्जितब्बं होति, बोधिसत्तानं पुब्बेव कुलं ओलोकेतब्बं होति—'खत्तियकुलं वा ब्राह्मणकुलं वा'

ति। इमेसं खो, महाराज, अट्ठन्नं पुब्बेव अनागतं ओलोकेतब्बं होती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

५. अत्तनिपातनपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'न, भिक्खवे, अत्तानं पातेतब्बं, यो पातेय्य यथाधम्मो कारेतब्बो' ति। पुन च तुम्हे भणथ–'यत्थ कत्थचि भगवा सावकानं धम्मं देसयमानो अनेकपरियायेन जातिया जराय ब्याधिनो मरणस्स समुच्छेदाय धम्मं देसेति, यो हि कोचि जातिजराब्याधिमरणं समतिक्कमति तं परमाय पसंसाय पसंसती' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'न, भिक्खवे, अत्तानं पातेतब्बं, यो पातेय्य यथाधम्मो कारेतब्बो' ति, तेन हि 'जातिया जराय ब्याधिनो मरणस्स समुच्छेदाय धम्मं देसेती' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि जातिया जराय ब्याधिनो मरणस्स समुच्छेदाय धम्मं देसेति, तेन हि—'न भिक्खवे अत्तानं पातेतब्बं, यो पातेय्य यथाधम्मो कारेतब्बो' ति, तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

१०. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता–'न, भिक्खवे…पे०…कारेतब्बो' ति। यत्थ कत्थचि भगवता सावकानं धम्मं देसियमानेन च अनेकपरियायेन जातिया जराय ब्याधिनो मरणस्स समुच्छेदाय धम्मो देसितो। तत्थ पन कारणं अत्थि येन भगवा कारणेन पटिक्खिपि समादपेसि चा" ति।

'किं पनेत्थ, भन्ते नागसेन, कारणं येन भगवा कारणेन पटिक्खिपि समादपेसि चा' ति? 'सीलवा, महाराज, सीलसम्पन्नो अगदसमो सत्तानं किलेसविसविनासने, ओसधसमो सत्तानं किलेसब्याधिवूपसमे, उदकसमो सत्तानं किलेसरजोजल्लापहरणे, मणिरतनसमो सत्तानं सब्बसम्पत्तिदाने, नावासमो सत्तानं चतुरोघपारगमने, सत्थवाहसमो सत्तानं जातिकन्तारतारणे, वातसमो सत्तन्नं तिविधग्गिसन्तापनिब्बापने, महामेघसमो सत्तानं मानसपरिपूरणे, आचरियसमो सत्तानं कुसलसिक्खापने, सुदेसिकसमो सत्तानं खेमपथमाचिक्खने। एवरूपो, महाराज, बहुगुणो अनेकगुणो अप्पमाणगुणो गुणरासि गुणपुञ्जो सत्तानं वुड्ढिकरो 'सीलवा मा विनस्सी' ति सत्तानं अनुकम्पाय, महाराज, भगवा सिक्खापदं पञ्ञापेसि—'न, भिक्खवे, अत्तानं पातेतब्बं, यो पातेय्य यथाधम्मो कारेतब्बो' ति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन भगवा पटिक्खिपि।

"भासितं पेतं, महाराज, थेरेन कुमारकस्सपेन विचित्रकथिकेन पायासिराजञ्ञस्स परलोकं दीपयमानेन––'यथा यथा खो, राजञ्ञ, समण-

ब्राह्मणा सीलवन्तो कल्याणधम्मा चिरं दीघमद्धानं तिट्ठन्ति; तथा तथा बहुं पुञ्ञं पसवन्ति बहुजनहिताय च पटिपज्जन्ति बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं' ति ।

"केन पन कारणेन भगवा समादपेसि—'जाति पि, महाराज, दुक्खा, जरा पि दुक्खा, ब्याधि पि दुक्खा, मरणं पि दुक्खं, सोको पि दुक्खो, परिदेवो पि दुक्खो, दुक्खं पि दुक्खं, दोमनस्सं पि दुक्खं, उपायासो पि दुक्खो, अप्पियेहि सम्पयोगो पि दुक्खो, पियेहि विप्पयोगो पि दुक्खा, मातुमरणं पि दुक्खं, पितुमरणं...भातुमरणं...भगिनीमरणं...पुत्तमरणं...दारमरणं...दासमरणं...ञातिमरणं...ञातिब्यसनं...रोगब्यसनं...भोगब्यसनं... सीलब्यसनं...दिट्ठिब्यसनं... राजभयं चोरभयं...वेरिभयं...दुब्भिक्खभयं...अग्गिभयं...उदकभयं...आवट्टभयं... कुम्भीलभयं...सुसुकाभयं...अत्तानुवादभयं...परानुवादभयं... दण्डभयं...दुग्गतिभयं...परिसासारज्जभयं...आजीविकभयं...मरणभयं...वेत्तेहि ताळनं...हत्थच्छेदनं...पादच्छेदनं...हत्थपादच्छेदनं...कण्णच्छेदनं...नासच्छेदनं... कण्णनासच्छेदनं...बिलंगथालिकं...सङ्खमुण्डितं...राहुमुखं... जोतिमालिकं...हत्थपज्जोतिकं...एरकवत्तिकं...चीरकवासिकं...एणेय्यकं...बळिसमंसिकं...कहापणिकं... खारापतच्छिकं...पलिघपरिवत्तिकं...पलालपीठकं...तत्तेन तेलेन ओसिञ्चनं... सुनखेहि खादापनं...जीवसूलारोपनं...असिना सीसच्छेदनं दुक्खं । एवरूपानि महाराज, बहुविधानि अनेकविधानि दुक्खानि संसारगतो अनुभवति' ?

"यथा महाराज, हिमवन्तपब्बते अभिवुट्ठं उदकं गंगाय नदिया पासाणसक्खरखरमरुम्बआवट्टगग्गलकऊमिकवंकचदिकआवरणनीवरणमूलकं साखासु परियोत्थरति; एवमेव, खो, महाराज, एवरूपानि एवरूपानि बहुविधानि अनेकविधानि दुक्खानि संसारगतो अनुभवति । पवत्तं, महाराज, दुक्खं, अप्पवत्तं सुखं, अप्पवत्तस्स गुणं पवत्ते च भयं दीपयमानो, महाराज, भगवा अप्पवत्तस्स सच्छिकिरियाय जातिजराब्याधिमरणसमतिक्कमाय समादपेसि । इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन भगवा समादपेसी" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, सुनिब्बेठितो पञ्हो सुकथितं कारणं, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

६. मेत्ताभावनानिसंसपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता–'मेत्ताय खो, भिक्खवे, चेतोविमुत्तिया आसेविताय भाविताय बहुलीकताय यानीकताय वत्थुकताय अनुट्ठिताय परिचिताय सुसमारद्धाय एकादसानिसंसा पाटिकङ्खा । कतमे एकादस ? सुखं सुपति, सुखं पटिबुज्झति, न पापकं सुपिनं पस्सति, मनुस्सानं पियो होति, अमनुस्सानं पियो होति, देवता रक्खन्ति, नास्स अग्गि वा विसं वा सत्थं वा

कमति, तुवटं चित्तं समाधियति, मुखवण्णो विप्पसीदति, असम्मूळ्हो कालं करोति, उत्तरिं अप्पटिविज्झन्तो ब्रह्मलोकूपगो होती' ति। पुन च तुम्हे भणथ– 'सामो कुमारो मेत्ताविहारी मिगसंघेन परिवुतो पवने विचरन्तो पीळियक्खेन रञ्ञा विद्धो विसपीतेन सल्लेन तत्थेव मुच्छितो पतितो' ति। 'यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'मेत्ताय, भिक्खवे····पे०···ब्रह्मलोकूपगो होती' ति, तेन हि—'सामो कुमारो मेत्ताविहारी मिगसङ्घेन परिवुतो पवने विचरन्तो पीळियक्खेन रञ्ञा विद्धो विसपीतेन सल्लेन तत्थेव मुच्छितो पतितो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि सामो कुमारो मेत्ताविहारी मिगसङ्घेन परिवुतो पवने विचरन्तो पीळियक्खेन रञ्ञा विद्धो विसपीतेन सल्लेन तत्थेव मुच्छितो पतितो, तेन हि 'मेत्ताय···पे०····कमती' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो सुनिपुणो परिसण्हो सुखुमो गम्भीरो, अपि सुनिपुणानं मनुजानं गत्ते सेदं मोचेय्य, सो तवानुप्पत्तो, विजटेहि तं महाजटाजटितं, अनागतानं जिनपुत्तानं चक्खुं देहि निब्बाहनाया" ति ?

१२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'मेत्ताय····पे० कमती' ति। 'सामो च कुमारो मेत्ताविहारी मिगसङ्घेन परिवुतो पवने वचरन्तो पीळियक्खेन रञ्ञा विद्धो विसपीतेन सल्लेन तत्थेव मुच्छितो पतितो'। तत्थ पन, महाराज, कारणमत्थि। कतमं तत्थ कारणं ? नेते, महाराज, गुणा पुग्गलस्स, मेत्ता-भावनायेते गुणा। सामो, महाराज, कुमारो घटं उक्खिपन्तो तस्मिं खणे मेत्ताभावनाय पमत्तो अहोसि।

"यस्मिं, महाराज, खणे पुग्गलो मेत्तं समापन्नो होति, न तस्स पुग्गलस्स तस्मिं खणे अग्गि वा विसं वा सत्थं वा कमति, तस्स ये केचि अहितकामा उपगन्त्वा तं न पस्सन्ति, न तस्मिं ओकासं लभन्ति। नेते, महाराज, गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"इध, महाराज, पुरिसो सङ्गामसूरो अभेज्जकवचजालिकं सन्नय्हित्वा सङ्गामं ओतरेय्य, तस्स सरा खित्ता उपगन्त्वा पतन्ति विकिरन्ति, न तस्मिं ओकासं लभन्ति। नेसो, महाराज, गुणो सङ्गामसूरस्स, अभेज्जकवचजालि-कायेसो गुणो, यस्स सरा खित्ता उपगन्त्वा पतन्ति चिकिरन्ति; एवमेव खो, महाराज, नेते गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"यस्मिं, महाराज, खणे पुग्गलो मेत्तं समापन्नो होति, न तस्स ये केचि अहितकामा उपगन्त्वा तं न पस्सन्ति, तस्मिं ओकासं न लभन्ति। नेते, महा-राज, गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"इध पन, महाराज, पुरिसो दिब्बं अन्तरधानं मूलं हत्थे करेय्य, याव तं मूलं तस्स हत्थगतं होति ताव न अञ्ञो कोचि पकतिमनुस्सो तं पुरिसं पस्सति,

नेसो, महाराज, गुणो पुरिसस्स, मूलस्सेसो गुणो अन्तरधानस्स यं सो पकतिमनुस्सानं चक्खुपथे न दिस्सति; एवमेव खो, महाराज, नेते गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"यस्मिं, महाराज, खणे पुग्गलो मेत्तं समापन्नो होति, न तस्स पुग्गलस्स तस्मिं खणे अग्गि वा विसं सत्थं वा कमति, तस्स ये केचि अहितकामा उपगन्त्वा तं न पस्सन्ति, न तस्मिं ओकासं लभन्ति। नेते, महाराज, गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसं सुकतं महालेणमनुप्पविट्ठं महामेघो अभिवस्सन्तो न सक्कोति तेमयितुं, नेसो, महाराज, गुणो पुरिसस्स, महालेणस्स सो गुणो, यं महामेघो अभिवस्समानो न तं तेमेति; एवमेव खो, महाराज, नेते गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा।

"यस्मिं, महाराज, खणे पुग्गलो मेत्तं समापन्नो होति, न तस्स पुग्गलस्स तस्मिं खणे अग्गि वा विसं वा सत्थं वा कमति, तस्स ये केचि अहितकामा उपगन्त्वा तं न पस्सन्ति, न तस्स सक्कोन्ति अहितं कातुं। नेते, महाराज, गुणा पुग्गलस्स, मेत्ताभावनायेते गुणा" ति।

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं, भन्ते नागसेन, सब्बपापनिवारणा मेत्ताभावना ति। सब्बकुसलगुणावहा, महाराज, मेत्ताभावना संविभजितब्बा" ति।

७. कुसलाकुसलसमविसमपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, कुसलकारिस्स पि अकुसलकारिस्स पि विपाको समसमो, उदाहु कोचि विसेसो अत्थी' ति ? "अत्थि, महाराज, कुसलस्स च अकुसलस्स च विसेसो। कुसलं, महाराज, सुखविपाकं सग्गसंवत्तनिकं, अकुसलं दुक्खविपाकं निरयसंवत्तनिकं" ति।

"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'देवदत्तो एकन्तकण्हो एकन्तकण्हेहि धम्मेहि समन्नागतो, बोधिसत्तो एकन्तसुक्को एकन्तसुक्केहि धम्मेहि समन्नागतो' ति। पुन च देवदत्तो भवे भवे यसेन च पक्खेन च बोधिसत्तेन समसमो होति कदाचि अधिकतरो वा। यदा देवदत्तो नगरे बाराणसियं ब्रह्मदत्तस्स रञ्ञो पुरोहितपुत्तो अहोसि, तदा बोधिसत्तो छवकचण्डालो अहोसि विज्जाधरो, विज्जं परिजप्पित्वा अकाले अम्बफलानि निब्बत्तेसि। एत्थ ताव बोधिसत्तो देवदत्ततो जातिया निहीनो, यसेन च निहीनो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो राजा अहोसि महामहीपति सब्बकामसमङ्गी, तदा बोधिसत्तो तस्सूपभोगो अहोसि हत्थिनागो सब्बलक्खणसम्पन्नो। तस्स चारुगतिविलासं असहमानो राजा वधमिच्छन्तो हत्थाचरियं एवमवोच—'असिक्खितो ते, आचरिय, हत्थिनागो, तस्स आकासगमनं नाम कारणं करोही'—

ति। तत्थ पि बोधिसत्तो ताव देवदत्ततो जातिया निहीनो लामको तिरच्छानगतो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि पवने नट्ठायिको, तदा बोधिसत्तो महापथवी नाम मक्कटो अहोसि। एत्थ पि ताव दिस्सति विसेसो मनुस्सस्स च तिरच्छानगतस्स च, एत्थ पि ताव बोधिसत्तो देवदत्ततो जातिया निहीनो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि सोणुत्तरो नाम नेसादो बलवा बलवतरो नागबलो, तदा बोधिसत्तो छद्दन्तो नाम नागराजा अहोसि। तदा सो लुद्दको तं हत्थिनागं घातेसि। तत्थपि ताव देवदत्तो व अधिकतरो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि वनचरको अनिकेतवासी, तदा बोधिसत्तो सकुणो अहोसि तित्तिरो मन्तज्झायी। तदा पि सो वनचरको तं सकुणं घातेसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव जातिया अधिकतरो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो कलाबु नाम कासिराजा अहोसि, तदा बोधिसत्तो तापसो अहोसि खन्तिवादी। तदा सो राजा तस्स तापसस्स कुद्धो हत्थपादे वंसकळीरे विय छेदापेसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव अधिकतरो जातिया च यसेन च !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि वनचरो, तदा बोधिसत्तो नन्दियो नाम वानरिन्दो अहोसि। तदापि सो वनचरो तं वानरिन्दं घातेसि सद्धिं मातरा कनिट्ठभातिकेन च। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव अधिकतरो जातिया !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि अचेलको कारम्भियो नाम, तदा बोधिसत्तो पण्डरको नाम नागराजा अहोसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव अधिकतरो जातिया !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि पवने जटिलको, तदा बोधिसत्तो तच्छको नाम महासूकरो अहोसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव जातिया अधिकतरो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो चेतीसु सूरपरिचरो नाम राजा अहोसि उपरिपुरिसमत्ते गगने वेहासङ्गमो, तदा बोधिसत्तो कपिलो नाम ब्राह्मणो अहोसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव अधिकतरो जातिया च यसेन च !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि सामो नाम, तदा बोधिसत्तो रुरु नाम मिगराजा अहोसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव जातिया अधिकतरो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि लुद्दको पवनचरो, तदा बोधिसत्तो हत्थिनागो अहोसि। सो लुद्दको तस्स हत्थिनागस्स सत्तक्खत्तुं दन्ते छिन्दित्वा हरि। तत्थ पि नाम देवदत्तो येव योनिया अधिकतरो !

"पुन च परं यदा देवदत्तो सिंगालो अहोसि खत्तियधम्मो, सो यावता जम्बु-दीपे पदेसराजानो ते सब्बे अनुयुत्ते अकासि, तदा बोधिसत्तो विधुरो नाम पण्डितो अहोसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव यसेन अधिकतरो!

"पुन च परं यदा देवदत्तो हत्थिनागो हुत्वा लटुकिकाय सकुणिकाय पुत्तके घातेसि, तदा बोधिसत्तो पि हत्थिनागो अहोसि यूथपति। तत्थ ताव उभो पि ते समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो यक्खो अहोसि अधम्मो नाम, तदा बोधिसत्तो पि यक्खो अहोसि धम्मो नाम। तत्थ पि ताव उभो पि समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो नाविको अहोसि पञ्चन्नं कुसलानं इस्सरो, तदा बोधिसत्तो पि नाविको अहोसि पञ्चन्नं कुलसत्तानं इस्सरो। तत्थ पि ताव उभो पि समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो सत्थवाहो अहोसि पञ्चन्नं सकटसतानं इस्सरो, तदा बोधिसत्तो पि सत्थवाहो अहोसि पञ्चन्नं सकटसतानं इस्सरो। तत्थ पि ताव उभो पि समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो साखो नाम मिगराजा अहोसि, तदा बोधिसत्तो पि निग्रोधो नाम मिगराजा अहोसि। तत्थ पि ताव उभो पि समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो साखो नाम सेनापति अहोसि, तदा बोधिसत्तो पि निग्रोधो नाम राजा अहोसि। तत्थ पि नाम उभो पि समसमा अहेसुं!

"पुन च परं यदा देवदत्तो खण्डहालो नाम ब्राह्मणो अहोसि, तदा बोधिसत्तो चन्दो नाम राजकुमारो अहोसि। तदा सो खण्डहालो येव अधिकतरो!

"पुन च परं यदा देवदत्तो ब्रह्मदत्तो नाम राजा अहोसि, तदा बोधिसत्तो तस्स पुत्तो महापदुमो नाम कुमारो अहोसि। तदा सो राजा सकपुत्तं चोरप्पपाते खिपापेसि। यतो कुतो चि पिता व पुत्तानं अधिकतरो होति विसिट्ठो ति तत्थ पि ताव देवदत्तो येव अधिकतरो!

"पुन च परं यदा देवदत्तो महापतापो नाम राजा अहोसि, तदा बोधिसत्तो तस्स पुत्तो धम्मपालो नाम कुमारो अहोसि। तदा सो राजा सकपुत्तस्स हत्थपादे सीसं च छेदापेसि। तत्थ पि ताव देवदत्तो येव उत्तरो अधिकतरो!

"अज्जेतरहि उभो पि कुले जायिंसु। बोधिसत्तो बुद्धो अहोसि सब्बञ्ञू लोकनायको, देवदत्तो तस्स देवातिदेवस्स सासने पब्बजित्वा इद्धिं निब्बत्तेत्वा बुद्धालयं अकासि। किन्नु, भन्ते नागसेन, यं मया भणितं तं सब्बं तथं उदाहु वितथं" ति?

१४. "यं त्वं, महाराज, बहुविधं कारणं ओतारेसि सब्बं तं तथेव नो अञ्ञथा" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, कण्हो पि सुक्को पि समसमगतिका होन्ति, तेन हि कुसलं पि अकुसलं पि समसमविपाकं होती" ति। "नहि, महाराज, कुसलं पि अकुसलं पि समसमविपाकं होति। नहि, महाराज, देवदत्तो सब्बजनेहि पटिविरुद्धो, यो तस्स बोधिसत्तेन पटिविरोधो सो तस्मिं तस्मिं येव भवे पच्चति, फलं देति। देवदत्तो पि, महाराज, इस्सरिये ठितो जनपदेसु आरक्खं देति, सेतुं सभं पुञ्ञसालं कारेति, समणब्राह्मणानं कपणद्धिकवणिब्बकानं नाथानाथानं यथापणिहितं दानं देति। तस्स सो विपाकेन भवे सम्पत्तियो पटिलभति। कस्सेतं, महाराज, सक्का वत्तुं—'विना दानेन दमेन संयमेन उपोसथकम्मेन सम्पत्तिं अनुभविस्सती' ति !

"यं पन त्वं, महाराज, एवं वदेसि—'देवदत्तो च बोधिसत्तो च एकतो अनुपरिवत्तन्ती' ति, सो न जातिसतस्स अच्चयेन समागमो अहोसि, न जातिसहस्सस्स, न जातिसतसहस्सस्स अच्चयेन, कदाचि करहचि बहूनं अहोरत्तानं अच्चयेन समागमो अहोसि।

"यं पनेतं, महाराज, भगवता काणकच्छपोपमं उपदस्सितं मनुस्सत्तप्पटिलाभाय, तथूपमं, महाराज, इमेसं समागमं धारेहि।

"न, महाराज, बोधिसत्तस्स देवदत्तेनेव सद्धिं समागमो अहोसि, थेरो पि, महाराज' सारिपुत्तो अनेकेसु जातिसतसहस्सेसु बोधिसत्तस्स पिता अहोसि, महापिता" चुल्लपिता…भाता… पुत्तो…भागिनेय्यो…मित्तो अहोसि।

"बोधिसत्तो पि, महाराज, अनेकेसु जातिसतसहस्सेसु थेरस्स सारिपुत्तस्स पिता अहोसि, महापिता…चुल्लपिता" भाता…पुत्तो…भागिनेय्यो…मित्तो अहोसि। सब्बे पि महाराज, सत्तनिकायपरियापन्ना संसारसोतमनुगता संसारसोतेन वुय्हन्ता अप्पियेहि पि पियेहि पि समागच्छन्ति। यथा, महाराज, उदकं सोतेन वुय्हमानं सुचिअसुचिकल्याणपापकेन समागच्छति; एवमेव खो, महाराज, सब्बे पि सत्तनिकायपरियापन्ना संसारसोतमनुगता संसारसोतेन वुय्हन्ता अप्पियेहि पि पियेहि पि समागच्छन्ति। देवदत्तो, महाराज, यक्खो समानो अत्तना अधम्मो परे अधम्मे नियोजेत्वा सत्तपञ्ञासवस्सकोटियो सट्ठिं च वस्ससतसहस्सानि महानिरये पच्चि। बोधिसत्तो पि, महाराज, यक्खो समानो अत्तना धम्मो परे धम्मे नियोजेत्वा सत्तपञ्ञासवस्सकोटियो सट्ठिं च वस्ससतसहस्सानि सग्गे मोदि सब्बकामसमङ्गी। अपि च, महाराज, देवदत्तो इमस्मिं भवे बुद्धं अनासादनीयमासादयित्वा समग्गं च सङ्घं भिन्दित्वा पथविं पाविसि। तथागतो बुज्झित्वा सब्बधम्मे परिनिब्बुतो उपधिसङ्खये" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

८. अमरादेवीपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'सचे लभेथ खणं वा रहो वा, निमन्तकं वा पि लभेथ तादिसं।

सब्बा व इत्थी कयिरुं नु पापं, अञ्ञं अलद्धा पीठसप्पिना सद्धिं' ति॥

"पुन च कथीयति— 'महोसधस्स भरिया अमरा नाम इत्थी गामके ठपिता पवुत्थपतिका रहो निसिन्ना विवित्ता राजप्पटिसमं सामिकं करित्वा सहस्सेन निमन्तियमाना पापं नाकासी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'सचे …पे०… सद्धिं' ति, तेन हि 'महोसधस्स भरिया…पे०…नाकासी' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि महोसधस्स भरिया…पे०…नाकासि, तेन हि—'सचे…पे०… सद्धिं' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति?

१६. "भासितं पेतं महाराज, भगवता—'सचे…पे०…सद्धिं' ति। कथीयति च— 'महोसधस्स भरिया…पे०…नाकासी' ति। करेय्य सा, महाराज, इत्थी सहस्सं लभमाना तादिसेन पुरिसेन सद्धिं पापकम्मं, न सा करेय्य, सचे खणं वा रहो वा निमन्तकं वा पि तादिसं लभेय्य। विचिनन्ती सा, महाराज, अमरा इत्थी न अद्दसा खणं वा रहो निमन्तकं वा पि तादिसं।

"इध लोके गरहभया खणं न पस्सि, परलोके निरयभया खणं न पस्सि, 'कटुकविपाकं पापं' ति खणं न पस्सि, पियं न मुञ्चितुकामा खणं न पस्सि, सामिकस्स गरुकताय खणं न पस्सि, धम्मं अपचायन्ती खणं न पस्सि, अनरियं गरहन्ती खणं न पस्सि, किरियं न भिन्दितुकामा खणं न पस्सि। एवरूपेहि बहूहि कारणेहि खणं न पस्सि।

रहो पि सा लोके विचिनित्वा न पस्सन्ती पापं नाकासि। सचे सा मनुस्सेहि रहो लभेय्य, अथ अमनुस्सेहि रहो न लभेय्य। सचे अमनुस्सेहि रहो लभेय्य, अथ परचित्तविदूहि पब्बजितेहि रहो न लभेय्य। सचे परचित्तविदूहि पब्बजितेहि रहो लभेय्य, अथ परचित्तविदूनीहि देवताहि रहो न लभेय्य। सचे परचित्तविदूनीहि देवताहि रहो लभेय्य, अथ अत्तना व पापेहि रहो न लभेय्य। सचे अत्तना व पापेहि रहो लभेय्य, अथ अधम्मेन रहो न लभेय्य। एवरूपेहि बहुविधेहि कारणेहि रहो अलभित्वा पापं नाकासि।

निमन्तकं पि सा लोके विचिनित्वा तादिसं अलभन्ती पापं नाकासि। महोसधो, महाराज, पण्डितो अट्ठवीसतिया अङ्गेहि समन्नागतो। कतमेहि अट्ठवीसतिया अङ्गेहि समन्नागतो? महोसधो, महाराज, सूरो, हिरिमा,

ओत्तप्पी, सपक्खो, मित्तसम्पन्नो, खमो, सीलवा, सच्चवादी, सोचेय्यसम्पन्नो, अक्कोधनो, अनतिमानी, अनुसूय्यको, वीरियवा, आयूहको, सङ्गाहको, संविभागी, सखिलो, निवातवुत्ति, सण्हो, असठो, अमायावी, अतिबुद्धिसम्पन्नो, कित्तिमा, विज्जासम्पन्नो, हितेसी उपनिस्सितानं, पत्थितो सब्बजनस्स, धनवा, यसवा। महोसधो, महाराज, पण्डितो इमेहि अट्ठवीसतिया अङ्गेहि समन्नागतो। सो अञ्ञं तादिसं निमन्तकं अलभित्वा पापं नाकासी" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

९. अरहन्तअभायनपञ्हो

१७. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'विगतभयसन्तासा अरहन्तो' ति। पुन च नगरे राजगहे धनपालकं हत्थिं भगवति ओपतन्तं दिस्वा पञ्च खीणासवसतानि परिच्चजित्वा जिनवरं पक्कन्तानि दिसाविदिसं एकं ठपेत्वा थेरं आनन्दं। किं नु खो, भन्ते नागसेन, ते अरहन्तो भया पक्कन्ता 'पञ्ञायिस्सति सकेन कम्मेना' ति दसबलं पातेतुकामा पक्कन्ता, उदाहु तथागतस्स अतुलं विपुलमसमं पाटिहारियं दट्ठुकामा पक्कन्ता? यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'विगतभयसन्तासा अरहन्तो' ति, तेन हि—'नगरे···पे०···आनन्दं' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि नगरे राजगहे धनपालकं हत्थिं भगवति ओपतन्तं दिस्वा पञ्चखीणासवसतानि परिच्चजित्वा जिनवरं पक्कन्तानि दिसाविदिसं एकं ठपेत्वा थेरं आनन्दं, तेन हि–'विगतभयसन्तासा अरहन्तो' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति?

१८. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'विगतभयसन्तासा अरहन्तो' ति। 'नगरे च राजगहे धनपालकं हत्थिं भगवति ओपतन्तं दिस्वा पञ्च खीणासवसतानि परिच्चजित्वा जिनवरं पक्कन्तानि दिसाविदिसं एकं ठपेत्वा थेरं आनन्दं'। तं च पन न भया, नापि भगवन्तं पातेतुकामताय।

"येन पन, महाराज, हेतुना अरहन्तो भायेय्युं तसेय्युं वा, सो हेतु अरहन्तानं समुच्छिन्नो, तस्मा विगतभयसन्तासा अरहन्तो। भायति नु, महाराज, महापथवी खणन्ते पि भिन्दन्ते पि समुद्दपब्बतगिरिसिखरे" ति? "नहि, भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति? "नत्थि, भन्ते, महापथविया सो हेतु येन हेतुना महापथवी भायेय्य वा तसेय्य वा" ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि अरहन्तानं सो हेतु येन हेतुना अरहन्तो भायेय्युं वा तसेय्युं वा।

"भायति नु, महाराज, गिरिसिखरं छिन्दन्ते वा भिन्दन्ते वा पतन्ते वा अग्गिना दहन्ते वा" ति? "न हि भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति?

"नत्थि, भन्ते, गिरिसिखरस्स सो हेतु येन हेतुना गिरिसिखरं भायेय्य वा तसेय्य वा"ति। "एवमेव खो, महाराज, नत्थि अरहन्तानं सो हेतु येन हेतुना अरहन्तो भायेय्युं वा।

"यदि पि, महाराज, लोकधातुसतसहस्सेसु ये केचि सत्तनिकायपरियापन्ना सब्बे पि ते सत्तिहत्था एकं अरहन्तं उपधावित्वा तासेय्युं, न भवेय्य अरहतो चित्तस्स किञ्चि अञ्ञथत्तं। किं कारणं ? अट्ठानमनवकासताय।

अपि च, महाराज, तेसं खीणासवानं एवं चेतोपरिवितक्को अहोसि—'अज्ज नरवरपवरे जिनवसभे नगरवरमनुप्पविट्ठे वीथिया धनपालको हत्थी आपतिस्सति, अयं असंसयं अतिदेवदेवं उपट्ठाको न परिच्चजिस्सति। यदि मयं सब्बे पि भगवन्तं न परिच्चजिस्साम, आनन्दस्स गुणो पाकटो न भविस्सति, न हेव च तथागतं समुपगमिस्सति हत्थिनागो, हन्द ! मयं अपगच्छाम, एवमिदं महतो जनकायस्स किलेसबन्धनमोक्खो भविस्सति, आनन्दस्स च गुणो पाकटो भविस्सती' ति। एवं ते अरहन्तो आनिसंसं दिस्वा दिसाविदिसं पक्कन्ता" ति।

"सुविभत्तो, भन्ते नागसेन, पञ्हो। एवमेतं नत्थि अरहन्तानं भयं वा सन्तासो वा, आनिसंसं दिस्वा अरहन्तो पक्कन्ता दिसाविदिसं" ति।

१०. बुद्धसब्बञ्ञुभावपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'तथागतो सब्बञ्ञू' ति। पुन च भणथ—'सारिपुत्तमोग्गलानप्पमुखे भिक्खुसङ्घे पणामिते चातुमेय्यका च सक्या ब्रह्मा च सहम्पति बीजूपमं च वच्छतरुणूपमं च उपदस्सेत्वा भगवतं पसादेसुं निज्झत्तं अकंसू' ति। किन्नु खो, भन्ते नागसेन, अञ्ञाता ता उपमा तथागतस्स, याहि तथागतो उपमाहि ओरतो खमितो उपसन्तो निज्झत्तिं गतो। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतस्स ता उपमा अञ्ञाता, तेन हि बुद्धो असब्बञ्ञू। यदि ञाता, तेन हि ओकस्स पसय्ह वीमंसापेक्खो पणामेसि, तेन हि तस्स अकारुञ्ञता सम्भवति। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२०. "सब्बञ्ञू, महाराज, तथागतो, ताहि च उपमाहि भगवा पसन्नो ओरतो खमितो उपसन्तो निज्झत्तिं गतो। धम्मसामी, महाराज, तथागतो, तथागतप्पवेदितेहेव ते ओपम्मेहि तथागतं आराधेसुं तोसेसुं पसादेसुं, तेसं च तथागतो पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदि।

"यथा, महाराज, इत्थी सामिकस्स सन्तकेनेव धनेन सामिकं आराधेति तोसेति पसादेति, तं च सामिको 'साधू' ति अब्भनुमोदति; एवमेव खो,

महाराज, चातुमेय्यका च सक्या ब्रह्मा च सहम्पति तथागतप्पवेदितेहेव ओपम्मेहि तथागतं आराधेसुं तोसेसुं पसादेसुं, तेसं च तथागतो पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदि।

"यथा वा पन, महाराज, कप्पको रञ्ञो सन्तकेनेव सुवण्णफणकेन रञ्ञो उत्तमङ्गं पसाधयमानो राजानं आराधेति तोसेति पसादेति, तस्स च राजा पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदति, यथिच्छितकमनुप्पदेति; एवमेव खो, महाराज, चातुमेय्यका च सक्या ब्रह्मा च सहम्पति तथागतप्पवेदितेहेव ओपम्मेहि तथागतं आराधेसुं पसादेसुं, तेसं च तथागतो पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदि।

"यथा वा पन, महाराज, सद्धिविहारिको उपज्झायाभतं पिण्डपातं गहेत्वा उपनामेन्तो उपज्झायं आराधेति तोसेति पसादेति, तं च उपज्झायो पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदति; एवमेव खो महाराज, चातुमेय्यका च सक्या ब्रह्मा च सहम्पति तथागतप्पवेदितेहेव ओपम्मेहि तथागतं आराधेसुं पसादेसुं, तेसं च तथागतो पसन्नो 'साधू' ति अब्भनुमोदित्वा सब्बदुखपरिमुत्तिया धम्मं देसेसी" ति।

साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ति।

(इमस्मिं वग्गे दस पञ्हा) चतुत्थो सब्बञ्ञुतञाणवग्गो निट्ठितो।

५. सन्थववग्गो

१. सन्थवपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'सन्थवतो भयं जातं, निकेता जायते रजो।
अनिकेतमसन्थवं, एतं वे मुनिदस्सनं' ति॥

पुन च भगवता भणितं—

'विहारे कारये रम्मे, वासयेत्थ बहुस्सुते' ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, तथागतेन भणितं—'सन्थवतो…पे०…मुनिदस्सनं' ति। तेन हि 'विहारे…पे०…बहुस्सुते' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'विहारे…पे०…बहुस्सुते' ति। तेन हि 'सन्थवतो…पे०…दस्सनं' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति?

२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'सन्थवतो…पे०…दस्सनं' ति, भणितं च—'विहारे…पे०…बहुस्सुते' ति। यं, महाराज, भणितं—'सन्थवतो…पे०…दस्सनं' ति तं सभाववचनं असेसवचनं निस्सेसवचनं निप्परियायवचनं समणानुच्छवं समणसारुप्पं समणपटिरूपं समणारहं समणगोचरं समणपटिपदा

समणपटिपत्ति। यथा, महाराज, आरञ्ञको मिगो अरञ्ञे पवने चरमानो निरालयो अनिकेतो यथिच्छकं सयति; एवमेव खो, महाराज, भिक्खुना—'सन्थवतो···पे०···दस्सनं' ति चिन्तेतब्बं।

"यं पन, महाराज, भगवता भणितं—'विहारे···पे०···बहुस्सुते' ति, तं द्वे अत्थवसे सम्पस्समानेन भगवता भणितं। कतमे द्वे? विहारदानं नाम सब्बबुद्धेहि वण्णितं अनुमतं थोमितं पसत्थं, तं ते विहारदानं दत्वा जातिजरामरणा परिमुच्चिस्सन्ती ति, अयं ताव पठमो आनिसंसो विहारदाने। पुन च परं विहारे विज्जमाने भिक्खुनियो व्यत्तसङ्केता भविस्सन्ति, सुलभं दस्सनं दस्सनकामानं। अनिकेते दुद्दस्सना भविस्सन्ती ति, अयं दुतियो आनिसंसो विहारदाने। इमे द्वे अत्थवसे सम्पस्समानेन भगवता भणितं 'विहारे···पे०···बहुस्सुते' ति। न तत्थ बुद्धपुत्तेन आलयो करणीयो निकेते ति।

"साधु भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

२. उदरसंयतपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भवता—

'उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य, उदरे संयतो सिया' ति।

"पुन च भगवता भणितं—'अहं खो पनुदायि, अप्पेकदा इमिना पत्तेन समतित्तिकं पि भुञ्जामि, भिय्योपि भुञ्जामी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'उत्तिट्ठे···पे०···सिया' ति, तेन हि—'अहं खो···पे०···भुञ्जामी' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'अहं खो···पे०···भुञ्जामी' ति, तेन हि—'उत्तिट्ठे···पे०···सिया' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति?

४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—उत्तिट्ठे···पे०···सिया' ति। भणितं च—अहं खो···पे०···भुञ्जामी' ति। यं, महाराज, भगवता भणितं—'उत्तिट्ठे···पे०···सिया' ति तं सभाववचनं असेसवचनं निस्सेसवचनं निप्परियायवचनं भूतवचनं तच्छवचनं याथाववचनं अविपरीतवचनं इसिवचनं मुनिवचनं भगवन्तवचनं पच्चेकबुद्धवचनं जिनवचनं सब्बञ्ञुवचनं, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स वचनं।

"उदरे असंयतो, महाराज, पाणं पि हनति, अदिन्नं पि आदियति, परदारं पि गच्छति, मुसा पि भणति, मज्जं पि पिबति, मातरं पि जीविता वोरोपेति, पितरं पि जीविता वोरोपेति, अरहन्तं पि जीविता वोरोपेति, सङ्घं पि भिन्दति, दुट्ठेन चित्तेन तथागतस्स लोहितं पि उप्पादेति। ननु, महाराज, देवदत्तो उदरे असंयतो सङ्घं भिन्दित्वा कप्पट्ठियं कम्मं आयूहि। एवरूपानि महाराज,

अञ्ञानि पि बहुविधानि कारणानि दिस्वा भगवता भणितं—'उत्तिट्ठे…पे०… सिया' ति ।

उदरे, संयतो, महाराज, चतुसच्चाभिसमयं अभिसमेति, चत्तारि सामञ्ञफलानि सच्छिकरोति, चतूसु पटिसम्भिदासु, अट्ठसु समापत्तिसु, छसु च अभिञ्ञासु, वसीभावं पापुणाति, केवलं च समणधम्मं पूरेति । ननु, महाराज, सुकपोतको उदरे संयतो हुत्वा याव तावतिंसभवनं कम्पेत्वा देवानमिन्दं उपट्ठानमुपनेसि । एवरूपानि, महाराज, अञ्ञानि पि बहुविधानि कारणानि दिस्वा भगवता भणितं—'उत्तिट्ठे…पे०…सिया' ति ।

यं पन, महाराज, भगवता भणितं—'अहं खो…पे०…भुञ्जामी' ति, तं कतकिच्चेन निट्ठितकिरियेन सिद्धत्थेन वुसितवोसानेन निरावरणेन सब्बञ्ञुना सयम्भुना तथागतेन अत्तानं उपादाय भणितं ।

"यथा, महाराज, वन्तस्स विरित्तस्स अनुवासितस्स आतुरस्स सप्पायकिरिया इच्छितब्बा होति; एवमेव खो, महाराज, संकिलेसस्स अदिट्ठसच्चस्स उदरे संयमो करणीयो होति । यथा, महाराज, मणिरतनस्स सप्पभासस्स जातिमन्तस्स अभिजातिपरिसुद्धस्स मज्जननिघंसनपरिसोधनेन करणीयं न होति; एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स बुद्धविसये पारमिं गतस्स किरियाकरणेसु आवरणं न होती" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

३. बुद्धअप्पाबाधपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो याचयोगो सदा पयतपाणि अन्तिमदेहधरो अनुत्तरो भिसक्को सल्लकत्तो' ति । पुन च भणितं भगवता—'एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं अप्पाबाधानं यदिदं बाकुलो' ति । भगवतो च सरीरे बहुक्खत्तु आबाधो उप्पन्नो दिस्सति । यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो अनुत्तरो, तेन हि—एतदग्गं…पे०…बाकुलो' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि थेरो बाकुलो अप्पाबाधानं अग्गो, तेन हि—'अहमस्मि…पे०…सल्लकत्तो' ति तं पि वचनं मिच्छा । अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

६. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'अहमस्मि…पे०…सल्लकत्तो' ति । भणितं च—'एतदग्गं…पे०…बाकुलो' ति । तं च पन बाहिरानं आगमानं अधिगमानं परियत्तीनं अत्तनि विज्जमानतं सन्धाय भासितं ।

"सन्ति खो पन, महाराज, भगवतो सावका ठानचङ्कमिका, ते ठानेन चङ्कमेन दिवारत्तिं वीतिनामेन्ति । भगवा पन, महाराज, ठानेन चङ्कमेन

निसज्जाय सयनेन दिवारत्तिं वीतिनामेति, ये ते, महाराज, भिक्खू ठानचङ्कमिका ते तेन अङ्गेन अतिरेका।

"सन्ति खो पन, महाराज, भगवतो सावका एकासनिका, ते जीवितहेतु पि दुतियं भोजनं न भुञ्जन्ति, भगवा पन, महाराज, दुतियं पि याव ततियं पि भोजनं भुञ्जति।

"ये ते, महाराज, भिक्खू एकासनिका ते तेन अङ्गेन अतिरेका। अनेकविधानि, महाराज, तानि कारणानि तेसं तेसं तं तं सन्धाय भणितानि। भगवा पन, महाराज, अनुत्तरो सीलेन समाधिना पञ्ञाय विमुत्तिया विमुत्तिञाणदस्सनेन, दसहि वेसारज्जेहि अट्ठारसहि बुद्धधम्मेहि छहि असाधारणेहि ञाणेहि। केवले च बुद्धविसये तं सन्धाय भणितं—'अहमस्मि···पे०····सल्लकत्तो' ति।

"इध, महाराज, मनुस्सेसु एको जातिमा होति, एको धनवा, एको विज्जवा, एको सिप्पवा, एको सूरो, एको विचक्खणो, सब्बे पेते अभिभविय राजा येव तेसं उत्तमो होति; एवमेव खो, महाराज, भगवा सब्बसत्तानं अग्गो जेट्ठो सेट्ठो।

"यं पन आयस्मा बाकुलो अप्पाबाधो अहोसि तं अभिनीहारवसेन। सो हि, महाराज, अनोमदस्सिस्स भगवतो उदरवाताबाधे उप्पन्ने विपस्सिस्स च भगवतो अट्ठसट्ठिया च भिक्खुसतसहस्सानं तिणपुप्फकरोगे उप्पन्ने सयं तापसो समानो नानाभेसज्जेहि तं ब्याधिं अपनेत्वा अप्पाबाधतं पत्तो, भणितो च—'एतदग्गं····पे०···बाकुलो' ति।

"भगवतो, महाराज, ब्याधिम्हि उप्पज्जन्ते पि अनुप्पज्जन्ते पि, धुतङ्गे आदियन्ते पि अनादियन्ते पि, नत्थि भगवता सदिसो कोचि सत्तो। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकाय**वरलञ्छके—'यावता, भिक्खवे, सत्ता अपदा वा द्विपदा वा चतुप्पदा वा बहुप्पदा रूपिनो वा वा अरूपिनो वा सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो वा नेवसञ्ञिनासञ्ञिनो वा तथागतो तेसं अग्गमक्खायति अरहं सम्मासम्बुद्धो" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ति।

४. मग्गुप्पादनपञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'तथागतो, भिक्खवे, अरहं सम्मासम्बुद्धो अनुप्पन्नस्स उप्पादेता' ति। पुन च भणितं—'अद्दसं ख्वाहं, भिक्खवे, पुराणं मग्गं पुराणं अञ्जसं पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयातं' ति। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो अनुप्पन्नस्स मग्गस्स उप्पादेता, तेन हि—'अद्दसं ख्वाहं··· पे०···अनुयातं' ति यं वचनं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'अद्दसा ख्वाहं···पे०····अनुयातं' ति, तेन हि—'तथागतो पे०···उप्पादेता' ति तं पि

वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

८. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'तथागतो···पे०····उप्पादेता' ति। भणितं च 'अद्दसं ख्वाहं···पे०···अनुयातं' ति। तं द्वयं पि सभाववचनमेव। पुब्बकानं, महाराज, तथागतानं अन्तरधानेन असति अनुसासके मग्गो अन्तरधायि, सो तं तथागतो मग्गं लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं पिहितं पटिच्छन्नं असञ्चरणं पञ्ञाचक्खुना सम्पस्समानो अद्दस पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयातं, तंकारणा आह—'अद्दसा ख्वाहं ···पे०···अनुयातं' ति।

"पुब्बकानं, महाराज, तथागतानं अन्तरधानेन असति अनुसासके लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं मग्गं यं दानि तथागतो सञ्चरणं अकासि, तंकारणा आह—तथागतो···पे०···उप्पादेता' ति।

"इध, महाराज, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स अन्तरधानेन मणिरतनं गिरिसिखरन्तरे निलीयति, अपरस्स चक्कवत्तिस्स सम्मापटिपत्तिया उपगच्छति। अपि नु खो, महाराज, मणिरतनं तस्स पाकटं' ति ? "न भन्ते; पाकतिकं येव तं, भन्ते, मणिरतनं, तेन पन निब्बत्तितं' ति। "एवमेव खो, महाराज, पाकतिकं पुब्बकेहि तथागतेहि अनुचिण्णं अट्ठङ्गिकं सिवं मग्गं असति अनुसासके लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं पिहितं पटिच्छन्नं असञ्चरणं भगवा पञ्ञाचक्खुना सम्पस्समानो उप्पादेसि सञ्चरणं अकासि, तंकारणा आह—'तथागतो···पे०····उप्पादेता' ति।

"यथा वा पन, महाराज, सन्तं येव पुत्तं योनिया जनयित्वा माता जनिका' ति वुच्चति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो सन्तं येव मग्गं लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं पिहितं पटिच्छन्नं असञ्चरणं पञ्ञाचक्खुना सम्पस्समानो उप्पादेसि सञ्चरणं अकासि, तंकारणा आह—'तथागतो···पे०···उप्पादेता' ति।

"यथा वा पन, महाराज, कोचि पुरिसो यं किञ्चि नट्ठं पस्सति, तेन तं भण्डं निब्बत्तितं' ति जनो वोहरति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो सन्तं येव मग्गं लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं पिहितं पटिच्छन्नं असञ्चरणं पञ्ञाचक्खुना सम्पस्समानो उप्पादेसि सञ्चरणं अकासि। तंकारणा आह—'तथागतो····पे०··· उप्पादेता' ति।

"यथा वा पन, महाराज, कोचि पुरिसो वनं सोधेत्वा भूमिं नीहरति, 'तस्स सा भूमी' ति जनो वोहरति, न चेसा भूमि तेन पवत्तिता, तं भूमिं कारणं कत्वा भूमिसामिको नाम होति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो सन्तं येव मग्गं लुग्गं पलुग्गं गूळ्हं पिहितं पटिच्छन्नं असञ्चरणं पञ्ञाय सम्पस्समानो उप्पादेसि सञ्चरणं अकासि। तंकारणा आह—'तथागतो···· पे०····उप्पादेता' ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

५. बुद्धअविहेठकपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'पुब्बेवाहं मनुस्सभूतो समानो सत्तानं अविहेठकजातिको अहोसिं' ति । पुन च भणितं—'लोमसकस्सपो नाम इसि समानो अनेकसते पाणे घातयित्वा वाजपेय्यं महायञ्ञं यजी' ति । यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'पुब्बेवाहं···पे०···'अहोसिं' ति, तेन हि—'लोमसकस्सपेन इसिना अनेकसते पाणे घातयित्वा वाजपेय्यं महायञ्ञं यजितं' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि लोमसकस्सपेन इसिना अनेकसते पाणे घातयित्वा वाजपेय्यं महायञ्ञं यजितं, तेन हि—'पुब्बेवाहं···पे०··· अहोसिं' ति, तं पि वचनं मिच्छा । अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो' ति ?

१०. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'पुब्बेवाहं···पे०···अहोसिं' ति । 'लोमसकस्सपेन इसिना अनेकसते पाणे घातयित्वा वाजपेय्यं महायञ्ञं यजितं, तं च पन रागवसेन विसञ्ञिना, न सचेतनेना' ति ।

"अट्ठिमे, भन्ते नागसेन, पुग्गला पाणं हनन्ति, कतमे अट्ठ ? रत्तो रागवसेन पाणं हनति, दुट्ठो दोसवसेन पाणं हनति, मूळ्हो मोहवसेन··· मानी नानवसेन···लुद्धो लोभवसेन···अकिञ्चनो जीविकत्थाय···बालो हस्सवसेन···राजा विजयवसेन पाणं हनति । इमे खो, भन्ते नागसेन, अट्ठ पुग्गला पाणं हनन्ति । पाकतिकं येव, भन्ते नागसेन, बोधिसत्तेन कतं ति ? "न, महाराज, पाकतिकं बोधिसत्तेन कतं । यदि, महाराज, बोधिसत्तो पकतिभावेन ओणमेय्य महायञ्ञं यजितुं, नयिमं गाथं भणेय्य—

'ससमुद्दपरियायं, महिं सागरकुण्डलं ।
न इच्छे सह निन्दाय, एवं, सय्ह, विजानही' ति ॥

"एवंवादी, महाराज, बोधिसत्तो सह दस्सनेन चन्दवतिया राजकञ्ञाय विसञ्ञी अहोसि खित्तचित्तो रत्तो विसञ्ञिभूतो आकुलाकुलो तुरिततुरितो तेन विक्खित्तभन्तलुळितचित्तेन महतिमहापसुघातगलरुहिरसञ्चयं वाजपेय्यं महायञ्ञं यजि ।

"यथा, महाराज, उम्मत्तको खित्तचित्तो जलितं पि जातवेदं अक्कमति, कुपितं पि आसीविसं गण्हाति, मत्तं पि हत्थिं उपेति, समुद्दं पि अतीरदस्सी पक्खन्दति, चन्दनिकं पि ओळिगल्लं पि ओमद्दति, कण्टकाधानं पि अभिरूहति, पपाते पि पतति, असुचिं पि भक्खेति, नग्गो पि रथिया चरति, अञ्ञं पि बहुविधं अकिरियं करोति; एवमेव खो, महाराज, बोधिसत्तो सह दस्सनेन

चन्दवतिया राजकञ्ञाय विसञ्ञी अहोसि खित्तचित्तो रत्तो विसञ्ञिभूतो आकुलाकुलो तुरिततुरितो. तेन विक्खित्तभन्तलुठितचित्तेन महतिमहापसुघातगलरुहिरसञ्चयं वाजपेय्यं महायञ्ञं यजि।

"खित्तचित्तेन, महाराज, कतं पापं दिट्ठधम्मे पि न महासावज्जं होति, सम्पराये विपाकेन पि नो तथा।

"इध, महाराज, कोचि उम्मत्तको वज्जमापज्जेय, तस्स तुम्हे किं दण्डं धारेथा" ति ? "को, भन्ते, उम्मत्तस्स दण्डो भविस्सति ! तं मयं पोथापेत्वा नीहरापेम, एसो व तस्स दण्डो" ति। "इति खो, महाराज, उम्मत्तकस्स अपराधे दण्डो पि न भवति, तस्मा उम्मत्तकस्स कतेपि न दोसो भवति, सतेकिच्छो; एवमेव खो, महाराज, लोमसकस्सपो इसि सहदस्सनेन चन्दवतिया राजकञ्ञाय विसञ्ञी अहोसि खित्तचित्तो रत्तो विसञ्ञिभूतो विसटपयातो आकुलाकुलो तुरिततुरितो तेन विक्खित्तभन्तलुळितचित्तेन महतिमहापसुधातगलरुहिरसञ्चयं वाजपेय्यं महायञ्ञं यजि। यदा च पन पकतिचित्तो अहोसि पटिलद्धस्सति, तदा पुनदेव पब्बजित्वा पञ्चाभिञ्ञायो निब्बत्तेत्वा ब्रह्मलोकूपगो अहोसी" ति :

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

६. छद्दन्तजोतिपालारब्भपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'छद्दन्तो नागराजा
'वधिस्समेतं' ति परामसन्तो, कासावमद्दक्खि धजं इसीनं।
दुक्खेन फुट्ठस्सुदपादि सञ्ञा, अरहद्धजो सब्भि अवज्झरूपो' ति ॥

"पुन च भणितं—'जोतिपालमाणवो समानो कस्सपं भगवन्तं अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं मुण्डकवादेन समणकवादेन असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कोसि परिभासी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, बोधिसत्तो तिरच्छानगतो समानो कासावं अभिपूजयि, तेन हि—'जोतिपालेन माणवेन कस्सपो भगवा अरहं सम्मासबुद्धो मुण्डकवादेन समणवादेन असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कुट्ठो परिभासितो' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि जोतिपालेन माणवेन कस्सपो अरहं सम्मासबुद्धो मुण्डकवादेन समणवादेन असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कुट्ठो परिभासितो, तेन हि—'छद्दन्तेन नागराजेन कासावं पूजितं' ति, तं पि वचनं मिच्छा। यदि तिरच्छानगतेन बोधिसत्तेन कक्खळखरकटुकवेदनं वेदयमानेन लुद्दकेन निवत्थं कासावं पूजितं, किं मनुस्सभूतो समानो परिपक्कञाणो परिपक्काय बोधिया कस्सपं भगवन्तं अरहन्तं सम्मासबुद्धं दसबलं लोकनायकं उदितोदितं जलितब्यामोभासं पवरुत्तमं पवररुचिरकासिककासावमभिपारुतं दिस्वा न पूजयि ? अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

१२. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'छद्दन्तो नागराजा वधिस्समेतं ति····पे०····अवज्झरूपो' ति। जोतिपालेन माणवेन कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो समणकवादेन असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कुट्ठो परिभासितो। तं च पन जातिवसेन कुलवसेन। जोतिपालो, महाराज, माणवो अस्सद्धे अप्पसन्ने कुले पच्चाजातो, तस्स मातापितरो भगिनिभातरो दासिदास-चेटकपरिवारकमनुस्सा ब्रह्मदेवता ब्रह्मगरुका, ते 'ब्राह्मणा एव उत्तमा पवरा' ति अवसेसे पब्बजिते गरहन्ति जिगुच्छन्ति, तेसं तं वचनं सुत्वा जोतिपालो माणवो घटीकारेन कुम्भकारेन सत्थारं दस्सनाय पक्कोसितो एवमाह—'किं पन तेन मुण्डकेन समणकेन दिट्ठेना' ति ?

"यथा, महाराज, अमतं विसमासज्ज तित्तकं होति, यथा च सीतुदकं अग्गिमासज्ज उण्हं होति; एवमेव खो, महाराज, जोतिपालो माणवो अस्सद्धे अप्पसन्ने कुले पच्चाजातो, सो कुलवसेन तथागतं अक्कोसि परिभासि।

"यथा, महाराज, जलितपज्जलितो महाअग्गिक्खन्धो सप्पभासो उदकमासज्ज उपहतप्पभातेजो सीतलो काळको भवति परिपक्कनिग्गुण्डिफलसदिसो; एवमेव खो, महाराज, जोतिपालो माणवो पुञ्ञवा सद्धो ञाणविपुलसप्पभासो अस्सद्धे अप्पसन्ने कुले पच्चाजातो, सो कुलवसेन अन्धो हुत्वा तथागतं अक्कोसि परिभासि, उपगन्त्वा च बुद्धगुणमञ्ञाय चेटकभूतो विय अहोसि, जिनसासने पब्बजित्वा अभिञ्ञा च समापत्तियो च निब्बत्तेत्वा ब्रह्मलोकूपगो अहोसी" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

७. घटीकारपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'घटीकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तेमासं आकासच्छदनं अट्ठासि न च देवो अभिवस्सी'ति। पुन च भणितं—'कस्सपस्स तथागतस्स कुटी ओवस्सती'ति। किस्स पन, भन्ते नागसेन, तथागतस्स एवमुस्सन्नकुसलमूलस्स कुटी ओवस्सति, तथागतस्स नाम सो आनुभावो इच्छितब्बो। यदि, भन्ते नागसेन, घटीकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं अनोवस्सं आकासच्छदनं अहोसि, तेन हि 'तथागतस्स कुटी ओवस्सती'ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतस्स कुटी ओवस्सति, तेन हि—'घटीकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं अनोवस्सकं अहोसि आकासच्छदनं' ति तं पि वचनं मिच्छा। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

१४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'घटीकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तेमासं आकासच्छदनं अट्ठासि न च देवोभिवस्सी'ति। भणितं च—

कस्सपस्स तथागतस्स कुटी ओवस्सती' ति । घटीकारो, महाराज, कुम्भकारो सीलवा कल्याणधम्मो उस्सन्नकुसलमूलो अन्धे जिण्णे मातापितरो पोसेति, तस्स असम्मुखा अनापुच्छा येवस्स घरे तिणं हरित्वा भगवतो कुटिं छादेसुं, सो तेन तिणहरणेन अकम्पितं असञ्चलितं सुसण्ठितं विपुलमसमं पीतिं पटिलभि, भिय्यो सोमनस्सं च अतुलं उप्पादेसि—'अहो पन मे भगवा लोकुत्तमो सुविस्सत्थो' ति, तेन तस्स दिट्ठधम्मिको विपाको निब्बत्तो । न हि, महाराज, तथागतो तावतकेन विकारेन चलति ।

"यथा, महाराज, सिनेरु गिरिराजा अनेकसतसहस्सवातसम्पहारेन पि न कम्पति न चलति, महोदधि वरप्पवरसागरो अनेकसतनहुतमहागङ्गासतसहस्सेहि पि न पूरति न विकारमापज्जति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो न तावतकेन विकारेन चलति ।

"यं पन, महाराज, तथागतस्स कुटी ओवस्सति, तं महतो जनकायस्स अनुकम्पाय । द्वेमे, महाराज अत्थवसे सम्पस्समाना तथागता सयंनिम्मितं पच्चयं नप्पटिसेवन्ति—'अयं अग्गदक्खिणेय्यो सत्था ति भगवतो पच्चयं दत्वा देवमनुस्सा सब्बदुग्गतितो परिमुच्चिस्सन्ती' ति, 'पाटिहीरं दस्सेत्वा वुत्तिं परियेसन्ती ति मा अञ्ञे उपवदेय्युं' ति । इमे द्वे अत्थवसे सम्पस्समाना तथागता सयंनिम्मितं पच्चयं न पटिसेवन्ति । यदि, महाराज, सक्को वा तं कुटिं अनोवस्सं करेय्य, ब्रह्मा वा, सयं वा, सावज्जं भवेय्य तं येव कारणं सदोसं सनिग्गहं—'इमे विभूतं कत्वा लोकं सम्मोहेन्ति अधिकतं करोन्ती' ति । तस्मा तं करणं वज्जनीयं । न, महाराज, तथागता वत्थुं याचन्ति, ताय अवत्थुयाचनाय अपरिभासिया भवन्ती" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

८. ब्राह्मणराजवादपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं तथागतेन—'अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो याचयोगो' ति । पुन च भणितं—'राजाहमस्मि, सेला' ति । यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो याचयोगो' ति, तेन हि—'राजाहमस्मि, सेला' ति यं वचनं तं मिच्छा । यदि तथागतेन भणितं—'राजाहमस्मि, सेला' ति, तेन हि—'अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो याचयोगो' ति तं पि वचनं मिच्छा । खत्तियो वा हि भवेय्य ब्राह्मणो वा । नत्थि एकाय जातिया द्वे वण्णा नाम । अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

१६. "भासितं पेतं महाराज, भगवता—'अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो

याचयोगो' ति । पुन च भणितं—'राजाहमस्मि, सेला' ति । तत्थ कारणमत्थि येन कारणेन तथागतो ब्राह्मणो च राजा च होती" ति ।

१७. "किं पन, भन्ते नागसेन, तं कारणं, येन कारणेन तथागतो ब्राह्मणो च राजा च होति" ? "सब्बे, महाराज, पापका अकुसला धम्मा तथागतस्स बाहिता पहीना अपगता ब्यपगता उच्छिन्ना खीणा खयं पत्ता निब्बुता उपसन्ता, तस्मा तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम संसयमनेकंसं विमतिपथ वीतिवत्तो; भगवा पि, महाराज, संसयमनेकंसं विमतिपथं वीतिवत्तो, तेन कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम सब्बभवगतियोनिनिस्सटो मलरजगतविप्पमुत्तो असहायो; भगवा पि, महाराज, सब्बभवगतियोनिनिस्सटो मलरजगतविप्पमुत्तो असहायो, तेन कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम अग्गसेट्ठवरपवरदिब्बविहारबहुलो; भगवा पि, महाराज, अग्गसेट्ठवरपवरदिब्बविहारबहुलो, तेनापि कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम अज्झयन-अज्झापन-दान-पटिग्गहण-दम-संयम-नियम-पुब्बमनुसिट्ठि-पवेणिवंसधरणो, भगवा पि, महाराज, अज्झयनज्झापनदानपटिग्गहणदमसंयमनियमपुब्बजिनाचिण्णमानुसत्थिपवेणिवंसधरणो । तेनापि कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम ब्रहासुखविहारज्झानझायी; भगवा पि, महाराज, ब्रहासुखविहारज्झानझायी, तेनापि कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो नाम सब्बभवाभवगतीसु अभिजातिवत्तितमनुचरितं जानाति; भगवा पि, महाराज, सब्बभवाभवगतीसु अभिजातिवत्तितमनुचरितं जानाति, तेनापि कारणेन तथागतो 'ब्राह्मणो' ति वुच्चति ।

"ब्राह्मणो ति, महाराज, भगवतो नेतं नामं मातरा कतं, न पितरा कतं, न भातरा कतं, न भगिनिया कतं, न मित्तामच्चेहि कतं, न ञातिसालोहितेहि कतं, न समणब्राणेहि कतं, न देवताहि कतं । विमोक्खन्तिकमेतं बुद्धानं भगवन्तानं नामं, बोधिया येव मूले मारसेनं विधमित्वा अतीतानागतपच्चुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे बाहेत्वा सह सब्बञ्ञुतञाणस्स पटिलाभा पटिलद्धपातुभूतसमुप्पन्नमत्ते सच्चिका पञ्ञत्ति, यदिदं 'ब्राह्मणो' ति । तेन कारणेन तथागतो वुच्चति 'ब्राह्मणो' ति ।

१८. "केन पन, भन्ते नागसेन, तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ? "राजा नाम, महाराज, यो कोचि रज्जं कारेति लोकमनुसासति । भगवा पि, महाराज,

दससहस्सिया लोकधातुया धम्मेन रज्जं कारेति, सदेवकं लोकं समारकं सब्रह्मकं सस्समणब्राह्मणिं पजं अनुसासति, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"राजा नाम, महाराज, सब्बजनमनुस्से अभिभवित्वा नन्दयन्तो ञातिसङ्घं, सोचयन्तो अमित्तसङ्घं, महतिमहायससिरिहरं थिरसारदण्डं अनूनसतसलाकालङ्कतं उस्सापेति पण्डरविमलसेतच्छत्तं; भगवा पि, महाराज, सोचयन्तो मारसेनं मिच्छापटिपन्नं, नन्दयन्तो देवमनुस्से सम्मापटिपन्ने दससहस्सिया लोकधातुया महतिमहायससिरिहरं खन्तिथिरसारदण्डं ञाणवरसतसलाकालङ्कतं उस्सापेति अग्गवरविमुत्तिपण्डरविमलसेतच्छत्तं, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"राजा नाम उपगतसम्पत्तजनानं बहूनमभिवन्दनीयो भवति; भगवा पि महाराज, उपगतसम्पत्तदेवमनुस्सानं बहूनमभिवन्दनीयो, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"राजा नाम यस्स कस्सचि आराधकस्स पसीदित्वा वरितं वरं दत्वा कामेन तप्पयति; भगवा पि महाराज, यस्स कस्सचि कायेन वाचाय मनसा आराधकस्स पसीदित्वा, वरितं वरमनुत्तरं सब्बदुखपरिमुत्तिं दत्वा असेसकामवरेन च तप्पयति, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"राजा नाम आणं वीतिक्कमन्तं विगरहति झापेति धंसेति; भगवतो पि, महाराज, सासनवरे आणं अतिक्कमन्तो अलज्जी मङ्कुभावेन ओञातो हीळितो गरहितो भवित्वा वज्जति जिनसासनवरम्हा, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"राजा नाम पुग्गलानं धम्मिकानं राजूनं पवेणिमनुसिट्ठिया धम्माधम्ममनुदीपयित्वा धम्मेन रज्जं कारयमानो पिहयितो पियो पत्थितो भवति जनमनुस्सानं, चिरं राजकुलवंसं ठपयति धम्मगुणबलेन; भगवा पि, महाराज, पुब्बकानं सयम्भूनं पवेणिमनुसिट्ठिया धम्माधम्ममनुदीपयित्वा धम्मेन लोकमनुसासमानो पिहयितो पियो पत्थितो देवमनुस्सानं चिरं सासनं पवत्तेति धम्मगुणबलेन, तेनापि कारणेन तथागतो वुच्चति 'राजा' ति ।

"एवमनेकविधं, महाराज, कारणं, येन कारणेन तथागतो ब्राह्मणो पि भवेय्य, राजा पि भवेय्य, सुनिपुणो भिक्खु कप्पं पि नो नं सम्पादेय्य । किं अतिबहुं भणितेन ! सङ्खित्तं सम्पटिच्छितब्बं" ति ।

"साधु, भन्ते, नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ति ।

९. गाथाभिगीतभोजनकथापञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं, सम्पस्सतं, ब्राह्मण, नेस धम्मो ।
गाथाभिगीतं पनुदन्ति बुद्धा, धम्मे सति ब्राह्मणवुत्तिरेसा' ति ॥

"पुन च भगवा परिसाय धम्मं देसेन्तो कथेन्तो अनुपुब्बिकथं पठमं ताव दानकथं कथेसि, पच्छा सीलकथं। तस्स भगवतो सब्बलोकिस्सरस्स भासितं सुत्वा देवमनुस्सा अभिसङ्खरित्वा दानं देन्ति, तस्स तं उय्योजितं दानं सावका परिभुञ्जन्ति। यदि, भन्ते नागसेन, भगवता भणितं—'गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं' ति, तेन हि—'भगवा दानकथं पठमं कथेती' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि दानकथं पठमं कथेति, तेन हि—'गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं' ति तं पि वचनं मिच्छा। किंकारणं ? यो सो भन्ते, दक्खिणेय्यो गिहीनं पिण्डपातदानस्स विपाकं कथेति, तस्स से धम्मकथं सुत्वा पसन्नचित्ता अपरापरं दानं देन्ति, ये तं दानं परिभुञ्जन्ति सब्बे ते गाथाभिगीतं परिभुञ्जन्ति। अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो निपुणो गम्भीरो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२० "भासितं पेतं, महाराज, भगवता-'गाथाभिगीतं···पे०···वुत्तिरेसा' ति। कथेति च भगवा पठमं दानकथं। तं च पन किरियं सब्बेसं तथागतानं पठमं दानकथाय, तत्थ चित्तं अभिरमापेत्वा पच्छा सीले नियोजेन्ति। यथा, महाराज, तरुणदारकानं पठमं ताव कीळभण्डकानि देन्ति, सेय्यथीदं—वङ्ककं, घटिकं, चिङ्गुळकं पत्ताळ्हकं रथकं, धनुकं, पच्छा ते सके सके कम्मे नियोजेन्ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो पठमं दानकथाय चित्तं अभिरमापेत्वा पच्छा सीले नियोजेति।

"यथा वा पन, महाराज, भिसक्को नाम आतुरानं पठमं ताव चतूहपञ्चाहं तेलं पायेति बलकरणाय सिनेहनाय, पच्छा विरेचेति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो पठमं ताव दानकथाय चित्तं अभिरमापेत्वा पच्छा सीले नियोजेति। दायकानं, महाराज, दानपतीनं चित्तं मुदुकं होति मद्दवं सिनिद्धं। तेन ते दानसेतुसङ्कमेन दाननावाय संसारसागरमनुगच्छन्ति। तस्मा तेसं पठमं कम्मभूमिमनुसासति, न च केनचि विञ्ञत्तिमापज्जती" ति।

२१. "भन्ते नागसेन, 'विञ्ञत्ती' ति यं वदेसि, कति पन ता विञ्ञत्तियो" ति ? "द्वेमा, महाराज, विञ्ञत्तियो—कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति चा ति। तत्थ कायविञ्ञत्ति अत्थि सावज्जा, अत्थि अनवज्जा। अत्थि वचीविञ्ञत्ति सावज्जा, अत्थि अनवज्जा।

"कतमा कायविञ्ञत्ति सावज्जा ? इधेकच्चो भिक्खु कुलानि उपगन्त्वा अनोकासे ठितो ठानं भञ्जति, अयं कायविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञातो होति हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, 'भिन्नाजीवो' त्वेव सङ्खं गच्छति।

"पुन च परं महाराज, इधेकच्चो भिक्खु कुलानि उपगन्त्वा अनोकासे ठितो गलं पणामेत्वा मोरपेक्खितं पेक्खति—'एवं इमे पस्सन्तो' ति, तेन च ते पस्सन्ति। अयं पि कायविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञ्ञातो हीळतो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति।

"पुन च परं, महाराज, इधेकच्चो भिक्खु हनुकाय वा भमुकाय वा अङ्गुट्ठेन वा विञ्ञापेति। अयं पि कायविञ्ञति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञ्ञातो हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति।

"कतमा कायविञ्ञति अनवज्जा? इध भिक्खु कुलानि उपगन्त्वा सतो समाहितो सम्पजानो ठाने पि अट्ठाने पि यथानुसिट्ठिं गन्त्वा ठाने तिट्ठति, दातुकामेसु तिट्ठति, अदातुकामेसु पक्कमति। अयं कायविञ्ञत्ति अनवज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये वण्णितो होति थुतो पसत्थो, सल्लेखिताचारो, परिसुद्धाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति। भासित पेतं महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'न वे याचन्ति अप्पञ्ञा, अरिया गरहन्ति याचनं।
उद्दिस्स अरिया तिट्ठन्ति, एसा अरियान याचना' ति॥ (क)

"कतमा वचीविञ्ञत्ति सावज्जा? इध, महाराज, भिक्खु वाचाय बहुविधं विञ्ञापेति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारं, अयं वचीविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञ्ञातो होति हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, 'भिन्नाजीवो' त्वेव सङ्खं गच्छति।

"पुन च परं, महाराज, इधेकच्चो भिक्खु परेसं सावेन्तो एवं भणति—'इमिना मे अत्थो' ति, ताय च वाचाय परेसं भाविताय तस्स लाभो उप्पज्जति। अयं पि वचीविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञ्ञातो होति हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति।

"पुन च परं, महाराज, इधेकच्चो भिक्खु वचीविप्फारेन परिसाय सावेति—'एवं च एवं च भिक्खूनं दातब्बं' ति, तं च ते वचनं सुत्वा परिकित्तितं अभिहरन्ति। अयं पि वचीविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञ्ञातो होति हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति।

"ननु, महाराज, थेरो पि सारिपुत्तो अत्थङ्गते सुरिये रत्तिभागे गिलानो समानो थेरेन महामोग्गल्लानेन भेसज्जं पुच्छियमानो वाचं भिन्दि, तस्स तेन वचीभेदेन भेसज्जं उप्पज्जि। अथ थेरो सरिपुत्तो—'वचीभेदेन मे इमं भेजज्जं उप्पन्नं, मा मे आजीवो भिज्जी' ति आजीवभेदभया तं भेसज्जं पजहि, न उपजीवि। एवं पि वचीविञ्ञत्ति सावज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया न परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये ओञातो होति हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवो त्वेव सङ्खं गच्छति।

कतमा वचीविञ्ञत्ति अनवज्जा? इध, महाराज, भिक्खु सति पच्चये भेसज्जं विञ्ञापेति ञातिपवारितेसु कुलेसु, अयं वचीविञ्ञत्ति अनवज्जा, ताय च विञ्ञापितं अरिया परिभुञ्जन्ति। सो च पुग्गलो अरियानं समये होति थोमितो पसत्थो, 'परिसुद्धाजीवो' त्वेव सङ्खं गच्छति, अनुमतो तथागतेहि अरहन्तेहि सम्मासम्बुद्धेहि।

"यं पन, महाराज, तथागतो कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स भोजनं पजहि, तं आवेठनविनिवेठनकड्ढननिग्गहप्पटिकम्मेन निब्बत्तं, तस्मा तथागतो तं पिण्डपातं पटिक्खपि, न उपजीवी ति। (ख)

२२. "सब्बकालं, भन्ते नागसेन, तथागते भुञ्जमाने देवता दिब्बं ओजं पत्ते आकिरन्ति, उदाहु सूकरमद्दवे च मधुपायासे चा ति द्वीसु येव पिण्डपातेसु आकिरिंसू" ति?

२३. "सब्बकालं, महाराज, तथागते भुञ्जमाने देवता दिब्बं ओजं गहेत्वा उपतिट्ठित्वा उद्धटुद्धटे आलोपे आकिरन्ति।

"यथा महाराज, रञ्ञो सूदो रञ्ञो भुञ्जन्तस्स सूपं गहेत्वा उपतिट्ठित्वा कबळे कबळे सूपं आकिरति; एवमेव खो, महाराज, सब्बकालं तथागते भुञ्जमाने देवता दिब्बं ओजं गहेत्वा उपतिट्ठित्वा उद्धटुद्धटे आलोपे दिब्बं ओजं आकिरन्ति। वेरञ्जायं पि, महाराज, तथागतस्स सुक्खयवपुलके भुञ्जमानस्स देवता दिब्बेन ओजेन तेमयित्वा तेमयित्वा उपसंहरिंसु, तेन तथागतस्स कायो उपचितो अहोसी" ति।

"लाभा वत, भन्ते नागसेन, तासं देवतानं या तथागतस्स सरीरपटिजग्गने सततं समितं उस्सुक्कमापन्ना। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१०. धम्मदेसनाय अप्पोस्सुकपञ्हो

२४. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'तथागतेन चतूहि च असङ्खेय्येहि कप्पानं कप्पसतसहस्सेन च एत्थन्तरे सब्बञ्ञुतञाणं परिपाचितं महतो जनकायस्स समुद्धरणाया' ति। पुन च—'सब्बञ्ञुतं पत्तस्स अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाया' ति।

"यथा नाम, भन्ते नागसेन, इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा बहुके दिवसे सङ्गामत्थाय उपासनं सिक्खित्वा सम्पत्ते महायुद्धे ओसक्केय्य; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, तथागतेन चतूहि च असङ्ख्येय्येहि कप्पानं कप्पसतसहस्सेन च एत्थन्तरे सब्बञ्ञुतञ्ञाणं परिपाचेत्वा महतो जनकायस्स समुद्धरणाय सब्बञ्ञुतं पत्तेन धम्मदेसनाय ओसक्कितं।

"यथा वा पन, भन्ते नागसेन, मल्लो वा मल्लन्तेवासी वा बहुके दिवसे निब्बुद्धं सिक्खित्वा सम्पत्ते मल्लयुद्धे ओसक्केय्य; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, तथागतेन चतूहि च असङ्ख्येय्येहि कप्पानं कप्पसतसहस्सेन च एत्थन्तरे सब्बञ्ञुतञ्ञाणं परिपाचेत्वा महतो जनकायस्स समुद्धरणाय सब्बञ्ञुतं पत्तेन धम्मदेसनाय ओसक्कितं।

"किं नु खो, भन्ते नागसेन, तथागतेन भया ओसक्कितं, उदाहु अपाकटताय ओसक्कितं, उदाहु दुब्बलताय ओसक्कितं, उदाहु असब्बञ्ञुताय ओसक्कितं ? किं तत्थ कारणं, इङ्घ मे त्वं कारणं ब्रूहि कङ्खावितरणाय ? यदि, भन्ते नागसेन, तथागतेन चतूहि च असङ्ख्येय्येहि कप्पानं कप्पसतसहस्सेन च एत्थन्तरे सब्बञ्ञुतञ्ञाणं परिपाचितं महतो जनकायस्स समुद्धरणाय, तेन हि—'सब्बञ्ञुतं पत्तस्स अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाया' ति यं वचनं तं मिच्छा। यदि सब्बञ्ञुतं पत्तस्स अप्पोस्सुकताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाय, तेन हि—'तथागतेन चतूहि च असङ्ख्येय्येहि कप्पानं कप्पतसतसहस्सेन च एथन्तरे सब्बञ्ञुतञ्ञाणं परिपाचितं महतो जनकायस्स समुद्धरणाया' ति तं पि वचनं मिच्छा ? अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो गम्भीरो दुन्निब्बेधो तवानुप्पतो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ?

२५. "परिपाचितं च महाराज, तथागतेन चतूहि च असङ्खेय्येहि कप्पानं कप्पसतसहस्सेन च एत्थन्तरे सब्बञ्ञुतञ्ञाणं महतो जनकायस्स समुद्धरणाय। पत्तसब्बञ्ञुतस्स च अप्पोस्सुकताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाय। तं च धम्मस्स गम्भीरनिपुणदुद्दसदुरनुबोधसुखुमदुप्पटिवेधतं सत्तानं च आलयारामतं सक्कायदिट्ठिया दळ्हसुग्गहिततं च दिस्वा—'किं नु खो, कथं नु खो' ति अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमि, न धम्मदेनाय। सत्तानं पटिवेधचिन्तनमानसं येवेतं।

"यथा महाराज, भिसक्को सल्लकत्तो अनेकब्याधिपरिपीळितं नरं उपसङ्कमित्वा एवं चिन्तयति—'केन नु खो उपक्कमेन कतमेन वा भेसज्जेन इमस्स ब्याधि वूपसमेय्या' ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स सब्बकिलेसब्याधिपरिपीळितं जनं धम्मस्स च गम्भीरनिपुणदुद्दसदुरनुबोधसुखुमदुप्पटिवेधतं दिस्वा—

'किं नु खो, कथं नु खो' ति अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाय। सत्तानं पटिवेधचिन्तनमानसं येवेतं।

"यथा, महाराज, रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स दोवारिकअनीकट्ठ-पारिसज्जनेगमभटबलअमच्चराजञ्ञराजूपजीविने जने दिस्वा एवं चित्तमुप्पज्जेय्य—'किं नु खो, कथं नु खो इमे सङ्गण्हिस्सामी' ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतस्स धम्मस्स गम्भीरनिपुणदुद्दसदुरनुबोधसुखुमदुप्पटिवेधतं सत्तानं च आलयारामतं सक्कायदिट्ठिया दळ्हसुग्गहिततं च दिस्वा—'किं नु खो, कथं नु खो' ति अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमि, नो धम्मदेसनाय। सत्तानं पटिवेधचिन्तनमानसं येवेतं।

"अपि च, महाराज, सब्बेसं तथागतानं धम्मता एसा यं ब्रह्मुना आयाचिता धम्मं देसेन्ति। तत्थ पन किं कारणं? ये तेन समयेन मनुस्सा तापसपरिब्बाजका समणब्राह्मणा सब्बे ते ब्रह्मदेवता होन्ति ब्रह्मगरुका ब्रह्मपरायणा। तस्मा तस्स बलवतो यसवतो ञातस्स पञ्ञातस्स उत्तरस्स अच्चुग्गतस्स ओनमनेन सदेवको लोको ओनमिस्सति ओकप्पेस्सति अधिमुच्चिस्सती ति इमिना व, महाराज, कारणेन तथागता ब्रह्मुना आयाचिता धम्मं देसेन्ति।

"यथा महाराज, कोचि राजा वा राजमहामत्तो वा यस्स ओनमति अपचितिं करोति, बलवतरस्स तस्स ओनमनेन अवसेसा जनता ओनमति अपचितिं करोति; एवमेव खो, महाराज, ब्रह्मे ओनमिते तथागतानं सदेवको लोको ओनमिस्सति। पूजितपूजको महाराज, लोको, तस्मा सो ब्रह्मा सब्बेसं तथागतानं आयाचति धम्मदेसनाय, तेन च कारणेन तथागता ब्रह्मुना आयाचिता धम्मं देसेन्ती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, सुनिब्बेठितो पञ्हो, अतिभद्रकं वेय्याकरणं, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

११. आचरियानाचरियपञ्हो

२६. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—

'न मे आचरियो अत्थि, सदिसो मे न विज्जति।
सदेवकस्मिं लोकस्मिं, नत्थि मे पटिपुग्गलो' ति॥

पुन च भणितं—'इति खो, भिक्खवे, आळारो कालामो आचरियो मे समानो अन्तेवासिं मं समानं अत्तना समसमं ठपेसि, उळाराय च मं पूजाय पूजेसी' ति। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतेन भणितं—'न मे···पे०····पटिपुग्गलो' ति। तेन हि—'इति खो···पे०···ठपेसी' ति, यं वचनं तं मिच्छा। यदि तथागतेन भणितं—'इति खो····पे०····ठपेसी' ति, तेन हि—'न मे···पे०···पटि-

पुग्गलो' ति तं वचनं मिच्छा । अयं पि उभतोकोटिको पञ्हो तवानुप्पत्तो, सो तया निब्बाहितब्बो" ति ।

२७. "भासितं पेतं, महाराज, तथागतेन—'न मे···पे०···पटिपुग्गलो' ति, भणितं च—'इति खो, भिक्खवे, आळारो कालामो आचरियो मे समानो अन्तेवासिं मं समानं अत्तना समसमं ठपेसि, उळाराय च मं पूजाय पूजेसी' ति । तं च वचनं पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो आचरियभावं सन्धाय भासितं ।

"पञ्चिमे, महाराज, पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्स सतो आचरिया, येहि अनुसिट्ठो बोधिसत्तो तत्थ तत्थ दिवसं वीतिनामेसि । कतमे पञ्च ? ये महाराज, अट्ठ ब्राह्मणा जातमत्ते बोधिसत्ते लक्खणानि परिग्गण्हिंसु, सेय्यथीदं—रामो, धजो, लक्खणो, मन्ती, यञ्ञो, सुयामो, सुभोजो, सुदत्तो ति । ते तस्स सोत्थिं पवेदयित्वा रक्खाकम्मं अकंसु, ते च पठमं आचरिया ।

"पुन च परं, महाराज, बोधिसत्तस्स पिता सुद्धोदनो राजा यं तेन समयेन अभिजातं उदिच्चजातिवन्तं पदकं वेय्याकरणं छळङ्गवन्तं सब्बमित्तं नाम ब्राह्मणं उपनेत्वा सोवण्णेन भिंकारेन उदकं ओणोजेत्वा—'इमं कुमारं सिक्खापेही' ति अदासि, अयं दुतियो आचरियो ।

"पुन च परं, महाराज, या सा देवता बोधिसत्तं संवेजेसि, यस्सा वचनं सुत्वा बोधिसत्तो संविग्गो उब्बिग्गो तस्मिं येव खणे नेक्खम्मं निक्खमित्वा पब्बजि, अयं ततियो आचरियो ।

"पुन च परं, महाराज, आळारो कालामो आकिञ्चञ्ञायतनस्स परिकम्मं आचिक्खति । अयं चतुत्थो आचरियो ।

"पुन च परं, महाराज, उद्दको रामपुत्तो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स परिकम्मं आचिक्खति । अयं पञ्चमो आचरियो ।

"इमे खो, महाराज, पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्स सतो पञ्च आचरिया । ते च पन आचरिया लोकिये धम्मे । इमस्मिं च पन महाराज, लोकुत्तरे धम्मे सब्बञ्ञुतञ्ञाणपटिवेधाय नत्थि तथागतस्स अनुत्तरो अनुसासको । सयम्भू, महाराज, तथागतो अनाचरियको, तस्मा कारणा तथागतेन भणितं—'न मे····पे०····पटिपुग्गलो" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

[इमस्मिं वग्गे एकादस पञ्हा] पञ्चमो सन्थववग्गो निट्ठितो ।

५. अनुमानपञ्हे

१. बुद्धिवग्गो

१. द्विन्नं बुद्धानं अनुप्पज्जमानपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'अट्ठानमेतं, भिक्खवे, अनवकासो यं एकिस्सा लोकधातुया द्वे अरहन्ता सम्मासम्बुद्धा अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेयुं, नेतं ठानं विज्जती' ति। देसेन्ता च, भन्ते नागसेन, सब्बे पि तथागता सत्तत्तिस बोधिपक्खियधम्मे देसेन्ति, कथयमाना च चत्तारि अरियसच्चानि कथेन्ति, सिक्खापेन्ता च तीसु सिक्खासु सिक्खापेन्ति, अनुसासमाना च अप्पमादपटिपत्तियं अनुसासन्ति। यदि, भन्ते नागसेन, सब्बेसं पि तथागतानं एका देसना, एका कथा, एका सिक्खा, एका अनुसिट्ठि; केन कारणेन द्वे तथागता एकक्खणे न उप्पज्जन्ति ? एकेन पि ताव बुद्धुप्पादेन अयं लोको ओभासजातो, यदि दुतियो बुद्धो भवेय्य, द्विन्नं पभाय अयं लोको भिय्योसोमत्ताय ओभासजातो भवेय्य, ओवदमाना च द्वे तथागता सुखं ओवदेय्युं, अनुसासमाना च सुखं अनुसासेय्युं। तत्थ मे कारणं ब्रूहि यथाहं निस्संसयो भवेय्यं" ति ?

२. "अयं, महाराज, दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति। यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धरेय्य, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओनमेय्य विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य विद्धंसेय्य, न ट्ठानमुपगच्छेय्य।

"यथा, महाराज, नावा एकपुरिससन्धारणी भवेय्य, एकस्मिं पुरिसे अभिरूळ्हे सा नावा समुदका भवेय्य, अथ दुतियो पुरिसो आगच्छेय्य तादिसो आयुना वण्णेन वयेन पमाणेन किसथूलेन सब्बङ्गपच्चङ्गेन, सो तं नावं अभिरूहेय्य; अपि नु सा, महाराज, नावा द्विन्नं पि धारेय्या" ति ? "न हि, भन्ते, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओनमेय्य विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य विद्धंसेय्य, न ट्ठानमुपगच्छेय्य। ओसीदेय्य उदके" ति। "एवमेव खो, महाराज, अयं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओनमेय्य विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य विद्धंसेय्य, न ट्ठानमुपगच्छेय्य।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो यावदत्थं भोजनं भुञ्जेय्य छादेन्तं याव कण्ठमभिपूरयित्वा, सो धातो पीणितो परिपुण्णो निरन्तरो तन्दिकतो

अनोनमितदण्डजातो पुनदेव तत्तकं भोजनं भुञ्जेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो सुखितो भवेय्या" ति ? "न हि, भन्ते, सकिं भुत्तो व मरेय्या' ति। "एवमेव खो, महाराज, अयं दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति। यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओनमेय्य विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य विद्धंसेय्य, न ट्ठानमुपगच्छेय्या" ति।

'किन्नु खो, भन्ते नागसेन, अतिधम्मभारेन पठवी चलती" ति ? "इध, महाराज, द्वे सकटा रतनपरिपूरिता भवेय्युं याव मुखसमा, एकस्मा सकटतो रतनं गहेत्वा एकस्मिं सकटे आकिरेय्युं, अपि नु खो, महाराज, तं सकटं द्विन्नं पि सकटानं रतनं धारेय्या" ति ? "न हि, भन्ते, नाभि पि तस्स फलेय्य, अरा पि तस्स भिज्जेय्युं, नेमि पि तस्स ओपतेय्य, अक्खो पि तस्स भिज्जेय्या" ति। "एवमेव खो, महाराज, अतिधम्मभारेन पठवी चलति।

"अपि च, महाराज, इमं कारणं बुद्धबलपरिदीपनाय ओसारितं। अञ्ञं पि तत्थ अभिरूपं कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य—'तुम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं बुद्धो' ति, उभतोपक्खजाता भवेय्युं। यथा, महाराज, द्विन्नं बलवामच्चानं परिसाय विवादो उप्पज्जेय –'तुम्हाकं अमच्चो, अम्हाकं अमच्चो' ति, उभतोपक्खजाता होन्ति; एवमेव खो, महाराज, यदि द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य—'तुम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं बुद्धो' ति, उभतोपक्खजाता भवेय्युं। इमं ताव, महाराज, एकं कारणं येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे न उप्पज्जन्ती" ति।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे न उप्पज्जन्ति। यदि, महराज, द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, 'अग्गो बुद्धो' ति यं वचनं तं मिच्छा भवेय्य, 'जेट्ठो बुद्धो' ति....'सेट्ठो बुद्धो' ति....'विसिट्ठो बुद्धो' ति....'उत्तमो बुद्धो' ति....'पवरो बुद्धो' ति....'असमो बुद्धो' ति....'असमसमो बुद्धो' ति....'अप्पटिमो बुद्धो ति....'अप्पटिपुग्गलो बुद्धो' ति यं वचनं, तं मिच्छा भवेय्य। इदं पि खो त्वं, महाराज, कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे न उप्पज्जन्ति।

"अपि च खो, महाराज, बुद्धानं भगवन्तानं सभावपकति एसा, यं एको येव बुद्धो लोके उप्पज्जति। कस्मा कारणा ? महन्तताय सब्बञ्ञुबुद्धगुणानं। अञ्ञं पि, महाराज, यं लोके महन्तं तं एकं येव होति। पठवी, महाराज, महन्ता, एका येव। सागरो महन्तो, सो एको येव। सक्को महन्तो, सो एको येव। मारो

महन्तो, सो एको येव। महाब्रह्मा महन्तो, सो एको येव। तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो, सो एको येव लोकस्मिं। यत्थ एते उप्पज्जन्ति तत्थ अञ्ञस्स ओकासो न होति। तस्मा, महाराज, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो एको येव लोकस्मिं उप्पज्जती" ति।

"सुकथितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो ओपम्मेहि कारणेहि, अनिपुणो पेतं सुत्वा अत्तमनो भवेय्य, किं पन मादिसो महापञ्ञो। साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

२. गोतमीवत्थदानपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता मातुच्छाय महापजापतिया गोतमिया वस्सिकसाटिकाय दीयमानाय–'सङ्घे, गोतमि, देहि, सङ्घे ते दिन्ने अहं चेव पूजितो भविस्सामि सङ्घो चा' ति। किन्नु खो, भन्ते नागसेन, तथागतो सङ्घरतनतो न भारिको न गरुको, न दक्खिणेय्यो, यं तथागतो सकाय मातुच्छाय सयं पिञ्जितं सयं लुञ्चितं सयं पोथितं सयं कन्तितं सयं वायितं वस्सिकसाटिकं अत्तनो दीयमानं सङ्घस्स दापेसि। यदि, भन्ते नागसेन, तथागतो सङ्घरतनतो उत्तरो भवेय्य अधिको वा विसिट्ठो वा—'मयि दिन्ने महप्फलं भविस्सती' ति न तथागतो मातुच्छाय सयं पिञ्जितं सयं लुञ्चितं सयं पोथितं वस्सिकसाटिकं सङ्घे दापेय्य। यस्मा च खो, भन्ते नागसेन, तथागतो अत्तानं न पत्थयति, न उपनिस्सयति, तस्मा तथागतो मातुच्छाय तं वस्सिकसाटिकं सङ्घस्स दापेसी' ति ?

४. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता मातुच्छाय महापजापतिया गोतमिया वस्सिकसाटिकाय दीयमानाय—'सङ्घे, गोतमि, देहि। सङ्घे दिन्ने अहं चेव पूजितो भविस्सामि, सङ्घो चा' ति। तं पन न अत्तनो पतिमाननस्स अविपाकताय न अदक्खिणेय्यताय, अपि च खो, महाराज, हितत्थाय अनुकम्पाय—'अनागतमद्धानं सङ्घो ममच्चयेन चित्तीकतो भविस्सती' ति विज्जमाने येव गुणे परिकित्तयन्तो एवमाह—'सङ्घे, गोतमि, देहि। सङ्घे दिन्ने अहं चेव पूजितो भविस्सामि, सङ्घो चा' ति।

यथा, महाराज, पिता धरमानो येव अमच्चभटबलत्थदोवारिकअनीकट्ठपारिसज्जजनमज्झे रञ्ञो सन्तिके पुत्तस्स विज्जमानं येव गुणं पकित्तेति—'इध ठपितो अनागतमद्धानं जनमज्झे पूजितो भविस्सती' ति; एवमेव खो, महाराज, तथागतो हितत्थाय अनुकम्पाय—'अनागतमद्धानं सङ्घो ममच्चयेन चित्तीकतो भविस्सती' ति विज्जमाने येव गुणेपकित्तयन्तो एवमाह—'सङ्घे गोतमि, देहि, सङ्घे दिन्ने अहं चेव पूजितो भविस्सामि सङ्घो च'' ति।

"न खो, महाराज, तावतकेन वस्सिकसाटिकानुप्पदानमत्तकेन सङ्घो तथागतो अधिको नाम होति विसिट्ठो वा। यथा, महाराज, मातापितरो पुत्तानं उच्छादेन्ति परिमद्दन्ति नहापेन्ति सम्बाहेन्ति, अपि नु खो, महाराज, तावतकेन उच्छादनपरिमद्दननहापनसम्बाहनमत्तकेन पुत्तो मातापितूहि अधिको नाम होति, विसिट्ठो वा" ति? "न हि, भन्ते, अकामकरणीया, भन्ते, पुत्ता मातापितुन्नं, तस्मा मातापितरो पुत्तानं उच्छादनपरिमद्दननहापनसम्बाहनं करोन्ती" ति। "एवमेव खो, महाराज, न तावतकेन वस्सिकसाटिकानुप्पदानमत्तकेन सङ्घो तथागततो अधिको नाम होति विसिट्ठो वा ति। अपि च तथागतो अकामकरणीयं करोन्तो मातुच्छाय तं वस्सिकसाटिकं सङ्घस्स दापेसि।

यथा वा पन, महाराज, कोचिदेव पुरिसो रञ्ञो उपायनं आहरेय्य, तं राजा उपायनं अञ्ञतरस्स भटस्स वा बलत्थस्स वा सेनापतिस्स वा पुरोहितस्स वा ददेय्य; अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो तावतकेन उपायनप्पटिलाभमत्तके रञ्ञा अधिको नाम होति विसिट्ठो वा' ति? "न हि, भन्ते, राजभत्तिको, भन्ते, सो पुरिसो राजूपजीवी, तं ठाने ठपेन्तो राजा उपायनं देती" ति। "एवमेव खो, महाराज, न तावतकेन वस्सिकसाटिकानुप्पदानमत्तेन सङ्घो तथागततो अधिको नाम होति विसिट्ठो वा, अथ खो तथागतभत्तिको तथागतूपजीवी, तं ठाने ठपेन्तो सङ्घस्स वस्सिकसाटिकं दापेसि।

"अपि च, महाराज, तथागतस्स एवं अहोसि—'सभावपटिपूजनीयो संघो मम सन्तकेन संघं पटिपूजेस्सामी' ति संघस्स वस्सिकसाटिकं दापेसि। न, महाराज, तथागतो अत्तनो येव पटिपूजनं वण्णेति, अथ खो ये लोके पटिपूजनारहा तेसं पि तथागतो पटिपूजनं वण्णेति।

भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **मज्झिमनिकायवरलञ्छके** धम्मदायादधम्मपरियाये अप्पिच्छपटिपत्तिं पकित्तयमानेन—'असु येव मे पुरिमो भिक्खु च पासंसतरो चा' ति। नत्थि, महाराज, भवेसु कोचि सत्तो तथागततो दक्खिणेय्यो वा उत्तरो वा अधिको वा विसिट्ठो वा, तथागतो व उत्तरो अधिको विसिट्ठो।

"भासितं पेतं, महाराज, **संयुत्तनिकायवरे** माणवगामिकेन देवपुत्तेन भगवतो पुरतो ठत्वा देवमनुस्समज्झे—

'विपुलो राजगहियानं गिरि सेट्ठो पवुच्चति।
सेतो हिमवतं सेट्ठो, आदिच्चो अघगामिनं।
समुद्दो उदधिनं सेट्ठो, नक्खत्तानं च चन्दिमा।
सदेवकस्स लोकस्स, बुद्धो अग्गो पवुच्चती' ति॥

"ता खो पनेता, महाराज, माणवगामिकेन देवपुत्तेन गाथा सुगीता न दुग्गीता, सुभासिता न दुब्भासिता, अनुमता च भगवता ।

"ननु, महाराज, थेरेन पि सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना भणितं—

'एको मनोपसादो, सरणागमनं पञ्जलिप्पणामो वा ।
उस्सहते तारयितुं, मारबलनिसूदने बुद्धे' ति ॥

"भगवता च भणितं देवातिदेवेन—'एकपुग्गलो, भिक्खवे, लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं । कतमो एकपुग्गलो ? तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो···पे॰ ··देव-मनुस्सानं" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी' ।

३. गिहिपब्बजितसम्मापटिपत्तिपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'गिहिनो वाहं, भिक्खवे, पब्ब-जितस्स वा सम्मापटिपत्तिं वण्णेमि, गिही वा, भिक्खवे, पब्बजितो वा सम्मा-पटिपन्नो सम्मापटिपत्ताधिकरणहेतु आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं' ति । यदि, भन्ते नागसेन, गिही ओदातवसनो कामभोगी पुत्तदारसम्बाधसयनं अज्झावसन्तो, कासिकचन्दनं पच्चनुभोन्तो, मालागन्धविलेपनं धारेन्तो, जात-रूपरजतं सादियन्तो, मणिकुण्डलविचित्तमोळिबद्धो सम्मापटिपन्नो आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं; पब्बजितो पि भण्डु कासाववत्थवसनो परपिण्डमज्झु-पगतो चतूसु सीलक्खन्धेसु सम्मापरिपूरकारी दियड्ढेसु सिक्खापदसतेसु समादाय वत्तन्तो तेरससु धुतगुणेसु अनवसेसं वत्तन्तो सम्मापटिपन्नो आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं । तत्थ भन्ते, को विसेसो गिहिनो वा पब्बजितस्स वा, अफलं होति तपोकम्मं, निरत्थिका पब्बज्जा, वञ्झा सिक्खापदगोपना, मोघं धुतगुणसमादानं, किं तत्थ दुक्खमनुचिण्णेन ! ननु नाम सुखेनेव सुखं अधि-गन्तब्बं" ति ?

६. "भासितं पेतं, महाराज, भगवता—'गिहिनो वाहं, भिक्खवे, पब्बजितस्स वा सम्मापटिपत्तिं वण्णेमि । गिही वा, भिक्खवे, पब्बजितो वा सम्मापटिपन्नो सम्मापटिपत्ताधिकरणहेतु, आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं' ति । एवमेतं, महा-राज, सम्मापटिपन्नो व सेट्ठो । पब्बजितो पि, महाराज, 'पब्बजितोम्ही' ति न सम्मा पटिपज्जेय्य, अथ खो सो आरका व सामञ्ञा, आरका व ब्रह्मञ्ञा, पगेव गिही ओदातवसनो । गिही पि, महाराज, सम्मापटिपन्नो आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं; पब्बजितो पि, महाराज, सम्मापटिपन्नो आराधको होति ञायं धम्मं कुसलं ।

"अपि च खो, महाराज, पब्बजितो सामञ्ञस्स इस्सरो अधिपति, पब्बज्जा, महाराज, बहुगुणा अनेकगुणा अप्पमाणगुणा, न सक्का पब्बज्जाय गुणं परिमाणं कातुं।

"यथा, महाराज, कामददस्स मणिरतनस्स न सक्का धनेन अग्घो परिमाणं कातुं—'एत्तकं मणिरतनस्स मूलं' ति; एवमेव खो, महाराज, पब्बज्जा बहुगुणा अनेकगुणा अप्पमाणगुणा, न सक्का पब्बज्जाय गुणं परिमाणं कातुं।

"यथा वा पन, महाराज, महासमुद्दे ऊमियो न सक्का परिमाणं कातुं—'एत्तका महासमुद्दे ऊमियो' ति; एवमेव खो, महाराज, पब्बज्जा बहुगुणा अनेकगुणा अप्पमाणगुणा, न सक्का पब्बज्जाय गुणं परिमाणं कातुं।

"पब्बजितस्स, महाराज, यं किंचि करणीयं सब्बं तं खिप्पमेव समिज्झति नो चिररत्ताय। किंकारणा? पब्बजितो, महाराज, अप्पिच्छो होति सन्तुट्ठो आरद्धविरियो निरालयो अनिकेतो परिपुण्णसीलो सल्लेखिताचारो धुतपटिपत्तिकुसलो होति। तंकारणा पब्बजितस्स यं किञ्चि करणीयं सब्बं खिप्पमेव समिज्झति नो चिररत्ताय। यथा, महाराज, निग्गण्ठिसमसुधोतउजुविमलनाराचो सुसज्जितो सम्मा वहति; एवमेव खो, महाराज, पब्बजितस्स यं किञ्चि करणीयं सब्बं तं खिप्पमेव समिज्झति नो चिररत्ताया" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

४. पटिपदादोसपञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, यदा बोधिसत्तो दुक्करकारिकं अकासि, नेतादिसो अञ्ञत्र आरम्भो अहोसि निक्कमो किलेसयुद्धं मच्चुसेनं विधमनं आहारपरिग्गतो दुक्करकारिका, एवरूपे परक्कमे किञ्चि अस्सादं अलभित्वा तमेव चित्तं परिहापेत्वा एवमवोच—'न खो पनाहं इमाय कटुकाय दुक्करकारिकाय अधिगच्छामि उत्तरिमनुस्सधम्मं अलमरियञाणदस्सनविसेसं, सिया नु खो अञ्ञो मग्गो बोधाया' ति। ततो निब्बिन्दित्वा अञ्ञेन मग्गेन सब्बञ्ञुतं पत्तो पुन ताय पटिपदाय सावके अनुसासति समादपेति—

> आरम्भथ, निक्खमथ, युञ्जथ बुद्धसासने।
> धुनाथ मच्चुनो सेनं, नळागारं व कुञ्जरो' ति॥

"केन नु खो, भन्ते नागसेन, कारणेन तथागतो याय पटिपदाय अत्तना निब्बिण्णो विरत्तरूपो, तत्थ सावके अनुसासति समादपेती" ति?

८. "तदा पि, महाराज, एतरहि पि सा येव पटिपदा, तं येव पटिपदं पटिपज्जित्वा बोधिसत्तो सब्बञ्ञुतं पत्तो। अपि च, महाराज, बोधिसत्तो अतिविरियं करोन्तो निरवसेसतो आहारं उपरुन्धि, तस्स आहारूपरोधेन चित्तदुब्बल्यं

उप्पज्जि, सो तेन दुब्बल्येन नासक्खि सब्बञ्ञुतं पापुणितुं । सो मत्तमत्तं कबळिङ्काराहारं सेवन्तो तायेव पटिपदाय न चिरस्सेव सब्बञ्ञुतं पापुणि । सा येव, महाराज, पटिपदा सब्बेसं तथागतानं सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभाय ।

"यथा महाराज, सब्बेसं सत्तानं आहारो उपत्थम्भो, आहारूपनिस्सिता सब्बे सत्ता सुखं अनुभवन्ति; एवमेव खो, महाराज, सा येव पटिपदा सब्बेसं तथागतानं सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभाय । नेसो, महाराज, दोसो आरम्भस्स, न निक्कमस्स, न किलेसयुद्धस्स, येन तथागतो तस्मिं समये न पापुणि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं, अथ खो आहारूपरोधस्सेवेसो दोसो, सदा पटियत्ता येवेसा पटिपदा ।

"यथा, महाराज, पुरिसो अद्धानं अतिवेगेन गच्छेय्य, तेन सो पक्खहतो भवेय्य पीठसप्पी वा असञ्चरो पठवितले । अपि नु खो, महाराज, महापठविया दोसो अत्थि, येन सो पुरिसो पक्खहतो अहोसी" ति ? "न हि, भन्ते; सदा पटियत्ता, भन्ते, महापठवी, कुतो तस्सा दोसो, वायामस्सेवेसो दोसो, येन सो पुरिसो पक्खहतो अहोसी" ति ! "एवमेव खो, महाराज, नेसो दोसो आरम्भस्स, न निक्कमस्स, न किलेसयुद्धस्स, येन तथागतो तस्मिं समये न पापुणि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं; अथ खो आहारूपरोधस्सेवेसो दोसो, सदा पटियत्ता येव सा पटिपदा ।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो किलिट्ठं साटकं निवासेय्य, न सो तं धोवापेय्य, नेसो दोसो उदकस्स, सदा पटियत्तं उदकं, पुरिसस्सेवेसो दोसो; एवमेव खो, महाराज, नेसो दोसो आरम्भस्स, न निक्कमस्स, न किलेसयुद्धस्स, येन तथागतो तस्मिं समये न पापुणि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं, अथ खो आहारूपरोधस्सेवेसो दोसो, सदा पटियत्ता येवेसा पटिपदा । तस्मा तथागतो तायेव पटिपदाय सावके अनुसासति समादपेति । एवं खो, महाराज, सदा पटियत्ता अनवज्जा सा पटिपदा" ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

५. हीनायावत्तनपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, महन्तं इदं तथागतसासनं सारं वरं सेट्ठं पवरं अनुपमं परिसुद्धं विमलं पण्डरं अनवज्जं, न युत्तं गिहिं तावतकं पब्बाजेतुं, गिहिं येव एकस्मिं फले विनेत्वा यदा अपुनरावत्ती होति, तदा सो पब्बाजेतब्बो, किंकारणं ? इमे दुज्जना ताव तत्थ सासने विसुद्धे पब्बजित्वा पटिनिवत्तित्वा हीनायावत्तन्ति, तेसं पच्चागमनेन अयं महाजनो एवं विचिन्तेति—'तुच्छकं वत, भो, एतं समणस्स गोतमस्स सासनं भविस्सति यं इमे पटिनिवत्तन्ती" ति । इदमेत्थ कारणं" ति ।

"यथा, महाराज, तळाकं भवेय्य सम्पुण्णसुचिविमलसीतलसलिलं, अथ यो

कोचि किलिट्ठो मलकद्दमगतो तं तळाकं गन्त्वा अनहायित्वा किलिट्ठो व पटिनिवत्तेय्य, तत्थ, महाराज, कतमं जनो गरहेय्य, किलिट्ठं वा तळाकं वा'' ति ? ''किलिट्ठं, भन्ते, जनो गरहेय्य—'अयं तळाकं गन्त्वा अनहायित्वा किलिट्ठो व पटिनिवत्तो, किं इमं अनहायितुकामं तळाको सयं नहापेस्सति, को दोसो तळाकस्सा'' ति ! एवमेव खो, महाराज, तथागतो विमुत्तिवरसलिलसम्पुण्णं सद्धम्मवरतळाकं मापेसि—'ये केचि किलेसमलकिलिट्ठा सचेतना बुधा ते इध नहायित्वा सब्बकिलेसे पवाहयिस्सन्ती'' ति। यदि कोचि तं सद्धम्मवरतळाकं गन्त्वा अनहायित्वा सकिलेसो व पटिनिवत्तेत्वा हीनायावत्तति, तं येव जनो गरहिस्सति—'अयं जिनसासने पब्बजित्वा तत्थ पतिट्ठं अलभित्वा हीनायावत्तो, किं इमं अप्पटिपज्जन्तं जिनसासनं सयं बोधेस्सति, को दोसो जिनसासनस्सा' ति !

''यथा वा पन, महाराज, पुरिसो परमब्याधितो रोगुप्पत्तिकुसलं अमोघधुवसिद्धकम्मं भिसक्कं सल्लकत्तं दिस्वा अतिकिच्छापेत्वा सव्याधिको व पटिनिवत्तेय्य, तत्थ कतमं जनो गरहेय्य, आतुरं वा भिसक्कं वा'' ति ? ''आतुरं, भन्ते, जनो गरहेय्य—'अयं रोगुप्पत्तिकुसलं अमोघधुवसिद्धकम्मं भिसक्कं सल्लकत्तं दिस्वा अतिकिच्छापेत्वा सव्याधिको व पटिनिवत्तो, किं इमं अतिकिच्छापेन्तं भिसक्को सयं तिकिच्छिस्सति, को दोसो भिसक्कस्सा' ति ! एवमेव खो, महाराज, तथागतो अन्तोसासनसमुग्गे केवलं सकलकिलेसब्याधिवूपसमनसमत्थं अमतोसधं पक्खिपि—'ये केचि किलेसब्याधिपीळिता सचेतना बुधा, ते इमं अमतोसधं पिवित्वा सब्बकिलेसब्याधिं वूपसमेस्सन्ती' ति। यदि कोचि तं अमतोसधं अपिवित्वा सकिलेसो व पटिनिवत्तित्वा हीनायावत्तत्ति, तं येव जनो गरहिस्सति—'अयं जिनसासने पब्बजित्वा तत्थ पतिट्ठं अलभित्वा हीनायावत्तो, किं इमं अप्पटिपज्जन्तं जिनसासनं सयं बोधेस्सति, को दोसो जिनसासनस्सा' ति !

''यथा वा पन, महाराज, छातो पुरिसो महतिमहापुञ्ञभत्तपरिवेसनं गन्त्वा तं भत्तं अभुञ्जित्वा छातो व पटिनिवत्तेय्य, तत्थ कतमं जनो गरहेय्य, छातं वा पुञ्ञभत्तं वा'' ति ? ''छातं, भन्ते, जनो गरहेय्य—'अयं खुदापीळितो पुञ्ञभत्तं पटिलभिवा अभुञ्जित्वा छातो व पटिनिवत्तो, किं इमस्स अभुञ्जन्तस्स भोजनं सयं मुखं पविसिस्सति, को दोसो भोजनस्सा'' ति ! एवमेव खो, महाराज, तथागतो अन्तोसासनसमुग्गे परमप्पवरं सन्तं सिवं पणीतं अमतं परममधुरं कायगतासतिभोजनं ठपेसि—'ये केचि किलेसछातज्झत्ता तण्हापरेतमानसा सचेतना बुधा, ते इमं भोजनं भुञ्जित्वा कामरूपारूपभवेसु सब्बं तण्हमपनेस्सन्ती' ति। यदि कोचि तं भोजनं

अभुञ्जित्वा तण्हासितो व पटिनिवत्तित्वा हीनायावत्तति, तं येव जनो गरहिस्सति—'अयं जिनसासने पब्बजित्वा तत्थ पतिट्ठं अलभित्वा हीनायावत्तो, किं इमं अप्पटिपज्जन्तं जिनसासनं सयं बोधेस्सति, को दोसो जिनसासनस्सा' ति !

"यदि, महाराज, तथागतो गिहिं येव एकस्मिं फले विनीतं पब्बाजेय्य, न नामायं पब्बज्जा किलेसप्पहानाय विसुद्धिया वा, नत्थि पब्बज्जाय करणीयं । यथा, महाराज, पुरिसो अनेकसतेन कम्मेन तळाकं खणापेत्वा परिसाय एवमनुस्सावेय्य—'मा मे भोन्तो केचि सङ्किलिट्ठा इमं तळाकं ओतरथ, पवाहितरजोजल्ला परिसुद्धा विमलमट्ठा इमं तळाकं ओतरथा' ति । अपि नु खो, महाराज, तेसं पवाहितरजोजल्लानं परिसुद्धानं विमलमट्ठानं तेन तळाकेन करणीयं भवेय्या" ति ? "न हि, भन्ते, यस्सत्थाय ते तं तळाकं उपगच्छेय्युं तं अञ्ञत्रेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं तेन तळाकेना" ति ? "एवमेव खो, महाराज, यदि तथागतो गिहियेव एकस्मिं फले विनीतं पब्बाजेय्य, तत्थेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं पब्बज्जाय !

"यथा वा पन, महाराज, सभावइसिभत्तिको सुतमन्तपदधरो अतक्किको रोगुप्पत्तिकुसलो अमोघधुवसिद्धकम्मो भिसक्को सळकत्तो सब्बरोगूपसमभेसज्जं सन्निपातेत्वा परिसाय एवमनुस्सावेय्य—'मा खो भोन्तो केचि सब्याधिका मम सन्तिके उपगच्छथ, अब्याधिका अरोगा मम सन्तिके उपगच्छथा' ति, अपि नु खो, महाराज, तेसं अब्याधिकानं अरोगानं परिपुण्णानं उदग्गानं तेन भिसक्केन करणीयं भवेय्या' ति ? "न हि, भन्ते । यस्सत्थाय ते तं भिसक्कं सल्लकत्तं उपगच्छेय्युं, तं अञ्ञत्रेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं तेन भिसक्केना" ति ! "एवमेव खो, महाराज, यदि तथागतो गिहिं येव एकस्मिं फले विनीतं पब्बाजेय्य, तत्थेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं पब्बज्जाय !

"यथा वा पन, महाराज, कोचि पुरिसो अनेकथालिपाकसतं भोजनं पटियादापेत्वा परिसाय एवमनुस्सावेय्य—'मा मे भोन्तो केचि छाता इमं परिवेसनं उपगच्छथ, सुभुत्ता तित्ता सुहिता धाता पीणिता परिपुण्णा इमं परिवेसनं उपगच्छथा' ति, अपि नु खो, महाराज, तेसं भुत्तावीनं तित्तानं धातानं पीणितानं परिपुण्णानं तेन भोजनेन करणीयं भवेय्या" ति ? "न हि, भन्ते । यस्सत्थाय ते तं परिवेसनं उपगच्छेय्युं, तं अञ्ञत्रेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं ताय परिवेसनाया' ति ! "एवमेव खो, महाराज, यदि तथागतो गिहिं येव एकस्मिं फले विनीतं पब्बाजेय्य, तत्थेव तेसं कतं करणीयं, किं तेसं पब्बज्जाय !

११. "अपि च, महाराज, ये हीनायावत्तन्ति ते जिनसासनस्स पञ्च अतुलिये गुणे दस्सेन्ति। कतमे पञ्च ? भूमिमहन्तभावं दस्सेन्ति, परिसुद्धविमलभावं दस्सेन्ति, पापेहि असंवासियभावं दस्सेन्ति, दुप्पटिवेधभावं दस्सेन्ति, बहुसंवररक्खियभावं दस्सेन्ति।

१२. "कथं भूमिमहन्तभावं दस्सेन्ति ? यथा, महाराज, पुरिसो अधनो हीनजच्चो निब्बिसेसो बुद्धिपरिहीनो महतिमहारज्जं पटिलभित्वा न चिरस्सेव परिपतति परिधंसति परिहायति यसतो, न सक्कोति इस्सरियं सन्धारेतुं, किं कारणं ? महन्तत्ता इस्सरियस्स; एवमेव खो, महाराज, ये केचि निब्बिसेसा अकतपुञ्ञा बुद्धिपरिहीना जिनसासने पब्बजन्ति, ते तं पब्बज्जं पवरुत्तमं सन्धारेतुं अविसहन्ता न चिरस्सेव जिनसासना परिपतित्वा परिधंसित्वा परिहायित्वा हीनायावत्तन्ति, न सक्कोन्ति जिनसासनं सन्धारेतुं, किं कारणं ? महन्तत्ता जिनसासनभूमिया। एवं भूमिमहन्तभावं दस्सेन्ति। (क)

"कथं परिसुद्धविमलभावं दस्सेन्ति ? यथा, महाराज, वारि पोक्खरपत्ते विकिरति विद्धंसति, न ट्ठानमुपगच्छति, नूपलिम्पति, किंकारणं ? परिसुद्धविमलत्ता पदुमस्स; एवमेव खो, महाराज, ये केचि सठा कूटा वङ्का कुटिला विसमदिट्ठिनो जिनसासने पब्बजन्ति, ते परिसुद्धविमलनिक्कण्टकपण्डरवरप्पवरसासनतो न चिरस्सेव विकिरित्वा विधमित्वा विद्धंसित्वा असण्ठहित्वा अनुपलिम्पित्वा हीनायावत्तन्ति, किं कारणं ? परिसुद्धविमलत्ता जिनसासनस्स। एवं परिसुद्धविमलभावं दस्सेन्ति। (ख)

"कथं पापेहि असंवासियभावं दस्सेन्ति ? यथा, महाराज, महासमुद्दो न मतेन कुणपेन संवसति, यं होति महासमुद्दे मतं कुणपं तं खिप्पमेव तीरं उपनेति, थलं वा उस्सादेति, किं कारणं ? महाभूतानं भवनत्ता महासमुद्दस्स; एवमेव खो, महाराज, ये केचि पापका असंवुता अहिरिका अकिरिया ओसन्नविरिया कुभीता किलिट्ठा दुज्जना मनुस्सा जिनसासने पब्बजन्ति, ते न चिरस्सेव जिनसासनतो अरहन्तविमलखीणासवमहाभूतभवनतो निक्खमित्वा असंवसित्वा हीनायावत्तन्ति, किं कारणं ? पापेहि असंवासियत्ता जिनसासनस्स। एवं पापेहि असंवासियभावं दस्सेन्ति। (ग)

"कथं दुप्पटिवेधभावं दस्सेन्ति ? यथा, महाराज, ये केचि अछेका असिक्खिता असिप्पिनो मतिविप्पहीना मतिविप्पहीना इस्सासा वालग्गवेधं अविसहन्ता विगळन्ति पक्कमन्ति, किं कारणं ? सण्हसुखुमदुप्पटिवेधत्ता वालग्गस्स; एवमेव खो, महाराज, ये केचि दुप्पञ्ञा जळा एळमूगा मूळ्हा दन्धगतिका जना जिनसासने पब्बजन्ति, ते तं परमसण्हसुखुमचतुसच्चपटिवेधं पटिविज्झितुं अविसहन्ता जिनसासना विगळित्वा पक्कमित्वा न चिरस्सेव हीनायावत्तन्ति।

किं कारणं? परमसण्हसुखुमदुप्पटिवेधताय सच्चानं। एवं दुप्पटिवेधभावं दस्सेन्ति। (घ)

"कथं बहुसंवररक्खियभावं दस्सेन्ति? यथा, महाराज, कोचिदेव पुरिसो महतिमहायुद्धभूमिमुगपतो परसेनाय दिसाविदिसाहि समन्ता परिवारितो सत्तिहत्थं जनमुपेतं दिस्वा भीतो ओसक्कति पटिनिवत्तति पलायति, किं कारणं? बहुविधयुद्धमुखरक्खणभया; एवमेव खो, महाराज, ये केचि पापका असंवुता अहिरिका अकिरिया अक्खन्ती चपला चलिता इत्तरा बालजना जिनसासने पब्बजन्ति, ते बहुविधं सिक्खापदं परिरक्खितुं अविसहन्ता ओसक्कित्वा पटिनिवत्तित्वा पलायित्वा न चिरस्सेव हीनायावत्तन्ति। किं कारणं? बहुविधसंवररक्खियभावत्ता जिनसासनस्स। एव बहुविधसंवररक्खियभावं दस्सेन्ति। (ङ)

"थलजुत्तमे पि, महाराज, वस्सिकगुम्बे किमिविद्धानि पुप्फानि होन्ति, तानि अङ्कुरानि सङ्कुटितानि अन्तरा येव परिपतन्ति, न च तेसु परिपतितेसु वस्सिकागुम्बो हीळितो नाम होति, यानि तत्थ ठितानि पुप्फानि, तानि सम्मा गन्धेन दिसाविदिसं अभिब्यापेन्ति; एवमेव खो, महाराज, ये ते जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति, ते जिनसासने किमिविद्धानि वस्सिकापुप्फानि विय वण्णगन्धरहिता निब्बण्णाकारसीला अभब्बा वेपुल्लाय, न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीळितं नाम होति। ये तत्थ ठिता भिक्खू ते सदेवकं लोकं सीलवरगन्धेन अभिब्यापेन्ति।

"सालीनं पि, महाराज, निरातङ्कानं लोहितकानं अन्तरे करुम्भकं नाम सालिजाति उप्पज्जित्वा अन्तरा येव विनस्सति, न च तस्सा विनट्ठत्ता लोहितकसाली हीळिता नाम होन्ति, ये तत्थ ठिता साली ते राजूपभोगा होन्ति; एवमेव खो, महाराज, ये ते जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति, ते लोहितकसालीनमन्तरे करुम्भका विय जिनसासने न वड्ढित्वा वेपुल्लतं न पापुणित्वा अन्तरा येव हीनायावत्तन्ति, न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीळितं नाम होति। ये तत्थ ठिता भिक्खू ते अरहत्तस्स अनुच्छविका होन्ति।

"कामददस्सा पि, महाराज, मणिरतनस्स एकदेसं कक्कसं उप्पज्जति, नच तत्थ कक्कसुप्पन्नत्ता मणिरतनं हीळितं नाम होति, यं तत्थ परिसुद्धं मणिरतनस्स तं जनस्स हासकरं होति; एवमेव खो, महाराज, ये ते जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति। कक्कसा ते जिनसासने पपटिका, न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीळितं नाम होति। ये तत्थ ठिता भिक्खू ते देवमनुस्सानं हासजनका होन्ति।

"जातिसम्पन्नस्स पि, महाराज, लोहितचन्दनस्स एकदेसं पूतिकं होति अप्पगन्धं, न तेन लोहितचन्दनं हीळितं नाम होति, यं तत्थ अपूतिकं सुगन्धं तं समन्ता विधूपेति अभिब्यापेति; एवमेव खो, महाराज, ये ते जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति, ते लोहितचन्दनसारन्तरे पूतिकदेसमिव छड्डनीया जिनसासने, न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीळितं नाम होति। ये तत्थ ठिता भिक्खू ते सदेवकं लोकं सीलवरचन्दनगन्धेन अनुलिम्पयन्ती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, तेन तेन अनुच्छविकेन तेन तेन सदिसेन कारणेन निरवज्जमनुपापितं जिनसासनं, सेट्ठभावेन परिदीपितं, हीनायावत्तमाना पि ते जिनसासनस्य सेट्ठभावं येव परिदीपेन्ती" ति।

६. अरहन्तवेदनावेदियनपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'अरहा एकं वेदनं वेदियति कायिकं न चेतसिकं' ति। किन्नु खो, भन्ते नागसेन, अरहतो चित्तं यं कायं निस्साय पवत्तति, तत्थ अरहा अनिस्सरो अस्सामी अवसवत्ती" ति ?

१४. "आम, महाराजा" ति। "न खो, महाराज, युत्तमेतं यं सो सकचित्तस्स पवत्तमाने काये अनिस्सरो होति अस्सामी अवसवत्तो, सकुणो पि ताव, भन्ते, यस्मिं कुलावके पटिवसति तत्थ इस्सरो होति सामी वसवत्ती" ति ?

"दसयिमे महाराज, कायानुगता धम्मा भवे भवे कायं अनुधावन्ति अनुपरिवत्तन्ति। कतमे दस ? सीतं, उण्हं, जिघच्छा, पिपासा, उच्चारो, पस्सावो, थीनमिद्धं, जरा, ब्याधि, मरणं। इमे खो, महाराज, दस कायानुगता धम्मा भवे भवे कायं अनुधावन्ति अनुपरिवत्तन्ति। तत्थ अरहा अनिस्सरो अस्सामी अवसवत्ती" ति।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन अरहतो काये आणा नप्पवत्तति इस्सरियं वा, तत्थ मे कारणं ब्रूही" ति ? "यथा, महाराज, ये केचि पठविनिस्सिता सत्ता सब्बे ते पठविं निस्साय चरन्ति विहरन्ति वुत्तिं कप्पेन्ति। अपि नु, महाराज, तेसं पठविया आणा पवत्तति इस्सरियं वा" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अरहतो चित्तं कायं निस्साय पवत्तति, न च पन अरहतो काये आणा पवत्तति, इस्सरियं वा" ति।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन पुथुज्जनो कायिकं पि चेतसिकं पि वेदनं वेदयती" ति ? "अभावितत्ता, महाराज, चित्तस्स पुथुज्जनो कायिकं पि चेतसिकं पि वेदनं वेदियति। यथा, महाराज, गोणो छातो परितसितो अबलदुब्बलपरित्तकतिणेसु वा लताय वा उपनिबद्धो अस्स, यदा सो गोणो परिकुपितो होति तदा सह उपनिबन्धनेन पक्कमति; एवमेव खो, महाराज, अभावितत्ता

चित्तस्स वेदना उप्पज्जित्वा चित्तं परिकोपेति, चित्तं परिकुपितं कायं आभुजति निब्भुजति, सम्परिवत्तकं करोति, अथ सो अभावितचित्तो तसति रवति, भेरवरावमभिरवति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन पुथुज्जनो कायिकं पि चेतसिकं पि वेदनं वेदियती'' ति। "किं पन तं कारणं येन कारणेन अरहा एकं वेदनं वेदियति कायिकं, न चेतसिकं" ति? "अरहतो, महाराज, चित्तं भावितं होति सुभावितं दन्तं सुदन्तं अस्सवं वचनकरं, सो दुक्खाय वेदनाय फुट्ठो समानो अनिच्चं ति दळ्हं गण्हाति, समाधित्थम्भे चित्तं उपनिबन्धति, तस्स तं चित्तं समाधित्थम्भे उपनिबद्धं न वेधति, न चलति, ठितं होति अविक्खित्तं। तस्स वेदनाविकारविप्फारेन कायो पन आभुजति निब्भुजति सम्परिवत्तति। इदमेत्थ महाराज, कारणं, येन कारणेन अरहा एकं वेदनं वेदियति कायिकं, न चेतसिकं' ति।

"भन्ते नागसेन, तं नाम लोके अच्छरियं यं काये चलमाने चित्तं न चलति, तत्थ मे कारणं ब्रूही" ति? "यथा, महाराज, महतिमहारुक्खे खन्धसाखापलाससम्पन्ने अनिलबलसमाहते साखा चलति, अपि नु तस्स खन्धो पि चलती" ति? "नहि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, अरहा दुक्खाय वेदनाय फुट्ठो समानो 'अनिच्चं' ति दळ्हं गण्हाति समाधित्थम्भे चित्तं उपनिबन्धति, तस्स तं चित्तं समाधित्थम्भे उपनिबन्धनं न वेधति, न चलति, ठितं होति अविक्खित्तं, तस्स वेदनाविकारविप्फारेन कायो आभुजति निब्भुजति सम्परिवत्तति। चित्तं पन तस्स न वेधति न चलति, खन्धो विय महारुक्खस्सा'' ति।

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं भन्ते नागसेन, न मे एवरूपो सब्बकालिको धम्मप्पदीपो दिट्ठपुब्बो" ति।

७. अभिसमयन्तरायपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, इध यो कोचि गिही पाराजिकं अज्झापन्नो भवेय्य, सो अपरेन समयेन पब्बाजेय्य, अत्तना पि सो न जानेय्य—'गिहिपाराजिकं अज्झापन्नोस्मी' ति, नापि तस्स अञ्ञो कोचि आचिक्खेय्य—'गिहिपाराजिकं आपन्नोसी' ति, सो च तथत्ताय पटिपज्जेय। अपि नु तस्स धम्माभिसमयो भवेय्या" ति? "न हि, महाराजा" ति। "केन, भन्ते, कारणेना" ति? "यो तस्स हेतु धम्माभिसमयाय सो तस्स समुच्छिन्नो, तस्मा धम्माभिसमयो न भवती" ति।

"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'जानन्तस्स कुक्कुच्चं होति, कुक्कुच्चे सति आवरणं होति, आवटे चित्ते धम्माभिसमयो न होती' ति। इमस्स पन अजानन्तस्स अकुक्कुच्चजातस्स सन्तचित्तस्स विहरतो केन कारणेन धम्माभिसमयो न होति? विसमेन विसमेन सो पञ्हो गच्छति, चिन्तेत्वा विस्सज्जेथा" ति?

१६. "रूहति, महाराज, सुकट्ठे सुकलले मण्डखेत्ते सारदं सुखसयितं बीजन्ति ?" "आम, भन्ते" ति । "अपि नु, महाराज, बीजं घनसेलसिलातले रूहेय्या" ति ? "न हि, भन्ते' ति । "किस्स पन, महाराज, बीजं कलले रूहति, किस्स घनसेले न रूहती" ति ? "नत्थि, भन्ते, तस्स बीजस्स रूहनाय घनसेले हेतु, अहेतुना बीजं न रूहती' ति । "एवमेव खो, महाराज, येन हेतुना तस्स धम्माभिसमयो भवेय्य सो तस्स हेतु समुच्छिन्नो, अहेतुना धम्माभिसमयो न होति ।

"यथा वा पन, महाराज, दण्डलेड्डुलकुटमुग्गरा पठविया ठानमुपगच्छन्ति, अपि नु, महाराज, ते येव दण्डलेड्डुलकुटमुग्गरा गगने ठानमुपगच्छन्ती' ति ? "न हि भन्ते" ति । "किं पनेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन दण्डलेड्डुलकुटमुग्गरा पठविया ठानमुपगच्छन्ति, केन कारणेन गगने न तिट्ठन्ती' ति ? "नत्थि, भन्ते, तेसं दण्डलेड्डुलकुटमुग्गरानं पतिट्ठानाय आकासे हेतु, अहेतुना न तिट्ठन्ती" ति । "एवमेव खो, महाराज, तस्स तेन दोसेन अभिसमयहेतु समुच्छिन्नो, हेतुसमुग्घाते अहेतुना अभिसमयो न होति ।

"यथा वा पन, महाराज, थले अग्गि जलति, अपि नु खो महाराज, सो येव अग्गि उदके जलती" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "किं पनेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन सो येव अग्गि थले जलति, केन कारणेन उदके न जलती" ति ? "नत्थि, भन्ते, अग्गिस्स जलनाय उदके हेतु, अहेतुना न जलती" ति । "एवमेव खो, महाराज, तस्स तेन दोसेन अभिसमयहेतु समुच्छिन्नो, हेतुसमुग्घाते धम्माभिसमयो न होती" ति ।

"भन्ते नागसेन, पुनपेतं अत्थं चिन्तेहि, न मे तत्थ चित्तसञ्ञत्ति भवति—'अजानन्तस्स असति कुक्कुच्चे आवरणं होती' ति । कारणेन मं सञ्ञापेही" ति ?

"अपि नु, महाराज, विसं हलाहलं अजानन्तेन पि पायितं जीवितं हरती" ति ? "आम भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, अजानन्तेन पि कतं पापं अभिसमयन्तरायकरं होति ।

"अपि नु, महाराज, अग्गि अजानित्वा अक्कमन्तं डहती' ति ? "आम, भन्ते" ति । 'एवमेव खो, महाराज, अजानन्तेन पि कतं पापं अभिसमयन्तरायकरं होति । अपि नु, महाराज, अजानन्तं आसीविसो डसित्वा जीवितं हरती' ति ? "आम, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, अजानन्तेन पि कतं पापं अभिसमयन्तरायकरं होति ।

'ननु, महाराज, कलिङ्गराजा समणकोलञ्ञो सत्तरतनपरिकिण्णो हत्थिरतनमभिरुय्ह कुलदस्सनाय गच्छन्तो अजानन्तो पि नासक्खि बोधिमण्डस्स उपरितो गन्तुं । इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अजानन्तेन पि कतं पापं अभिसमयन्तरायकरं होती" ति ।

"जिनभासितं, भन्ते नागसेन, कारणं न सक्का पटिक्कोसितुं, एसो वेतस्स अत्थो तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

८. दुस्सीलपञ्हो

१७. "भन्ते नागसेन, गिहिदुस्सीलस्स च समणदुस्सीलस्स च को विसेसो, किं नानाकरणं ? उभो पेते समसमगतिका, उभिन्नं पि समसमो विपाको होति, उदाहु किञ्चि नानाकरणं अत्थी" ति ?

१८. "दसयिमे, महाराज, गुणा समणदुस्सीलस्स गिहिदुस्सीलतो विसेसेन अतिरेका, दसहि च कारणेहि उत्तरिं दक्खिणं विसोधेति ।

"कतमे दस गुणा समणदुस्सीलस्स गिहिदुस्सीलतो विसेसेन अतिरेका ? इध, महाराज, समणदुस्सीलो बुद्धे सगारवो होति, धम्मे सगारवो होति, सङ्घे सगारवो होति, सब्रह्मचारीसु सगारवो होति, उद्देसपरिपुच्छाय वायमति, सवनबहुलो होति । भिन्नसीलो पि, महाराज, दुस्सीलो परिसगतो आकप्पं उपट्ठपेति, गरहभया कायिकं वाचसिकं रक्खति, पधानाभिमुखं चस्स होति चित्तं, भिक्खुसामञ्ञं उपगतो होति । करोन्तो पि, महाराज, समणदुस्सीलो पापं पटिच्छन्नं आचरति । यथा, महाराज, इत्थी सपतिका निलीयित्वा रहस्सेनेव पापमाचरति; एवमेव खो, महाराज, करोन्तो पि समणदुस्सीलो पापं पटिच्छन्नं आचरति । इमे खो, महाराज, दसगुणा समणदुस्सीलस्स गिहिदुस्सीलतो विसेसेन अधिकतरा ।

"कतमेहि दसहि कारणेहि उत्तरिं दक्खिणं विसोधेति ? अनवज्जकवचधारणताय पि दक्खिणं विसोधेति, इसिसामञ्ञभण्डुलिङ्गधारणतो पि दक्खिणं विसोधेति, सङ्घसमयमनुप्पविट्ठताय पि दक्खिणं विसोधेति, बुद्धधम्मसङ्घसरणगतताय पि दक्खिणं विसोधेति, पधानासयनिकेतवासिताय पि दक्खिणं विसोधेति, जिनसासनधरपरियेसनतो पि दक्खिणं विसोधेति, पवरधम्मदेसनतो पि दक्खिणं विसोधेति, धम्मदीपगतिपरायणताय पि दक्खिणं विसोधेति, 'अग्गो बुद्धो' ति एकन्तउजुदिट्ठिताय पि दक्खिणं विसोधेति, उपोसथसमादानतो पि दक्खिणं विसोधेति । इमेहि खो, महाराज, दसहि कारणेहि उत्तरिं दक्खिणं विसोधेति ।

"सुविपन्नो पि हि, महाराज, समणदुस्सीलो दायकानं दक्खिणं विसोधेति । यथा, महाराज, उदकं सुबहलं पि कललकद्दमरजोजल्लं अपनेति; एवमेव खो, महाराज, सुविपन्नो पि समणदुस्सीलो दायकानं दक्खिणं विसोधेति ।

"यथा वा पन, महाराज उण्होदकं सुकठितं पि पज्जलन्तं महन्तं अग्गिक्खन्धं निब्बापेति; एवमेव खो, महाराज, सुविपन्नो पि समणदुस्सीलो दायकानं दक्खिणं विसोधेति ।

"यथा वा पन, महाराज, भोजनं विरसं पि खुदादुब्बल्यं अपनेति, एवमेव खो, महाराज, सुविपन्नो पि समणदुस्सीलो दक्खिणं विसोधेति ।

"भासितं पेतं, महाराज, तथागतेन देवातिदेवेन **मज्झिमनिकाय**वरलञ्छके दक्खिणाविभङ्गे वेय्याकरणे—

'यो सीलवा दुस्सीलेसु ददाति दानं, धम्मेन लद्धं सुपसन्नचित्तो ।
अभिसद्दहं कम्मफलं उळारं, सा दक्खिणा दायकतो विसुज्झती' ति ॥

"अच्छरियं" भन्ते नागसेन, अब्भुतं, भन्ते नागसेन ! तावतकं मयं पञ्हं अपुच्छिम्ह, तं त्वं ओपम्मेहि कारणेहि विभावेन्तो अमतमधुरं सवनूपगं अकासि । यथा नाम, भन्ते, सूदो वा सूदन्तेवासी वा तावतकं मंसं लभित्वा नानाविधेहि सम्भारेहि सम्पादेत्वा राजूपभोगं करोति; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, तावतकं मयं पञ्हं अपुच्छिम्ह, तं त्वं ओपम्मेहि कारणेहि विभावेत्वा अमतमधुरं सवनूपगं अकासी" ति ।

९. उदकसत्तपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, इमं उदकं अग्गिम्हि तप्पमानं चिच्चिटायति चिटचिटायति सद्दायति बहुविधं । किन्नु खो, भन्ते नागसेन, उदकं जीवति, किं कीळमानं सद्दायति, उदाहु अञ्ञेन पटिपीळितं सद्दायती" ति ? "न हि, महाराज, उदकं जीवति, नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा । अपि च, महाराज, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं चिच्चिटायति चिटिचिटायति सद्दायति बहुविधं" ति ।

"भन्ते नागसेन, इधेकच्चे तित्थिया 'उदकं जीवती' ति सीतूदकं पटिक्खिपित्वा उदकं तापेत्वा वेकतिकवेकतिकं परिभुञ्जन्ति, ते तुम्हे गरहन्ति परिभवन्ति—'एकिन्द्रियं समणा सक्यपुत्तिया जीवं विहेठेन्ती' ति । तं तेसं गरहं परिभवं विनोदेहि अपनेहि निच्छारेही" ति ? "न हि, महाराज, उदकं जीवति, नत्थि, महाराज, उदके जीवो वा सत्तो वा । अपि च, महाराज, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं चिच्चिटायति चिटिचिटायति सद्दायति बहुविधं ।

२०. "यथा महाराज, उदकं सोब्भसरसरितदहतळाककन्दरपदरउदपाननिन्नपोक्खरणिगतं वातातपवेगस्स महन्तताय परियादियति परिक्खयं गच्छति, अपि नु तत्थ उदकं चिच्चिटायति चिटिचिटायति सद्दायति बहुविधं' ति ? "न हि, भन्ते" ति । "यदि, महाराज, उदकं जीवेय्य, तत्थापि उदकं सद्दायेय्य । इमिना पि, महाराज, कारणेन जानाहि—'नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं चिच्चिटायति चिटिचिटायति सद्दायति बहुविधं' ति ।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि—'नत्थि उदके जीवो वा

सत्तो वा। अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायती' ति। यदा पन महाराज, उदकं तण्डुलेहि सम्मिस्सितं भाजनगतं होति पहितं उद्धने अट्ठपितं, अपि नु तत्थ उदकं सद्दायती" ति? "न हि, भन्ते, अचलं होति सन्तसन्तं" ति। "तं येव पन, महाराज, उदकं भाजनगतं अग्गिं पज्जालेत्वा उद्धने ठपितं होति, अपि नु तत्थ उदकं अचलं होति सन्तसन्तं' ति? 'न हि, भन्ते, चलति खुभति लुळति आविलति, ऊमिजातं होति, उद्धमधो दिसाविदिसं गच्छति उत्तरति पतरति फेणमाली होती' ति। "किस्स पन तं, महाराज, पाकतिकं उदकं न चलति, सन्तसन्तं होति, किस्स पन अग्गिगतं चलति खुभति लुळति आविलति, ऊमिजातं होति, उद्धमधो दिसाविदिसं गच्छति, उत्तरति पतरति फेणमाली होती" ति? "पाकतिकं, भन्ते, उदकं न चलति; अग्गिगतं पन उदकं अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय चिच्चिटायति चिटिचिटायति सद्दायति बहुविधं" ति। "इमिना पि, महाराज, कारणेन जानाहि—'नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायती' ति।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि—नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायती' ति। होति तं, महाराज, उदकं घरे घरे उदकवारकगतं पिहितं' ति? "आम, भन्ते" ति। "अपि नु तं, महाराज, उदकं चलति खुभति लुळति आविलति, ऊमिजातं होति, उद्धमधो दिसाविदिसं गच्छति, उत्तरति पतरति, फेणमाली होती" ति? "न हि, भन्ते, अचलं तं होति पाकतिकं उदकवारकगतं उदकं" ति।

"सुतपुब्बं पन तया, महाराज—'महासमुद्दे उदकं चलति खुभति लुळति आविलति, ऊमिजातं होति, उद्धमधो दिसाविदिसं गच्छति, उत्तरति पतरति, फेणमाली होति, उस्सक्कित्वा ओस्सक्कित्वा वेलाय पहरति, सद्दायति बहुविधं" ति? "आम, भन्ते, सुतपुब्बं एतं मया दिट्ठपुब्बं च—'महासमुद्दे उदकं हत्थसतं पि द्वे पि हत्थसतानि गगने उस्सक्कती' ति। "किस्स, महाराज, उदकवारकगतं उदकं न चलति न सद्दायति, किस्स पन महासमुद्दे उदकं चलति सद्दायती" ति? 'वातवेगस्स महन्तताय, भन्ते, महासमुद्दे उदकं चलति सद्दायति, उदकवारकगतं उदकं अघट्टितं केहिचि न सद्दायती' ति। 'यथा, महाराज, वातवेगस्स महन्तताय महासमुद्दे उदकं चलति सद्दायति; एवमेव अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायती' ति।

"ननु, महाराज, भेरिपोक्खरं सुक्खं सुक्खेन गोचम्मेन ओनन्धन्ती" ति? "आम, भन्ते" ति। "अपि नु, महाराज, भेरिया जीवो वा सत्तो वा अत्थी" ति। "न हि भन्ते" ति। "किस्स पन, महाराज, भेरी सद्दायती" ति? 'इत्थिया वा, महाराज, पुरिसस्स वा तज्जेन वायामेना' ति। यथा, महाराज, इत्थिया वा

पुरिसस्स वा तज्जेन वायामेन भेरी सद्दायति; एवमेव अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायति। इमिना पि, महाराज, कारणेन जानाहि—'नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं सद्दायती' ति।

"मय्हं पि ताव, महाराज, तव पुच्छितब्बं अत्थि, एवमेव सो पञ्हो सुविनिहोति। किन्नु खो, महाराज, सब्बेहि पि भाजनेहि उदकं तप्पमानं सद्दायति, उदाहु एकच्चेहि येव भाजनेहि तप्पमानं सद्दायती" ति? "नहि, भन्ते, सब्बेहि पि भाजनेहि उदकं तप्पमानं सद्दायति, एकच्चेहि येव भाजनेहि उदकं तप्पमानं सद्दायती" ति। 'तेन हि, महाराज, जहितो सि सकसमयं, पच्चागतो सि मम विसयं, नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा। यदि, महाराज, सब्बेहि पि भाजनेहि उदकं तप्पमानं सद्दायेय्य, युत्तमिदं 'उदकं जीवती' ति वत्तुं। न हि, महाराज, उदकं द्वयं होति—'यं सद्दायति तं जीवति, यं न सद्दायति तं न जीवती' ति। यदि, महाराज, उदकं जीवेय्य, महन्तानं हत्थिनागानं उस्सन्नकायानं पभिन्नानं सोण्डाय उस्सिञ्चित्वा मुखे पक्खिपित्वा कुच्छि पवेसयन्तानं तं पि उदकं तेसं दन्तन्तरे चिप्पियमानं सद्दायेय्य। हत्थसतिका पि महानावा गरुका भारिका अनेकसतसहस्सभारपरिपूरा महासमुद्दे विचरन्ति, ताहि पि चिप्पियमानं उदकं सद्दायेय्य। महतिमहन्ता पि मच्छा अनेकसतयोजनिककाया, तिमी तिमिंगला तिमिरपिङ्गला, अब्भन्तरे निमुग्गा महासमुद्दे निवासट्ठानताय पटिवसन्ता महाउदकधारा आचमन्ति धमन्ति च, तेसं पि तं दन्तन्तरे पि उदरन्तरे पि चिप्पियमानं उदकं सद्दायेय्य। यस्मा च खो, महाराज, एवरूपेहि एवरूपेहि महन्तेहि पटिपीळनेहि पटिपीळितं उदकं न सद्दायति, तस्मा पि नत्थि उदके जीवो वा सत्तो वा ति। एवमेतं, महाराज, धारेही" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, दोसागतो पञ्हो अनुच्छविकाय विभत्तिया विभत्तो। यथा नाम, भन्ते नागसेन, महग्घं मणिरतनं छेकाचरियं कुसलं सिक्खितं मणिकारं पापुणित्वा कित्ति लभेय्य थोमनं पसंसं, मुत्तारतनं वा मुत्तिकं, दुस्सरतनं वा दुस्सिकं, लोहितचन्दनं वा गन्धिकं पापुणित्वा कित्ति लभेय्य थोमनं पसंसं; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, दोसागतो पञ्हो अनुच्छविकाय विभत्तिया विभत्तो, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

[इमस्मिं वग्गे नव पञ्हा] पठमो बुद्धवग्गो निट्ठितो।

२. निप्पपञ्चवग्गो

१. निप्पपञ्चपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, भासितं पेतं भगवता—'निप्पपञ्चारामा, भिक्खवे, विहरथ निप्पपञ्चरतिनो' ति। कतमं तं निप्पपञ्चं" ति?

२. "सोतापत्तिफलं, महाराज, निप्पपञ्चं, सकदागामिफलं, महाराज, निप्पपञ्चं, अनागामिफलं, महाराज, निप्पपञ्चं, अरहत्तफलं, महाराज, निप्पपञ्चं" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, सोतापत्तिफलं निप्पपञ्चं, सकदागामि...अनागामि....अरहत्तफलं निप्पपञ्चं, किस्स पन इमे भिक्खू उद्दिसन्ति परिपुच्छन्ति सुत्तं गेय्यं वेय्याकरणं गाथं उदानं इतिवुत्तकं जातकं अब्भुतधम्मं वेदल्लं नवकम्मेन पलिबुज्झन्ति दानेन च पूजाय च? ननु ते जिनप्पटिक्खित्तं कम्मं करोन्ती" ति?

"ये ते, महाराज, भिक्खू उद्दिसन्ति परिपुच्छन्ति सुत्तं गेय्यं वेय्याकरणं गाथं उदानं इतिवुत्तकं जातकं अब्भुतधम्मं वेदल्लं, नवकम्मेन पलिबुज्झन्ति दानेन च पूजाय च, सब्बे ते निप्पपञ्चस्स पत्तिया करोन्ति। ये ते, महाराज, सभावपरिसुद्धा पुब्बे वासितवासना, ते एकचित्तक्खणेन निप्पपञ्चा होन्ति। ये पन ते भिक्खू महारजक्खा, ते इमेहि पयोगेहि निप्पपञ्चा होन्ति।

"यथा, महाराज, एको पुरिसो खेत्ते बीजं रोपेत्वा अत्तनो यथाबलविरियेन विना पाकारवतिया धञ्ञं उद्धरेय्य, एको पुरिसो खेत्ते बीजं रोपेत्वा वनं पविसित्वा कट्ठं च साखं च छिन्दित्वा वतिपाकारं कत्वा धञ्ञं उद्धरेय्य, या तत्थ वतिपाकारपरियेसना सा धञ्ञत्थाय; एवमेव खो, महाराज, ये ते सभावपरिसुद्धा पुब्बे वासितवासना ते एकचित्तक्खणेन निप्पपञ्चा होन्ति, विना वतिपाकारं पुरिसो विय धञ्ञुद्धारो। ये पन ते भिक्खू महारजक्खा, ते इमेहि पयोगेहि निप्पपञ्चा होन्ति, वतिपाकारं कत्वा पुरिसो विय धञ्ञुद्धारो।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो महतिमहन्ते अम्बरुक्खमत्थके फलपिण्डि भवेय्य, अथ तत्थ यो कोचि इद्धिमा आगन्त्वा तस्स फलं हरेय्य, यो पन तत्थ अनिद्धिमा सो कट्ठं च वल्लिं च छिन्दित्वा निस्सेणिं बन्धित्वा ताय तं रुक्खं अभिरूहित्वा फलं हरेय्य, या तत्थ तस्स निस्सेणिपरियेसना सा फलत्थाय; एवमेव खो, महाराज, ये ते सभावपरिसुद्धा पुब्बे वासितवासना ते एकचित्तक्खणेन निप्पपञ्चा होन्ति, इद्धिमा विय रुक्खफलं हरन्तो। ये पन ते भिक्खू महारजक्खा ते इमिना पयोगेन सच्चानि अभिसमेन्ति, निस्सेणिया विय पुरिसो रुक्खफलं हरन्तो।

"यथा वा पन, महाराज, एको पुरिसो अत्थकरणिको एकको येव सामिकं उपगन्त्वा अत्थं साधेति, एको धनवा धनवसेन परिसं वड्ढेत्वा परिसाय अत्थं साधेति, या तत्थ तस्स परिसपरियेसना सा अत्थत्थाय; एवमेव खो, महाराज, ये ते सभावपरिसुद्धा पुब्बे वासितवासना ते एकचित्तक्खणेन छसु अभिञ्ञासु वसिभावं पापुणन्ति, पुरिसो विय एकको अत्थसिद्धिं करोन्तो। ये पन ते भिक्खू महारजक्खा ते इमेहि पयोगेहि सामञ्ञत्थमभिसाधेन्ति, परिसाय विय पुरिसो अत्थसिद्धिं करोन्तो।

"उद्देसो पि, महाराज, बहुकारो, परिपुच्छा पि बहुकारा, नवकम्मं पि बहुकारं, दानं पि बहुकारं, पूजा पि बहुकारा तेसु तेसु करणीयेसु। यथा महाराज, पुरिसो राजूपसेवी कतावी अमच्चभटबलत्थ-दोवारिक-अनीकट्ठपारिसज्जजनेहि, ते करणीये अनुप्पत्ते सब्बे पि उपकारा होन्ति; एवमेव खो, महाराज, उद्देसो पि बहुकारो, परिपुच्छा पि बहुकारा, नवकम्मं पि बहुकारं, दानं पि बहुकारं, पूजा पि बहुकारा तेसु तेसु करणीयेसु। यदि, महाराज, सब्बे पि अभिजातिपरिसुद्धा भवेय्युं, अनुसासनेन करणीयं न भवेय्य। यस्मा च खो, महाराज, सवनेन करणीयं होति। थेरो महाराज, सारिपुत्तो अपरिमितमसङ्खेय्यकप्पं उपादाय उपचितकुसलमूलो पञ्ञाय कोटिं गतो, सो पि विना सवनेन नासक्खि आसवक्खयं पापुणितुं। तस्मा, महाराज, बहुकारं सवनं, तथा उद्देसो पि, परिपुच्छा पि। तस्मा उद्देसपरिपुच्छा निप्पपञ्चा सङ्खाता" ति।

"सुविनिज्झापितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

२ खीणासवभावपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'यो गिही अरहत्तं पत्तो द्वे वास्स गतियो अनञ्ञा भवन्ति–तस्मियेव दिवसेपब्बजति वा परिनिब्बायति वा। न सो दिवसो सक्का अतिक्कमेतुं' ति। सचे सो, भन्ते नागसेन, तस्मिं दिवसे आचरियं वा पत्तचीवरं वा न लभेथ, अपि नु खो सो अरहा सयं वा पब्बजेय्य, दिवसं वा अतिक्कमेय्य, अञ्ञो कोचि अरहा इद्धिमा आगन्त्वा तं पब्बाजेय्य, परिनिब्बायेय्य वा" ? "न सो, महाराज, अरहा सयं पब्बजेय्य। सयं पब्बजन्तो थेय्यं आपज्जति। न च दिवसं अतिक्कमेय्य। अञ्ञस्स अरहन्तस्स आगमनं भवेय्य वा न वा भवेय्य, तस्मियेव दिवसे परिनिब्बायेय्या" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, अरहत्तस्स सन्तभावो विजहितो होति, येन अधिगतस्स जीवितहारो भवती" ति? "विसमं, महाराज, गिहिलिङ्गं, विसमे लिङ्गे लिङ्गदुब्बलताय अरहत्तं पत्तो गिही तस्मि येव दिवसे पब्बजति वा परिनिब्बायति वा। नेसो, महाराज, दोसो अरहत्तस्स, गिहिलिङ्गस्सेसो दोसो यदिदं लिङ्गदुब्बलता।

'यथा, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं आयुपालकं जीवितरक्खकं विसमकोट्ठस्स मन्ददुब्बलगहणिकस्स अविपाकेन जीवितं हरति, नेसो, महाराज, दोसो भोजनस्स, कोट्ठस्सेवेसो दोसो, यदिदं अग्गिदुब्बलता; एवमेव खो, महाराज, विसमे लिङ्गे लिङ्गदुब्बलताय अरहत्तं पत्तो गिही तस्मियेव दिवसे पब्बजति वा परिनिब्बायति वा। नेसो, महाराज, दोसो अरहत्तस्स, गिहिलिङ्गस्सेसो दोसो यदिदं लिङ्गदुब्बलता।

४. "यथा वा पन, महाराज, परित्तं तिणसलाकं उपरि गरुके पासाणे पतिते दुब्बलताय भिन्दित्वा पतति; एवमेव खो, महाराज, अरहत्तं पत्तो गिही तेन

लिङ्गेन अरहत्तं धारेतुं असक्कोन्तो तस्मियेव दिवसे पब्बजति वा परिनिब्बायति वा।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो अबलो दुब्बलो निहीनजच्चो परित्तपुञ्ञो महतिमहारज्जं लभित्वा खणेन परिपतति परिधंसति ओसक्कति, न सक्कोति इस्सरियं धारेतुं; एवमेव खो, महाराज, अरहत्तं पत्तो गिही तेन लिङ्गेन अरहत्तं धारेतुं न सक्कोति, तेन कारणेन तस्मिं येव दिवसे पब्बजति वा परिनिब्बायति वा" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

३. खीणासवसतिसम्मोसपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, अत्थि अरहतो सतिसम्मोसो" ति? "विगतसतिसम्मोसा खो, महाराज, अरहन्ता, नत्थि अरहन्तानं सतिसम्मोसो" ति। "आपज्जेय्य पन, भन्ते, अरहा आपत्ति" ति? "आम, महाराजा" ति। "किस्मिं वत्थुस्मिं" ति? "कुटिकारे, महाराजा, सञ्चरित्ते, विकाले कालसञ्ञाय, पवारिते अप्पवारितसञ्ञाय, अनतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञाया" ति।

"भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'ये आपत्तिं आपज्जन्ति ते द्वीहि कारणेहि आपज्जन्ति—अनादरियेन वा, अजानन्तेन वा' ति। अपि नु खो, भन्ते, अरहतो अनादरियं होति, यं अरहा आपत्तिं आपज्जती" ति? "न हि, महाराजा" ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, अरहा आपत्तिं आपज्जति, नत्थि च अरहतो अनाददरियं, तेन हि अत्थि अरहतो सतिसम्मोसो" ति "नत्थि, महाराज, अरहतो सतिसम्मोसो। आपत्तिं च अरहा आपज्जती" ति। तेन हि भन्ते, कारणेन मं सञ्ञापेहि, किं तत्थ कारणं" ति?

६. "द्वेमे, महाराज, किलेसा—लोकवज्जं, पण्णत्तिवज्जं चा ति। कतमं महाराज, लोकवज्जं? दस अकुसलकम्मपथा, इदं वुच्चति लोकवज्जं। कतमं पण्णत्तिवज्जं? यं लोके अत्थि समणानं अननुच्छविकं, अननुलोमिकं, गिहीनं अनवज्जं, तत्थ भगवा सावकानं सिक्खापदं पञ्ञापेति-'यावजीवं अनतिक्कमनीयं'। विकालभोजनं महाराज, लोकस्स अनवज्जं, तं जिनसासने वज्जं। भूतगामविकोपनं, महाराज, लोकस्स अनवज्जं, तं जिनसासने वज्जं। उदके हस्सधम्मं, महाराज, लोकस्स अनवज्जं, तं जिनसासने वज्जं। इति एवरूपानि एवरूपानि, महाराज, जिनसासने वज्जानि, इदं वुच्चति पण्णत्तिवज्जं।

"यं किलेसं लोकवज्जं अभब्बो खीणासवो तं अज्झाचरितुं। यं किलेसं पण्णत्तिवज्जं तं अजानन्तो आपज्जेय्य। अविसयो महाराज, एकच्चस्स अरहतो सब्बं जानितुं। न हि तस्स बलं अत्थि सब्बं जानितुं। अनञ्ञातं महाराज, अरहतो

इत्थिपुरिसानं नामं पि गोत्तं पि, मग्गो पि तस्स महिया अनञ्ञातो। विमुत्ति येव, महाराज, एकच्चो अरहा जानेय्य, छळभिञ्ञो अरहा सकविसयं जानेय्य। सब्बञ्ञू, महाराज, तथागतो व सब्बं जानाती" ति।

'साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

४. लोके नत्थिभावपञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, दिस्सन्ति लोके बुद्धा, दिस्सन्ति पच्चेकबुद्धा, दिस्सन्ति तथागतसावका, दिस्सन्ति चक्कवत्तिराजानो, दिस्सन्ति पदेसराजानो, दिस्सन्ति देवमनुस्सा, दिस्सन्ति सधना, दिस्सन्ति अधना, दिस्सन्ति सुगता, दिस्सन्ति दुग्गता, दिस्सति पुरिसस्स इत्थिलिङ्गं पातुभूतं, दिस्सति इत्थिया पुरिसलिङ्गं पातुभूतं, दिस्सति सुकतं दुक्कतं कम्मं, दिस्सन्ति कल्याणपापकानं कम्मानं विपाकूपभोगिनो सत्ता, अत्थि लोके सत्ता अण्डजा जलाबुजा संसेदजा ओपपातिका, अत्थि सत्ता अपदा दिपदा चतुप्पदा बहुप्पदा, अत्थि लोके यक्खा रक्खसा कुम्भण्डा असुरा दानवा गन्धब्बा पेता पिसाचा, अत्थि किन्नरा महोरगा नागा सुपण्णा सिद्धा विज्जाधरा, अत्थि हत्थी अस्सा गावो महिसा ओट्ठा गद्रभा अजा एळका मिगा सूकरा सीहा ब्यग्घा दीपी अच्छा कोका तरच्छा सोणा सिगाला, अत्थि बहुविधा सकुणा, अत्थि सुवण्णं रजतं मुत्ता मणि सङ्खो सिला पवाळं लोहितङ्को मसारगल्लं वेळुरियो वजिरं फलिकं काळलोहं तम्बलोहं वट्टलोहं कंसलोहं, अत्थि खोमं कोसेय्यं कप्पासिकं साणं भङ्गं कम्बलं, अत्थि सालि वीहि यवो कङ्गु कुद्रूसो वरको गोधूमो मुग्गो मासो तिलं कुलत्थं, अत्थि मूलगन्धो सारगन्धो फेग्गुगन्धो तचगन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलगन्धो सब्बगन्धो, अत्थि तिणलतागच्छरुक्खओसधिवनस्पतिनदीपब्बतसमुद्दमच्छकच्छपा, सब्बं लोके अत्थि। यं, भन्ते, लोके नत्थि तं मे कथेही" ति ?

८. "तीणिमानि, महाराज, लोके नत्थि, कतमानि तीणि ? सचेतना वा अचेतना वा अजरामरा लोके नत्थि, सङ्खारानं निच्चता नत्थि, परमत्थेन सत्तूपलद्धि नत्थि। इमानि खो, महाराज, तीणि लोके नत्थी" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

५. अकम्मजादिपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, दिस्सन्ति लोके कम्मनिब्बत्ता, दिस्सन्ति हेतुनिब्बत्ता, दिस्सन्ति उतुनिब्बत्ता। यं लोके अकम्मजं अहेतुजं अनुतुजं तं मे कथेही" ति ?

१०. "द्वेमे, महाराज, लोकस्मिं अकम्मजा अहेतुजा अनुतुजा। कतमे द्वे ? आकासो महाराज, अकम्मजो अहेतुजो अनुतुजो; निब्बानं महाराज, अकम्मजं अहेतुजं—इमे खो महाराज, द्वे अकम्मजा अहेतुजा अनुतुजा" ति।

"मा, भन्ते नागसेन, जिनवचनं मक्खेहि, मा अजानित्वा पञ्हं ब्याकरोही" ति ? "किं खो, महाराज, अहं वदामि यं मं त्वं एवं वदेसि—'मा, भन्ते नागसेन, जिनवचनं मक्खेहि, मा अजानित्वा पञ्हं ब्याकरोही" ति। "भन्ते नागसेन, युत्तमिदं ताव वत्तुं—'आकासो अकम्मजो अहेतुजो अनुतुजो' ति। अनेकसतेहि पन, भन्ते नागसेन, कारणेहि भगवता सावकानं निब्बानस्स सच्छिकिरियाय मग्गो अक्खातो, अथ च पन त्वं एवं वदेसि—'अहेतुजं निब्बानं'' ति।

"सच्चं, महाराज, भगवता अनेकसतेहि कारणेहि सावकानं निब्बानस्स सच्छिकिरियाय मग्गो अक्खातो, न च पन निब्बानस्स उप्पादाय हेतु अक्खातो" ति।

"एत्थ मयं, भन्ते नागसेन, अन्धकारतो अन्धकारतरं पविसाम, वनतो वनतरं पविसाम, गहनतो गहनतरं पविसाम, यत्र हि नाम निब्बानस्स सच्छिकिरियाय हेतु अत्थि, तस्स पन धम्मस्स उप्पादाय हेतु नत्थि। यदि, भन्ते नागसेन, निब्बानस्स सच्छिकिरियाय हेतु अत्थि, तेन हि निब्बानस्स उप्पादाय पि हेतु इच्छितब्बो।

"यथा पन, भन्ते नागसेन, पुत्तस्स पिता अत्थि, तेन कारणेन पितुनो पि पिता इच्छितब्बो। यथा अन्तेवासिकस्स आचरियो अत्थि, तेन कारणेन आचरियस्स पि आचरियो इच्छितब्बो। यथा अङ्कुरस्स बीजं अत्थि, तेन कारणेन बीजस्स पि बीजं इच्छितब्बं; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यदि निब्बानस्स सच्छिकिरियाय हेतु अत्थि, तेन कारणेन निब्बानस्स उप्पादाय पि हेतु इच्छितब्बो ?

"यथा रुक्खस्स वा लताय वा अग्गे सति तेन कारणेन मज्झं पि अत्थि मूलं पि अत्थि; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यदि निब्बानस्स सच्छिकिरियाय हेतु अत्थि, तेन कारणेन, निब्बानस्स उप्पादाय पि हेतु इच्छितब्बो" ति ?

अनुप्पादनीयं, महाराज, निब्बानं, तस्मा न निब्बानस्स उप्पादाय हेतु अक्खातो" ति।

११. "इङ्घ, भन्ते नागसेन, कारणं दस्सेत्वा कारणेन मं सञ्ञापेहि यथाहं जानेय्यं—'निब्बानस्स सच्छिकिरियाय हेतु अत्थि, निब्बानस्स उप्पादाय हेतु नत्थी" ति।

१२. "तेन हि, महाराज, सक्कच्चं सोतं ओदह, साधुकं सुणोहि, वक्खामि तत्थ कारणं। सक्कुणेय्य, महाराज, पुरिसो पाकतिकेन बलेन इतो हिमवन्तं पब्बतराजं उपगन्तुं" ति ? "आम, भन्ते" ति। "सक्कुणेय्य पन, महाराज, पुरिसो पाकतिकेन बलेन हिमवन्तं पब्बतराजं इध आहरितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, सक्का निब्बानस्स सच्छिकिरियाय मग्गो

अक्खातुं। न सक्का निब्बानस्स उप्पादाय हेतु दस्सेतुं। सक्कुणेय्य, महाराज, पुरिसो पाकतिकेन बलेन महासमुद्दं नावाय उत्तरित्वा पारिमतीरं गन्तुं" ति? "आम, भन्ते" ति। "सक्कुणेय्य पन सो, महाराज, पुरिसो पाकतिकेन बलेन महासमुद्दस्स पारिमतीरं इध आहरितुं" ति? "नहि, भन्ते" ति। "एवमेव खो, महाराज, सक्का निब्बानस्स सच्छिकिरियाय मग्गो अक्खातुं, न सक्का निब्बानस्स उप्पादाय हेतु दस्सेतुं। किं कारणं? असङ्खतत्ता धम्मस्सा" ति।

"असङ्खतं, भन्ते नागसेन, निब्बानं" ति? "आम, महाराज, असङ्खतं निब्बानं, न केहि पि कतं। निब्बानं, महाराज, न वत्तब्बं—'उप्पन्नं' ति वा 'अनुप्पन्नं' ति वा 'उप्पादनीयं' ति वा 'अतीतं' ति वा 'अनागतं' ति वा 'पच्चुप्पन्नं' ति वा 'चक्खुविञ्ञेय्यं' ति वा 'घानविञ्ञेय्यं' ति वा 'सोतविञ्ञेय्यं' ति वा 'जिव्हाविञ्ञेय्यं' ति वा 'कायविञ्ञेय्यं" ति वा" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, निब्बानं न उप्पन्नं न अनुप्पन्नं न उप्पादनीयं न अतीतं न अनागतं न पच्चुप्पन्नं न चक्खुविञ्ञेय्यं न सोतविञ्ञेय्यं न घानविञ्ञेय्यं न जिव्हाविञ्ञेय्यं न कायविञ्ञेयं, तेन हि, भन्ते नागसेन, तुम्हे नत्थिधम्मं निब्बानं अपदिसथ—'नत्थि निब्बानं' ति? "अत्थि, महाराज, निब्बानं। मनोविञ्ञेय्यं निब्बानं, विसुद्धेन मानसेन पणीतेन उजुकेन अनावरणेन निरामिसेन सम्मापटिपन्नो अरियसावको निब्बानं पस्सती" ति।

"कीदिसं पन तं, भन्ते, निब्बानं, यं तं ओपम्मेहि आदीपनीयं कारणेहि मं सञ्ञापेहि, यथा अत्थिधम्मं ओपम्मेहि आदीपनीयं" ति। "अत्थि, महाराज, वातो नामा" ति? "आम, भन्ते" ति। "इङ्घ, महाराज, वातं दस्सेहि वण्णतो वा सण्ठानतो वा अणुं वा थूलं वा दीघं वा रस्सं वा" ति? "न सक्का, भन्ते नागसेन, वातो उपदस्सयितुं, न सो वातो हत्थग्गहणं वा निम्मद्दनं वा उपेति, अपि च अत्थि सो वातो" ति। "यदि, महाराज, न सक्का वातो उपदस्सयितुं, तेन हि नत्थि वातो" ति? "जानामहं, भन्ते नागसेन; 'वातो अत्थी' ति मे हदये अनुपविट्ठं, न चाहं सक्कोमि वातं उपदस्सयितुं" ति। "एवमेव खो, महाराज, अत्थि निब्बानं, न च सक्का निब्बानं उपदस्सयितुं वण्णेन वा सण्ठानेन वा" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, सूपदस्सितं ओपम्मं, सुनिद्दिट्ठं कारणं, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामि—'अत्थि निब्बानं" ति।

६. कम्मजादिपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, कतमे एत्थ कम्मजा, कतमे हेतुजा, कतमे उतुजा, कतमे न कम्मजा, न हेतुजा न उतुजा" ति?

१४. "ये केचि, महाराज, सत्ता सचेतना सब्बे ते कम्मजा, अग्गि च सब्बानि

च बीजजातानि हेतुजानि, पठवी च पब्बता च उदकं च वातो च सब्बे ते उतुजा, आकासो च निब्बानं च इमे द्वे अकम्मजा अहेतुजा अनुतुजा। निब्बानं पन, महाराज, न वत्तब्बं कम्मजं ति वा हेतुजं ति वा उतुजं ति वा उप्पन्नं ति वा अनुप्पन्नं ति वा उप्पादनीयं ति वा अतीतं ति वा अनागतं ति वा पच्चुप्पन्नं ति वा चक्खुविञ्ञेय्यं ति वा सोतविञ्ञेय्यं ति वा घानविञ्ञेय्यं ति वा जिव्हाविञ्ञेय्यं ति वा कायविञ्ञेय्यं ति वा। अपि च, महाराज, मनोविञ्ञेय्यं निब्बानं यं सो सम्मापटिपन्नो अरियसावको विसुद्धेन ञाणेन पस्सती'' ति।

''रमणीयो, भन्ते नागसेन, पञ्हो सुविनिच्छितो निस्संसयो एकन्तगतो, विमति उपच्छिन्ना, त्वं गणिवरपवरमासज्जा'' ति।

७. यक्खपञ्हो

१५. ''भन्ते नागसेन, अत्थि लोके यक्खा नामा'' ति? ''आम, महाराज, अत्थि लोके यक्खा नामा'' ति। ''चवन्ति पन ते, भन्ते, यक्खा तम्हा योनिया'' ति? ''आम, महाराज, चवन्ति ते तम्हा योनिया'' ति। ''किस्स पन, भन्ते नागसेन, तेसं मतानं यक्खानं सरीरं न दिस्सति, कुणपगन्धो पि न वायतो'' ति?

१६. ''दिस्सति, महाराज, मतानं यक्खानं सरीरं, कुणपगन्धो पि तेसं वायति। मतानं, महाराज, यक्खानं सरीरं, कुणपगन्धो वा दिस्सति, किमिवण्णेन वा दिस्सति, किपिल्लिकवण्णेन वा दिस्सति, पटङ्गवण्णेन वा दिस्सति, अहिवण्णेन वा दिस्सति, विच्छिकवण्णेन वा दिस्सति, सतपदिवण्णेन वा दिस्सति, दिजवण्णेन वा दिस्सति, मिगवण्णेन वा दिस्सती'' ति।

''को हि, भन्ते नागसेन, अञ्ञो इदं पञ्हं पुट्ठो विस्सज्जेय्य अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता'' ति!

८. अनवसेससिक्खापदपञ्हो

१७. ''भन्ते, नागसेन, ये ते अहेसुं तिकिच्छकानं पुब्बका आचरिया, सेय्यथीदं—नारदो, धम्मन्तरी, अङ्गीरसो, कपिलो, कण्डरग्गि, सामो, अतुलो, पुब्बकच्चायनो। सब्बे पेते आचरिया सकिं येव रोगुप्पत्तिं च निदानं च सभावं च समुट्ठानं च तिकिच्छं च किरियं च सिद्धासिद्धं च सब्बं तं निरवसेसं जानित्वा—'इमस्मिं काये एत्तका रोगा उप्पज्जिस्सन्ती' ति एकप्पहारेन कलापग्गाहं करित्वा सुत्तं बन्धिंसु। असब्बञ्ञुनो एते सब्बे। किस्स पन तथागतो सब्बञ्ञू समानो अनागतं किरियं बुद्धञाणेन जानित्वा—'एत्तके नाम वत्थुस्मिं एत्तकं नाम सिक्खपदं पञ्ञापेतब्बं भविस्सती' ति परिच्छिन्दित्वा अनवसेसतो सिक्खापदं न पञ्ञापेसि? उप्पन्नुपन्ने वत्थुस्मिं अयसे पाकटे, दोसे वित्थारिते पुथुगते, उज्झायन्तेसु मनुस्सेसु, तस्मिं तस्मिं काले सावकानं सिक्खापदं पञ्ञापेसी'' ति?

१८. "ञातमेतं, महाराज, तथागतस्स—'इमस्मिं समये इमेसु मनुस्सेसु साधिकं दियड्ढसिक्खापदसतं पञ्ञापेतब्बं भविस्सती' ति। अपि च तथागतस्स एवं अहोसि—'सचे खो अहं साधिकं दियड्ढसिक्खापदसतं एकप्पहारं पञ्ञापेस्सामि, महाजनो सन्तासमापज्जिस्सति—'बहुकं इध रक्खितब्बं, दुक्करं वत, भो, गोतमस्स सासने पब्बजितुं' ति, पब्बजितुकामा पि न पब्बजिस्सन्ति, वचनं च मे न सद्दहिस्सन्ति, असद्दहन्ता ते मनुस्सा अपायगामिनो भविस्सन्ति। उप्पन्नुप्पन्नवत्थुस्मिं धम्मदेसनाय विञ्ञापेत्वा पाकटे दोसे सिक्खापदं पञ्ञापेस्सामी' ति।

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, बुद्धानं, अब्भुतं, भन्ते नागसेन, बुद्धानं; याव महन्तं तथागतस्स सब्बञ्ञुतञाणं। एवमेतं, भन्ते नागसेन, सुनिद्दिट्ठो एसो अत्थो तथागतेन, 'बहुकं इध रक्खितब्बं' ति सुत्वा सत्तानं सन्तासो उप्पज्जेय्य, एको पि जिनसासने न पब्बजेय्य, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

९. सुरियतपनपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, अयं सुरियो सब्बकालं कठिनं तपति, उदाहु किञ्चि कालं मन्दं तपती" ति? "सब्बकालं, महाराज, सुरियो कठिनं तपति, न किञ्चि कालं मन्दं तपती" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, सुरियो सब्बकालं कठिनं तपति, किस्स पन अप्पेकदा सुरियो कठिनं तपति, अप्पेकदा मन्दं तपती" ति?

२०. चत्तारो मे, महाराज, सुरियस्स रोगा, येसं अञ्ञतरेन रोगेन परिपीळितो सुरियो मन्दं तपति। कतमे चत्तारो? अब्भं, महाराज, सुरियस्स रोगो, तेन रोगेन पटिपीळितो सुरियो मन्दं तपति। महिका, महाराज, सुरियस्स रोगो, तेन रोगेन पटिपीळितो सुरियो मन्दं तपति। मेघो, महाराज, सुरियस्स रोगो, तेन कारणेन पटिपीळितो सुरियो मन्दं तपति। राहु, महाराज, सुरियस्स रोगो, तेन रोगेन पटिपीळितो सुरियो मन्दं तपति। इमे खो, महाराज, सुरियस्स चत्तारो रोगा, तेसं अञ्ञतरेन पटिपीळितो सुरियो मन्दं तपती" ति।

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं, भन्ते नागसेन, सुरियस्स पि ताव तेजोसम्पन्नस्स रोगो उप्पज्जिस्सति, किमङ्ग, अञ्ञेसं सत्तानं! नत्थि, भन्ते, एसा विभत्ति अञ्ञस्स अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता" ति।

१०. कठिनतपनपञ्हो

२१. "भन्ते नागसेन, किस्स हेमन्ते सुरियो कठिनं तपति, नो तथा गिम्हे" ति?

२२. "गिम्हे, महाराज, अनुपहतं होति रजोजल्लं, वातक्खुभिता रेणू गगनानुगता होन्ति, आकासे पि अब्भा सुबहुला होन्ति, महावातो च अधिमत्तं

वायति। ते सब्बे नानाकुला समायुत्ता सुरियरंसियो पिदहन्ति। तेन गिम्हे सुरियो मन्दं तपति। हेमन्ते पन, महाराज, हेट्ठा पठवी निब्बुता होति, उपरि महामेघो उपट्ठितो होति, उपसन्तं होति रजोजल्लं, रेणू च सन्तसन्तं गगने चरति, विगतवलाहको च होति आकासो, वातो च मन्दमन्दं वायति। एतेसं उपरतिया विसुद्धा होन्ति सुरियरंसियो, उपघातविमुत्तस्स सुरियस्स तापो अतिविय तपति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन सुरियो हेमन्ते कठिनं तपति, नो तथा गिम्हे" ति।

"सब्बीतिमुत्तो, भन्ते, सुरियो कठिनं तपति, मेघादिसहगतो कठिनं न तपती" ति।

[इमस्मिं वग्गे दस पञ्हा] दुतियो निप्पपञ्चवग्गो निट्ठितो।

३. वेस्सन्तरवग्गो

१. वेस्सन्तरपञ्हो

१. "भन्ते नागसेन, सब्बेव बोधिसत्ता पुत्तदारं देन्ति, उदाहु वेस्सन्तरेनेव रञ्ञा पुत्तदारं दिन्नं" ति? "सब्बे पि, महाराज, बोधिसत्ता पुत्तदारं देन्ति, न वेस्सन्तरेनेव रञ्ञा पुत्तदारं दिन्नं" ति। "अपि नु खो, भन्ते नागसेन, तेसं अनुमतेन देन्ती" ति? "भरिया, महाराज, अनुमता, दारका पन बालताय विलपिंसु। यदि ते अत्थतो जानेय्युं, ते पि अनुमोदेय्युं, न ते विलपेय्युं" ति।

"दुक्करं, भन्ते नागसेन, बोधिसत्तेन कतं, यं सो अत्तनो ओरसे पिये पुत्ते ब्राह्मणस्स दानत्थाय अदासि।

"इदं पि दुतियं दुक्करतो दुक्करतरं, यं सो अत्तनो ओरसे पिये पुत्ते बालके तरुणके लताय बन्धित्वा तेन ब्राह्मणेन लताय अनुमज्जियन्ते दिस्वा अज्झुपेक्खि।

"इदं पि ततियं दुक्करतो दुक्करतरं, यं सो सकेन बलेन बन्धना मुच्चित्वा आगते दारके सारज्जमुपगते पुनदेव लताय बन्धित्वा अदासि।

"इदं पि चतुत्थं दुक्करतो दुक्करतरं, यं सो दारके—'अयं खो, तात, यक्खो खादितुं नेति अम्हे' ति विलपन्ते—'मा भायित्था' ति न अस्सासेसि।

"इदं पि पञ्चमं दुक्करतो दुक्करतरं, यं सो जालिस्स कुमारस्स रुदमानस्स पादेसु निपतित्वा—'अलं, तात, कण्हाजिनं निवत्तेहि, अहमेव गच्छामि यक्खेन सह, खादतु मं यक्खो" ति याचमानस्स एवं न सम्पटिच्छि।

"इदं पि छट्ठं दुक्करतो दुक्करतरं, यं सो जालिकुमारस्स—'पासाणसमं नून ते, तात, हदयं यं त्वं अम्हाकं दुक्खितानं पेक्खमानो निम्मनुस्सके ब्रहारञ्ञे यक्खेन नीयमाने न निवारेसी' ति विलपमानस्स कारुञ्ञं नाकासि।

"इदं पि सत्तमं दुक्करतो दुक्करतरं, यं तस्स रूळारूळस्स भीमभीमस्स नीते दारके अदस्सनं गमिते न फलि हदयं सतधा वा सहस्सधा वा। पुञ्ञकामेन मनुजेन किं परदुक्खापनेन! ननु नाम सकदानं दातब्बं होती" ति।

२. "दुक्करस्स, महाराज, कतत्ता बोधिसत्तस्स कित्तिसद्दो दससहस्सिया लोकधातुया सदेवमनुस्सेसु अब्भुग्गतो। देवा देवभवने पकित्तेन्ति, असुरा असुरभवने पकित्तेन्ति, गरुळा गरुळभवने पकित्तेन्ति, नागा नागभवने पकित्तेन्ति, यक्खा यक्खभवने पकित्तेन्ति। अनुपुब्बेन तस्स कित्तिसद्दो परम्पराय अज्जेतरहि इध अम्हाकं समयं अनुप्पत्तो, तं मयं दानं पकित्तेन्ता विकोपेन्ता निसिन्ना—'सुदिन्नं उदाहु दुद्दिन्नं' ति। सो खो पनायं, महाराज, कित्तिसद्दो निपुणानं विञ्ञूनं विदूनं विभावीनं बोधिसत्तानं दस गुणे अनुदस्सति, कतमे दस? अगेधता, निरालयता, चागो, पहानं, अपुनरावत्तिता, सुखुमता, महन्तता, दुरनुबोधता, दुल्लभता, असदिसता बुद्धधम्मस्स। सो खो पनायं, महाराज, कित्तिसद्दो निपुणानं विञ्ञूनं विदूनं विभावीनं बोधिसत्तानं इमे दस गुणे अनुदस्सती" ति।

"भन्ते नागसेन, यो परं दुक्खापेत्वा दानं देति, अपि नु तं दानं सुखविपाकं होति सग्गसंवत्तनिकं" ति? "आम, महाराज, किं वत्तब्बं" ति। "इध, भन्ते नागसेन, कारणं उपदस्सेही" ति? "इध, महाराज, कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा सीलवा होति कल्याणधम्मो, सो भवेय्य पक्खहतो वा पीठसप्पि वा अञ्ञतरं वा ब्याधिं आपन्नो। तमेनं यो कोचि पुञ्ञकामो यानं आरोपेत्वा पत्थितं देसमनुपापेय्य। अपि नु खो, महाराज, तस्स पुरिसस्स ततोनिदानं किञ्चि सुखं निब्बत्तेय्य, सग्गसंवत्तनिकं तं कम्मं" ति? "आम, भन्ते, किं वत्तब्बं! हत्थियानं वा सो, भन्ते, पुरिसो लभेय्य, अस्सयानं वा, रथयानं वा, थले थलयानं, जले जलयानं, देवेसु देवयानं, मनुस्सेसु मनुस्सयानं, तदनुच्छविकं तदनुलोमिकं भवे भवे निब्बत्तेय्य, तदनुच्छविकानि तदनुलोमिकानि चस्स सुखानि निब्बत्तेय्युं। सुगतितो सुगतिं गच्छेय्य, तेनेव कम्माभिसन्देन इद्धियानं अभिरुय्ह पत्थितं निब्बाननगरं पापुणेय्या" ति। "तेन हि, महाराज, परदुक्खापनेन दिन्नदानं सुखविपाकं होति सग्गसंवत्तनिकं यं सो पुरिसो बलीवद्दे दुक्खापेत्वा एवरूपं सुखं अनुभवति।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, यथा परदुक्खापनेन दिन्नदानं सुखविपाकं होति सग्गसंवत्तनिकं। इध, महाराज, यो कोचि राजा जनपदतो धम्मिकं बलिं उद्धरापेत्वा आणापवत्तनेन दानं ददेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, राजा ततोनिदानं किञ्चि सुखं अनुभवेय्य, सग्गसंवत्तनिकं तं दानं" ति ? "आम, भन्ते, किं वत्तब्बं ! ततोनिदानं सो, भन्ते, राजा उत्तरिं अनेकसतसहस्सगुणं लभेय्य, राजूनं अतिराजा भवेय्य, देवानं अतिदेवो भवेय्य, ब्रह्मानं अतिब्रह्मा भवेय्य, समणानं अतिसमणो भवेय्य, ब्राह्मणानं अतिब्राह्मणो भवेय्य, अरहन्तानं अतिअरहा भवेय्या" ति। "तेन हि, महाराज, परदुक्खापनेन दिन्नदानं सुखविपाकं होति सग्गसंवत्तनिकं, यं सो राजा बलिना जनं पीळेत्वा दिन्नदानेन एवरूपं उत्तरिं अनुभवती" ति।

"अतिदानं, भन्ते नागसेन, वेस्सन्तरेन रञ्ञा दिन्नं, यं सो सकं भरियं परस्स भरियत्थाय अदासि, सके ओरसे पुत्ते ब्राह्मणस्स दासत्थाय अदासि। अतिदानं नाम, भन्ते, नागसेन, लोके विदूहि निन्दितं गरहितं। यथा नाम, भन्ते नागसेन, अतिभारेन सकटस्स अक्खो भिज्जति, अतिभारेन नावा ओसीदति, अतिभुत्तेन भोजनं विसमं परिणमति, अतिवस्सेन धञ्ञं विनस्सति, अतिदानेन भोगक्खयं उपेति, अतिपापेन पठवी उपडय्हति, अतिरागेन उम्मत्तको होति, अतिदोसेन वज्झो होति, अतिमोहेन अनयं आपज्जति, अतिलोभेन चोरग्गहणमुपगच्छति, अतिभयेन निरुज्झति, अतिपूरेन नदी उत्तरति, अतिवातेन असनि पतति, अतिअग्गिना ओदनं उत्तरति, अतिसञ्चरणेन न चिरं जीवति; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, अतिदानं नाम लोके विदूहि निन्दितं गरहितं। अतिदानं, भन्ते नागसेन, वेस्सन्तरेन रञ्ञा दिन्नं, न तत्थ किञ्चि फलं इच्छितब्बं" ति ?

"अतिदानं, महाराज, लोके विदूहि वण्णितं थुतं पसत्थं। ये केचि यादिसं कीदिसं दानं देन्ति, अतिदानदायी लोके कित्तिं पापुणाति। यथा, महाराज, अतिपवरताय दिब्बं वनमूलं गहितं पि हत्थपासे ठितानं परजनानं न दस्सयति, अगदो अतिजच्चताय पीळाय समुग्घातको रोगानं अन्तकरो, अग्गि अतिजोतिताय डहति, उदकं अतिसीतताय निब्बापेति, पदुमं अतिपरिसुद्धताय न उपलिप्पति वारिकद्दमेन, मणि अतिगुणताय कामददो, वजिरं अतितिखिणताय विज्झति मणिमुत्ताफलिकं, पठवी अतिमहन्तताय नरोरगमिगपक्खिजलसेलपब्बतदुमे धारेति, समुद्दो अतिमहन्तताय अपरिपूरणो, सिनेरु अतिभारिकताय अचलो, आकासो अतिवित्थारताय अनन्तो, सुरियो अतिप्पभताय तिमिरं घातेति, सीहो अतिजातिताय विगतभयो, मल्लो अतिबलवताय पटिमल्लं खिप्पं उक्खिपति, राजा अतिपुञ्ञताय

अधिपति, भिक्खु अतिसीलवन्तताय नागयक्खनरमरूहि नमस्सनीयो, बुद्धो अतिअग्गताय अनूपमो; एवमेव खो, महाराज, अतिदानं नाम लोके विदूहि वण्णितं थुतं पसत्थं। ये केचि यादिसं कीदिसं दानं देन्ति, अतिदानदायी लोके कित्ति पापुणाति। अतिदानेन वेस्सन्तरो राजा दससहस्सिया लोकधातुया वण्णितो थुतो पसत्थो महितो कित्तितो। तेनेव अतिदानेन वेस्सन्तरो राजा अज्जेतरहि बुद्धो जातो अग्गो सदेवके लोके।

"अत्थि पन, महाराज, लोके ठपनीयं दानं यं दक्खिणेय्ये अनुप्पत्ते न दातब्बं" ति। "दस खो पनिमानि, भन्ते नागसेन, दानानि यानि लोके अदानसम्मतानि, यो तानि दानानि देति सो अपायगामी होति। कतमानि दस ? मज्जदानं, भन्ते, नागसेन, लोके अदानसम्मतं, यो तं देति सो अपायगामी होति। समज्जदानं पे०....इत्थिदानं....उसभदानं....चित्तकम्मदानं....सत्थदानं....विसदानं ....सङ्खलिकदानं....कुक्कुटसूकरदानं....तुलाकूटमानकूटदानं, भन्ते नागसेन, लोके अदानसम्मतं होति, यो तं देति सो अपायगामी होति। इमानि खो, भन्ते नागसेन, दस दानानि लोके अदानसम्मतानि, यो तानि दानानि देति सो अपायगामी होती" ति ?

"नाहं तं, महाराज, अदानसम्मतं पुच्छामि। इमं ख्वाहं, महाराज, तं पुच्छामि—'अत्थि पन, महाराज, लोके ठपनीयं दानं यं दक्खिणेये अनुप्पत्ते न दातब्बं", ति ? "नत्थि, भन्ते नागसेन, लोके ठपनीयं दानं यं दक्खिणेय्ये अनुप्पत्ते न दातब्बं। चित्तप्पसादे उप्पन्ने केचि दक्खिणेय्यानं भोजनं देन्ति, केचि अच्छादनं, केचि सयनं, केचि आवसथं, केचि अत्थरणपापुरणं, केचि दासिदासं, केचि खेत्तवत्थुं, केचि दिपदचतुप्पदं, केचि सतं सहस्सं सतसहस्सं, केचि महारज्जं, केचि जीवितं पि देन्ती" ति। "यदि पन, महाराज, केचि जीवितं पि देन्ति, किंकारणा वेस्सन्तरं दानपतिं अतिबाळ्हं परिपातेसि सुदिन्ने पुत्ते च दारे चा' ति !

"अपि नु खो, महाराज, अत्थि लोकपकति लोकाचिण्णं—लभति पिता पुत्तं इणट्टो वा आजीविकपकतो वा आवापितुं वा विक्किणितुं वा" ति ? "आम, भन्ते, लभति पिता पुत्तं इणट्टो वा आजीविकपकतो वा आवापितुं वा विक्किणितुं वा" ति। "यदि, महाराज, लभति पिता पुत्तं इणट्टो वा आजीविकपकतो वा आवपितुं वा विक्किणितुं वा, वेस्सन्तरो पि, महाराज, राजा अलभमानो सब्बञ्ञुतञाणं उपद्दुतो दुक्खितो तस्स धम्मधनस्स पटिलाभाय पुत्तदानं आवापेसि च विक्किणि च। इति, महाराज, वेस्सन्तरेन रञ्ञा अञ्ञेसं दिन्नं येव दिन्नं, कतं येव कतं। किस्स पन त्वं, महाराज, तेन दानेन वेस्सन्तरं दानपतिं अतिबाळ्हं अपसादेसी" ति !

"नाहं, भन्ते नागसेन, वेस्सन्तरस्स दानपतिनो दानं गरहामि, अपि च पुत्तदारं याचन्ते निमिनित्वा अत्तानं दातब्बं'' ति। "एवं खो, महाराज, असब्भि-कारणं, यं पुत्तदारं याचन्ते अत्तानं ददेय्य। यं यं हि याचन्ते तं तदेव दातब्बं, एतं सप्पुरिसानं कम्मं। यथा, महाराज, कोचि पुरिसो पानीयं आहरापेय्य, तस्स यो भोजनं ददेय्य; अपि नु सो, महाराज, पुरिसो तस्स किच्चकारी अस्सा" ति ? "न हि, भन्ते, यं सो आहरापेति, तमेव तस्स देन्तो किच्चकारी अस्सा" ति। "एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरो राजा ब्राह्मणे पुत्तदारं याचन्ते पुत्तदारं येव अदासि। सचे, महाराज, ब्राह्मणो वेस्सन्तरस्स सरीरं याचेय्य, न सो महा-राज, अत्तानं रक्खेय्य, न कम्पेय्य न रज्जेय्य, तस्स दिन्नं परिच्चत्तं येव सरीरं भवेय्य। सचे, महाराज, कोचि वेस्सन्तरं दानपतिं उपगन्त्वा याचेय्य—'दासत्तं मे उपेही' ति, दिन्नं परिच्चतं येवस्स सरीरं भवेय्य, न सो दत्वा तपेय्य। रञ्ञो, महाराज, वेस्सन्तरस्स कायो बहुसाधारणो।

"यथा, महाराज, पक्का मंसपेसि बहुसाधारणा; एवमेव खो, महाराज, रञ्ञो वेस्सन्तरस्स कायो बहुसाधारणो। यथा वा पन, महाराज, फलितो रुक्खो नानादिजगणसाधारणो; एवमेव खो, महाराज, रञ्ञो वेस्सन्तरस्स कायो बहुसाधारणो। किंकारणा ? 'एवाहं पटिज्जन्तो सम्मासम्बोधिं पापुणि-स्सामी' ति।

"यथा, महाराज, पुरिसो अधनो धनत्थिको धनपरियेसनं चरमानो अजपथं सङ्कुपथं वेत्तपथं गच्छति, जलथलवाणिज्जं करोति, कायेन वाचाय मनसा धनं आराधेति, धनप्पटिलाभाय वायमति; एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरो दानपति अधनो बुद्धधनेन सब्बञ्ञुतञाणरतनप्पटिलाभाय याचकानं धनधञ्ञं दासिदासं यानवाहनं सकलसापतेय्यं सकं पुत्तदारं अत्तानं च चजित्वा सम्मा-सम्बोधिं येव परियेसति।

"यथा वा पन, महाराज, अमच्चो मुद्दकामो मुद्दाधिकरणं यं किञ्चि गेहे धनधञ्ञं हिरञ्ञसुवण्णं, तं सब्बं दत्वा पि मुद्दपटिलाभाय वायमति; एवमेव खो महाराज, वेस्सन्तरो दानपति सब्बं तं बाहिरब्भन्तरं धनं दत्वा जीवितं पि परेसं दत्वा सम्मासम्बोधिं येव परियेसति।

"अपि च, महाराज, वेस्सन्तरस्स दानपतिनो एवं अहोसि—'यं सो ब्राह्मणो याचति तमेवाहं तस्स देन्तो किच्चकारी नाम होमी' ति, एवं सो तस्स पुत्तदारम-दासि। न खो, महाराज, वेसन्तरो दानपति देस्सताय ब्राह्मणस्स पुत्तदारम-दासि, न अदस्सनकामताय पुत्तदारमदासि, न 'अतिबहुका मे पुत्तदारा, न सक्कोमि ते पोसेतुं' ति पुत्तदारमदासि, न उक्कण्ठितो—'अप्पिया मे' ति नीहरि-तुकामताय पुत्तदारमहासि। अथ खो सब्बञ्ञुतञाणरतनस्सेव पियत्ता सब्ब-

ञ्ञुतञाणस्स कारणा वेस्सन्तरो राजा एवरूपं अतुलं विपुलमनुत्तरं पियं मनापं दयितं पाणसमं पुत्तदारदानवरं ब्राह्मणस्स अदासि । भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **चरियापिटके—**

'न मे देस्सा उभो पुत्ता, मद्दी देवी न देस्सिया ।
सब्बञ्ञुतं पियं मय्हं, तस्मा पिये अदासहं' ति ॥

"तस्मा, महाराज, वेस्सन्तरो राजा पुत्तदारं दत्वा पण्णसालं पविसित्वा निपज्जि, तस्स अतिपेमेन दुक्खितस्स बलवसोको उप्पज्जि, हदयवत्थु उण्हमहोसि, नासिकाय अप्पहोन्तिया मुखेन उण्हे अस्सासपस्सासे विस्सज्जेसि, अस्सूनि परिवत्तित्वा लोहितबिन्दूनि हुत्वा नेत्तेहि निक्खमिंसु । एवं खो, महाराज, दुक्खेन वेस्सन्तरो राजा ब्राह्मणस्स पुत्तदारमदासि—'मा मे दानपथो परिहायी' ति ।

"अपि च, महाराज, वेस्सन्तरो राजा द्वे अत्थवसे पटिच्च ब्राह्मणस्स द्वे दारके अदासि । कतमे द्वे ? 'दानपथो च मे अपरिहीनो भविस्सति, दुक्खिते च मे पुत्तके वनमूलफलेहि इतोनिदानं अय्यको मोचेस्सती' ति । जानाति हि महाराज, वेस्सन्तरो राजा—'न मे दारका सक्का केनचि दासभावेन भुञ्जितुं, इमे च दारके अय्यको निक्किणिस्सति, एवं अम्हाकं पि गमनं भविस्सती' ति । इमे खो, महाराज, द्वे अत्थवसे पटिच्च ब्राह्मणस्स द्वे दारके अदासि ।

"अपि च, महाराज, वेस्सन्तरो राजा जानाति—'अयं खो ब्राह्मणो जिण्णो वुड्ढो महल्लको दुब्बलो भग्गो दण्डपरायणो खीणायुको परित्तपुञ्ञो, नेसो समत्थो इमे दारके दासभोगेन भुञ्जितुं' ति । सक्कुणेय्य पन, महाराज, पुरिसो पाकतिकेन बलेन इमे चन्दिमसुरिये एवंमहिद्धिके एवंमहानुभावे गहेत्वा पेळाय वा समुग्गे वा पक्खिपित्वा निप्पन्ने कत्वा थालकपरिभोगेन परिभुञ्जितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, इमस्मिं लोके चन्दिमसुरियपटिभागस्स वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं ।

अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं । यथा, महाराज, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स मणिरतनं सुभं जातिमन्तं अट्ठंसं सुपरिकम्मतं चतुहत्थायामं सकटनाभिपरिणाहं न सक्का केनचि पिलोतिकाय वेठेत्वा पेळाय पक्खिपित्वा सत्थकनिसानपरिभोगेन परिभुञ्जितुं; एवमेव खो, महाराज, लोके चक्कवत्तिरञ्ञो मणिरतनपटिभागस्स वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं ।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं। यथा, महाराज, तिधा पभिन्नो सब्बसेतो सत्तप्पतिट्ठितो अट्ठरतनुब्बेधो नवरतनायामपरिणाहो पासादिको दस्सनीयो उपोसथो नागराजा न सक्का केनचि सुप्पेन वा सरावेन वा पिदहितुं, गोवच्छको विय वच्छकसालाय पक्खिपित्वा परिहरितुं वा; एवमेव खो, महाराज, लोके उपोसथनागराजप्पटिभागस्स वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं। यथा, महाराज, महासमुद्दो दीघपुथुलवित्थिण्णो गम्भीरो अप्पमेय्यो दुरुत्तरो अपरियोगाळ्हो अनावटो न सक्का केनचि सब्बत्थ पिदहित्वा एकतित्थेन परिभोगं कातुं; एवमेव खो, महाराज, लोके महासमुद्दपटिभागस्सेव वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं। यथा, महाराज, हिमवन्तो पब्बतराजा पञ्चयोजनसतं अब्भुग्गतो नभे तिसहस्सयोजनायामवित्थारो चतुरासीतिकूटसहस्सपटिमण्डितो पञ्चन्नं महानदीसतानं पभवो महाभूतगणालयो नानाविधगन्धधरो दिब्बोसधसतसमलङ्कतो नभे वलाहको विय अब्भुग्गतो दिस्सति; एवमेव खो, महाराज, हिमवन्तपब्बतराजपटिभागस्स वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं....पे०....भुञ्जितुं। यथा, महाराज, रत्तन्धकारतिमिसायं उपरिपब्बतग्गे जलमानो महा अग्गिक्खन्धो सुविदूरे पि पञ्ञायति; एवमेव खो, महाराज, वेस्सन्तरो राजा पब्बतग्गे जलमानो महाअग्गिक्खन्धो विय सुविदूरे पि पाकटो पञ्ञायति। तस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन वेस्सन्तरस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं। यथा, महाराज, हिमवन्ते पब्बते नागपुप्फसमये उजुवाते वायन्ते दस द्वादस योजनानि पुप्फगन्धो वायति; एवमेव खो महाराज, वेस्सन्तरस्स रञ्ञो पि योजनसतसहस्सेहि पि याव अकनिट्ठभवनं एत्थन्तरे सुरासुरगरुळगन्धब्बयक्खरक्खसमहोरगकिन्नरइन्दभवनेसु कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो, सीलवरगन्धो चस्स सम्पवायति, तेन तस्स दारका न सक्का केनचि दासभोगेन भुञ्जितुं।

"अनुसिट्ठो, महाराज, जालिकुमारो पितरा वेस्सन्तरेन रञ्ञा—'अय्यको ते, तात, तुम्हे ब्राह्मणस्स धनं दत्वा निक्किणन्तो तं निक्खसहस्सं दत्वा निक्किणातु, कण्हाजिनं निक्किणन्तो दाससतं दासिसतं हत्थिसतं अस्ससतं धेनुसतं उसभसतं निक्खसतं ति सब्बसतं दत्वा निक्किणातु। यदि ते, तात, अय्यको तुम्हे ब्राह्मणस्स हत्थतो आणाय बलसा मुधा गण्हाति, मा तुम्हे अय्यकस्स वचनं करित्थ, ब्राह्मणस्सेव अनुयायिनो होथा" ति एवमनुसासित्वा पेसेसि। ततो जालिकुमारो गन्त्वा अय्यकेन पुट्ठो कथेसि—

'सहस्सग्घं हि मं, तात, ब्राह्मणस्स पिता अदा।
अथो कण्हाजिनं कञ्ञं, हत्थीनं च सतेन चा" ति॥

"सुनिब्बेठितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो, सुभिन्नं दिट्ठजालं, सुमद्दितो परप्पवादो, सकसमयो सुदीपितो, ब्यञ्जनं सुपरिसोधितं, सुविभत्तो अत्थो, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

२. दुक्करकारिकपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, सब्बेव बोधिसत्ता दुक्करकारिकं करोन्ति, उदाहु गोतमेनेव बोधिसत्तेन दुक्करकारिका कता" ति? "नत्थि, महाराज, सब्बेसं बोधिसत्तानं दुक्करकारिका, गोतमेनेव बोधिसत्तेन दुक्करकारिका कता" ति।

"भन्ते नागसेन, यदि एवं, अयुत्तं यं बोधिसत्तेहि वेमत्तता होती" ति? "चतूहि, महाराज, ठानेहि बोधिसत्तानं बोधिसत्तेहि वेमत्तता होति। कतमेहि चतूहि? कुलवेमत्तता, अद्धानवेमत्तता, आयुवेमत्तता, पमाणवेमत्तता" ति। इमेहि खो, महाराज, चतूहि ठानेहि बोधिसत्तानं बोधिसत्तेहि वेमत्तता होति। सब्बेसं पि, महाराज, बुद्धानं रूपे सीले समाधिम्हि पञ्ञाय विमुत्तिया विमुत्तिञाणदस्सने चतुवेसारज्जे दसतथागतबले छअसाधारणञाणे चुद्दसबुद्धञाणे अट्ठारसबुद्धधम्मे केवले च बुद्धगुणे नत्थि वेमत्तता, सब्बे पि बुद्धा बुद्धधम्मेहि समसमा" ति।

"यदि, भन्ते नागसेन, सब्बे पि बुद्धा बुद्धधम्मेहि समसमा, केन कारणेन गोतमेनेव बोधिसत्तेन दुक्करकारिका कता" ति? "अपरिपक्के, महाराज, ञाणे अपरिपक्काय बोधिया गोतमो बोधिसत्तो नेक्खम्ममभिनिक्खन्तो, अपरिपक्कं ञाणं परिपाचयमानेन दुक्करकारिका कता" ति।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन बोधिसत्तो अपरिपक्के ञाणे अपरिपक्काय बोधिया महाभिनिक्खमनं निक्खन्तो, ननु नाम ञाणं परिपाचेत्वा परिपक्के ञाणे निक्खमितब्बं" ति?

४. "बोधिसत्तो, महाराज, विपरीतं इत्थागारं दिस्वा विप्पटिसारी अहोसि, तस्स विप्पटिसारिस्स अरति उप्पज्जि, अरतिचित्तं उप्पन्नं दिस्वा अञ्ञतरो मारकायिको देवपुत्तो—'अयं खो कालो अरतिचित्तस्स विनोदनाया' ति वेहासे ठत्वा इदं वचनमब्रवि—'मारिस, मा खो त्वं उक्कण्ठितो अहोसि, इतो ते सत्तमे दिवसे दिब्बं चक्करतनं पातुभविस्सति सहस्सारं सनेमिकं सनाभिकं सब्बाकार-परिपूरं, पठविगितानि च ते रतनानि आकासट्ठानि च सयमेव उपगच्छिस्सन्ति, द्विसहस्सपरित्तदीपपरिवारेसु चतूसु महादीपेसु एकमुखेन आणा पवत्तिस्सति, परोसहस्सं च ते पुत्ता भविस्सन्ति सूराङ्गरूपा परसेनप्पमद्दना, तेहि पुत्तेहि परिकिण्णो सत्तरत्तनसमन्नागतो चतुदीपमनुसासिस्ससी' ति।

"यथा नाम दिवससन्तत्तं अयोसूलं सब्बत्थ उपडहन्तं कण्णसोतं पविसेय्य; एवमेव खो, महाराज, बोधिसत्तस्स तं वचनं कण्णसोतं पविसित्थ, इति सो पकतिया व उक्कण्ठितो तस्सा देवताय वचनेन भिय्योसोमत्ताय उब्बिज्जि संविज्जि संवेगमापज्जि।

"यथा वा पन, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो जलमानो अञ्ञेन कट्ठेन उपदहितो भिय्योसोमत्ताय जलेय्य; एवमेव खो, महाराज, बोधिसत्तो पकतिया व उक्कण्ठितो तस्सा देवताय वचनेन भिय्योसोमत्ताय उब्बिज्जि संविज्जि संवेगमापज्जि।

"यथा वा पन, महाराज, महापठवी पकतितिन्ता निब्बत्तहरितसद्दला आसित्तोदका चिक्खल्लजाता पुनदेव महामेघे अतिवुट्ठे भिय्योसोमत्ताय चिक्ख-ल्लतरा अस्स; एवमेव खो, महाराज, बोधिसत्तो पकतिया व उक्कण्ठितो तस्स देवताय वचनेन भिय्योसोमत्ताय उब्बिज्जि संविज्जि संवेगमापज्जी' ति।

"अपि नु खो, भन्ते नागसेन, बोधिसत्तस्स यदि सत्तमे दिवसे दिब्बं चक्करतनं निब्बत्तेय्य, पटिनिवत्तेय्य, बोधिसत्तो दिब्बे चक्करतने निब्बत्तेति। न हि, महाराज, सत्तमे दिवसे बोधिसत्तस्स दिब्बं चक्करतनं निब्बत्तेय्य, अपि च पलोभनत्थाव ताय देवताय मुसा भणितं। यदि पि, महाराज, सत्तमे दिवसे दिब्बं चक्करतनं निब्बत्तेय्य, बोधिसत्तो न निब्बत्तेय्य। किं कारणं? 'अनिच्चं' ति, महाराज, बोधिसत्तो दळ्हं अग्गहेसि, 'दुक्खं'....'अनत्ता' ति दळ्हं अग्गहेसि उपादानक्खयं पत्तो'' ति।

'यथा, महाराज, अनोतत्तदहतो उदकं गङ्गं नदिं पविसति, गङ्गाय नदिया महासमुद्दं पविसति, महासमुद्दतो पातालमुखं पविसति, अपि नु तं उदकं पातालमुखगतं पटिनिवत्तित्वा महासमुद्दं पविसेय्य, महासमुद्दतो गङ्गं नदिं पविसेय्य, गङ्गाय नदिया पुन अनोतत्तं पविसेय्या'' ति? "न हि, भन्ते'' ति। "एवमेव खो, महाराज, बोधिसत्तेन कप्पानं सतसहस्सं चतुरो च असङ्ख्येय्ये कुसलं

परिपाचितं इमस्स भवस्स कारणा, सोयं अन्तिमभवो अनुप्पत्तो, परिपक्कं बोधिञाणं, छहि वस्सेहि बुद्धो भविस्सति सबञ्ञू लोके अग्गपुग्गलो, अपि नु खो, महाराज, बोधिसत्तो चक्करतनकारणा पटिनिवत्तेय्या" ति ? "न हि, भन्ते' ति।

"अपि च, महाराज, महापथवी परिवत्तेय्य सकाननसपब्बता, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय्य अपत्वा सम्मासम्बोधिं। आरोहेय्य पि चे, महाराज, गङ्गाय उदकं पटिसोतं, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय्य अपत्वा सम्मासम्बोधिं। विसुस्सेय्य पि, महाराज, महासमुद्दो अपरिमितजलधरो गोपदे उदकं विय, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय अपत्वा सम्मासम्बोधिं। फलेय्य पि चे, महाराज, सिनेरुपब्बतराजा सतधा वा सहस्सधा वा, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय्य अपत्वा सम्मासम्बोधिं। पतेय्युं पि चे, महाराज, चन्दिमसुरिया सतारका लेड्डु विय छमायं, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय अपत्वा सम्मासम्बोधिं। संवट्टेय्य पि चे, महाराज, आकासो किलञ्जमिव, न त्वेव बोधिसत्तो पटिनिवत्तेय्य अपत्वा सम्मासम्बोधिं। किंकारणा ? पदालितत्ता सब्बबन्धनानं" ति।

"भन्ते नागसेन, कति लोके बन्धनानी' ति ? "दस खो पनिमानि, महाराज, लोके बन्धनानि, येहि बन्धनेहि बद्धा सत्ता न निक्खमन्ति, निक्खमित्वा पि पटिनिवत्तन्ति। कतमानि दस ? माता, महाराज, लोके बन्धनं, पिता… भरिया …पुत्ता… ञाती… मित्ता… धनं… लाभसक्कारो… इस्सरियं… पञ्च कामगुणा, महाराज, लोके बन्धनं। इमानि खो महाराज, दस लोके बन्धनानि, येहि बन्धनेहि बद्धा सत्ता न निक्खमन्ति, निक्खमित्वा पि पटिनिवत्तन्ति। तानि दस बन्धनानि बोधिसत्तस्स छिन्नानि पदालितानि। तस्मा, महाराज, बोधिसत्तो न पटिनिवत्तती" ति।

"भन्ते नागसेन, यदि बोधिसत्तो उप्पन्ने अरतिचित्ते देवताय वचनेन अपरिपक्काय बोधिया नेक्खमभिनिक्खन्तो, किं तस्स दुक्करकारिकाय कताय, ननु नाम सब्बभक्खेन भवितब्बं ञाणपरिपाकं आगमयमानेना" ति ?

"दस खो, पनिमे महाराज, पुग्गला लोकस्मिं ओञाता अवञाता हीळिता खीळिता गरहिता परिभूता अचित्तिकता। कतमे दस ? इत्थी, महाराज, विधवा लोकस्मिं ओञाता अवञाता हीळिता खीळिता गरहिता परिभूता अचित्तिकता। दुब्बलो, महाराज, पुग्गलो… अमित्तञाति, महाराज, पुग्गलो… महग्घसो, महाराज, पुग्गलो… अगरुकुलवासिको, महाराज, पुग्गलो… पापमित्तो, महाराज, पुग्गलो… धनहीनो, महाराज, पुग्गलो… आचारहीनो, महाराज, पुग्गलो… कम्महीनो, महाराज, पुग्गलो… पयोगहीनो, महाराज, पुग्गलो, लोकस्मिं ओञातो अवञातो हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तिकतो।

इमे खो, महाराज, दस पुग्गला लोकस्मिं ओञ्ञाता अवञ्ञाता हीळिता खीळिता गरहिता परिभूता अचित्तिकता। इमानि खो, महाराज, दस ठानानि अनुस्सरमानस्स बोधिसत्तस्स एवं सञ्ञा उप्पज्जि—'माहं कम्महीनो अस्सं पयोगहीनो गरहितो देवमनुस्सानं, यं नूनाहं कम्मस्सामी अस्सं कम्मगरु कम्माधिपतेय्यो कम्मसीलो कम्मधोरेय्यो कम्मनिकेतवा अप्पमत्तो विहरेय्यं' ति। एवं खो, महाराज, बोधिसत्तो ञाणं परिपाचेन्तो दुक्करकारिकं अकासी" ति।

"भन्ते नागसेन, बोधिसत्तो दुक्करकारिकं करोन्तो एवमाह—'न खो पनाहं इमाय कटुकाय दुक्करकारिकाय अधिगच्छामि उत्तरिमनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं, सिया नु खो अञ्ञो मग्गो बोधाया' ति। अपि नु तस्मिं समये बोधिसत्तस्स मग्गं आरब्भ सतिसम्मोसो अहोसी" ति।

"पञ्चवीसति खो पनिमे, महाराज, चित्तदुब्बलीकरणा धम्मा, येहि दुब्बलीकतं चित्तं न सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। कतमे पञ्चवीसति? कोधो, महाराज, चित्तस्स दुब्बलीकरणो धम्मो येन दुब्बलीकतं चित्तं न सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। उपनाहो, मक्खो, पलासो, इस्सा, मच्छरियं, माया, साठेय्यं, थम्भो, सारम्भो, मानो, अतिमानो, मदो, पमादो, थीनमिद्धं, नन्दी, आलस्यं, पापमित्तता, रूपा, सद्दा, गन्धा, रसा, फोट्ठब्बा, खुदापिपासा, अरति, महाराज, चित्तदुब्बलीकरणो धम्मो, येन दुब्बलीकतं चित्तं न सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। इमे खो, महाराज, पञ्चवीसति चित्तदुब्बलीकरणा धम्मा येहि दुब्बलीकतं चित्तं न सम्मा समाधियति आसवानं खयाय।

"बोधिसत्तस्स, महाराज, खुदापिपासा कायं परियादियिंसु, काये परियादिण्णे चित्तं न सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। सतसहस्सं, महाराज, कप्पानं चतुरो च असङ्खेय्ये कप्पे बोधिसत्तो चतुन्नं येव अरियसच्चानं अभिसमयं अन्वेसि तासु तासु जातिसु, किं पनस्स पच्छिमे भवे अभिसमयजातियं मग्गं आरब्भ सतिसम्मोसो हेस्सति! अपि च, महाराज, बोधिसत्तस्स सञ्ञामत्तं उप्पज्जि—'सिया नु खो अञ्ञो मग्गो बोधिया' ति। पुब्बे खो, महाराज, बोधिसत्तो एकमासिको समानो पितु सक्कस्स कम्मन्ते सीताय जम्बुच्छायाय सिरिसयने पल्लङ्कं आभुजित्वा निसिन्नो विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहासि... पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहासी" ति।

"साधु भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामि। ञाणं परिपाचेन्तो बोधिसत्तो दुक्करकारिकं अकासी" ति।

३. कुसलाकुसलबलवतरपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, कतमं अधिमत्तं बलवतरं, कुसलं वा अकुसलं वा" ति ? "कुसलं, महाराज, अधिमत्तं बलवतरं, नो तथा अकुसलं" ति। "नाहं, भन्ते नागसेन, तं वचनं सम्पटिच्छामि—कुसलं अधिमत्तं बलवतरं नो तथा अकुसलं" ति। "दिस्सन्ति, भन्ते नागसेन, इध पाणातिपातिनो अदिन्नादायिनो कामेसु मिच्छाचारिनो मुसावादिनो गामघातका पन्थदूसका नेकतिका वञ्चनिका, सब्बे ते तावतकेन पापेन लभन्ति हत्थच्छेदं पादच्छेदं हत्थपादच्छेदं कण्णच्छेदं नासच्छेदं कण्णनासच्छेदं बिलङ्गथालिकं सङ्खमुण्डिकं राहुमुखं जोतिमालिकं हत्थपज्जोतिकं एरकवत्तिकं चीरकवासिकं एणेय्यकं बळिसमंसिकं कहापणकं खारापतच्छिकं पलिघपरिवत्तिकं पलालपीठकं, तत्तेन पि तेलेन ओसिञ्चनं, सुनखेहि पि खादापनं, सूलारोपनं, असिना पि सीसच्छेदनं। केचि रत्तिं पापं कत्वा रत्तिं येव विपाकं अनुभवन्ति, केचि रत्तिं कत्वा दिवा येव अनुभवन्ति, केचि दिवा कत्वा दिवा येव अनुभवन्ति, केचि दिवा कत्वा रत्तिं येव अनुभवन्ति। केचि द्वे तयो दिवसे वीतिवत्ते अनुभवन्ति। सब्बे पि ते दिट्ठेव धम्मे विपाकं अनुभवन्ति। अत्थि पन, भन्ते नागसेन, कोचि एकस्स वा द्विन्नं वा तिण्णं वा चतुन्नं वा पञ्चन्नं वा दसन्नं वा सतस्स वा सतसहस्सस्स वा वा सपरिवारं दानं दत्वा दिट्ठधम्मिकं भोगं वा यसं वा सुखं वा अनुभविता, सीलेन वा उपोसथकम्मेन वा" ति ?

६. "अत्थि, महाराज, चत्तारो पुरिसा दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा दिट्ठेव धम्मे तेनेव सरीरदेहेन तिदसपुरे समनुप्पत्ता" ति। "को च को च, भन्ते' ति ? **मन्धाता**, महाराज, राजा, **निमि राजा, साधीनो** राजा, **गुत्तिलो** च गन्धब्बो' ति।

"भन्ते नागसेन, अनेकेहि तं भवसहस्सेहि अन्तरितं, द्विन्नं पि अम्हाकं एतं परोक्खं। यदि समत्थो सि, वत्तमानके भवे भगवतो धरमानकाले कथेही" ति ? "वत्तमानके पि, महाराज, भवे पुण्णको दासो थेरस्स सारिपुत्तस्स भोजनं दत्वा तदहेव सेट्ठिट्ठानं अज्झुपगतो, सो एतरहि पुण्णको सेट्ठी ति पञ्ञायि। गोपालमाता देवी अत्तनो केसे विक्किणित्वा लद्धेहि अट्ठहि कहापणेहि थेरस्स महाकच्चायनस्स अत्तट्ठमकस्स पिण्डपातं दत्वा तदहेव रञ्ञो चण्डपज्जोतस्स अग्गमहेसित्तं पत्ता। सुप्पिया उपासिका अञ्ञतरस्स गिलानभिक्खुनो अत्तनो ऊरुमंसेन पटिच्छादनियं दत्वा दुतियदिवसे येव रूळ्हवणा सच्छवी अरोगा जाता। मल्लिका देवी भगवतो अभिदोसिकं कुम्मासपिण्डं दत्वा तदहेव रञ्ञो कोसलस्स अग्गमहेसी जाता। सुमनो मालाकारो अट्ठहि सुमनपुप्फमुट्ठीहि भगवन्तं पूजेत्वा तं दिवसं येव महासम्पत्तिं पत्तो। एकसाटको ब्राह्मणो

उत्तरसाटकेन भगवन्तं पूजेत्वा तं दिवसं येव सब्बट्ठकं लभि। सब्बे पेते, महाराज, दिट्ठधम्मिकं भोगं च यसं च अनुभविंसू" ति।

"भन्ते नागसेन, विचिनित्वा परियेसित्वा छ जने येव अद्दसासी" ति। "आम, महाराजा" ति। "तेन हि, भन्ते नागसेन, अकुसलं येव अधिमत्तं बलवतरं, नो तथा अकुसलं। अहं हि, भन्ते नागसेन, एक दिवसं येव दस पि पुरिसे पस्सामि पापस्स कम्मस्स विपाकेन सूलेसु आरोपेन्ते, वीसतिं पि तिंसं पि चत्ताळीसं पि पञ्ञासं पि पुरिसे पुरिससतं पि पुरिससहस्सं पि पस्सामि पापस्स कम्मस्स विपाकेन सूलेसु आरोपेन्ते। नन्दकुलस्स भन्ते नागसेन, भद्दसालो नाम सेनापतिपुत्तो अहोसि, तेन च रञ्ञा चन्दगुत्तेन सङ्गामो समुपब्यूळ्हो अहोसि। तस्मिं खो पन, भन्ते नागसेन, सङ्गामे उभतो बलकाये असीति कबन्धरूपानि अहेसुं। एकस्मिं किर सीसकलन्दे परिपाते एकं कबन्धरूपं उट्ठहति, सब्बे पेते पापस्स येव कम्मस्स विपाकेन अनयब्यसनं आपन्ना। इमिना पि, भन्ते नागसेन, कारणेन भणामि—'अकुसलं येव अधिमत्तं बलवतरं, नो तथा कुसलं' ति।

"सुय्यति, भन्ते नागसेन, इमस्मिं बुद्धसासने कोसलेन रञ्ञा असदिसदानं दिन्नं" ति? "आम, महाराज, सुय्यती" ति। "अपि नु खो, भन्ते नागसेन, कोसलराजा तं असदिसदानं दत्वा ततोनिदानं किञ्चि दिट्ठधम्मिकं भोगं वा यसं वा पटिलभी" ति? "न हि, महाराजा" ति। "यदि, भन्ते नागसेन, कोसलराजा एवरूपं अनुत्तरं दानं दत्वा पि न लभि ततोनिदानं दिट्ठधम्मिकं भोगं वा यसं वा सुखं वा, तेन हि, भन्ते नागसेन, अकुसलं येव अधिमत्तं बलवतरं, नो तथा कुसलं" ति?

"परित्तत्ता, महाराज, अकुसलं खिप्पं परिणमति, विपुलत्ता कुसलं दीघेन कालेन परिणमति। उपमाय पि, महाराज, एतं उपपरिक्खितब्बं। यथा, महाराज, अपरन्ते जनपदे कुमुदभण्डिका नाम धञ्ञजाति मासलूना अन्तोगेहगता होति, सालियो छप्पञ्चमासेहि परिणमन्ति। किं पनेत्थ महाराज, अन्तरं को विसेसो कुमुदभण्डिकाय च सालीनं चा" ति? "परित्तत्ता, भन्ते कुमुदभण्डिकाय, विपुलता च सालीनं। सालियो, भन्ते नागसेन, राजारहा राजभोजनं, कुमुदभण्डिका दासकम्मकरानं भोजनं" ति। "एवमेव खो, महाराज, परित्तत्ता अकुसलं खिप्पं परिणमति, विपुलत्ता कुसलं दीघेन कालेन परिणमती" ति।

"यं तत्थ, भन्ते नागसेन, खिप्पं परिणमति तं नाम लोके अधिमत्तं बलवतरं। तस्मा अकुसलं अधिमत्तं बलवतरं, नो तथा कुसलं। यथा नाम, भन्ते नागसेन, यो कोचि योधो महतिमहायुद्धं पविसित्वा पटिसत्तुं उपकच्छके गहेत्वा आकड्ढित्वा खिप्पतरं सामिनो उपनेय्य, सो योधो लोके समत्थो

सूरो नाम। यो च भिसक्को खिप्पं सल्लं उद्धरति रोगमपनेति, सो भिसक्को छेको नाम। यो गणको सीघसीघं गणेत्वा खिप्पं दस्सयति, सो गणको छेको नाम। यो मल्लो खिप्पं पटिमल्लं उक्खिपित्वा उत्तानकं पातेति, सो मल्लो समत्थो सूरो नाम। एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यं खिप्पं परिणमति कुसलं वा अकुसलं वा, तं लोके अधिमत्तं बलवतरं" ति।

"उभयं पि तं, महाराज, कम्मं सम्परायवेदनीयमेव, अपि च खो अकुसलं सावज्जताय खणेन दिट्ठधम्मवेदनीयं होति। पुब्बकेहि, महाराज, खत्तियेहि ठपितो एसो नियमो—'यो पाणं हनति सो दण्डारहो, यो अदिन्नं आदियति....यो परदारं गच्छति....यो मुसा भणति....यो गामं घातेति....यो पन्थं दूसेति....यो निकतिं करोति....यो वञ्चनं करोति सो दण्डारहो वधितब्बो छेत्तब्बो भेत्तब्बो हन्तब्बो' ति। तं ते उपादाय विचिनित्वा विचिनित्वा दण्डेहि वधेन्ति छिन्दन्ति भिन्दन्ति हनन्ति च। अपि नु, महाराज, अत्थि केहिचि ठपितो नियमो—'यो दानं वा देति, सीलं वा रक्खति, उपोसथकम्मं वा करोति, तस्स धनं वा यसं वा दातब्बं' ति? अपि नु तं विचिनित्वा विचिनित्वा धनं वा यसं वा देन्ति, चोरस्स कतकम्मस्स बधबन्धनं विया" ति? "न हि, भन्ते" ति। "यदि, महाराज, दायकानं विचिनित्वा विचिनित्वा धनं वा यसं वा ददेय्युं, कुसलं पि दिट्ठधम्मवेदनीयं भवेय्य। यस्मा च खो, महाराज, दायके न विचिनन्ति—'धनं वा यसं वा दस्सामा' ति, तस्मा कुसलं न दिट्ठधम्मवेदनीयं। इमिना, महाराज, कारणेन अकुसलं दिट्ठधम्मवेदनीयं, सम्पराये व सो अधिमत्तं बलवतरं वेदनं वेदियती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, तवादिसेन बुद्धिमन्तेन विना नेसो पञ्हो सुनिब्बेठियो। लोकियं, भन्ते नागसेन, लोकुत्तरेन विञ्ञापितं" ति।

४. पुब्बपेतादिसपञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, इमे दायका दानं दत्वा पुब्बपेतानं आदिसन्ति—'इमं तेसं पापुणातू' ति। अपि नु ते किञ्चि ततोनिदानं विपाकं पटिलभन्ती" ति? "केचि महाराज, पटिलभन्ति, केचि न पटिलभन्ती" ति। "के भन्ते पटिलभन्ति, के न पटिलभन्ती" ति? "निरयूपपन्ना, महाराज, न पटिलभन्ति, सग्गगता न पटिलभन्ति, तिरच्छानयोनिगता न पटिलभन्ति, चतुन्नं पेतानं तयो पेता न पटिलभन्ति—वन्तासिका, खुप्पिपासिनो, निज्झामतण्हिका। लभन्ति पेता परदत्तूपजीविनो, ते पि सरमाना येव लभन्ती" ति।

"तेन हि, भन्ते नागसेन, दायकानं दानं विस्सोसितं होति अफलं, येसं उद्दिस्स कतं यदि ते न पटिलभन्ती" ति। "न हि तं, महाराज, दानं अफलं

होति अविपाकं, दायका येव तस्स फलं अनुभवन्ती" ति । "तेन हि, भन्ते नागसेन, कारणेन मं सञ्ञापेही" ति ? "इध, महाराज, केचि मनुस्सा मच्छमंससुराभत्तखज्जकानि पटियादेत्वा ञातिकुलं गच्छन्ति । यदि ते ञातका तं उपायनं न सम्पटिच्छेय्युं, अपि नु तं उपायनं विस्सोसितं गच्छेय्य विनस्सेय्य वा" ति ? "न हि, भन्ते, सामिकानं येव तं होती" ति । "एवमेव खो, महाराज, दायका येव तस्स फलं अनुभवन्ति । यथा वा पन, महाराज, पुरिसो गब्भं पविट्ठो असति पुरतो निक्खमनमुखे केन निक्खमेय्या" ति ? "पविट्ठेनेव, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, दायका येव तस्स फलं अनुभवन्ती" ति । "होतु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामि—'दायका येव तस्स फलं अनुभवन्ति । न मयं तं कारणं विलोमेमा'" ति ।

"भन्ते नागसेन, यदि इमेसं दायकानं दिन्नं दानं पुब्बपेतानं पापुणाति, ते च तस्स विपाकं अनुभवन्ति, तेन हि यो पाणातिपाती लुद्धो लोहितपाणी पदुट्ठमनसङ्कप्पो मनुस्से घातेत्वा दारुणं कम्मं कत्वा पुब्बपेतानं आदिसेय्य—'इमस्स मे कम्मस्स विपाको पुब्बपेतानं पापुणातू' ति, अपि नु तस्स विपाको पुब्बपेतानं पापुणाती" ति ? "न हि, महाराजा" ति ।

"भन्ते नागसेन, को तत्थ हेतु, किं कारणं येन कुसलं पापुणाति अकुसलं न पापुणाती" ति ? "नेसो, महाराज, पञ्हो पुच्छितब्बो; मा च त्वं, महाराज, 'विस्सज्जको अत्थी' ति अपुच्छितब्बं पुच्छि । किस्स आकासो निरालम्बो ? किस्स गङ्गा उद्धमुखा न सन्दति ? किस्स इमे मनुस्सा च दिजा च द्विपदा ? मिगा चतुप्पदा ? ति, तं पि मं त्वं पुच्छिस्ससी" ति । "नाहं तं, भन्ते नागसेन, विहेसापेक्खो पुच्छामि, अपि च निब्बाहनत्थाय सन्देहस्स पुच्छामि । बहुमनुस्सा लोके वामगामिनो विचक्खुका, 'किं ति ते ओतारं न लभेय्युं' ति एवाहं तं पुच्छामी" ति ।

८. "न सक्का, महाराज, सह अकतेन अननुमतेन सह पापं कम्मं संविभजितुं । यथा, महाराज, मनुस्सा उदकनिब्बाहनेन उदकं सुविदूरं पि हरन्ति, अपि नु, महाराज, सक्का घनमहासेलपब्बतो निब्बाहनेन यथिच्छितं हरितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, सक्का कुसलं संविभजितुं, न सक्का अकुसलं संविभजितुं ।

"यथा वा पन, महाराज सक्का तेलेन पदीपो जालेतुं, अपि नु, महाराज, सक्का उदकेन पदीपो जालेतुं" ति ? "न हि, भन्ते' ति । "एवमेव खो, महाराज, सक्का कुसलं संविभजितुं, न सक्का अकुसलं संविभजितुं । यथा वा पन, महाराज, कस्सका तळाकतो उदकं नीहरित्वा धञ्ञं परिपाचेन्ति, अपि नु

खो, महाराज, सक्का महासमुद्दतो उदकं नीहरित्वा धञ्ञं परिपाचेतुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, सक्का कुसलं संविभजितुं, न सक्का अकुसलं संविभजितुं" ति ।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन सक्का कुसलं संविभजितुं, न सक्का अकुसलं संविभजितुं ? कारणेन मं सञ्ञापेहि, नाहं अन्धो अनालोको, सुत्वा वेदिस्सामी" ति ? "महाराज, अकुसलं थोकं, कुसलं बहुकं, थोकत्ता अकुसलं कत्तारं येव परियादियति, बहुकत्ता कुसलं सदेवकं लोकं अज्झोत्थरती" ति । "ओपम्मं करोही" ति ।

"यथा महाराज, परित्तं एकं उदकबिन्दु पठवियं निपतेय्य, अपि नु खो तं, महाराज, उदकबिन्दु दस पि द्वादस पि योजनानि अज्झोत्थरेय्या" ति ? "न हि भन्ते, यत्थ तं उदकबिन्दु निपतितं तत्थेव परियादियती" ति । "केन कारणेन, महाराजा" ति ? परित्तत्ता, भन्ते उदकबिन्दुस्सा" ति । "एवमेव खो, महाराज, परित्तं अकुसलं, परित्तत्ता कत्तारं येव परियादियति, न सक्का संविभजितुं ।

"यथा वा पन, महाराज, महतिमहामेघो अभिवस्सेय्य तप्पयन्तो धरणितलं, अपि नु खो सो, महाराज, महामेघो समन्ततो ओत्थरेय्या" ति ? "आम, भन्ते, पूरयित्वा सो महामेघो सोब्भसरसरितसाखाकन्दरपदरदहतळाकउदपानपोक्खरणियो दस पि द्वादस पि योजनानि अज्झोत्थरेय्या" ति । "केन कारणेन महाराजा" ति ? "महन्तत्ता, भन्ते, मेघस्सा" ति । "एवमेव खो, महाराज, कुसलं बहुकं, बहुकत्ता सक्का देवमनुस्सेहि पि संविभजितुं' ति ।

"भन्ते नागसेन, केन कारणेन अकुसलं थोकं, कुसलं बहुतरं" ति ? "इध, महाराज, यो कोचि दानं देति सीलं समादियति, उपोसथकम्मं करोति, सो हट्ठो पहट्ठो हसितो पमुदितो पसन्नमानसो वेदजातो होति । तस्स अपरापरं पीति उप्पज्जति । पीतिमनस्स भिय्यो भिय्यो कुसलं पवड्ढति ।

"यथा, महाराज, उदपाने बहुसलिलसम्पुण्णे एकेन देसेन उदकं पविसेय्य एकेन निक्खमेय्य, निक्खमन्ते पि अपरापरं उप्पज्जति, न सक्का होति खयं पापेतुं; एवमेव खो, महाराज, कुसलं भिय्यो भिय्यो पवड्ढति । वस्ससते पि चे महाराज, पुरिसो कतं कुसलं आवज्जेय्य, आवज्जिते आवज्जिते भिय्यो कुसलं पवड्ढति, तस्स तं कुसलं सक्का होति यथिच्छकेहि सद्धिं संविभजितुं । इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन कुसलं बहुतरं ।

अकुसलं पन, महाराज, करोन्तो पच्छा विप्पटिसारी होति, विप्पटिसारिनो चित्तं पटिलीयति पटिकुटति पटिवत्तति, न सम्पसारीयति, सोचति तप्पति हायति खीयति, न परिवड्ढति, तत्थेव परियादियति । यथा, महाराज, सुक्खाय

नदिया महापुलिनाय उन्नतावनताय कुटिलसङ्कुटिलाय उपरितो परित्तं उदकं आगच्छन्तं हायति खीयति, न परिवड्ढति, तत्थेव परियादियति; एवमेव खो, महाराज, अकुसलं करोन्तस्स चित्तं पटिलीयति पटिकुटति, पटिवत्तति, न सम्पसारीयति, सोचति तप्पति हायति खीयति, न परिवड्ढति, तत्थेव परियादियति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन अकुसलं थोकं" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

५. सुपिनपञ्हो

९. भन्ते नागसेन, इमस्मिं लोके नरनारियो सुपिनं पस्सन्ति कल्याणं पि, पापकं पि, दिट्ठपुब्बं पि, अदिट्ठपुब्बं पि, कतपुब्बं पि, अकतपुब्बं पि, खेमं पि, सभयं पि, दूरे पि, सन्तिके पि, बहुविधानि पि अनेकवण्णसहस्सानि दिस्सन्ति। किं चेतं सुपिनं नाम, को चेतं पस्सती" ति ?

१०. "निमित्तमेत्तं, महाराज, सुपिनं नाम यं चित्तस्स आपाथमुपगच्छति। छयिमे, महाराज, सुपिनं पस्सन्ति—वातिको सुपिनं पस्सति, पित्तिको सुपिनं पस्सति, सेम्हिको सुपिनं पस्सति, देवतूपसंहारतो सुपिनं पस्सति, समुदाचिण्णतो सुपिनं पस्सति, पुब्बनिमित्ततो सुपिनं पस्सति। तत्र, महाराज, यं पुब्बनिमित्ततो सुपिनं पस्सति तं येव सच्चं, अवसेसं मिच्छा" ति।

"भन्ते नागसेन, यो पुब्बनिमित्ततो सुपिनं पस्सति, किं तस्स चित्तं सयं गन्त्वा तं निमित्तं विचिनाति, तं वा निमित्तं चित्तस्स आपातमुपगच्छति, अञ्ञो वा आगन्त्वा तस्स आरोचेती" ति ? "न, महाराज, तस्स चित्तं सयं गन्त्वा तं निमित्तं विचिनाति, नापि अञ्ञो कोचि आगन्त्वा तस्स आरोचेति; अथ खो तं येव निमित्तं चित्तस्स आपातमुपगच्छति। यथा, महाराज, आदासो न सयं कुहिंचि गन्त्वा छायं विचिनाति, नापि अञ्ञो कोचि छायं आनेत्वा आदासं आरोपेति, अथ खो यतो कुतोचि छाया आगन्त्वा आदासस्स आपातमुपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, न तस्स चित्तं सयं गन्त्वा तं चित्तं विचिनाति, नापि अञ्ञो कोचि आगन्त्वा आरोपेति, अथ खो यतो कुतोचि निमित्तं आगन्त्वा चित्तस्स आपातमुपगच्छती" ति।

"भन्ते नागसेन, यं तं चित्तं सुपिनं पस्सति, अपि नु तं चित्तं जानाति—'एवं नाम विपाको भविस्सति खेमं वा भयं वा' ति ? "न हि, महाराज, तं चित्तं जानाति—'एवं विपाको भविस्सति खेमं वा भयं वा' ति। निमित्ते पन उप्पन्ने अञ्ञेसं कथेति, ततो ते अत्थं कथेन्ती" ति।

"इङ्घ, भन्ते नागसेन, कारणं मे दस्सेही" ति ? "यथा, महाराज, सरीरे तिलका पिळका दद्दुनि उट्ठहन्ति लाभाय वा अलाभाय वा यसाय व अयसाय

वा निन्दाय वा पसंसाय वा सुखाय वा दुक्खाय वा, अपि नु ता, महाराज, पिळका जानित्वा उप्पज्जन्ति—'इमं नामं मयं अत्थं निप्फादेस्सामा'' ति ? ''न हि, भन्ते, यादिसे ता ओकासे पिळका सम्भवन्ति तत्थ ता पिळका दिस्वा नेमित्तका ब्याकरोन्ति—'एवं नाम विपाको भविस्सती'' ति। ''एवमेव खो, महाराज, यं तं चित्तं सुपिनं पस्सति, न तं चित्तं जानाति—'एवं नाम विपाको भविस्सति एवं वा भयं वा' ति। निमित्ते पन उप्पन्ने अञ्ञेसं कथेति, ततो ते अत्थं कथेन्ती'' ति।

''भन्ते नागसेन, यो सुपिनं पस्सति सो निद्दायन्तो, उदाहु जागरन्तो पस्सती'' ति ? ''यो सो, महाराज, सुपिनं पस्सति न सो निद्दायन्तो पस्सति नापि जागरन्तो पस्सति। अपि च ओक्कन्ते मिद्धे असम्पत्ते भवङ्गे एत्थन्तरे सुपिनं पस्सति। मिद्धसमारूळ्हस्स, महाराज, चित्तं भवङ्गगतं होति, भवङ्गगतं चित्तं नप्पवत्तति, अप्पवत्तं चित्तं सुखदुक्खं नप्पजानाति। अप्पटिविजानन्तस्स सुपिनो न होति, पवत्तमाने चित्ते सुपिनं पस्सति।

''यथा, महाराज, तिमिरे अन्धकारे अप्पभासे सुपरिसुद्धे पि आदासे छाया न दिस्सति; एवमेव खो, महाराज, मिद्धसमारूळ्हे चित्ते भवङ्गगते तिट्ठमाने पि सरीरे चित्तं अप्पवत्तं होति, अप्पवत्ते चित्ते सुपिनं न पस्सति। यथा, महाराज, आदासो एवं सरीरं दट्ठब्बं, यथा अन्धकारो एवं मिद्धं दट्ठब्बं, यथा आलोको एवं चित्तं दट्ठब्ब।

''यथा वा पन, महाराज, महिकोत्थटस्स सुरियस्स पभा न दिस्सति, सन्ता येव सुरियरस्मि अप्पवत्ता होति। अप्पवत्ताय सुरियरस्मिया आलोको न होति। एवमेव खो, महाराज, मिद्धसमारूळ्हस्स चित्तं भवङ्गगतं होति, भवङ्गगतं चित्तं नप्पवत्तति, अप्पवत्ते चित्ते सुपिनं न पस्सति। यथा, महाराज, सुरियो एवं सरीरं दट्ठब्बं, यथा महिकोत्थरणं एवं मिद्धं दट्ठब्बं, यथा सुरियरस्मि एवं चित्तं दट्ठब्बं।

''द्विन्नं महाराज, सन्ते पि सरीरे चित्तं अप्पवत्तं होति—मिद्धसमारूळ्हस्स भवङ्गगतस्स सन्ते पि सरीरे चित्तं अप्पवत्तं होति, निरोधसमापन्नस्स सन्ते पि सरीरे चित्तं अप्पवत्तं होति; जागरन्तस्स महाराज, चित्तं लोलं होति विवटं पाकटं अनिबद्धं, एवरूपस्स चित्ते निमित्तं आपातं न उपेति। यथा, महाराज, पुरिसं विवटं पाकटं अकिरियं अरहस्सं रहस्सकामा परिवज्जेन्ति; एवमेव खो, महाराज, जागरन्तस्स दिब्बो अत्थो आपातं न उपेति, तस्मा जागरन्तो सुपिनं न पस्सति। यथा वा पन, महाराज, भिक्खुं भिन्नाजीवं अनाचारं पापचित्तं दुस्सीलं कुसीतं हीनवीरियं कुसला बोधिपक्खिया धम्मा आपातं न उपेन्ति;

एवमेव, खो, महाराज, जागरन्तस्स दिब्बो अत्थो आपातं न उपेति। तस्मा जागरन्तो सुपिनं न पस्सति।

"भन्ते नागसेन, अत्थि मिद्धस्स आदिमज्झपरियोसानं" ति? "आम, महाराज, अत्थि मिद्धस्स आदिमज्झपरियोसानं" ति। "कतमं आदि, कतमं मज्झं, कतमं परियोसानं" ति? "यो, महाराज, कायस्स ओनाहो परियोनाहो, दुब्बल्यं मन्दता, अकम्मञ्ञता कायस्स, अयं मिद्धस्स आदि। यो महाराज, कपिनिद्दापरेतो वोकिण्णकं जग्गति, इदं मिद्धस्स मज्झं। भवङ्गगति परियोसानं। मज्झूपगतो, महाराज, कपिनिद्दापरेतो सुपिनं पस्सति। यथा, महाराज, कोचि यतचारी समाहितचित्तो ठितधम्मो अचलबुद्धि पहीनकोतूहलसद्दं वनमज्झोगाहित्वा सुखुमं अत्थं चिन्तयति, न च सो तत्थ मिद्धं ओक्कमति, सो तत्थ समाहितो एकग्गचित्तो सुखुमं अत्थं पटिविज्झति; एवमेव खो, महाराज, जागरो न मिद्धसमापन्नो मज्झूपगतो कपिनिद्दापरेतो सुपिनं पस्सति। यथा, महाराज, कोतूहलसद्दो एवं जागरणं दट्ठब्बं, यथा विवित्तं वनं एवं कपिनिद्दापरेतो दट्ठब्बो, यथा सो कोतूहलसद्दं ओहाय मिद्धं विवज्जेत्वा मज्झत्तभूतो सुखुमं अत्थं पटिविज्झति, एवं जागरो न मिद्धसमापन्नो कपिनिद्दापरेतो सुपिनं पस्सती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

६. अकालमरणपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, ये ते सत्ता मरन्ति सब्बे ते काले येव मरन्ति, उदाहु अकाले पि मरन्ती" ति? "अत्थि, महाराज, काले पि मरणं, अत्थि अकाले पि मरणं" ति।

"के, भन्ते नागसेन, काले मरन्ति, के अकाले मरन्ती" ति? "दिट्ठपुब्बा पन, महाराज, तया अम्बरुक्खा वा जम्बुरुक्खा वा अञ्ञस्मा वा पन फलरुक्खा फलानि पतन्तानि आमानि च पक्कानि चा" ति? "आम, भन्ते" ति। "यानि तानि, महाराज, फलानि रुक्खतो पतन्ति सब्बानि तानि काले येव पतन्ति, उदाहु अकाले पी" ति? "यानि तानि, भन्ते नागसेन, फलानि परिपक्कानि विलीनानि पतन्ति सब्बानि तानि काले पतन्ति। यानि पन तानि अवसेसानि फलानि तेसु कानिचि किमिविद्धानि पतन्ति, कानिचि लकुटहतानि पतन्ति, कानिचि वातप्पहतानि पतन्ति, कानिचि अन्तोपूतिकानि हुत्वा पतन्ति, सब्बानि तानि अकाले पतन्ती" ति। "एवमेव खो, महाराज, ये ते जरावेगहता मरन्ति ते येव काले मरन्ति। अवसेसा केचि कम्मपटिबाळ्हा मरन्ति, केचि गतिपटिबाळ्हा, केचि किरियपटिबाळ्हा मरन्ती" ति।

"भन्ते नागसेन, ये ते कम्मपटिबाळ्हा मरन्ति, ये पि ते गतिपटिबाळ्हा मरन्ति, ये पि ते किरियपटिबाळ्हा मरन्ति, ये पि ते जरावेगपटिबाळ्हा मरन्ति, सब्बे ते काले येव मरन्ति। यो पि मातुकुच्छिगतो मरति, सो तस्स कालो, काले येव सो मरति। यो पि विजातघरे मरति सो तस्स कालो, सो पि काले येव मरति। यो पि मासिको मरति····पे०····यो पि वस्ससतिको मरति, सो तस्स कालो, काले येव सो मरति। तेन हि, भन्ते नागसेन, अकाले मरणं नाम न होति। ये केचि मरन्ति, सब्बे ते काले येव मरन्ती" ति।

१२. "सत्तिमे, महाराज, विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरन्ति। कतमे सत्त? जिघच्छितो, महाराज, भोजनं अलभमानो उपहतब्भन्तरो विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। पिपासितो, महाराज, पानीयं अलभमानो परिसुक्खहदयो विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। अहिना दट्ठो, महाराज, विसवेगाभिहतो तिकिच्छकं अलभमानो विज्जमानो पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। विसमासितो, महाराज, डय्हन्तेसु अङ्गपच्चङ्गेसु अगदं अलभमानो विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। अग्गिगतो, महाराज, झायमानो निब्बापनं अलभमानो विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। उदकगतो, महाराज, पतिट्ठं अलभमानो विज्जमानो पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। सत्तिहतो, महाराज, आबाधिको भिसक्कं अलभमानो विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरति। इमे खो, महाराज, सत्त विज्जमाने पि उत्तरि आयुस्मि अकाले मरन्ति। तत्रापाहं, महाराज, एकंसेन वदामि।

अट्ठविधेन, महाराज, सत्तानं कालकिरिया होति—वातसमुट्ठानेन, पित्तसमुट्ठानेन, सेम्हसमुट्ठानेन, सन्निपातिकेन, उतुविपरिणामेन, विसमाहारेन, ओपक्कमिकेन, कम्मविपाकेन, महाराज, सत्तानं कालकिरिया होति। तत्र, महाराज, यदिदं कम्मविपाकेन कालकिरिया सा येव तत्थ सामयिका कालकिरिया। अवसेसा असामयिका कालकिरिया ति। भवति च—

> 'जिघच्छाय पिपासाय, अहिदट्ठो विसेन च।
> अग्गिउदकसत्तीहि, अकाले तत्थ मीयति॥
>
> वातपित्तेन सेम्हेन, सन्निपातेनुतूहि च।
> विसमोपक्कमकम्मेहि, अकाले तत्थ मीयती' ति॥

"केचि, महाराज, सत्ता पुब्बे कतेन तेन तेन अकुसलकम्मविपाकेन मरन्ति। इध, महाराज, यो पुब्बे परे जिघच्छाय मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि जिघच्छाय परिपीळितो छातो परिकिलन्तो सुक्खमिलातहदयो बुभुक्खितो

विसुक्खितो झायन्तो अब्भन्तरं परिडय्हन्तो जिघच्छाय येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे पिपासाय मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि पेतो हुत्वा निज्झामतण्हिको समानो लूखो किसो परिसुक्खितहदयो पिपासाय येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे अहिना डंसापेत्वा मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि अजगरमुखेनेव अजगरमुखं कण्हसप्पमुखेनेव कण्हसप्पमुखं परिवत्तित्वा तेहि खायितखायितो अहीहि दट्ठो येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे विसं दत्वा मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि डय्हन्तेहि अपङ्गपच्चङ्गेहि भिज्जमानेन सरीरेन कुणपगन्धं वायन्तो विसेनेव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे अग्गिना मारेति, सो बहूहि वस्ससतसहस्सानि अङ्गारपब्बतेनेव अङ्गारपब्बतं यमविसयेनेव यमविसयं परिवत्तित्वा दड्ढविदड्ढगत्तो अग्गिना येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे उदकेन मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि हतविलुत्तभग्गदुब्बलगत्तो खुब्भितचित्तो उदके येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इदं पि तस्स सामयिकमरणं।

"यो पुब्बे परे सत्तिया मारेति, सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि छिन्नभिन्नकोट्टितविकोट्टितो सत्तिमुखसमाहितो सत्तिया येव मरति दहरो पि मज्झिमो पि महल्लको पि। इद पि तस्स सामयिकमरणं।

"भन्ते नागसेन, 'अकाले मरणं अत्थी' ति यं वदेसि, इङ्घ मे त्वं तत्थ कारणं अतिदिसा" ति? "यथा, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो आदिन्नतिणकट्ठसाखापलासो परियादिन्नभक्खो उपादानसङ्ख्या निब्बायति, सो अग्गि वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो समये निब्बुतो नामा' ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि बहूनि दिवससहस्सानि जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'समये मरणमुपगतो' ति।

"यथा वा पन, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो आदिन्नतिणकट्ठसाखापलासो अस्स, तं अपरियादिन्ने येव तिणकट्ठसाखापलासे महतिमहामेघो अभिप्पवस्सित्वा निब्बापेय्य, अपि नु खो, महाराज, महाअग्गिक्खन्धो समये निब्बुतो नाम होती" ति? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन सो, महाराज,

पच्छिमो अग्गिक्खन्धो पुरिमेन अग्गिक्खन्धेन समसमगतिको नाहोसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते, मेघेन पटिपीळितो सो अग्गिक्खन्धो असमये निब्बुतो" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा पित्तसमुट्ठानेन वा सेम्हसमुट्ठानेन वा सन्निपातिकेन वा उतुपरिणामजेन वा विसमपरिहारजेन वा ओपक्कमिकेन वा जिघच्छाय वा पिपासाय वा सप्पदट्ठेन वा विसमासितेन वा अग्गिना वा उदकेन वा सत्तिवेगप्पटिपीळितो अकाले मरति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येन कारणेन अकाले मरणं अत्थि।

"यथा वा पन, महाराज, गगने महतिमहावलाहको उट्ठहित्वा निन्नं च थलं च परिपूरयन्तो अभिवस्सति, सो वुच्चति–'मेघो अनीतिको अनुपद्दवो वस्सतो' ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि चिरं जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'समये मरणमुपगतो' ति।

"यथा वा पन, महाराज, गगने महतिमहावलाहको उट्ठहित्वा अन्तरा येव महता वातेन अब्भत्थं गच्छेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, महावलाहको समये विगतो नाम होती" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन सो, महाराज, पच्छिमो वलाहको पुरिमकेन वलाहकेन समसमगतिको ना होसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते, वातेन पटिपीळितो सो वलाहको असमयप्पत्तो येव विगतो" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा...पे०....सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अकाले मरणं अत्थी' ति।

"यथा वा पन, महाराज, बलवा आसीविसो कुपितो कञ्चिदेव पुरिसं डंसेय्य, तस्स तं विसं अनीतिकं अनुपद्दवं मरणं पापेय्य, तं विसं वुच्चति—'अनीतिकमनुपद्दवं कोटिगतं' ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि चिरं जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो जीवितकोटिगतो सामयिकं मरणमुपगतो' ति।

"यथा वा पन, महाराज, बलवता आसीविसेन दट्ठस्स अन्तरा येव अहितुण्डिको अगदं दत्वा अविसं करेय्य, अपि नु खो, महाराज, तं विसं समये विगतं नाम होतो' ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन तं, महाराज, पच्छिमं विसं पुरिमेन विसेन समसमगतिकं नाहोसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते, अगदेन पटिपीळितं विसं अकोटिगतं येव विगतं" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति, सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा....पे०....सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति। इदमेत्थ महाराज, कारणं येन कारणेन अकाले मरणं अत्थी ति।

"यथा वा पन, महाराज, इस्सासो सरं पातेय्य, सचे सो सरो यथागतिगमनपथमत्थकं गच्छति, सो सरो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो यथागतिगमनपथमत्थकं गतो नामा' ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि चिरं जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो समये मरणमुपगतो' ति।

"यथा वा पन, महाराज, इस्सासो सरं पातेय्य, तस्स तं सरं तस्मिं येव खणे कोचि गण्हेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, सरो यथागतिगमनपथमत्थकं गतो नाम होती" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन सो, महाराज, पच्छिमो सरो पुरिमेन सरेन समसमगतिको नाहोसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते नागसेन, गहणेन तस्स सरस्स गमनं उपच्छिन्नं" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति, सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा ···पे०··· सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अकाले मरणं अत्थी ति।

"यथा वा पन, महाराज, यो कोचि लोहमयं भाजनं आकोटेय्य, तस्स आकोटनेन सद्दो निब्बत्तित्वा यथागतिगमनपथमत्थकं गच्छति, सो सद्दो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो यथागतिगमनपथमत्थकं गतो नामा' ति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि बहूनि दिवससहस्सानि जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो समये मरणमुपगतो' ति।

"यथा वा पन, महाराज, यो कोचि लोहमयं भाजनं आकोटेय्य, तस्स सद्दो निब्बत्तेय्य, निब्बत्ते सद्दे अदूरगते कोचि आमसेय्य, सह आमसनेन सद्दो निरुज्झेय्य, अपि नु खो सो महाराज, सद्दो यथागतिगमनपथमत्थकं गतो नाम होती" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन, महाराज, पच्छिमो सद्दो पुरिमेन सद्देन समसमगतिको नाहोसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते, आमसनेन सो सद्दो उपरतो" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा···पे०···सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अकाले मरणं अत्थी ति।

"यथा वा पन, महाराज, खेत्ते सुविरूळ्हं धञ्ञबीजं सम्मा पवत्तमानेन वस्सेन ओततविततआकिण्णबहुफलं हुत्वा सस्सुट्ठानसमयं पापुणाति, तं धञ्ञं वुच्चति—'अनीतिकमनुपद्दवं समयप्पत्तं नाम होती" ति। "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि बहूनि दिवससहस्सानि जीवित्वा जराजिण्णो आयुक्खया अनीतिको अनुपद्दवो मरति, सो वुच्चति—'अनीतिको अनुपद्दवो समये मरणमुपगतो' ति।

यथा वा पन, महाराज, खेत्ते सुविरूळ्हं धञ्ञबीजं उदकेन विकलं मरेय्य, अपि नु खो तं, महाराज, धञ्ञं समयसम्पत्तं नाम होती" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "किस्स पन तं, महाराज, पच्छिमं धञ्ञं पुरिमेन धञ्ञेन समसमगतिकं नाहोसी" ति ? "आगन्तुकेन, भन्ते, उण्हेन पटिपीळितं तं धञ्ञं मतं" ति । "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा···पे०····सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति । इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन अकाले मरणं अत्थी ति ।

"सुतपुब्बं तया, महाराज—'सम्पन्नं तरुणसस्सं किमयो उट्ठहित्वा समूलं नासेन्ती" ति ? "सुतपुब्बं चेव तं, भन्ते नागसेन, अम्हेहि दिट्ठपुब्बं चा" ति । "किं नु खो, तं महाराज, सस्सं काले नट्ठं उदाहु अकाले नट्ठं" ति ? "अकाले, भन्ते ति । यदि खो तं, भन्ते, सस्सं किमयो न खादेय्युं सस्सुद्धरणसमयं पापुणेय्या' ति । 'किं पन, महाराज, आगन्तुकेन उपघातकेन सस्सं विनस्सति, निरुपघातं सस्सं सस्सुद्धारणसमयं पापुणाती"ति ? "आम, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा···पे०···सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा मरति । इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अकाल मरणं अत्थी ति ।

"सुतपुब्बं पन तया, महाराज—'सम्पन्ने सस्से फलभारनमिते मञ्जरितपत्ते करकवस्सं नाम वस्सजाति निपतित्वा विनासेति अफलं करोती' ति ? "सुतपुब्बं चेव, भन्ते, अम्हेहि दिट्ठपुब्बं चा" ति । "अपि नु खो, महाराज, तं सस्सं काले नट्ठं, उदाहु अकाले नट्ठं" ति ? "अकाले, भन्ते । यदि खो तं, भन्ते, सस्सं करकवस्सं न वस्सेय्य सस्सुद्धरणसमयं पापुणेय्या" ति । "किं पुन, महाराज, आगन्तुकेन उपघातेन सस्सं विनस्सति, निरुपघातं सस्सं सस्सुद्धरणसमयं पापुणाती" ति ? "आम, भन्ते" ति । "एवमेव खो, महाराज, यो कोचि अकाले मरति, सो आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो वातसमुट्ठानेन वा पित्तसमुट्ठानेन वा सेम्हसमुट्ठानेन वा सन्निपातिकेन वा उतुपरिणामजेन वा विसमपरिहारजेन वा ओपक्कमिकेन वा जिघच्छाय वा पिपासाय वा सप्पदट्ठेन वा विसमासितेन वा अग्गिना वा उदकेन वा सत्तिवेगप्पटिपीळितो वा अकाले मरति । यदि पन आगन्तुकेन रोगेन पटिपीळितो न भवेय्य, समये येव मरणं पापुणेय्य । इदमेत्थ, महाराज, कारणं येन कारणेन अकाले मरणं अत्थी" ति ।

"अच्छरियं, भन्ते नागसेन, अब्भुतं भन्ते नागसेन, सुदस्सितं कारणं, सुदस्सितं ओपम्मं अकाले मरणस्स परिदीपनाय । 'अत्थि अकाले मरणं' ति उत्तानीकतं पाकटं कतं विभूतिं कतं । अचित्तविक्खित्तको पि, भन्ते नागसेन,

एकमेकेन पि ताव ओपम्मेन निट्ठं गच्छेय्य—'अत्थि अकाले मरणं' ति, किं पन मनुजो सचेतनो ! पठमोपम्मेनेवाहं, भन्ते, सञ्ञत्तो—'अत्थि अकाले मरणं' ति । अपि च अपरापरं निब्बाहनं सोतुकामो न सम्पटिच्छि" ति ।

७. चेतियपाटिहारियपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, सब्बेसं परिनिब्बुतानं चेतिये पाटिहीरं होति, उदाहु एकच्चानं येव होती" ति ?

१४. "एकच्चानं, महाराज, होति, एकच्चानं न होती" ति । "कतमेसं, भन्ते, होति, कतमेसं न होती" ति ? "तिण्णन्नं, महाराज, अञ्ञतरस्स अधिट्ठाना परिनिब्बुतस्स चेतिये पाटिहीरं होति । कतमेसं तिण्णन्नं ? इध, महाराज, अरहा देवमनुस्सानं अनुकम्पाय तिट्ठन्तो अधिट्ठाति—'एवं नाम चेतिये पाटिहीरं होतू' ति, तस्स अधिट्ठानवसेन चेतिये पाटिहीरं होति । एवं अरहतो अधिट्ठानवसेन परिनिब्बुतस्स चेतिये पाटिहीरं होति ।

"पुन च परं, महाराज, देवता मनुस्सानं अनुकम्पाय परिनिब्बुतस्य चेतिये पाटिहीरं दस्सेन्ति—'इमिना पाटिहीरेन सद्धम्मो निच्चसम्पग्गहितो भविस्सति, मनुस्सा च पसन्ना कुसलेन अभिवड्ढिस्सन्ती' ति । एवं देवतानं अधिट्ठानवसेन परिनिब्बुतस्स चेतिये पाटिहीरं होति ।

"पुन च, महाराज, इत्थी वा पुरिसो वा सद्धो पसन्नो पण्डितो ब्यत्तो मेधावी बुद्धिसम्पन्नो योनिसो चिन्तयित्वा गन्धं वा मालं वा दुस्सं वा अञ्ञतरं वा किञ्चि अधिट्ठहित्वा चेतिये उक्खिपति—'एवं नाम होतू' ति । तस्स पि अधिट्ठानवसेन परिनिब्बुतस्स चेतिये पाटिहीरं होति । एवं मनुस्सानं अधिट्ठानवसेन परिनिब्बुतस्य चेतिये पाटिहीरं होति ।

इमेसं खो, महाराज, तिण्णन्नं अञ्ञतरस्स अधिट्ठानवसेन परिनिब्बुतस्स चेतिये पाटिहीरं होति ।

यदि, महाराज, तेसं अधिट्ठानं न होति, खीणासवस्स पि छळभिञ्ञस्स चेतोवसिप्पत्तस्स चेतिये पाटिहीरं न होति । असति पि, महाराज, पाटिहीरे चरितं दिस्वा सुपरिसुद्धं ओकप्पेतब्बं निट्ठं गन्तब्बं सद्दहितब्बं—'सुपरिनिब्बुतो अयं बुद्धपुत्तो'' ति ।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति ।

८. धम्माभिसमयपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, ये ते सम्मा पटिपज्जन्ति तेसं सब्बेसं येव धम्माभिसमयो होति, उदाहु कस्सचि न होती" ति ? "कस्सचि, महाराज, होति, कस्सचि न होती" ति । "कस्स, भन्ते, होति, कस्स न होती" ति ?

२१. "तिरच्छानगतस्स, महाराज, सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति, पेत्तिविसयूपपन्नस्स....मिच्छादिट्ठिकस्स....कुहकस्स....मातुघातकस्स....पितुघातकस्स...अरहन्तघातकस्स...सङ्घभेदकस्स...लोहितुप्पादकस्स...थेय्यसंवासकस्स...तित्थियपक्कन्तस्स....भिक्खुनिदूसकस्स....तेरसन्नं गरुकापत्तीनं अञ्ञतरं आपज्जित्वा अवुट्ठितस्स ...पण्डकस्स....उभतोब्यञ्जनकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति। यो पि मनुस्सदहरको ऊनकसत्तवस्सिको, तस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति। इमेसं खो, महाराज, सोळसन्नं पुग्गलानं सुप्पटिपन्नानं पि धम्माभिसमयो न होती" ति।

"भन्ते नागसेन, ये ते पन्नरस पुग्गला विरुद्धा येव, तेसं अभिसमयो होतु वा मा वा होतु, अथ केन कारणेन मनुस्सदहरकस्स ऊनसत्तवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति ? एत्थ ताव पञ्हो भवति–'ननु नाम दहरकस्स न रागो होति, न दोसो होति, न मोहो होति, न मानो होति, न मिच्छादिट्ठि होति, न अरति होति, न कामवितक्को होति, अमिस्सितो किलेसेहि सो नाम दहरको युत्तो च पत्तो च, अरहति च चत्तारि सच्चानि एकपटिविधेन पटिविज्झितुं" ति ?

"तं येवेत्थ, महाराज, कारणं, येनाहं कारणेन भणामि—'ऊनसत्तवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होती' ति। यदि, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स रजनीये रज्जेय्य, दुस्सनीये दुस्सेय्य, मोहनीये मुय्हेय्य, मदनीये मज्जेय्य, दिट्ठिं विजानेय्य, रतिं च अरतिं च विजानेय्य, कुसलाकुसलं वितक्केय्य, भवेय्य तस्स धम्माभिसमयो। अपि च, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स चित्तं अबलं दुब्बलं परित्तं अप्पं थोकं मन्दं अविभूतं, असङ्खता निब्बानधातु गरुका भारिका विपुला महती। ऊनसत्तवस्सिको, महाराज, तेन दुब्बलेन चित्तेन परित्तकेन मन्देन अविभूतेन न सक्कोति गरुकं भारिकं विपुलं महतिं असङ्खतं निब्बानधातुं पटिविज्झितुं।

"यथा, महाराज, सिनेरुपब्बतराजा गरुको भारिको विपुलो महन्तो, अपि नु खो तं, महाराज, पुरिसो अत्तनो पाकतिकेन थामबलवीरियेन सक्कुणेय्य सिनेरुपब्बतराजं उद्धरितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "दुब्बलत्ता, भन्ते, पुरिसस्स, महन्तत्ता सिनेरुपब्बतराजस्सा" ति। "एवमेव खो, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स चित्तं अबलं दुब्बलं परित्तं अप्पं थोकं मन्दं अविभूतं, असङ्खता निब्बानधातु गरुका भारिका विपुला महती; ऊनसत्तवस्सिको तेन दुब्बलेन चित्तेन परित्तेन मन्देन अविभूतेन न सक्कोति गरुकं भारिकं विपुलं महतिं असङ्खतं निब्बानधातुं पटिविज्झितुं, तेन कारणेन ऊनसत्तवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति।

"यथा वा पन, महाराज, अयं महापठवी दीघा आयता पुथुला वित्थता विसाला वित्थिण्णा विपुला महन्ता, अपि नु खो तं, महाराज, महापठविं सक्का परित्तकेन उदकबिन्दुकेन तेमेत्वा उदकचिक्खल्लं कातुं" ति ? "न हि भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "परित्तत्ता, भन्ते, उदकबिन्दुस्स, महन्तत्ता महापठविया" ति। "एवमेव खो, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स चित्तं अबलं दुब्बलं परित्तं अप्पं थोकं मन्दं अविभूतं, असङ्खता निब्बानधातु दीघा आयता पुथुला वित्थता विसाला वित्थिण्णा विपुला महन्ता। ऊनसत्तवस्सिको तेन दुब्बलेन चित्ते परित्तकेन मन्देन अविभूतेन न सक्कोति महतिं असङ्खतं निब्बानधातुं पटिविज्झितुं, तेन कारणेन ऊनसत्तवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति।

"यथा वा पन, महाराज, अबलदुब्बलपरित्तअप्पथोकमन्दग्गि भवेय्य, अपि नु खो, महाराज, तावतकेन मन्देन अग्गिना सक्का सदेवके लोके अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेतुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "मन्दत्ता, भन्ते अग्गिस्स, लोकस्स महन्तत्ता" ति। "एवमेव खो, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स चित्तं अबलं दुब्बलं परित्तं अप्पं थोकं मन्दं अविभूतं, महता च अविज्जन्धकारेन पिहितं, तस्मा दुक्करं ञाणालोकं दस्सयितुं, तेन कारणेन ऊनसत्तकवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होती ति।

"यथा वा पन, महाराज, आतुरो किसो अणुपरिमितकायो सालककिमि हत्थिनागं तिधाप्पभिन्नं नवायतं तिवित्थतं दसपरिणाहं अट्ठरतनिकं सकट्ठानमुपगतं दिस्वा गिलितुं परिकड्ढेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, सालककिमि सक्कुणेय्य तं हत्थिनागं गिलितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति। "केन कारणेन, महाराजा" ति ? "परित्तत्ता, भन्ते, सालककिमिस्स, महन्तत्ता हत्थिनागस्सा" ति। "एवमेव खो, महाराज, ऊनसत्तवस्सिकस्स चित्तं अबलं दुब्बलं परित्तं अप्पं थोकं मन्दं अविभूतं, महती असङ्खता निब्बानधातु; सो तेन दुब्बलेन चित्तेन परित्तकेन मन्देन अविभूतेन न सक्कोति महतिं असङ्खतं निब्बानधातुं पटिविज्झितुं, तेन कारणेन ऊनसत्तवस्सिकस्स सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामा" ति।

९. एकन्तसुखनिब्बानपञ्हो

१७. "भन्ते नागसेन, किं एकन्तसुखं निब्बानं, उदाहु दुक्खेन मिस्सं" ति। "एकन्तसुखं, महाराज, निब्बानं दुक्खेन अमिस्सं" ति। "न मयं तं, भन्ते

नागसेन, वचनं सद्दहाम—'एकन्तसुखं निब्बानं' ति। एवमेत्थ मयं, भन्ते नागसेन, पच्चेम—'निब्बानं दुक्खेन मिस्सं' ति। कारणमेत्थ उपलभाम—'निब्बानं दुक्खेन मिस्सं' ति। कतमं एत्थ कारणं? ये ते, भन्ते नागसेन, निब्बानं परियेसन्ति, तेसं दिस्सति कायस्स च चित्तस्स च आतापो परितापो, ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारपरिग्गहो, मिद्धस्स च उपरोधो, आयतनानं च पटिपीळनं, धनधञ्ञपियञातिमित्तप्पजहनं। ये केचि लोके सुखिता सुखसमप्पिता, ते सब्बे पि पञ्चहि कामगुणेहि आयतने रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिकबहुविधसुखनिमित्तेन रूपेन चक्खुं रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिकगीतवादितबहुविधसुभनिमित्तेन सद्देन सोतं रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिकपुप्फफलपत्ततचमूलसारबहुविधसुभनिमित्तेन गन्धेन घानं रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिकखज्जभोज्जलेय्यपेय्यसायनीयबहुविधसुभनिमित्तेन रसेन जिव्हं रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिकसण्हसुखुममुदुमद्दवबहुविधसुभनिमित्तेन फस्सेन कायं रमेन्ति ब्रूहेन्ति, मनापिकमनापिककल्याणपापकसुभासुभबहुविधवितक्कमनसिकारेन मनं रमेन्ति, ब्रूहेन्ति। तुम्हे तं चक्खुसोतघानजिव्हाकायमनोब्रूहनं हनथ, उपहनथ छिन्दथ उपच्छिन्दथ रुन्धथ उपरुन्धथ, तेन कायो पि परितप्पति, चित्तं पि परितप्पति, काये परितत्ते कायिकं दुक्खं वेदनं वेदियति, चित्ते परितत्ते चेतसिकं दुक्खं वेदनं वेदियति। ननु मागन्दियो पि परिब्बाजको भगवन्तं गरहमानो एवमाह—'भूनहु समणो गोतमो' ति। इदमेत्थ, महाराज, कारणं, येनाहं कारणेन ब्रूमि—'निब्बानं दुक्खेन मिस्सं' ति।

१८. "न हि, महाराज, निब्बानं दुक्खेन मिस्सं, एकन्तसुखं निब्बानं। यं पन त्वं महाराज, ब्रूसि—'निब्बानं दुक्खं' ति, नेतं दुक्खं निब्बानं नाम। निब्बानस्स पन सच्छिकिरियाय पुब्बभागो एसो, निब्बानपरियेसनं एतं। एकन्तसुखं येव, महाराज, निब्बानं, न दुक्खेन मिस्सं। तत्थ कारणं वदामि। अत्थि महाराज, राजूनं रज्जसुखं नामा" ति? "आम, भन्ते, अत्थि राजूनं रज्जसुखं" ति। "अपि नु खो तं, महाराज, रज्जसुखं दुक्खेन मिस्सं" ति? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन ते, महाराज, राजानो पच्चन्ते कुपिते तेसं पच्चन्तनिस्सितानं पटिसेधाय अमच्चेहि परिणायकेहि भटेहि बलत्थेहि परिवुता पवासं गन्त्वा डंसमकसवातातपपटिपीळिता समविसमे परिधावन्ति, महायुद्धं च करोन्ति, जीवितसंसयं च पापुणन्ती" ति? "नेतं, भन्ते नागसेन, रज्जसुखं नाम, रज्जसुखस्स परियेसनाय पुब्बभागो एसो। दुक्खेन, भन्ते नागसेन, राजानो रज्जं परियेसित्वा रज्जसुखं अनुभवन्ति। एवं, भन्ते नागसेन, रज्जसुखं दुक्खेन अमिस्सं, अञ्ञं तं रज्जसुखं, अञ्ञं दुक्खं' ति। "एवमेव खो, महाराज, एकन्तसुखं

निब्बानं न दुक्खेन मिस्सं। ये पन ते निब्बानं परियेसन्ति कायं च चित्तं च आतापेत्वा ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारं परिग्गहेत्वा मिद्धं उपरुन्धित्वा आयतनानि पटिपीळेत्वा कायं च जीवितं च परिच्चजित्वा दुक्खेन निब्बानं परियेसित्वा एकन्तसुखं निब्बानं अनुभवन्ति, निहतपच्चामित्ता च राजानो रज्जसुखं। एवं, महाराज, एकन्तसुखं निब्बानं न दुक्खेन मिस्सं, अञ्ञं निब्बानं, अञ्ञं दुक्खं" ति।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि—'एकन्तसुखं निब्बानं न दुक्खेन मिस्सं, अञ्ञं दुक्खं, अञ्ञं निब्बानं' ति। अत्थि, महाराज, आचरियानं सिप्पवन्तानं सिप्पसुखं नामा" ति? "आम, भन्ते, अत्थि आचरियानं सिप्पवन्तानं सिप्पसुखं" ति। "अपि नु खो तं महाराज, सिप्पसुखं दुक्खेन मिस्सं" ति? "न हि, भन्ते" ति। "किस्स पन ते, महाराज, आचरियानं अभिवादनपच्चुट्ठानेन उदकाहरणघरसम्मज्जनदन्तकट्ठमुखोदकानुप्पदानेन उच्छिट्ठप्पटिग्गहणउच्छादननहापनपादपरिकम्मेन सकचित्तं निक्खिपित्वा परचित्तानुवत्तनेन दुक्खसेय्याय विसमभोजनेन कायं आतापेन्ती" ति? "नेतं, भन्ते नागसेन, सिप्पसुखं नाम, सिप्पपरियेसनाय पुब्बभागो एसो। दुक्खेन, भन्ते नागसेन, आचरिया सिप्पं परियेसित्वा सिप्पसुखं अनुभवन्ति। एवं, भन्ते नागसेन, सिप्पसुखं दुक्खेन अमिस्सं, अञ्ञं तं सिप्पसुखं, अञ्ञं दुक्खं" ति। "एवमेव खो, महाराज, एकन्तसुखं निब्बानं न दुक्खेन मिस्सं, ये पन तं निब्बानं परियेसन्ति ते कायं च चित्तं च आतापेत्वा ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारं परिग्गहेत्वा मिद्धं उपरुन्धित्वा आयतनानि पटिपीळेत्वा कायं च जीवितं च परिच्चजित्वा दुक्खेन निब्बानं परियेसित्वा एकन्तसुखं निब्बानं अनुभवन्ति, आचरिया विय सिप्पसुखं। एवं महाराज, एकन्तसुखं निब्बानं, न दुक्खेन मिस्सं, अञ्ञं दुक्खं, अञ्ञं निब्बानं" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१०. निब्बानरूप-सण्ठानपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, 'निब्बानं, निब्बानं' ति यं वदेसि, सक्का पन तस्स निब्बानस्स रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं" ति? "अप्पटिभागं, महाराज, निब्बानं, न सक्का निब्बानस्स रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं" ति। "एतम्पाहं, भन्ते नागसेन, न सम्पटिच्छामि। यं अत्थिधम्मस्स निब्बानस्स रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा अपञ्ञापनं, कारणेन मं

सञ्ञापेही" ति ? "होतु, महाराज, कारणेन तं सञ्ञापेस्सामि । अत्थि, महाराज, महासमुद्दो नामा" ति ? "आम, भन्ते, अत्थेसो महासमुद्दो" ति ।

२०. "सचे तं, महाराज, कोचि एवं पुच्छेय्य–'कित्तकं, महाराज, समुद्दस्स उदकं, कति पन ते सत्ता ये महासमुद्दे पटिवसन्ती' ति ? एवं पुट्ठो त्वं, महाराज, किं ति तस्स व्याकरेय्यासी" ति ? "सचे मं, भन्ते, कोचि एवं पुच्छेय्य–'कित्तकं, महाराज, महासमुद्दे उदकं, कति पन ते सत्ता ये महासमुद्दे पटिवसन्ती' ति, तमहं, भन्ते, एवं वदेय्यं–'अपुच्छितब्बं मं त्वं, अम्भो पुरिस, पुच्छसि, नेसा पुच्छा केनचि पुच्छितब्बा, ठपनीयो एसो पञ्हो, अविभत्तो लोकक्खायिकेहि महासमुद्दो, न सक्का महासमुद्दे उदकं परिमिनितुं, सत्ता वा ये तत्थ वासमुपगता' ति एवाहं, भन्ते, तस्स पटिवचनं ददेय्यं" ति !

"किस्स पन त्वं, महाराज, अत्थिधम्मे महासमुद्दे एवं पटिवचनं ददेय्यासि, ननु विगणेत्वा तस्स आचिक्खितब्बं–'एत्तकं महासमुद्दे उदकं, एत्तका च सत्ता महासमुद्दे पटिवसन्ती" ति । "न सक्का, भन्ते, अविसयो एसो पञ्हो" ति ।

"यथा, महाराज, अत्थिधम्मे येव महासमुद्दे न सक्का उदकं परिगणेतुं, सत्ता वा ये तत्थ वासमुपगता; एवमेव खो, महाराज, अत्थिधम्मस्सेव निब्बानस्स न सक्का रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं । विगणेय्य, महाराज, इद्धिया चेतोवसिप्पत्तो महासमुद्दे उदकं तत्रासये च सत्ते, न त्वेव सो इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो सक्कुणेय्य निब्बानस्स रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं ।

"अपरं पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि—अत्थिधम्मस्सेव निब्बानस्स न सक्का रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं ति । अत्थि, महाराज, देवेसु अरूपकायिका नाम देवा" ति ? "आम भन्ते सूयति—'अत्थि देवेसु अरूपकायिका नाम देवा'" ति । "सक्का पन, महाराज, तेसं अरूपकायिकानं देवानं रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं" ति ? "न हि, भन्ते" ति । "तेन हि, महाराज, नत्थि अरूपकायिका देवा" ति ? "अत्थि, भन्ते, अरूपकायिका देवा, न च सक्का तेसं रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं" ति । "यथा, महाराज, अत्थिसत्तानं येव अरूपकायिकानं देवानं न सक्का रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं; एवमेव खो, महाराज, अत्थिधम्मस्सेव निब्बानस्स न सक्का रूपं वा सण्ठानं वा

वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं" ति।

"भन्ते नागसेन, होतु एकन्तसुखं निब्बानं। न च सक्का तस्स रूपं वा सण्ठानं वा वयं वा पमाणं वा ओपम्मेन वा कारणेन वा हेतुना वा नयेन वा उपदस्सयितुं। अत्थि पन, भन्ते, निब्बानस्स गुणं अञ्ञेहि अनुपविट्ठं, किञ्चि ओपम्मनिदस्सनमत्तं" ति ? "सरूपतो, महाराज, नत्थि; गुणतो पन, महाराज, सक्का किञ्चि ओपम्मनिदस्सनमत्तं उपदस्सयितुं" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, यथाहं लभामि निब्बानस्स गुणतो पि एकदेसपरिदीपनमत्तं, तथा सीघं ब्रूहि, निब्बापेहि मे हदयपरिळाहं विनयसीतलमधुरवचनमालुतेना" ति।

"पदुमस्स, महाराज, एको गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो, उदकस्स द्वे गुणा, अगदस्स तयो गुणा, महासमुद्दस्स चत्तारो गुणा, भोजनस्स पञ्च गुणा, आकासस्स दस गुणा, मणिरतनस्स तयो गुणा, लोहितचन्दनस्स तयो गुणा, सप्पिमण्डस्स तयो गुणा, गिरिसिखरस्स पञ्च गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'पदुमस्स एको गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो' ति यं वदेसि, कतमो पदुमस्स एको गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो" ति ? "यथा, महाराज, पदुमं अनुपलित्तं उदकेन, एवमेव खो महाराज, निब्बानं सब्बकिलेसेहि अनुपलित्तं। अयं, महाराज, पदुमस्स एको गुणो निब्बानं अनुप्पविट्ठो" ति।

"भन्ते नागसेन, 'उदकस्स द्वे गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे उदकस्स द्वे गुणा निब्बानं अनुप्पविट्ठा" ति ? "यथा, महाराज, उदकं सीतलं परिळाहनिब्बापनं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सीतलं सब्बकिलेसपरिळाहनिब्बापनं, अयं महाराज, उदकस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, उदकं किलन्ततसितपिपासितघम्माभितत्तानं जनपसुपजानं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं कामतण्हाभवतण्हाविभवतण्हापिपासाविनयनं। अयं महाराज, उदकस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, उदकस्स द्वे गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'अगदस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे अगदस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति ? "यथा, महाराज, अगदो विसपीळितानं सत्तानं पटिसरणं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं किलेसविसपीळितानं सत्तानं पटिसरणं। अयं, महाराज, अगदस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, अगदो रोगानं अन्तकरो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सब्बदुक्खानं अन्तकरं। अयं महाराज, अगदस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, अगदो अमतं; एवमेव खो, महा-

राज, निब्बानं अमतं। अयं, महाराज, अगदस्स ततियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, अगदस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'महासमुद्दस्स चत्तारो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे महासमुद्दस्स चत्तारो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति? "यथा, महाराज, महासमुद्दो सुञ्ञो सब्बकुणपेहि; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सुञ्ञं सब्बकिलेसकुणपेहि। अयं, महाराज, महासमुद्दस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो ति। पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो महन्तो अनोरपारो, न पूरति सब्बसवन्तीहि; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं महन्तं अनोरपारं, न पूरति सब्बसत्तेहि। अयं, महाराज, महासमुद्दस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो महन्तानं भूतानं आवासो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं महन्तानं अरहन्तानं विमलखीणासवबलप्पत्तवसीभूतमहाभूतानं आवासो। अयं, महाराज, महासमुद्दस्स ततियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो अपरिमितविविधविपुलवीचिपुप्फसङ्कुसुमितो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं अपरिमितविविधविपुलपरिसुद्धविज्जाविमुत्तिपुप्फसङ्कुसुमितं। अयं, महाराज, महासमुद्दस्स चतुत्थो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, महासमुद्दस्स चत्तारो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति।

"भन्ते नागसेन, 'भोजनस्स पञ्च गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे भोजनस्स पञ्च गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति? "यथा, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं आयुधारणं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सच्छिकतं जरामरणनासनतो आयुधारणं। अयं, महाराज, भोजनस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं बलवड्ढनं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सच्छिकतं सब्बसत्तानं इद्धिबलवड्ढनं। अयं, महाराज, भोजनस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं वण्णजननं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सच्छिकतं सब्बसत्तानं गुणवण्णजननं। अयं, महाराज, भोजनस्स ततियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं दरथवूपसमनं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सच्छिकतं सब्बसत्तानं सब्बकिलेसदरथवूपसमनं। अयं, महाराज, भोजनस्स चतुत्थो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं जिघच्छादुब्बल्यपटिविनोदनं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सच्छिकतं सब्बसत्तानं सब्बदुक्खजिघच्छादुब्बल्यपटिविनोदनं। अयं, महाराज, भोजनस्स पञ्चमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, भोजनस्स पञ्च गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'आकासस्स दस गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे आकासस्स दस गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति ? "यथा, महाराज, आकासो न जायति, न जीयति, न मीयति, न चवति, न उप्पज्जति, दुप्पसहो, अचोराहरणो, अनिस्सितो, विहगगमनो, निरावरणो, अनन्तो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं न जायति न जीयति न मीयति न चवति न उप्पज्जति, दुप्पसहं अचोराहरणं अनिस्सितं अरियगमनं निरावरणं अनन्तं। इमे खो, महाराज, आकासस्स दस गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति।

"भन्ते नागसेन, 'मणिरतनस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' यं वदेसि, कतमे मणिरतनस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति ? "यथा, महाराज, मणिरतनं कामददं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं कामददं। अयं, महाराज, मणिरतनस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च, महाराज, मणिरतनं हासकरं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं हासकरं। अयं, महाराज, मणिरतनस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, मणिरतनं उज्जोतत्थकरं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं उज्जोतत्थकरं। अयं, महाराज, मणिरतनस्स ततियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, मणिरतनस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'लोहितचन्दनस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे लोहितचन्दनस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति ? यथा, महाराज, लोहितचन्दनं दुल्लभं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं दुल्लभं। अयं, महाराज, लोहितचन्दनस्स पठमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं महाराज, लोहितचन्दनं असमसुगन्धं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं असमसुगन्धं। अयं, महाराज, लोहितचन्दनस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, लोहितचन्दनं सज्जनपसत्थं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं अरियसज्जनपसत्थं। अयं, महाराज, लोहितचन्दनस्स ततियो गुणो निब्बानमनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, लोहितचन्दनस्स तयो गुणा निब्बानमनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'सप्पिमण्डस्स तयो गुणा निब्बानमनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे सप्पिमण्डस्स तयो गुणा निब्बानमनुपविट्ठा' ति ? "यथा, महाराज, सप्पिमण्डो वण्णसम्पन्नो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं गुणवण्णसम्पन्नं। अयं, महाराज, सप्पिमण्डस्स पठमो गुणो निब्बानमनुपविट्ठो ति। पुन च परं, महाराज, सप्पिमण्डो गन्धसम्पन्नो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सीलगन्धसम्पन्नं। अयं, महाराज, सप्पिमण्डस्स दुतियो गुणो

निब्बानमनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, सप्पिमण्डो रससम्पन्नो; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं रससम्पन्नं। अयं, महाराज, सप्पिमण्डस्स ततियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, सप्पिमण्डस्स तयो गुणा निब्बानं अनुपविट्ठा" ति।

"भन्ते नागसेन, 'गिरिसिखरस्स पञ्च गुणा निब्बानमनुपविट्ठा' ति यं वदेसि, कतमे गिरिसिखरस्स पञ्च गुणा निब्बानमनुपविट्ठा' ति ? "यथा, महाराज, गिरिसिखरं अच्चुग्गतं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं अच्चुग्गतं। अयं, महाराज, गिरिसिखरस्स पठमो गुणो निब्बानमनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, गिरिसिखरं अचलं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं अचलं। अयं, महाराज, गिरिसिखरस्स दुतियो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, गिरिसिखरं दुरधिरोहं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं दुरधिरोहं सब्बकिलेसानं। अयं, महाराज, गिरिसिखरस्स ततियो गुणो निब्बानुमपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, गिरिसिखरं सब्बबीजानं अविरूहनं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं सब्बकिलेसानं अविरूहनं। अयं, महाराज, गिरिसिखरस्स चतुत्थो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। पुन च परं, महाराज, गिरिसिखरं अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तं; एवमेव खो, महाराज, निब्बानं अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तं। अयं, महाराज, गिरिसिखरस्स पञ्चमो गुणो निब्बानं अनुपविट्ठो। इमे खो, महाराज, गिरिसिखरस्स पञ्च गुणा निब्बानमनुपविट्ठा" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

११. निब्बानसच्छिकरणपञ्हो

२१. भन्ते नागसेन, तुम्हे भणथ—'निब्बानं न अतीतं न अनागतं न पच्चुप्पन्नं न उप्पन्नं न अनुप्पन्नं न उप्पादनीयं' ति। इध, भन्ते नागसेन, यो कोचि सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोति सो उप्पन्नं सच्छिकरोति, उदाहु उप्पादेत्वा सच्छिकरोती" ति ? "यो कोचि, महाराज, सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोति, सो न उप्पन्नं सच्छिकरोति, न उप्पादेत्वा सच्छिकरोति। अपि च, महाराज, अत्थेसा निब्बानधातु यं सो सम्मापटिपन्नो सच्छिकरोती" ति।

"मा, भन्ते नागसेन, इमं पञ्हं पटिच्छन्नं कत्वा दीपेहि, विवटं पाकटं कत्वा दीपेहि छन्दजातो उस्साहजातो, यं ते सिक्खितं तं सब्बं एत्थेवाकिराहि, एत्थायं जनो सम्मूळ्हो विमतिजातो संसयपक्खन्नो, भिन्देतं अन्तोदोससल्लं' ति ?

२२. "अत्थेसा, महाराज, निब्बानधातु सन्ता सुखा पणीता, तं सम्मापटि-

पन्नो जिनानुसिट्ठिया सङ्खारे सम्मसन्तो पञ्ञाय सच्छिकरोति। यथा, महाराज, अन्तेवासिको आचरियानुसिट्ठिया विज्जं पञ्ञाय निब्बानं सच्छिकरोति; एवमेव खो, महाराज, सम्मापटिपन्नो जिनानुसिट्ठिया पञ्ञाय निब्बानं सच्छिकरोति। कथं पन तं निब्बानं दट्ठब्बं ति? अनीतितो निरुपद्दवतो अभयतो खेमतो सन्ततो सुखतो साततो पणीततो सुचितो सीतलतो दट्ठब्बं।

"यथा, महाराज, पुरिसो बहुकट्ठपुञ्जेन जलितकट्ठितेन अग्गिना डय्हमानो वायामेन ततो मुञ्चित्वा निरग्गिकोकासं पविसित्वा तत्थ परमसुखं लभेय्य; एवमेव खो, महाराज, यो सम्मापटिपन्नो सो योनिसो मनसिकारेन व्यपगततिविधग्गिसन्तापं परमसुखं निब्बानं सच्छिकरोति। यथा, महाराज, अग्गि एवं तिविधग्गि दट्ठब्बो, यथा अग्गिगतो पुरिसो एवं सम्मापटिपन्नो दट्ठब्बो, यथा निरग्गिकोकासो एवं निब्बानं दट्ठब्बं।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो अहिकुक्कुरमनुस्सकुणपसरीरवळञ्ज-कोट्ठासरासिगतो कुणपजटाजटितन्तरमनुपविट्ठो वायामेन ततो मुञ्चित्वा निक्कुणपोकासं पविसित्वा तत्थ परमसुखं लभेय्य; एवमेव खो, महाराज, यो सम्मापटिपन्नो सो योनिसो मनसिकारेन ब्यपगतकिलेसकुणपं परमसुखं निब्बानं सच्छिकरोति। यथा, महाराज, कुणपं एवं पञ्च कामगुणा दट्ठब्बा, यथा कुणपगतो पुरिसो एवं सम्मापटिपन्नो दट्ठब्बो, यथा निक्कुणपोकासो एवं निब्बानं दट्ठब्बं।

"यथा वा पन, महाराज, पुरिसो भीतो तसितो कुपितो विपरीतविब्भन्त-चित्तो वायामेन ततो मुञ्चित्वा दळ्हं थिरं अचलं अभयट्ठानं पविसित्वा तत्थ परमसुखं लभेय्य; एवमेव खो, महाराज, यो सम्मापटिपन्नो सो योनिसो मनसिकारेन व्यपगतभयसन्तासं परमसुखं निब्बानं सच्छिकरोति। यथा, महाराज, भयं एवं जातिजराव्याधिमरणं पटिच्च अपरापरं पवत्तभयं दट्ठब्बं, यथा भीतो पुरिसो एवं सम्मापटिपन्नो दट्ठब्बो, यथा अभयट्ठानं एवं निब्बानं दट्ठब्बं।

"यथा वा पन, महाराज, किलिट्ठमलिनकललकद्दमदेसे पतितो वायामेन तं कललकद्दमं अपवाहेत्वा परिसुद्धविमलदेसमुपगन्त्वा तत्थ परमसुखं लभेय्य; एवमेव खो, महाराज, यो सम्मापटिपन्नो सो योनिसो मनसिकारेन व्यपगत-किलेसमलकद्दमं परमसुखं निब्बानं सच्छिकरोति। यथा, महाराज, कललं एवं लाभसक्कारसिलोको दट्ठब्बो, यथा कललगतो पुरिसो एवं सम्मापटिपन्नो दट्ठब्बो, यथापरिसुद्धविमलदेसो एवं निब्बानं दट्ठब्बं।

"तं च पन निब्बानं सम्मापटिपन्नो किं ति सच्छिकरोति? यो सो,

महाराज, सम्मापटिपन्नो सो सङ्खारानं पवत्तं सम्मसति, पवत्तं सम्मसमानो तत्थ जातिं पस्सति जरं पस्सति ब्याधिं पस्सति मरणं पस्सति, न तत्थ किञ्चि सुखं सातं पस्सति, आदितो पि मज्झतो पि परियोसानतो पि सो तत्थ न किञ्चि गय्हूपगं पस्सति।

"यथा, महाराज, पुरिसो दिवससन्तत्ते अयोगुळे जलिते तत्ते कठिते आदितो पि मज्झतो पि परियोसानतो पि न किञ्चि गय्हूपगं पदेसं पस्सति; एवमेव खो, महाराज, यो सङ्खारानं पवत्तं सम्मसति सो पवत्तं सम्मसमानो तत्थ जातिं पस्सति जरं पस्सति ब्याधिं पस्सति मरणं पस्सति, न तत्थ किञ्चि सुखं सातं पस्सति, आदितो पि मज्झतो पि परियोसानतो पि सो तत्थ न गय्हूपगं पस्सति। तस्स गय्हूपगं अपस्सन्तस्स चित्ते अरति सण्ठाति, कायस्मिं डाहो ओक्कमति, सो अत्ताणो असरणो असरणीभूतो भवेसु निब्बिन्दति।

"यथा, महाराज, पुरिसो जलितजालं महन्तं अग्गिक्खन्धं पविसेय्य, सो तत्थ असरणो असरणीभूतो अग्गिम्हि निब्बिन्देय्य; एवमेव खो, महाराज, तस्स गय्हूपगं अपस्सन्तस्स चित्ते अरति सण्ठाति, कायस्मिं डाहो ओक्कमति, सो अत्ताणो असरणो असरणीभूतो भवेसु निब्बिन्दति।

"तस्स पवत्ते भयदस्साविस्स एवं चित्तं उप्पज्जति–'सन्तत्तं खो पनेतं पवत्तं सम्पज्जलितं बहुदुक्खं बहुपायासं। यदि कोचि लभेथ अपवत्तं एतं सन्तं एतं पणीतं, यदिदं सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं' ति। इति हिदं तस्स अपवत्ते चित्तं पक्खन्दति पसीदति पहंसीयति कुहीयति—'पटिलद्धं खो मे निस्सरणं' ति।

"यथा, महाराज, पुरिसो विप्पनट्ठो विदेसपक्खन्नो निब्बाहनमग्गं दिस्वा तत्थ पक्खन्दति पसीदति पहंसीयति कुहीयति—'पटिलद्धो मे निब्बाहनमग्गो" ति; एवमेव खो, महाराज, पवत्ते भयदस्साविस्स अप्पवत्ते चित्तं पक्खन्दति पसीदति पहंसीयति कुहीयति—'पटिलद्धं खो मे निस्सरणं' ति।

"सो अप्पवत्ताय मग्गं आयूहति गवेसति भावेति बहुलीकरोति, तस्स तदत्थं सति सन्तिट्ठति, तदत्थं विरियं सन्तिट्ठति, तदत्थं पीति सन्तिट्ठति, तस्स तं चित्तं अपरापरं मनसिकरोतो पवत्तं समतिक्कमित्वा अप्पवत्तं ओक्कमति। अप्पवत्तमनुप्पत्तो, महाराज, सम्मापटिपन्नो 'निब्बानं सच्छिकरोती' ति वुच्चती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, एवमेतं तथा सम्पटिच्छामी" ति।

१२. निब्बानसन्निहितपञ्हो

२३. "भन्ते नागसेन, अत्थि सो पदेसो पुरत्थिमाय वा दिसाय दक्खिणाय वा दिसाय पच्छिमाय वा दिसाय उत्तराय वा दिसाय, उद्धं वा अधो वा तिरियं वा यत्थ निब्बानं सन्निहितं" ति ? "नत्थि, महाराज, सो पदेसो पुरत्थिमाय वा दिसाय दक्खिणाय वा दिसाय पच्छिमाय वा दिसाय उत्तराय वा दिसाय, उद्धं वा अधो वा तिरियं वा यत्थ निब्बानं सन्निहितं" ति ।

"यदि, भन्ते नागसेन, नत्थि निब्बानस्स सन्निहितोकासो, तेन हि नत्थि निब्बानं, येसं च तं निब्बानं सच्छिकतं तेसं पि सच्छिकिरिया मिच्छा । कारणं तत्थ वक्खामि—यथा, भन्ते नागसेन, महिया धञ्ञुट्ठानं खेत्तं अत्थि, गन्धुट्ठानं गुम्बो अत्थि, फलुट्ठानं रुक्खो अत्थि, रतनुट्ठानं आकरो अत्थि, तत्थ यो कोचि यं यं इच्छति सो तत्थ गन्त्वा तं तं हरति; एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यदि निब्बानं अत्थि, तस्स निब्बानस्स उट्ठानोकासो पि इच्छितब्बो । यस्मा च खो, भन्ते नागसेन, निब्बानस्सुट्ठानोकासो नत्थि, तस्मा 'नत्थि निब्बानं' ति ब्रूमि, 'येसं च निब्बानं सच्छिकतं, तेसं सच्छिकिरिया मिच्छा'" ति ।

२४. "नत्थि, महाराज, निब्बानस्स सन्निहितोकासो, अत्थि चेतं निब्बानं, सम्मापटिपन्नो योनिसो मनसिकारेन निब्बानं सच्छिकरोति । यथा पन, महाराज, अत्थि अग्गि नाम, नत्थि तस्स सन्निहितोकासो, द्वे कट्ठानि सङ्घट्टेन्तो अग्गिं अधिगच्छति; एवमेव खो, महाराज, अत्थि निब्बानं नत्थि तस्स सन्निहितोकासो, सम्मापटिपन्नो योनिसो मनसिकारेन निब्बानं सच्छिकरोति ।

"यथा वा पन, महाराज, अत्थि सत्त रतनानि नाम, सेय्यथीदं—चक्करतनं, हत्थिरतनं, अस्सरतनं, मणिरतनं, इत्थिरतनं, गहपतिरतनं, परिणायकरतनं । न च तेसं रतनानं संन्निहितोकासो अत्थि, खत्तियस्स पन सम्मापटिपन्नस्स पटिपत्ति बलेन तानि रतनानि उपगच्छन्ति; एवमेव खो, महाराज, अत्थि निब्बानं, नत्थि तस्स सन्निहितोकासो, सम्मापटिपन्नो योनिसो मनसिकारेन निब्बानं सच्छिकरोती" ति ।

"भन्ते नागसेन, निब्बानस्स सन्निहितोकासो मा होतु; अत्थि पन तं ठानं यत्थ ठितो सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोती" ति ? "आम, महाराज, अत्थि तं ठानं यत्थ ठितो सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोती" ति । "कतमं पन, भन्ते, तं ठानं यत्थ ठितो सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोती" ति ? "सीलं, महाराज, ठानं, सीले पतिट्ठहित्वा योनिसो मनसिकरोन्तो सक्कयवने पि चीनविलाते पि अलसन्दे पि निकुम्बे पि कासिकोसले पि कस्मीरे गन्धारे पि नगमुद्धनि पि ब्रह्मलोके पि यत्थ कत्थचि पि ठितो सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छि-

करोति। यथा, महाराज, यो कोचि चक्खुमा पुरिसो सक्कयवने पि चीनविलाते पि अलसन्दे पि निगुम्बे पि कासिकोसले पि कस्मीरे पि गन्धारे पि नगमुद्धनि पि ब्रह्मलोके पि यत्थ कत्थचि पि ठितो आकासं पस्सति; एवमेव खो, महाराज, सीले पतिट्ठितो योनिसो मनसिकरोन्तो सक्कयवने पि…पे०… यत्थ कत्थचि पि ठितो सम्मापटिपन्नो निब्बानं सच्छिकरोति।

"यथा वा पन, महाराज, सक्कयवने पि…पे०…यत्थ कत्थचि पि ठितस्स पुब्बदिसा अत्थि; एवमेव खो, महाराज, सीले पतिट्ठितस्स योनिसो मनसिकरोन्तस्स सक्कयवने पि…पे०…यत्थकत्थचि ठितस्स सम्मापटिपन्नस्स अत्थि निब्बानसच्छिकिरिया" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, देसितं तया निब्बानं, देसिता निब्बानसच्छिकिरिया, परिक्खता सीलगुणा, दस्सिता सम्मापटिपत्ति; उस्सापितो धम्मद्धजो, सण्ठापिता धम्मनेत्ति, अवञ्झो सुप्पयुत्तानं सम्मापयोगो। एवमेतं गणिवरपवर, तथा सम्पटिच्छामी" ति।

[इमस्मिं वग्गे द्वादस पञ्हा] तिततियो वेस्सन्तरवग्गो निट्ठितो।

४. अनुमानवग्गो

१. अनुमानपञ्हो

१. अथ खो मिलिन्दो राजा येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नागसेनं अभिवादेत्वा निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा ञातुकामो सोतुकामो धारेतुकामो, ञाणालोकं दट्ठुकामो अञ्ञाणं भिन्दितुकामो ञाणालोकं उप्पादेतुकामो अविज्जन्धकारं नासेतुकामो, अधिमत्तं धितिं च उस्साहं च सतिं च सम्पजञ्ञं च उपट्ठपेत्वा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—

२. "भन्ते नागसेन, किं पन बुद्धो तया दिट्ठो" ति? "न हि, महाराजा" ति। "किं पन ते आचरियेहि बुद्धो दिट्ठो" ति? "न हि, महाराजा" ति। "भन्ते नागसेन, न किर तया बुद्धो दिट्ठो, नापि किर ते आचरियेहि बुद्धो दिट्ठो, तेन हि, भन्ते नागसेन, नत्थि बुद्धो, न हेत्थ बुद्धो पञ्ञायती" ति।

"अत्थि पन ते महाराज, पुब्बका खत्तिया ये ते तव खत्तियवंसस्स पुब्बङ्गमा" ति? "आम, भन्ते, को संसयो अत्थि पुब्बका खत्तिया ये मम खत्तियवंसस्स पुब्बङ्गमा" ति। "दिट्ठपुब्बा तया, महाराज, पुब्बका खत्तिया" ति। "न हि, भन्ते" ति। "ये पन तं, महाराज, अनुसासन्ति, पुरोहिता सेनापतिनो अक्खदस्सा महामत्ता, तेहि पुब्बका खत्तिया दिट्ठपुब्बा" ति? "न हि, भन्ते" ति। "यदि पन ते, महाराज, पुब्बका खत्तिया न दिट्ठा, नापि किर ते अनु-

सासकेहि पुब्बका खत्तिया दिट्ठा, कत्थ पुब्बका खत्तिया ? न हेत्थ पुब्बका खत्तिया पञ्ञायन्ती" ति ।

"दिस्सन्ति, भन्ते नागसेन, पुब्बकानं खत्तियानं अनुभूतानि परिभोगसण्डानि, सेय्यथीदं—सेतच्छत्तं, उण्हीसं, पादुका, वालबीजनी, खग्गरतनं, महारहानि च सयनानि, येहि मयं जानेय्याम सद्दहेय्याम—'अत्थि पुब्बका खत्तिया' ति । "एवमेव खो, महाराज, मयं पेतं भगवन्तं जानेय्याम सद्दहेय्याम, अत्थि तं कारणं येन मयं कारणेन जानेय्याम सद्दहेय्याम—'अत्थि सो भगवा' ति ।

"कतमं तं कारणं ? अत्थि खो, महाराज, तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अनुभूतानि परिभोगसण्डानि, सेय्यथीदं—चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, येहि सदेवको लोको जानाति सद्दहति—'अत्थि सो भगवा' ति । इमिना, महाराज, कारणेन, इमिना हेतुना, इमिना नयेन, इमिना अनुमानेन ञातब्बं—'अत्थि सो भगवा' ति ।

"बहू जने तारयित्वा, निब्बुतो उपधिक्खये ।
अनुमानेन ञातब्बं—'अत्थि सो दिपदुत्तमो' ति ॥

"भन्ते नागसेन, ओपम्मं करोही" ति । "यथा महाराज, नगरवड्ढकी नगरं मापेतुकामो पठमं ताव समं अनुन्नतं अनोणतं असक्खरपासाणं निरुपद्दवमनवज्जं रमणीयं भूमिभागं अनुविलोकेत्वा यं तत्थ विसमं तं समं कारापेत्वा खाणुकण्टकं विसोधापेत्वा तत्थ नगरं मापेय्य सोभनं विभत्तं भागसो मितं उक्किण्णपरिखपाकारं दळ्हगोपुरट्टालकोट्टकं पुथुचच्चरचतुक्कसन्धिसिङ्घाटकं सुचिसमतलराजमग्गं सुविभत्तअन्तरापणं आरामुय्यानतळाकपोक्खरणीउदपानसम्पन्नं बहुविधदेवट्ठानपटिमण्डितं सब्बदोसविरहितं, सो तस्मि नगरे सब्बथा वेपुल्लतं पत्ते अञ्ञं देसं उपगच्छेय्य; अथ तं नगरं अपरेन समयेन इद्धं भवेय्य फीतं सुभिक्खं खेमं समिद्धं सिवं अनीतिकं निरुपद्दवं नानाजनसमाकुलं, पुथू खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा हत्थारोहा अस्सारोहा रथिका पत्तिका धनुग्गहा थरुग्गहा चेलका चलका, पिण्डदायका उग्गा राजपुत्ता पक्खन्दिनो महानगा सूरा वम्मिनो योधिनो दासिकपुत्ता भट्टिपुत्ता मल्लका गणका आलारिका, सूदा कप्पका नहापका चुन्दा मालाकारा सुवण्णकारा सज्झुकारा सीसकारा तिपुकारा लोहकारा वट्टकारा अयोकारा मणिकारा पेसकारा कुम्भकारा वेणुकारा, लोणकारा चम्मकारा रथकारा दन्तकारा रज्जुकारा कोच्छकारा सुत्तकारा विलीवकारा धनुकारा जियकारा उसुकारा चित्तकारा रङ्गकारा रजका तन्तवाया तुन्नवाया हेर-

ञ्ञिका दुस्सिका गन्धिका, तिणहारका कट्ठहारका भतका पण्णिका फलिका मूलिका ओदनिका पूविका मच्छिका मंसिका मज्जिका नटका नच्चका लङ्घका, इन्दजालिका वेतालिका मल्ला छवडाहका पुप्फछड्डका, वेना नेसादा गणिका लासिका कुम्भदासियो, सक्क-यवन-च नविलाता उज्जेनका भारुकच्छका कासि-कोसला परन्तका, मागधका, साकेता, सोरेय्यका, पावेय्यका, कोटुम्बरमाधुरका अलसन्दकस्मीरगन्धारा तं नगरं वासाय उपगता नानाविसयिनो जना नवं सुविभत्तं अदोसमनवज्जं रमणीयं तं नगरं पस्सित्वा अनुमानेन जानन्ति—'छेको वत, भो, सो नगरवड्ढकी यो इमस्स नगरस्स मापेता' ति; एवमेव खो, महाराज, सो भगवा असमो असमसमो अप्पटिसमो असदिसो अतुलो असङ्ख्येय्यो अप्पमेय्यो अपरिमेय्यो अमितगुणो गुणपारमिप्पत्तो अनन्तधिति अनन्ततेजो अनन्तविरियो अनन्तबलो, बुद्धबलपारमिं गतो ससेनं मारं पराजेत्वा दिट्ठिजालं पदालेत्वा अविज्जं खेपेत्वा विज्जं उप्पादेत्वा धम्मुक्कं धारयित्वा सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा विजितसङ्गामो धम्मनगरं मापेसि ।

५. "भगवतो खो, महाराज, धम्मनगरं सीलपाकारं हिरिपरिखं ञाणद्वार-कोट्ठकं, विरियअट्टालकं सद्धाएसिकं सतिदोवारिकं, पञ्ञापासादं सुत्तन्तचच्चरं अभिधम्मसिङ्घाटकं विनयविनिच्छयं सतिपट्ठानवीथिकं । तस्स खो पन, महा-राज, सतिपट्ठानवीथियं एवरूपा आपणा पसारिता होन्ति । सेय्यथीदं—'पुप्फापणं गन्धापणं फलापणं अगदापणं ओसधापणं अमतापणं रतनापणं सब्बापणं' ति ।

६. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो पुप्फापणं" ति ? "अत्थि खो पन, महाराज, तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन आरम्मण-विभत्तियो अक्खाता, सेय्यथीदं—अनिच्चसञ्ञा दुक्खसञ्ञा अनत्तसञ्ञा असुभसञ्ञा आदीनवसञ्ञा पहानसञ्ञा विरागसञ्ञा निरोधसञ्ञा सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा सब्बसङ्खारेसु अनिच्चसञ्ञा, आनापानसति, उद्धुमातकसञ्ञा, विनीलकसञ्ञा, विपुब्बकसञ्ञा विच्छिद्दकसञ्ञा, विक्खायितकसञ्ञा, विक्खित्तकसञ्ञा, लोहितकसञ्ञा, पुळवकसञ्ञा, अट्ठिकसञ्ञा, मेत्तासञ्ञा, करुणासञ्ञा, मुदितासञ्ञा, उपेक्खासञ्ञा, मरणानुस्सति, कायगतासति । इमा खो, महाराज, बुद्धेन भगवता आरम्मणविभत्तियो अक्खाता । तत्थ यो कोचि जरामरणा मुञ्चितुकामो, सो तेसु अञ्ञतरं आरम्मणं गण्हाति, तेन आरम्मणेन रागा विमुच्चति, दोसा···मोहा···मानतो····दिट्ठितो विमुच्चति, संसारं तरति, तण्हासोतं निवारेति, तिविधं मलं विसोधेति, सब्बकिलेसे उपहन्त्वा अमलं विरजं सुद्धं पण्डरं अजातिं अमरं सुखं सीतिभूतं अभयं

नगरुत्तमं निब्बाननगरं पविसित्वा अरहत्ते चित्तं विमोचेति। इद वुच्चति, महाराज, भगवतो पुप्फापणं ति।

"कम्ममूलं गहेत्वान, आपणं उपगच्छथ।
आरम्मणं किणित्वान, ततो मुच्चथ मुत्तिया" ति॥

७. "भन्ते, नागसेन कतमं बुद्धस्स भगवतो गन्धापणं" ति? "अत्थि खो पन, महाराज, तेन भगवता सीलविभत्तियो अक्खाता, येन सीलगन्धेन अनुलित्ता भगवतो पुत्ता सदेवकं लोकं सीलगन्धेन धूपेन्ति, सम्पधूपेन्ति, दिसं पि अनुदिसं पि अनुवातं पि पटिवातं पि वायन्ति, अतिवायन्ति, फरित्वा तिट्ठन्ति। कतमा ता सीलविभत्तियो? सरणसीलं, पञ्चसीलं, अट्ठङ्गसीलं दसङ्गसीलं, पञ्चुद्देसपरियापन्नं पातिमोक्खसंवरसीलं। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो गन्धापणं ति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'न पुप्फगन्धो पटिवातमेति, न चन्दनं, तगरमल्लिका वा।
सतं च गन्धो पटिवातमेति, सब्बा दिसा सप्पुरिसो पवाति॥
चन्दनं तगरं वा पि, उप्पलं अथ वस्सिकी।
एतेसं गन्धजातानं, सीलगन्धो अनुत्तरो॥
अप्पमत्तो अयं गन्धो, स्वायं तगरचन्दनं।
यो च सीलवतं गन्धो, वाति देवेसु उत्तमो' ति॥

८. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो फलापणं" ति? "फलानि खो, महाराज, भगवता अक्खातानि, सेय्यथीदं—सोतापत्तिफलं, सकदागामिफलं, अनागामिफलं, अरहत्तफलं, सुञ्ञतफलसमापत्ति, अनिमित्तफलसमापत्ति, अप्पणिहितफलसमापत्ती ति। तत्थ यो कोचि यं फलं इच्छति, सो कम्ममूलं दत्वा पत्थितं फलं किणाति, यदि सोतापत्तिफलं, यदि सकदागामिफलं, यदि अनागामिफलं, यदि अप्पणिहितफलसमापत्ति। यथा, महाराज, कस्सचि पुरिसस्स धुवफलो अम्बो भवेय्य, सो न ताव ततो फलानि पातेति याव कयिका न आगच्छन्ति, अनुप्पत्ते पन कयिके मूलं गहेत्वा एवं आचिक्खति—'अम्भो पुरिस, एसो खो धुवफलो अम्बो, ततो यं इच्छसि एत्तकं फलं गण्हाहि, सलाटुकं वा दोविलं वा केसिकं वा आमं वा पक्कं वा' ति। सो तेन अत्तना दिन्नमूलेन यदि सलाटुकमिच्छति सलाटुकं गण्हाति, यदि दोविलं इच्छति दोविलं गण्हाति, यदि केसिकमिच्छति केसिकं गण्हाति, यदि आमकं इच्छति आमकं गण्हाति, यदि पक्कं इच्छति पक्कं गण्हाति; एवमेव खो, महाराज, यो यं फलमिच्छति सो कम्ममूलं दत्वा पत्थितं फलं गण्हाति, यदि सोतापत्तिफलं···पे०···यदि अप्पणिहितफलसमापत्तिं। इदं वुच्चति महाराज, भगवतो फलापणं' ति।

"कम्ममूलं जना दत्वा, गण्हन्ति अमतप्फलं।
तेन ते सुखिता होन्ति, ये कीता अमतप्फलं' ति ॥

९. 'भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो अगदापणं" ति ? "अगदानि खो, महाराज, भगवता अक्खातानि, येहि अगदेहि सो भगवा सदेवकं लोकं किलेसविसतो परिमोचेति। कतमानि पन तानि अगदानि ? यानिमानि, महाराज, भगवता चत्तारि अरियसच्चानि अक्खातानि, सेय्यथीदं—दुक्खं अरियसच्चं, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं। तत्थ ये केचि अञ्ञापेक्खा चतुसच्चं धम्मं सुणन्ति ते जातिया परिमुच्चन्ति, जराय परिमुच्चन्ति, मरणा परिमुच्चन्ति, सोकपरिदेव-दुक्खदोमनस्सुपायासेहि परिमुच्चन्ति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो अगदापणं ति।

"ये केचि अगदा लोके, विसानं पटिबाहका।
धम्मागदसमं नत्थि, एतं पिवथ, भिक्खवो" ति ॥

१०. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो ओसधापणं" ति ? "ओसधानि खो, महाराज, भगवता अक्खातानि येहि ओसधेहि सो भगवा देवमनुस्से तिकिच्छति, सेय्यथीदं—चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो। एतेहि ओसधेहि भगवा मिच्छादिट्ठिं विरेचेति, मिच्छासङ्कप्पं विरेचेति, मिच्छावाचं विरेचेति, मिच्छाकम्मन्तं विरेचेति, मिच्छाआजीवं विरेचेति, मिच्छावायामं विरेचेति, मिच्छासतिं विरेचेति, मिच्छासमाधिं विरेचेति, लोभवमनं कारेति, दोसवमनं कारेति, मानवमनं कारेति, दिट्ठिवमनं कारेति, विचिकिच्छावमनं कारेति, उद्धच्चवमनं कारेति, थीनमिद्धवमनं कारेति, अहिरिकानोत्तप्पवमनं कारेति, सब्बकिलेसवमनं कारेति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो ओसधापणं ति।

"ये केचि ओसधा लोके, विज्जन्ति विविधा बहू।
धम्मोसधसमं नत्थि, एतं पिवथ, भिक्खवो ॥
धम्मोसधं पिवित्वान, अजरामरणा सियुं।
भावयित्वा च पस्सित्वा, निब्बुता उपधिक्खये" ति ॥

११. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो अमतापणं" ति ? "अमतं खो, महाराज, भगवता अक्खातं येन अमतेन सो भगवा सदेवकं लोकं अभिसिञ्चि, येन अमतेन अभिसत्ता देवमनुस्सा जातिजराब्याधिमरणसोक-परिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासेहि परिमुच्चिंसु। कतमं तं अमतं ? यदिदं कायगता सति। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'अमतं ते, भिक्खवे,

परिभुञ्जन्ति ये कायगतासतिं परिभुञ्जन्ती' ति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो अमतापणं ति।

"ब्याधितं जनतं दिस्वा, अमतापणं पसारयि।
कम्मेन तं किणित्वान, अमतं आदेथ, भिक्खवो" ति॥

१२. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो रतनापणं" ति? "रतनानि खो, महाराज, भगवता अक्खातानि येहि रतनेहि भूसिता भगवतो पुत्ता सदेवकं लोकं विरोचेन्ति ओभासेन्ति पभासेन्ति जलन्ति पज्जलन्ति, उद्धं अधो तिरियं आलोकं दस्सेन्ति। कतमानि तानि रतनानि? सीलरतनं, समाधिरतनं, पञ्ञारतनं, विमुत्तिरतनं, विमुत्तिञाणदस्सनरतनं, पटिसम्भिदारतनं, बोज्झङ्गरतनं।

कतमं, महाराज, भगवतो सीलरतनं? पातिमो- क्खसंवरसीलं इन्द्रियसंवरसीलं आजीवपारिसुद्धिसीलं पच्चयसन्निस्सितसीलं चूळसीलं मज्झिमसीलं महासीलं मग्गसीलं फलसीलं। सीलरतनेन खो, महाराज, विभूसितस्स पुग्गलस्स सदेवको लोको समारको सब्रम्हको सस्समणब्राह्मणी पजा पिहयति पत्थेति। सीलरतनपिलन्धो खो, महाराज, भिक्खु दिसं पि अनुदिसं पि उद्धं पि अधो पि तिरियं पि विरोचति अतिविरोचति। हेट्ठतो अवीचिं, उपरितो भवग्गं उपादाय एत्थन्तरे सब्बरतनानि अतिक्कमित्वा अतिसयित्वा अज्झोत्थरित्वा तिट्ठति। एवरूपानि खो, महाराज, सीलरतनानि भगवतो रतनापणे पसारितानि। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो सीलरतनं ति।

"एवरूपानि सीलानि, सन्ति बुद्धस्स आपणे।
कम्मेन तं किणित्वान, रतनं वो पिलन्धथा ति॥

१३. "कतमं, महाराज, भगवतो समाधिरतनं? सवितक्कसविचारो समाधि, अवितक्कविचारमत्तो समाधि, अवितक्कअविचारो समाधि, सुञ्ञतो समाधि, अनिमित्तो समाधि, अप्पणिहितो समाधि। समाधिरतनं खो, महाराज, पिलन्धस्स भिक्खुनो ये ते कामवितक्का ब्यापादवितक्का विहिंसावितक्का मानुद्धच्चदिट्ठिविचिकिच्छाकिलेसवत्थूनि विविधानि च कुवितक्कानि, ते सब्बे समाधिं आसज्ज विकिरन्ति विधमन्ति, विद्धंसन्ति न सण्ठन्ति न उपलिम्पन्ति। यथा, महाराज, वारि पोक्खरपत्ते विकिरति विधमति विद्धंसति, न सण्ठति, न उपलिम्पति, तं किस्स हेतु? परिसुद्धत्ता पदुमस्स; एवमेव खो, महाराज, समाधिरतनं पिलन्धस्स भिक्खुनो ये ते कामवितक्कब्यापादवितक्कविहिंसावितक्कमानुद्धच्चदिट्ठिविचिकिच्छाकिलेसवत्थूनि विविधानि च कुवितक्कानि ते सब्बे समाधिं आसज्ज विकरन्ति विधमन्ति विद्धंसन्ति न सण्ठन्ति न उपलिम्पन्ति। तं किस्स हेतु? परिसुद्धता समाधिस्स। इदं

वुच्चति महाराज, भगवतो समाधिरतनं ति। एवमेव खो, महाराज, समाधिरतनानि भगवतो रतनापणे पसारितानि।

"समाधिरतनमालस्स, कुवितक्का न जायरे।
न च विक्खिपते चित्तं, एतं तुम्हे पिलन्धथा ति ॥

१४. "कतमं, महाराज, भगवतो पञ्ञारतनं? याय, महाराज, पञ्ञाय अरियसावको 'इदं कुसलं' ति यथाभूतं पजानाति, 'इदं अकुसलं' ति यथाभूतं पजानाति, 'इदं सावज्जं'....'इदं अनवज्जं'....'इदं सेवितब्बं' 'इदं न सेवितब्बं' 'इदं हीनं' 'इदं पणीतं' 'इदं कण्हं' 'इदं सुक्कं'....'इदं कण्हसुक्कसप्पटिभागं' ति यथाभूतं पजानाति, 'इदं दुक्खं' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खसमुदयो' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधो' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा' ति यथाभूतं पजनाति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो पञ्ञारतनं ति।

"पञ्ञारतनमालस्स, न चिरं वत्तते भवो।
खिप्पं फस्सेति अमतं, न च सो रोचते भवे ति ॥

१५. "कतमं, महाराज, भगवतो विमुत्तिरतनं? विमुत्तिरतनं खो, महाराज, अरहत्तं वुच्चति, अरहत्तं पत्तो खो, महाराज, भिक्खु विमुत्तिरतनं पिलन्धो ति वुच्चति। यथा, महाराज, पुरिसो मुत्ताकलापमणिकलापपवालकलापाभरणप्पटिमण्डितो अगलु-तालीसक-लोहितचन्दनानुलित्तगत्तो नागपुन्नागसालसलळचम्पकयूथिकातिमुत्तकपाटलुप्पलवस्सिकमल्लिकाविचित्तो सेसजने अतिक्कमित्वा विरोचति अतिरोचति ओभासति पभासति सम्पभासति जलति पज्जलति अभिभवति अज्झोत्थरति, मालागन्धरतनाभरणेहि; एवमेव खो, महाराज, अरहत्तं पत्तो खीणासवो विमुत्तिरतनपिलन्धो उपादायुपादाय विमुत्तानं भिक्खूनं अतिक्कमित्वा समतिक्कमित्वा विरोचति अतिरोचति ओभासति पभासति सम्पभासति जलति पज्जलति अभिभवति अज्झोत्थरति विमुत्तिया। तं किस्स हेतु? अग्गं, महाराज, एतं पिळन्धनं सब्बपिळन्धानं, यदिदं विमुत्तिपिळन्धनं। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो विमुत्तिरतनं ति।

"मणिमालाधरं गेहजनो सामिं उदिक्खति।
विमुत्तिरतनमालं तु, उदिक्खन्ति सदेवका ति ॥

१६. "कतमं, महाराज, भगवतो विमुत्तिञाणदस्सनरतनं? पच्चवेक्खणञाणं, महाराज, भगवतो विमुत्तिञाणदस्सनरतनं ति वुच्चति, येन ञाणेन अरियसावको मग्गफलनिब्बानानि पहीनकिलेसावसिट्ठकिलेसे च पच्चवेक्खति।

"येन ञाणेन बुज्झन्ति, अरिया कतकिच्चतं।
तं ञाणरतनं लद्धुं, वायमेथ जिनोरसा ति ॥

१७. "कतमं, महाराज, भगवतो पटिसम्भिदारतनं? चतस्सो खो महाराज, पटिसम्भिदायो—अत्थपटिसम्भिदा, धम्मपटिसम्भिदा, निरुत्तिपटिसम्भिदा पटिभानपटिसम्भिदा ति। इमेहि खो, महाराज, चतूहि पटिसम्भिदारतनेहि समलङ्कतो भिक्खु यं यं परिसं उपसङ्कमति, यदि खत्तियपरिसं यदि ब्राह्मणपरिसं यदि गहपतिपरिसं यदि समणपरिसं, विसारदो उपसङ्कमति, अमङ्कुभूतो अभीरु अच्छम्भो अनुत्रासी विगतलोमहंसो परिसं उपसङ्कमति।

"यथा, महाराज, योधो सङ्गामसूरो सन्नद्धपञ्चावुधो अच्छम्भितो सङ्गामं ओतरति—'सचे अमित्ता दूरे भविस्सन्ति उसुना पातयिस्सामि, ततो ओरतो भविस्सन्ति सत्तिया पहरिस्सामि, ततो ओरतो भविस्सन्ति कणयेन पहरिस्सामि, उपगतं सन्तं मण्डलग्गेन द्विधा छिन्दिस्सामि, कायूपगतं छुरिकाय विनिविज्झिस्सामी' ति; एवमेव खो, महाराज, चतुपटिसम्भिदारतनमण्डितो भिक्खु अच्छम्भितो परिसं उपसङ्कमति—'यो कोचि मं अत्थपटिसम्भिदे पञ्हं पुच्छिस्सति, तस्स अत्थं कथयिस्सामि, कारणेन कारणं कथयिस्सामि, हेतुना हेतुं कथयिस्सामि, नयेन नयं कथयिस्सामि, निस्संसयं करिस्सामि, विमतिं विवेचेस्सामि, तोसयिस्सामि पञ्हावेय्याकरणेन।

"यो कोचि मं धम्मपटिसम्भिदे पञ्हं पुच्छिस्सति, तस्स धम्मेन धम्मं कथयिस्सामि, अमतेन अमतं कथयिस्सामि, असङ्खतेन असङ्खतं कथयिस्सामि, निब्बानेन निब्बानं कथयिस्सामि, सुञ्ञताय सुञ्ञतं कथयिस्सामि, अनिमित्तेन अनिमित्तं कथयिस्सामि, अप्पणिहितेन अप्पणिहितं कथयिस्सामि, अनेजेन अनेजं कथयिस्सामि, निस्संसयं करिस्सामि, विमतिं विवेचेस्सामि, तोसयिस्सामि पञ्हावेय्याकरणेन।

"यो कोचि मं निरुत्तिपटिसम्भिदे पञ्हं पुच्छिस्सति, तस्स निरुत्तिया निरुत्तिं कथयिस्सामि, पदेन पदं कथयिस्सामि, अनुपदेन अनुपदं कथयिस्सामि, अक्खरेन अक्खरं कथयिस्सामि, सन्धिया सन्धिं कथयिस्सामि, ब्यञ्जनेन ब्यञ्जनं कथयिस्सामि, अनुब्यञ्जनेन अनुब्यञ्जनं कथयिस्सामि, वण्णेन वण्णं कथयिस्सामि, सरेन सरं कथयिस्सामि, पञ्ञत्तिया पञ्ञत्तिं कथयिस्सामि, वोहारेन वोहारं कथयिस्सामि, निस्संसयं करिस्सामि, विमतिं विवेचेस्सामि, तोसयिस्सामि पञ्हावेय्याकरणेन।

"यो कोचि मं पटिभानपटिसम्भिदे पञ्हं पुच्छिस्सति, तस्स पटिभानेन पटिभानं कथयिस्सामि, ओपम्मेन ओपम्मं कथयिस्सामि, लक्खणेन लक्खणं कथयिस्सामि, रसेन रसं कथयिस्सामि, निस्संसयं करिस्सामि, विमतिं विवेचेस्सामि, तोसयिस्सामि पञ्हावेय्याकरणेना ति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो पटिसम्भिदारतनं ति।

"पटिसम्भिदा किणित्वान, ञाणेन फस्सयेय्य यो।
अच्छम्भितो अनुब्बिग्गो, अतिरोचति सदेवके ति ॥

१८. "कतमं, महाराज, भगवतो बोज्झङ्गरतनं? सत्तिमे, महाराज, बोज्झङ्गा—सतिसम्बोज्झङ्गो, धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो, विरियसम्बोज्झङ्गो, पीतिसम्बोज्झङ्गो, पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गो, समाधिसम्बोज्झङ्गो, उपेक्खासम्बोज्झङ्गो। इमेहि खो, महाराज, सत्तहि बोज्झङ्गेहि पटिमण्डितो भिक्खु सब्बं तमं अभिभुय्य सदेवकं लोकं ओभासेति पभासेति आलोकं जनेति। इदं वुच्चति महाराज, भगवतो बोज्झङ्गरतनं" ति।

"बोज्झङ्गरतनमालस्स, उट्ठहन्ति सदेवका।
कम्मेन तं किणित्वान, रतनं वो पिलन्धथा" ति ॥

१९. "भन्ते नागसेन, कतमं बुद्धस्स भगवतो सब्बापणं" ति? "सब्बापणं खो, महाराज, भगवतो नवङ्गं बुद्धवचनं, सारीरिकानि पारिभोगिकानि चेतियानि, सङ्घरतनं च। सब्बापणे, महाराज, भगवता जातिसम्पत्ति पसारिता, भोगसम्पत्ति पसारिता, आयुसम्पत्ति पसारिता, आरोग्यसम्पत्ति पसारिता, वण्णसम्पत्ति पसारिता, पञ्ञासम्पत्ति पसारिता, मानुसिकसम्पत्ति पसारिता, दिब्बसम्पत्ति पसारिता, निब्बानसम्पत्ति पसारिता। तत्थ ये तं तं सम्पत्तिं इच्छन्ति ते कम्ममूलं दत्वा पत्थितपत्थितं सम्पत्तिं किणन्ति—केचि सीलसमादानेन किणन्ति, केचि उपोसथकम्मेन कीणन्ति! अप्पमत्तकेन पि कम्ममूलेन उपादायुपादाय सम्पत्तियो पटिलभन्ति। यथा, महाराज, आपणिकस्स आपणे तिलमुग्गमासे परित्तकेन पि तण्डुलमुग्गमासेन अप्पकेन पि मूलेन उपादायुपादाय गण्हन्ति; एवमेव खो, महाराज, भगवतो सब्बापणे अप्पमत्तकेन पि कम्ममूलेन उपादायुपादाय सम्पत्तियो पटिलभन्ति। इदं वुच्चति, महाराज, भगवतो सब्बाप ति।

"आयु अरोगता वण्णं, सग्गं उच्चाकुलीनता।
असङ्खतं च अमतं, अत्थि सब्बापणे जिने॥
अप्पेन बहुकेनापि, कम्ममूलेन गय्हति।
किणित्वा सद्धामूलेन, समिद्धा होथ, भिक्खवो ति॥

२०. "भगवतो खो, महाराज, धम्मनगरे एवरूपा जना पटिवसन्ति—सुत्तन्तिका वेनयिका आभिधम्मिका, धम्मकथिका जातकभाणका दीघभाणका मज्झिमभाणका संयुत्तभाणका अङ्गुत्तरभाणका खुद्दकभाणका, सीलसम्पन्ना समाधिसम्पन्ना पञ्ञासम्पन्ना बोज्झङ्गभावनारता विपस्सका सदत्थमनुयुत्ता, आरञ्ञिका रुक्खमूलिका अब्भोकासिका पलालपुञ्जका सोसानिका नेसज्जिका

पटिपन्नका फलट्ठा सेक्खा फलसमङ्गिनो, सोतापन्ना सकदागामिनो अनागामिनो अरहन्तो, तेविज्जा छळभिञ्ञा इद्धिमन्तो पञ्ञाय पारमिं गता सतिपट्ठानसम्मप्पधानइद्धिपादइन्द्रियबलबोज्झङ्गमग्गवरझानविमोक्खरूपारूपसन्तसुखसमापत्तिकुसला। तेहि अरहन्तेहि आकुलं समाकुलं आकिण्णं समाकिण्णं नळवनसरवनमिव धम्मनगरं अहोसि। भवतीह—

"वीतरागा वीतदोसा, वीतमोहा अनासवा।
वीततण्हा अनादाना, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
आरञ्ञिका धुतधरा, झायिनो लूखचीवरा।
विवेकाभिरता धीरा, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
नेसज्जिका सन्थतिका, अथो पि ठानचङ्कमा।
पंसुकूलधरा सब्बे, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
तिचीवरधरा सन्ता, चम्मखण्डचतुत्थका।
रत्ता एकासने विञ्ञू, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
अप्पिच्छा निपका धीरा, अप्पाहारा अलोलुपा।
लाभालाभेन सन्तुट्ठा, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
झायी झानरता धीरा, सन्तचित्ता समाहिता।
आकिञ्चञ्ञं पत्थयाना, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
पटिपन्ना फलट्ठा च, सेट्ठा फलसमङ्गिनो।
आसिसका उत्तमत्थं, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
सोतापन्ना च विमला, सकदागामिनो च ये।
अनागामी च अरहन्तो, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
सतिपट्ठानकुसला, बोज्झङ्गभावनारता।
विपस्सका धम्मधरा, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
इद्धिपादेसु कुसला, समाधिभावनारता।
सम्मप्पधानमनुयुत्ता, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
अभिञ्ञापारमिप्पत्ता, पेत्तिके गोचरे रता।
अन्तलिक्खम्हि चरणा, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
ओक्खित्तचक्खू मितभाणी, गुत्तद्वारा सुसंवुता।
सुदन्ता उत्तमे दम्मे, धम्मनगरे वसन्ति ते॥
तेविज्जा छळभिञ्ञा च, इद्धिया पारमिं गता।
पञ्ञाय पारमिप्पत्ता, धम्मनगरे वसन्ति ते ति॥

२१. "ये खो ते, महाराज, भिक्खू अपरिमितञ्ञाणवरधरा असङ्गा अतुल-

गुणा अतुलयसा अतुलबला अतुलतेजा धम्मचक्कानुपवत्तका पञ्ञापारमिगता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'धम्मसेनापतिनो' ति वुच्चन्ति।

२२. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू इद्धिमन्तो अधिगतपटिसम्भिदा पत्तवेसारज्जा गगनचरा दुरासदा दुप्पसहा अनालम्बचरा ससागरमहीधरपथविकम्पका चन्दसुरियपरिमज्जका विकुब्बनाधिट्ठानाभिनीहारकुसला इद्धिया पारमिगता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'पुरोहिता' ति वुच्चन्ति।

२३. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू धुतङ्गमनुगता अप्पिच्छा सन्तुट्ठा विञ्ञत्तिमनेसनजिगुच्छका पिण्डाय सपदानचारिनो भमरा व गन्धमनुघायित्वा पविसन्ति विवित्तकाननं, काये च जीविते च निरपेक्खा अरहत्तमनुप्पता धुतङ्गगुणे अग्गनिक्खित्ता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'अक्खदस्सा' ति वुच्चन्ति।

२४. 'ये पन ते, महाराज, भिक्खू परिसुद्धा विमला निक्किलेसा चुतूपपातकुसला दिब्बचक्खुम्हि पारमिगता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'नगरजोतका' ति वुच्चन्ति।

२५. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा सिथिलधनितदीघरस्सगरुकलहुकक्खरपरिच्छेदकुसला नवङ्गसासनधरा, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'धम्मरक्खा' ति वुच्चन्ति।

२६, "ये पन ते, महाराज, भिक्खू विनयञ्ञू विनयकोविदा ठानाठानकुसला आपत्तिअनापत्तिगरुकलहुकसतेकिच्छअतेकिच्छवुट्ठानदेसनाविग्गहनिग्गहपटिकम्मओसारणनिस्सारणपटिसारणकुसला विनये पारमिगता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'रूपदक्खा' ति वुच्चन्ति।

२७. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू विमुत्तिवरकुसुममालबद्धा वरप्पवरमहग्घसेट्ठभावमनुप्पत्ता बहुजनकन्तमभिपत्थिता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'पुप्फापणिका' ति वुच्चन्ति।

२८. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू चतुसच्चाभिसमयप्पटिविद्धा दिट्ठसच्चा विञ्ञातसासना चतूसु सामञ्ञफलेसु तिण्णविचिकिच्छा पटिलद्धफलसुखा अञ्ञेसं पि पटिपन्नानं ते फले संविभजन्ति, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'फलापणिका' ति वुच्चन्ति।

२९. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू सीलवरगन्धमनुलित्ता अनेकविधबहु-

गुणधरा किलेसमलदुग्गन्धविधमका, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'गन्धापणिका' ति वुच्चन्ति ।

३०. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू धम्मकामा पियसमुदाहारा अभिधम्मे अभिविनये उळारपामोज्जा अरञ्ञगता पि रुक्खमूलगता पि सुञ्ञागारगता पि धम्मवररसं पिवन्ति, कायेन वाचाय मनसा धम्मवररसमोगाळ्हा अधिमत्त-पटिभाना धम्मेसु धम्मेसनप्पटिपन्ना इतो वा ततो वा यत्थ यत्थ अप्पिच्छकथा सन्तुट्ठिकथा पविवेककथा असंसग्गकथा विरियारम्भकथा सीलकथा समाधिकथा पञ्ञाकथा विमुत्तिकथा विमुत्तिञाणदस्सनकथा तत्थ तत्थ गन्त्वा तं तं कथारसं पिवन्ति, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'सोण्डा पिपासा' ति वुच्चन्ति ।

३१. 'ये पन ते, महाराज, भिक्खू पुब्बरत्तापररत्तं जागरियानुयोगमनुयुत्ता निसज्जट्ठानचङ्कमेहि रत्तिन्दिवं वीतिनामेन्ति, भावनानुयोगमनुयुत्ता किलेस-पटिवाहनाय सदत्थप्पसुता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'नगरगुत्तिका' ति वुच्चन्ति ।

३२. ये पन ते, महाराज, भिक्खू नवङ्गं बुद्धवचनं अत्थतो च ब्यञ्जनतो च नयतो च कारणतो च हेतुतो च उदाहरणतो च वाचेन्ति अनुवाचेन्ति भासन्ति अनुभासन्ति, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'धम्मापणिका' ति वुच्चन्ति ।

३३. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू धम्मरतनभोगेन आगमपरियत्तिसुत-भोगेन भोगिनो धनिनो निद्दिट्ठसरब्यञ्जनलक्खणपटिवेधा विञ्ञू फरणा, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'धम्मसेट्ठिनो' ति वुच्चन्ति ।

३४. "ये पन ते, महाराज, भिक्खू उळारदेसनापटिवेधा परिचिण्णारम्मण-विभत्तिनिद्देसा सिक्खागुणपारमिप्पता, एवरूपा खो, महाराज, भिक्खू भगवतो धम्मनगरे 'विस्सुतधम्मिका' ति वुच्चन्ति ।

३५. "एवं सुविभत्तं खो, महाराज, भगवतो धम्मनगरं, एवं सुमापितं, एवं सुविहितं, एवं सुपरिपूरितं, एवं सुववत्थापितं, एवं सुरक्खितं, एवं सुगोपितं, एवं दुप्पसय्हं पच्चत्थिकेहि पच्चामित्तेहि । इमिना, महाराज, कारणेन इमिना हेतुना इमिना नयेन इमिना अनुमानेन आतब्बं—'अत्थि सो भगवा' ति ।

"यथापि नगरं दिस्वा, सुविभत्तं मनोरमं ।
अनुमानेन जानन्ति, वड्ढकिस्स महत्तनं ॥
तथेव लोकनाथस्स, दिस्वा धम्मपुरं वरं ।
अनुमानेन जानन्ति–'अत्थि सो भगवा' इति ॥

अनुमानेन जानन्ति, ऊमी दिस्वान सागरे।
यथायं दिस्सते ऊमी, महन्तो सो भविस्सति ॥
तथा बुद्धं सोकनुदं, सब्बत्थमपराजितं।
तण्हक्खयमनुप्पत्तं, भवसंसारमोचनं ॥
अनुमानेन ञातब्बं, ऊमी दिस्वा सदेवके।
यथा धम्मूमिविप्फारो, अग्गो बुद्धो भविस्सति ॥

अनुमानेन जानन्ति, दिस्वा अच्चुग्गतं गिरिं।
यथा अच्चुग्गतो एसो, हिमवा सो भविस्सति ॥
तथा दिस्वा धम्मगिरिं, सीतिभूतं निरूपधिं।
अच्चुग्गतं भगवतो, अचलं सुप्पतिट्ठितं ॥
अनुमानेन ञातब्बं, दिस्वान धम्मपब्बतं।
तथा हि सो महावीरो, अग्गो बुद्धो भविस्सति ॥
यथा पि गजराजस्स, पदं दिस्वान मानुसा।
अनुमानेन जानन्ति—'महा एसो गजो' इति ॥

तथेव बुद्धनागस्स, पदं दिस्वा विभाविनो।
अनुमानेन जानन्ति–'उळारो सो भविस्सति' ॥
अनुमानेन जानन्ति, भीते दिस्वान कुम्मिगे।
'मिगराजस्स सद्देन, भीतामे कुम्मिगा' इति ॥
तथेव तित्थिये दिस्वा, वित्थते भीतमानसे।
अनुमानेन ञातब्बं, धम्मराजेन गज्जितं ॥

निब्बुतं पठविं दिस्वा हरितपत्तं महोदिकं।
अनुमानेन जानन्ति, महामेघेन निब्बुतं ॥
तथेविम जनं दिस्वा, आमोदितपमोदितं।
अनुमानेन ञातब्बं, धम्ममेघेन तप्पितं ॥
लग्गं दिस्वा भुसं पङ्कं, कललद्दगतं महिं।
अनुमानेन जानन्ति, वारिक्खन्धो महागतो ॥

तथेविमं जनं दिस्वा, रजपङ्कसमोहितं।
वहितं धम्मनदिया, विसट्ठं धम्मसागरे ॥
धम्मामतगतं दिस्वा, सदेवकमिमं महिं।
अनुमानेन ञातब्बं, धम्मक्खन्धो महागतो ॥
अनुमानेन जानन्ति, घायित्वा गन्धमुत्तमं।
यथायं वायते गन्धो, हेस्सन्ति पुप्फिता दुमा।

तथेवायं सीलगन्धो, पवायति सदेवके।
अनुमानेन ञातब्बं–'अत्थि बुद्धो अनुत्तरो' ति॥

३६. "एवरूपेन खो, महाराज, कारणसतेन कारणसहस्सेन हेतुसतेन हेतुसहस्सेन नयसतेन नयसहस्सेन ओपम्मसतेन ओपम्मसहस्सेन सक्का बुद्धबलं उपदस्सयितुं। यथा, महाराज, दक्खो मालाकारो नानापुप्फरासिम्हा आचरियानुसिट्ठिया पच्चत्तपुरिसकारेन विचित्तं मालागुणरासिं करेय्य; एवमेव खो, महाराज, सो भगवा विचित्तपुप्फरासि विय अनन्तगुणो अप्पमेय्यगुणो, अहमेतरहि जिनसासने मालाकारो विय पुप्फगन्धको पुब्बकानं आचरियानं मग्गेन पि मय्हं बुद्धिबलेन पि असङ्ख्येय्येन पि कारणेन अनुमानेन बुद्धबलं दीपयिस्सामि, त्वं पनेत्थ छन्दं जनेहि सवणाया' ति।

"दुक्करं, भन्ते नागसेन, अञ्ञेसं एवरूपेन कारणेन अनुमानेन बुद्धबलं उपदस्सयितुं, निब्बुतोस्मि, भन्ते नागसेन, तुम्हाकं परमविचित्तेन पञ्हावेय्याकरणेना" ति।

२. धुतङ्गपञ्हो

१. पस्सतारञ्ञिके भिक्खू, अज्झोगाळ्हे धुते गुणे।
पुन पस्सति गिही राजा, अनागामिफले ठिते॥
उभो पि ते विलोकेत्वा, उप्पज्जि संसयो महा।
बुज्झेय्य चे गिही धम्मे, धुतङ्गं निप्फलं सिया॥
परवादिवादमथनं, निपुणं पिटकत्तये।
हन्द पुच्छे कथिं सेट्ठं, सो मे कङ्खं विनेस्सती ति॥

२. अथ खो मिलिन्दो राजा येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नागसेनं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच—"भन्ते नागसेन, अत्थि कोचि गिही अगारिको कामभोगी पुत्तदारसम्बाधसयनं अज्झावसन्तो कासिकचन्दनं पच्चनुभोन्तो मालागन्धविलेपनं धारेन्तो जातरूपरजतं सादियन्तो मणिमुत्ताकञ्चनविचित्तमोळिबन्धो, येन सन्तं परत्थं निब्बानं सच्छिकतं" ति?

"न, महाराज, एकञ्ञेव सतं न द्वे सतानि न तीणि चत्तारि पञ्च सतानि न सहस्सं न सतसहस्सं न कोटिसतं न कोटिसहस्सं न कोटिसतसहस्सं। तिट्ठतु, महाराज, दसन्नं वीसतिया सतस्स सहस्सस्स अभिसमयो, कतमेन ते परियायेन अनुयोगं दम्मी" ति?

"त्वमेवेतं ब्रूही" ति। "तेन हि ते, महाराज, कथयिस्सामि सतेन वा

सहस्सेन वा सतसहस्सेन वा कोटिया वा कोटिसहस्सेन वा कोटिसतसहस्सेन वा, या काचि नवङ्गे बुद्धवचने सल्लेखिताचारपटिपत्तिधुतगुणवरङ्गनिस्सिता कथा, ता सब्बा इध समोसरिस्सन्ति ।

"यथा महाराज, निन्नुन्नतसमविसमथलाथलदेसभागे अभिवुट्ठं उदकं, सब्बं तं ततो विनिगळित्वा महोदधिं सागरं समोसरति; एवमेव खो, महाराज, सम्पादके सति या काचि नवङ्गबुद्धवचने सल्लेखिताचारपटिपत्तिधुतगुणवरङ्गनिस्सिता कथा, ता सब्बा इध समोसरिस्सन्ति ।

"मय्हं पेत्थ, महाराज, परिब्यत्तताय बुद्धिया कारणपरिदीपनं समोसरिस्सति, तेनेसो अत्थो सुविभत्तो विचित्तो परिपुण्णो परिसुद्धो समानीतो भविस्सति । यथा, महाराज, कुसलो लेखाचरियो अनुसिट्ठो लेखं ओसारेन्तो अत्तनो व्यत्तताय बुद्धिया कारणपरिदीपनेन लेखं परिपूरेति, एवं सा लेखा समत्ता परिपुण्णा अनूनिका भविस्सति; एवमेव मय्हं पेत्थ परिब्यत्तताय बुद्धिया कारणपरिदीपनं समोसरिस्सति, तेनेसो अत्थो सुविभत्तो विचित्तो परिपुण्णो परिसुद्धो समानीतो भविस्सति ।

३. "नगरे, महाराज, सावत्थिया पञ्चकोटिमत्ता अरियसावका भगवतो उपासकउपासिकायो सत्तपण्णाससहस्सानि तीणि च सतसहस्सानि अनागामिफले पतिट्ठिता, ते सब्बे पि गिही येव, न पब्बजिता । पुन तत्थेव गण्डम्बमूले यमकपाटिहारिये वीसति पाणकोटियो अभिसमिंसु । पुन महाराहुलोवादे, महामंगलसुत्तन्ते, समचित्तपरियाये, पराभवसुत्तन्ते, पुराभेदसुत्तन्ते, कलहविवादसुत्तन्ते, चूळब्यूहसुत्तन्ते, महाब्यूहसुत्तन्ते, तुवटकसुत्तन्ते, सारिपुत्तसुत्तन्ते, गणनपथमतीतानं देवतानं धम्माभिसमयो अहोसि ।

"नगरे राजगहे पञ्ञाससहस्सानि तीणि च सतसहस्सानि अरियसावका भगवतो उपासकउपासिकायो, पुन तत्थेव धनपालहत्थिनागदमने नवुति पाणकोटियो, पारायनसमागमे पासाणकचेतिये चुद्दस पाणकोटियो, इन्दसालगुहायं असीति देवताकोटियो, पुन बाराणसियं इसिपतने मिगदाये पठमे धम्मदेसने अट्ठारस ब्रह्मकोटियो अपरिमाणा च देवतायो, पुन तावतिंसभवने पण्डुकम्बलसिलायं अभिधम्मदेसनाय असीति देवताकोटियो, देवोरोहणे सङ्कस्सनगरद्वारे लोकविवरणपाटिहारिये पसन्नानं नरमरूनं तिंस कोटियो अभिसमिंसु ।

"पुन सक्केसु कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे बुद्धवंसदेसनाय, महासमयसुत्तन्तदेसनाय च गणनपथमतीतानं देवतानं धम्माभिसमयो अहोसि । पुन सुमनमालाकारसमागमे, गरहदिन्नसमागमे, आनन्दसेट्ठिसमागमे, जम्बुकाजीवकसमागमे, मण्डूकदेवपुत्तसमागमे, मट्ठकुण्डलिदेवपुत्तसमागमे, सुलसानगरसोभनिसमागमे,

सिरिमानगरसोभिनिसमागमे पेसकारधीतुसमागमे चूळसुभद्दासमागमे साकेतब्राह्मणस्स आळाहनदस्सनसमागमे सूनापरन्तकसमागमे सक्कपञ्हससमागमे तिरोकुट्टसमागमे रतनसुत्तसमागमे पच्चेकं चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि। यावता, महाराज, भगवा लोके अट्ठासि ताव तीसु मण्डलेसु सोळससु महाजनपदेसु यत्थ यत्थ भगवा विहासि तत्थ तत्थ येभुय्येन द्वे तयो चत्तारो पञ्च सतं सहस्सं सतसहस्सं देवा च मनुस्सा च सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरिंसु। ये ते, महाराज, देवा गिही येव, न ते पब्बजिता। एतानि चेव, महाराज, अञ्ञानि च अनेकानि देवताकोटिसतसहस्सानि गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरिंसू" ति।

४. "यदि, भन्ते नागसेन, गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति, अथ इमानि धुतङ्गानि किमत्थं साधेन्ति? तेन कारणेन धुतङ्गानि अकिच्चकरानि होन्ति! यदि, भन्ते नागसेन, विना मन्तोसधेहि ब्याधयो वूपसमन्ति, किं वमनविरेचनादिना सरीरदुब्बलकरणेन? यदि मुट्ठीहि पटिसत्तुनिग्गहो भवति, किं असिसत्तिसरधनुकोदण्डलगुळमुग्गरेहि? यदि गण्ठिकुटिलसुसिरकण्टलतासाखा आलम्बित्वा रुक्खमभिरूहनं भवति, किं दीघदळ्हनिस्सेणिपरियेसनेन? यदि थण्डिलसेय्याय धातुसमता भवति, किं सुखसम्फस्समहतिमहासिरिसयनपरियेसनेन? यदि एकको सासङ्कसभयविसमकन्तारतरणसमत्थो भवति, किं सन्नद्धसज्जमहतिमहासत्थपरियेसनेन? यदि नदीसरं बाहुना तरितुं समत्थो भवति, किं धुवसेतुनावापरियेसनेन? यदि सकसन्तकेन घासच्छादनं कातुं पहोति, किं परूपसेवनपियसमुल्लापपच्छापुरेधावनेन? यदि अखाततळाके उदकं लभति, किं उदपानतळाकपोक्खरणिखणनेन? एवमेव खो, भन्ते नागसेन, यदि गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति, किं धुतगुणवरसमादियनेना" ति?

५. "अट्ठवीसति खो पनिमे, महाराज, धुतङ्गगुणा यथाभुच्चगुणा, येहि गुणेहि धुतङ्गानि सब्बबुद्धानं पिहयितानि पत्थितानि। कतमे अट्ठवीसति? इध, महाराज, धुतङ्गं सुद्धाजीवं सुखफलं अनवज्जं न परदुक्खापनं अभयं असम्पीळनं एकन्तवड्ढितं अपरिहानियं अमायं आरक्खा पत्थितददं सब्बसत्तदमनं संवरहितं पतिरूपं अनिस्सितं विप्पमुत्तं रागक्खयं दोसक्खयं मोहक्खयं मानप्पहानं कुवितक्कच्छेदनं कङ्खावितरणं कोसज्जविद्धंसनं अरतिप्पहानं खमनं अतुलं अप्पमाणं सब्बदुक्खयगमनं। इमे खो, महाराज, अट्ठवीसति धुतङ्गगुणा यथाभुच्चगुणा, येहि गुणेहि धुतङ्गानि सब्बबुद्धानं पिहयितानि पत्थितानि।

"ये खो ते, महाराज, धुतगुणा सम्मा उपसेवन्ति ते अट्ठारसहि गुणेहि समुपेता भवन्ति। कतमेहि अट्ठारसहि? आचारो तेसं सुविसुद्धो होति, पटिपदा

सुपूरिता होति, कायिकं वाचिकं सुरक्खितं होति, मनोसमाचारो सुविसुद्धो होति, विरियं सुपग्गहितं होति, भयं वूपसम्मति, अत्तानुदिट्ठि व्यपगता होति, आघातो उपरतो होति, मेत्ता उपट्ठिता होति, आहारो परिञ्ञातो होति, सब्बसत्तानं गरुकतो होति, भोजने मत्तञ्ञू होति, जागरियमनुयुत्तो होति, अनिकेतो होति, यत्थ फासु तत्थ विहारी होति, पापजेगुच्छी होति, विवेकारामो होति, सततं अप्पमत्तो होति। ये ते, महाराज, धुतगुणे सम्मा उपसेवन्ति, ते इमेहि अट्ठारसहि गुणेहि समुपेता भवन्ति।

६. "दस इमे, महाराज, पुग्गला धुतगुणारहा। कतमे दस? सद्धो होति हिरिमा धितिमा अकुहो अत्थवसी अलोलो सिक्खाकामो दळ्हसमादानो अनुज्झानबहुलो मेत्ताविहारी। इमे खो, महाराज, दस पुग्गला धुतगुणारहा।

७. "ये ते, महाराज, गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति, सब्बे ते पुरिमासु जातीसु तेरससु धुतगुणेसु कतूपासना कतभूमिकम्मा। ते तत्थ चारं च पटिपत्तिं च सोधयित्वा अज्जेतरहि गिही येव सन्ता सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति।

८. "यथा, महाराज, कुसलो इस्सासो अन्तेवासिके पठमं ताव उपासनासालायं चापभेदचापारोपनगहणमुट्ठिपटिपीळन-अङ्गुलिविनामनपादठपनसरग्गहणसन्दनआकड्ढनसन्धारणलक्खनियमनखिपने तिणपुरिसकछकणतिणपलालमत्तिकापुञ्जफलकलक्खवेधे अनुसिक्खापेत्वा रञ्ञो सन्तिके उपासनं आराधयित्वा आजञ्ञरथगजतुरङ्गधनधञ्ञहिरञ्ञसुवण्णदासिदासभरियगामवरं लभति; एवमेव खो, महाराज, ये ते गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति, ते सब्बे पुरिमासु जातीसु तेरससु धुतगुणेसु कतूपासना कतभूमिकम्मा। ते तत्थेव चारं च पटिपत्ति च सोधयित्वा अज्जेतरहि गिही येव सन्ता सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति। न, महाराज, धुतगुणेसु पुब्बासेवनं विना एकिस्सा येव जातिया अरहत्तं सच्छिकिरिया होति, उत्तमेन पन विरियेन उत्तमाय पटिपत्तिया तथारूपेन आचरियेन कल्याणमित्तेन अरहत्तं सच्छिकिरिया होति।

९. "यथा वा पन, महाराज, भिसक्को सल्लकत्तो आचरियं धनेन वा वत्तप्पटिपत्तिया वा आराधेत्वा सत्थगहणछेदनलेखनवेधनसल्लुद्धरणवणधोवनसोसनभेसज्जानुलिम्पनवमनविरेचनानुवासनकिरियमनुसिक्खित्वा विज्जासु कतसिक्खो कतूपासनो कतहत्थो आतुरे उपसङ्कमति तिकिच्छाय; एवमेव खो, महाराज, ये ते गिही अगारिका कामभोगिनो सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छि-

करोन्ति, ते सब्बे पुरिमासु जातीसु तेरससु धुतगुणेसु कतूपासना कतभूमिकम्मा। ते तत्थेव चारं च पटिपत्तिं च सोधयित्वा अज्जेतरहि गिही येव सन्ता सन्तं परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोन्ति। न महाराज, धुतगुणेहि अविसुद्धानं धम्माभिसमयो होति।

"यथा महाराज, उदकस्स आसेचनेन बीजानं अविरूहनं होति; एवमेव खो, महाराज, धुतगुणेहि अविसुद्धानं धम्माभिसयो न होति।

"यथा वा पन, महाराज, अकतकुसलानं अकतकल्याणानं सुगतिगमनं न होति; एवमेव खो, महाराज, धुतगुणेहि अविसुद्धानं धम्माभिसमयो न होति।

१०. "पथविसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं पतिट्ठानट्ठेन। आपोसम, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसमलधोवनट्ठेन। तेजोसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसवनज्झापनट्ठेन। वायोसमं, महाराज, धुतगुणं, विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसमलरजोपवाहनट्ठेन।

अगदसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसब्याधिवूपसमनट्ठेन। अमतसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसविसनासनट्ठेन। खेत्तसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बसामञ्ञगुणसस्सविरूहनट्ठेन। मनोहरसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं पत्थितिच्छितसब्बसम्पत्तिवरददट्ठेन। नावासमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं संसारमहण्णवपारगमनट्ठेन। भीरुत्ताणसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं जरामरणभीतानं अस्सासकरणट्ठेन।

"मातुसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं किलेसदुक्खप्पटिपीळितानं अनुग्गाहकट्ठेन। पितुसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं कुसलवड्ढिकामानं सब्बसामञ्ञगुणजनकट्ठेन। मित्तसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बसामञ्ञगुणपरियेसनअविसंवादकट्ठेन।

"पदुमसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसमलेहि अनुपलित्तट्ठेन। चतुज्जातियवरगन्धसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं किलेसदुग्गन्धपटिविनोदनट्ठेन। गिरिराजवरसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं अट्ठलोकधम्मवातेहि अकम्पियट्ठेन। आकाससमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं गहणापगतउरुविसटवित्थतमहन्तट्ठेन। नदीसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं किलेसमलपवाहनट्ठेन। सुदेसकसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं जातिकन्तारकिलेसवनगहननित्थरणट्ठेन।

"महासत्थवाहसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बभयसुञ्ञखेमअभयवरपवरनिब्बाननगरसम्पापनट्ठेन। सुमज्जितविमलादाससमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सङ्खारानं सभावदस्सनट्ठेन। फलकसमं, महाराज,

वुतगुणं विसुद्धिकामानं किलेसलगुळसरसत्तिपटिबाहनट्ठेन । छत्तसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं किलेसवस्सतिविधग्गिसन्तापातपपटिबाहनट्ठेन ।

"चन्दसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं पियहितपत्थितट्ठेन । सुरियसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं मोहतमतिमिरनासनट्ठेन । सागरसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं अनेकविधसामञ्ञगुणवररतनुट्ठानट्ठेन, अपरिमितमसङ्ख्येय्यअप्पमेय्यट्ठेन च ।

११. "एवं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं बहूपकारं सब्बदरथपरिळाहनुदं अरतिनुदं भयनुदं भवनुदं खीलनुदं मलनुदं सोकनुदं दुक्खनुदं रागनुदं दोसनुदं मोहनुदं माननुदं दिट्ठिनुदं सब्बाकुसलधम्मनुदं यसावहं हितावहं सुखावहं फासुकरं पीतिकरं योगक्खेमकरं, अनवज्जं इट्ठसुखविपाकं गुणरासिगुणपुञ्ज-अपरिमितमप्पमेय्यगुणं वरं पवरं अग्गं ।

१२. "यथा, महाराज, मनुस्सा उपत्थम्भवसेन भोजनं उपसेवन्ति, हितवसेन भेसज्जमुपसेवन्ति, उपकारवसेन मित्तं उपसेवन्ति, तारणवसेन नावं उपसेवन्ति, सुगन्धवसेन मालागन्धं उपसेवन्ति, अभयवसेन भीरुत्ताणं उपसेवन्ति, पतिट्ठानवसेन पठविं उपसेवन्ति, सिप्पवसेन आचरियं उपसेवन्ति, यसवसेन राजानं उपसेवन्ति, कामददवसेन मणिरतनं उपसेवन्ति; एवमेव खो, महाराज, सब्बसामञ्ञगुणददवसेन अरिया धुतगुणं उपसेवन्ति ।

१३. "यथा वा पन, महाराज, उदकं बीजविरूहनाय, अग्गि झापनाय, आहारो बलाहरणाय, लता बन्धनाय, सत्थं छेदनाय, पानीयं पिपासाविनयनाय, निधि अस्सासकरणाय, नावा तीरसम्पापनाय, भेसज्जं ब्याधिवूपसमनाय, यानं सुखगमनाय, भीरुत्ताणं भयविनोदनाय, राजा आरक्खत्थाय, फलकं दण्डलेड्डुलगुळसरसत्तिपटिबाहनाय, आचरियो अनुसासनाय, माता पोसनाय, आदासो ओलोकनाय, अलङ्कारो सोभनाय, वत्थं पटिच्छादनाय, निस्सेणी आरोहणाय, तुला विसमविक्खेपनाय, मन्तं परिजपनाय, आवुधं तज्जनियपटिबाहनाय, पदीपो अन्धकारविधमनाय, वातो परिळाहनिब्बापनाय, सिप्पं वुत्तिनिप्फादनाय, अगदं जीवितरक्खणाय, आकरो रतनुप्पादनाय, रतनं अलङ्काराय, आणा अनतिक्कमनाय, इस्सरियं वसवत्तनाय; एवमेव खो महाराज, धुतगुणं सामञ्ञबीजविरूहनाय, किलेसमलझापनाय, इद्धिबलाहरणाय, सतिसंवरनिबन्धनाय, विमतिविचिकिच्छासमुच्छेदनाय, तण्हापिपासाविनयनाय, अभिसमयअस्सासकरणाय, चतुरोघनित्थरणाय, किलेसब्याधिवूपसमाय, निब्बानसुखप्पटिलाभाय, जातिजराब्याधिमरणसोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासभयविनोदनाय; सामञ्ञगुणपरिरक्खणाय, अरतिकुवितक्कपटिबाहनाय, सकलसामञ्ञत्थानुसासनाय,

सब्बसामञ्ञगुणपोसनाय, समथविपस्सनामग्गफलनिब्बानदस्सनाय, सकललोकथुतथोमितमहतिमहासोभनकरणाय, सब्बापायपिदहनाय, सामञ्ञत्थसेलसिखरमुद्धनि अभिरूहनाय, वङ्ककुटिलविसमचित्तनिक्खेपनाय, सेवितब्बासेवितब्बधम्मे साधु सज्झायकरणाय, सब्बकिलेसपटिसत्तुतज्जनाय, अविज्जन्धकारविधमनाय, तिविधग्गिसन्तापपरिळाहनिब्बापनाय, सण्हसुखुमसन्तसमापत्तिनिप्फादनाय, सकलसामञ्ञगुणपरिरक्खणाय, बोज्झङ्गवररतनुप्पादनाय, योगिजनालङ्करणाय, अनवज्जनिपुणसुखुमसन्तिसुखमनतिक्कमनाय, सकलसामञ्ञअरियधम्मवसवत्तनाय। इति, महाराज, इमेसं गुणानं अधिगमाय यदिदं एकमेकं धुतगुणं; एवं, महाराज, अतुलियं धुतगुणं अप्पमेय्यं असमं अप्पटिभागं अप्पटिसेट्ठं उत्तरं सेट्ठं विसिट्ठं अधिकं आयतं पुथुलं विसटं वित्थतं गरुकं भारियं महन्तं।

१४. "यो खो, महाराज, पुग्गलो पापिच्छो इच्छापकतो कुहको लुद्धो ओदरिको लाभकामो यसकामो कित्तिकामो अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो अप्पतिरूपो धुतङ्गं समादियति, सो दिगुणं दण्डमापज्जति सब्बगुणघातमापज्जति, दिट्ठधम्मिकं हीळनं खीळनं गरहनं उप्पण्डनं खिपनं असम्भोगं निस्सारणं निच्छुभनं पवाहनं पब्बाजनं पटिलभति, सम्पराये पि सतयोजनिके अवीचिमहानिरये उण्हकठिततत्तसन्तत्तअच्चिजालामालके अनेकवस्सकोटिसतसहस्सानि उद्धमधो तिरियं फेणुद्देहकं सम्परिवत्तकं पच्चति, ततो मुच्चित्वा किसफरुसकाळङ्गपच्चङ्गो सूनुद्धुमातसुसिरुत्तमङ्गो छातो पिपासितो विसमभीरूपवण्णो भग्गकण्णसोतो उम्मीलितनिमीलितनेत्तनयनो अरुगत्तपक्कगत्तो पुलवाकिण्णसब्बकायो, वातमुखे जलमानो विय अग्गिक्खन्धो अन्तो जलमानो पज्जलमानो, अत्ताणो असरणो आरुण्णरुण्णकारुञ्ञरवं परिदेवमानो निज्झामतण्हिको समणमहापेतो हुत्वा आहिण्डमानो महिया अट्टस्सरं करोति।

१५. "यथा, महाराज, कोचि अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो अप्पतिरूपो हीनो कुजातिको खत्तियाभिसेकेन अभिसिञ्चति, सो लभति हत्थच्छेदं पादच्छेदं हत्थपादच्छेदं कण्णछेदं नासच्छेदं कण्णनासच्छेदं बिलङ्गथालिकं, सङ्खमुण्डिकं राहुमुखं जोतिमालिकं हत्थपज्जोतितं एरकवत्तिकं, चीरकवासिकं एणेय्यकं बळिसमंसिकं कहापणकं खारापतच्छिकं पळिघपरिवत्तिकं पलालपीठकं, तत्तेन तेलेन ओसिञ्चनं, सुनखेहि खादितं, जीवसूलारोपनं, असिना सीसच्छेदनं, अनेकविहित्तं पि कम्मकारणं अनुभवति। किं कारणं ? अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो अप्पतिरूपो हीनो कुजातिको महन्ते इस्सरिये ठाने अत्तानं ठपेसि, वेलं घातेसि; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि पुग्गलो पापिच्छो··· पे०···महिया अट्टस्सरं करोति।

१४. यो पन, महाराज, पुग्गलो युत्तो पत्तो अनुच्छविको अरहो पतिरूपो अप्पिच्छो सन्तुट्ठो पविवित्तो असंसट्ठो आरद्धविरियो पहितत्तो असठो अमायो अनोदरिको अलाभकामो अयसकामो अकित्तिकामो सद्धो सद्धापब्बजितो जरामरणमुञ्चितुकामो 'सासनं पग्गण्हिस्सामी'ति धुतङ्गं समादियति, सो दिगुणं पूजं अरहति, देवानं च मनुस्सानं च पियो होति मनापो पिहयितो पत्थितो, जातिसुमनमल्लिकादीनं विय पुप्फं नहातानुलित्तस्स, जिघच्छितस्स विय पणीतभोजनं, पिपासितस्स विय सीतलविमलसुरभिपानीयं, विसगतस्स विय ओसधवरं, सीघगमनकामस्स आजञ्ञरथवरुत्तमं, अत्थकामस्स विय मनोहरमणिरतनं, अभिसिञ्चितुकामस्स विय पण्डरविमलसेतच्छत्तं, धम्मकामस्स विय अरहत्तफलाधिगममनुत्तरं। तस्स चत्तारो सतिपट्ठाना भावनापारिपूरिं गच्छन्ति, चत्तारो सम्मप्पधाना चत्तारो इद्धिपादा पञ्चिन्द्रियानि पञ्चबलानि सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो भावनापारिपूरिं गच्छति, समथविपस्सना अधिगच्छति, अधिगमपटिपत्ति परिणमति, चत्तारि सामञ्ञफलानि चतस्सो पटिसम्भिदा तिस्सो विज्जा छळभिञ्ञा केवलो च समणधम्मो सब्बे तस्साधेय्या होन्ति, विमुत्तिपण्डरविमलसेतच्छत्तेन अभिसिञ्चति।

"यथा, महाराज, रञ्ञो खत्तियस्स अभिजातकुलीनस्स खत्तियाभिसेकेन अभिसित्तस्स परिचरन्ति सरट्ठनेगमजानपदभटबला, अट्ठतिंसा च राजपरिसा नटनच्चका मुखमङ्गलिका सोत्थिवाचका समणब्राह्मणसब्बपासण्डगणा अभिगच्छन्ति, यं किञ्चि पथविया पट्टनरतनाकरनगरसुङ्कट्ठानवेरज्जकछेज्जभेज्जजनमनुसासनं सब्बत्थ सामिको भवति; एवमेव खो, महाराज, यो कोचि पुग्गलो युत्तो पत्तो... पे०... विमुत्तिपण्डरविमलसेतच्छत्तेन अभिसिञ्चति।

१६. तेरसिमानि, महाराज, धुतंगानि येहि सुद्धिकतो निब्बानमहासमुद्दं पविसित्वा बहुविधं धम्मकीळमभिकीळति, रूपारूपअट्ठसमापत्तियो वळञ्जेति, इद्धिविधं दिब्बसोतधातुं परचित्तविजाननं पुब्बेनिवासानुस्सतिं दिब्बचक्खुं सब्बासवक्खयं च पापुणाति। कतमे तेरस? पंसुकूलिकङ्गं, तेचीवरिकङ्गं, पिण्डपातिकङ्गं, सपदानचारिकङ्गं, एकासनिकङ्गं, पत्तपिण्डिकङ्गं, खलुपच्छाभत्तिकङ्गं, आरञ्ञिकङ्गं, रुक्खमूलिकङ्गं, अब्भोकासिकङ्गं, सोसानिकङ्गं, यथासन्थतिकङ्गं, नेसज्जिकङ्गं। इमेहि खो, महाराज, तेरसहि धुतगुणेहि पुब्बे आसेवितेहि निसेवितेहि चिण्णेहि परिचिण्णेहि चरितेहि उपचरितेहि परिपूरितेहि केवलं सामञ्ञं पटिलभति, तस्साधेय्या होन्ति केवला सन्ता सुखा समापत्तियो।

"यथा, महाराज, सधनो नाविको पट्टने सुट्ठु कतसुङ्को महासमुद्दं पविसित्वा वङ्गं तक्कोलं चीनं सोवीरं सुरट्ठं अलसन्दं कोलपट्टनं सुवण्णभूमिं

गच्छति, अञ्ञं पि यं किञ्चि नावासञ्चरणं; एवमेव खो, महाराज, इमेहि तेरसहि धुतगुणेहि पुब्बे आसेवितेहि निसेवितेहि चिण्णेहि परिचिण्णेहि चरितेहि उपचरितेहि परिपूरितेहि केवलं सामञ्ञं पटिलभति, तस्साधेय्या होन्ति केवला सन्ता सुखा समापत्तियो।

१७. "यथा, महाराज, कस्सको पठमं खेत्तादोसं तिणकट्ठपासाणं अपनेत्वा कसित्वा वपित्वा सम्मा उदकं पवेसेत्वा रक्खित्वा गोपेत्वा लवनमद्दनेन बहुधञ्ञको होति, तस्साधेय्या भवन्ति ये केचि अधना कपणा दलिद्दा दुग्गतजना; एवमेव खो, महाराज, इमेहि तेरसहि धुतगणेहि पुब्बेहि आसेवितेहि···पे०··· केवला सन्ता सुखा समापत्तियो।

१८. "यथा वा पन, महाराज, खत्तियो मुद्धावसित्तो अभिजातकुलकुलीनो छेज्जभेज्जजनमनुसासने इस्सरो होति वसवत्ती सामिको इच्छाकरणो, केवला च महापठवी तस्साधेय्या होति; एवमेव खो, महाराज, इमेहि तेरसहि धुतगुणेहि पुब्बे आसेवितेहि निसेवितेहि चिण्णेहि परिचिण्णेहि चरितेहि उपचरितेहि परिपूरितेहि जिनसासनवरे इस्सरो होति वसवत्ती सामिको इच्छाकरणो, केवला च समणगुणा तस्साधेय्या होन्ति।

१९. "ननु, महाराज, थेरो उपसेनो वङ्गन्तपुत्तो सल्लेखधुतगुणे परिपूरिकारिताय अनादियित्वा सावत्थिया सङ्घस्स कतिकं सपरिसो नरदम्मसारथिं पटिसल्लानगतं उपसङ्कमित्वा भगवतो पादे सिरसा वन्दित्वा एकमन्तं निसीदि। भगवा च तं सुविनीतं परिसं ओलोकेत्वा हट्ठतुट्ठो पमुदितो उदग्गो परिसाय सद्धिं सल्लापं सल्लपित्वा असम्भिन्नेन ब्रह्मस्सरेण एतदवोच—'पासादिका खो पन त्यायं, उपसेन, परिसा, कथं त्वं, उपसेन, परिसं विनेसी' ति? सोपि सब्बञ्ञुना दसबलेन देवातिदेवेन पुट्ठो यथाभूतसभावगुणवसेन भगवन्तं एतदवोच— 'यो कोचि मं, भन्ते, उपसङ्कमित्वा पब्बज्जं वा निस्सयं वा याचति, तमहं एवं वदामि—अहं खो, आवुसो, आरञ्ञिको पिण्डपातिको पंसुकूलिको तेचीवरिको, सचे त्वं पि आरञ्ञिको भविस्ससि पिण्डपातिको पंसुकूलिको तेचीवरिको, एवाहं पब्बाजेस्सामि निस्सयं दस्सामी ति। सचे सो मे, भन्ते, पटिस्सुणित्वा नन्दति ओरमति, एवाहं तं पब्बाजेमि निस्सयं देमि। सचे न नन्दति न ओरमति, न तं पब्बाजेमि न निस्सयं देमि। एवाहं, भन्ते, परिसं विनेमी' ति। एवं पि, महाराज, धुतगुणवरसमादिण्णो जिनसासनवरे इस्सरो होति वसवत्ती सामिको इच्छाकरणो, तस्साधेय्या होन्ति केवला सन्ता सुखा समापत्तियो।

२०. "यथा, महाराज, पदुमं अभिवुद्धपरिसुद्धउदिच्चजातिप्पभवं सिनिद्धं मुदु लोभनीयं सुगन्धं पियं पत्थितं पसत्थं जलकद्दममनुपलित्तं अणुपत्तकेसर-

कण्णिकाभिमण्डितं भमरगणसेवितं सीतलसलिलसंवद्धं; एवमेव खो, महाराज, इमेहि तेरसहि धुतगुणेहि पुब्बे आसेवितेहि निसेवितेहि चिण्णेहि परिचिण्णेहि चरितेहि उपचरितेहि परिपूरितेहि अरियसावको तिंसगुणवरेहि समुपेतो होति।

"कतमेहि तिंसगुणवरेहि? सिनिद्धमुदुमद्दवमेत्तचित्तो होति, घातितहतविहतकिलेसो होति, हतनिहतमानदप्पो होति, अचलदळ्हनिविट्ठनिब्बेमतिकसद्धो होति, परिपुण्णपीणितपहट्ठलोभनीयसन्तसुखसमापत्तिलाभी होति, सीलवरपवरअसमसुचिगन्धपरिभावितो होति, देवमनुस्सानं पियो होति मनापो, खीणासवअरियवरपुग्गलपत्थितो, देवमनुस्सानं वन्दितपूजितो, बुधविबुधपण्डितजनानं थुतथवितथोमितपसत्थो, इध वा हुरं वा लोकेन अनुपलित्तो, अप्पथोकवज्जे पि भयदस्सावी, विपुलवरसम्पत्तिकामानं मग्गफलवरत्थसाधनो, आयाचितविपुलपणीतपच्चयभागी, अनिकेतसयनो, झानज्झोसिततप्पवरविहारी, विजटितकिलेसजालवत्थु, भिन्नभग्गसङ्कुटितसञ्छिन्नगतिनीवरणो, अकुप्पधम्मो, अभिनीतवासो, अनवज्जभोगी, गतिविमुत्तो, उत्तिण्णसब्बविचिकिच्छो, विमुत्तिज्झासितत्तो, दिट्ठधम्मो, अचलदळ्हभीरुत्ताणमुपगतो, समुच्छिन्नानुसयो, सब्बासवक्खयं पत्तो, सन्तसुखसमापत्तिविहारबहुलो, सब्बसमणगुणसमुपेतो। इमेहि तिंसगुणवरेहि समुपेतो होति।

२१. "ननु, महाराज, थेरो सारिपुत्तो दससहस्सिलोकधातुया अग्गपुरिसो, ठपेत्वा दसबलं लोकाचरियं। सो पि अपरिमितमसङ्खेय्यकप्पे समाचितकुसलमूलो ब्राह्मणकुलकुलीनो मनापिकं कामरतिं अनेकसतसङ्खधनवरं च ओहाय जिनसासने पब्बजित्वा इमेहि तेरसहि धुतगुणेहि कायवचीचित्तं दमयित्वा अज्जेतरहि अनन्तगुणसमन्नागतो गोतमस्स भगवतो सासनवरे धम्मचक्कमनुपवत्तको जातो। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **एकङ्गुत्तरनिकायवरलञ्छके**—'नाहं, भिक्खवे, अञ्ञं एकपुग्गलं पि समनुपस्सामि, यो एवं तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं सम्मदेव अनुप्पवत्तेति, यथयिदं भिक्खवे, सारिपुत्तो। सारिपुत्तो, भिक्खवे, तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं सम्मदेव अनुपवत्तेती" ति।

"साधु, भन्ते नागसेन, यं किञ्चि नवङ्गं बुद्धवचनं, या च लोकुत्तरा किरिया, या च लोके अधिगमविपुलवरसम्पत्तियो सब्बं तं तेरसु गुणेसु समोधानोपगतं" ति।

[इमस्मिं वग्गे द्वे पञ्हा] **चतुत्थो अनुमानवग्गो निट्ठितो।**

ओपम्मकथापञ्हे

मातिका

१. गद्रभवग्गो

"भन्ते नागसेन, कतिहि अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अरहत्तं सच्छिकरोती" ति ?

"इध, महाराज, अरहत्तं सच्छिकातुकामेन भिक्खुना–१ गद्रभस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं। २ कुक्कुटस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानि। ३ कलन्दकस्स एकं[1]....। ४ दीपिनिया एकं....। ५ दीपिकस्स द्वे....। ६ कुम्मस्स पञ्च....। ७ वंसस्स एकं...। ८ चापस्स एकं...। ९ वायसस्स द्वे...। १० मक्कटस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानि।

२. समुद्दवग्गो

११ "लाबुलताय एकं...। १२ पदुमस्स तीणि....। १३ बीजस्स द्वे...। १४ सालकल्याणिकाय एकं...। १५ नावाय तीणि....। १६ नावा-लग्गनकस्स द्वे...। १७ कूपस्स एकं...। १८ नियामकस्स तीणि....। १९ कम्मकरस्स एकं...। २० समुद्दस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानि।

३. पठविवग्गो

२१ पठविया पञ्च....। २२ आपस्स पञ्च...। २३ तेजस्स पञ्च....। २४ वायुस्स पञ्च...। २५ पब्बतस्स पञ्च...। २६ आकासस्स पञ्च....। २७ चन्दस्स पञ्च....। २८ सुरियस्स सत्त....। २९ सक्कस्स तीणि...। ३० चक्कवत्तिस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानि।

४. उपचिकावग्गो

३१ उपचिकाय एकं....। ३२ बिळारस्स द्वे....। ३३ उन्दुरस्स एकं...। ३४ विच्छिकस्स एकं...। ३५ नकुलस्स एकं...। ३६ जरसिङ्गालस्स द्वे...। ३७ मिगस्स तीणि....। ३८ गोरूपस्स चत्तारि....। ३९ वराहस्स द्वे...। ४० हत्थिस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानि।

५. सीहवग्गो

४१ सीहस्स सत्त....। ४२ चक्कवाकस्स तीणि....। ४३ पेणाहिकाय द्वे...। ४४ घरकपोतस्स एकं....। ४५ उलूकस्स द्वे....। ४६ सतपत्तस्स एकं...। ४७ वग्गुलिस्स द्वे...। ४८ जलूकाय एकं...। ४९ सप्पस्स तीणि...। ५० अजगरस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं।

---

१. एत्थ, उपरि च सब्बत्थ 'अङ्गं गहेतब्बं', 'अङ्गानि गहेतब्बानी' ति वा पसङ्गानुसारं पठित्वा मातिका पूरेतब्बा।

६. मक्कटवग्गो

५१ "पन्थमक्कटकस्स एकं···। ५२ थनसित-दारकस्स एकं····। ५३ चित्तकधर-कुम्मस्स एकं···। ५४ पवनस्स पञ्च···। ५५ रुक्खस्स तीणि····। ५६ मेघस्स पञ्च····। ५७ मणिरतनस्स तीणि···। ५८ मागविकस्स चत्तारि····। ५९ बाळिसिकस्स द्वे····। ६० तच्छकस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानि।

७. कुम्भवग्गो

६१ "कुम्भस्स एकं···। ६२ काळायसस्स द्वे····। ६३ छत्तस्स तीणि····। ६४ खेत्तस्स तीणि····। ६५ अगदस्स द्वे···। ६६ भोजनस्स तीणि····। ६७ इस्सासस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानि।

८. राजङ्गवग्गो

६८ "रञ्ञो चत्तारि····। ६९ दोवारिकस्स द्वे····। ७० निसदाय एकं···। ७१ पदीपस्स द्वे···। ७२ मयूरस्स द्वे····। ७३ तुरङ्गस्स द्वे···। ७४ सोण्डिकस्स द्वे···। ७५ इन्दखीलस्स द्वे···। ७६ तुलाय एकं···। ७७ खग्गस्स द्वे····। ७८ मच्छस्स द्वे····। ७९ इणगाहकस्स एकं····। ८० ब्याधितस्स द्वे····। ८१ मतस्स द्वे····। ८२ नदिया द्वे···। ८३ उसभस्स एकं···। ८४ मग्गस्स द्वे····। ८५ सुङ्कसायिकस्स एकं····। ८६ चोरस्स तीणि····। ८७ सकुणग्घिया एकं····। ८८ सुनखस्स एकं···। ८९ तिकिच्छकस्स तीणि····। ९० गब्भिनिया द्वे····। ९१ चमरिया एकं···। ९२ किकिया द्वे···। ९३ कपोतिकाय तीणि····। ९४ एकनयनस्स द्वे···। ९५ कस्सकस्स तीणि···। ९६ जम्बुकसिङ्गालिया···। ९७ चङ्गवारकस्स द्वे····। ९८ दब्बिया एकं····। ९९ इणसाधकस्स तीणि····। १०० अनुविचिनकस्स एकं···। १०१ सारथिस्स द्वे···। १०२ भोजकस्स द्वे····। १०३ तुन्नवायस्स एकं····। १०४ नाविकस्स एकं···। १०५ भमरस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति।

मातिका निट्ठिता।

१. गद्रभवग्गो

१. गद्रभपञ्हो

१ "भन्ते नागसेन, 'गद्रभस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, गद्रभो नाम सङ्कारकूटे पि चतुक्के पि सिङ्घाटके पि गामद्वारे पि थुसरासिम्हि पि यत्थ कत्थचि पि सयति, न सयनबहुलो होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन तिणसन्थारे पि पण्णसन्थारे पि कट्ठमञ्चके पि छमाय पि यत्थ कत्थचि चम्मखण्डं पत्थरित्वा

यत्थ कत्थचि सयितब्बं, न सयनबहुलेन भवितब्बं। इदं, महाराज, गद्रभस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'कलिङ्गरूपधाना, भिक्खवे, एतरहि, मम सावका विहरन्ति अप्पमत्ता आतापिनो पधानस्मिं' ति। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना पि—

'पल्लङ्केन निसिन्नस्स, जण्णुकेनाभिवस्सति।
अलं फासुविहाराय, पहितत्तस्स भिक्खुनो'" ति॥

२. कुक्कुटङ्गपञ्हो

२. "भन्ते नागसेन, 'कुक्कटस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, कुक्कुटो कालेन पटिसल्लीयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कालेन समयेनेव चेतियङ्गणं सम्मज्जित्वा पानीयं परिभोजनीयं उपट्ठपेत्वा सरीरं पटिजग्गित्वा नहायित्वा चेतियं वन्दित्वा वुड्ढानं भिक्खूनं दस्सनाय गन्त्वा कालेन समयेन सुञ्ञागारं पविसितब्बं। इदं, महाराज, कुक्कुटस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, कुक्कुटो कालेन समयेनेव वुट्ठाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कालेन समयेनेव वुट्ठहित्वा चेतियङ्गणं सम्मज्जित्वा परिभोजनीयं उपट्ठपेत्वा सरीरं पटिजग्गित्वा चेतियं वन्दित्वा पुनदेव सुञ्ञागारं पविसितब्बं। इदं, महाराज, कुक्कुटस्स दुतियं अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, कुक्कुटो पठविं खणित्वा खणित्वा अज्झोहारं अज्झोहरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा अज्झोहारं अज्झोहरितब्बं 'नेव दवाय न मदाय न मण्डनाय न विभूसनाय, यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया यापनाय विहिंसूपरतिया ब्रह्मचरियानुग्गहाय। इति पुराणं च वेदनं पटिहङ्खामि नवं च वेदनं न उप्पादेस्सामि, यात्रा च मे भविस्सति अनवज्जता च फासु विहारो चा' ति। इदं, महाराज, कुक्कुटस्स ततियं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'कन्तारे पुत्तमंसं व, अक्खस्सब्भञ्जनं यथा।
एवं आहरि आहारं, यापनत्थममुच्छितो' ति॥

"पुन च परं, महाराज, कुक्कुटो सचक्खुको पि रत्तिं अन्धो होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अनन्धेनेव अन्धेन विय भवितब्बं, अरञ्ञे पि गोचरगामे पिण्डाय चरन्तेनापि रजनीयेसु रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बधम्मेसु अन्धेन बधिरेन मूगेन विय भवितब्बं, न निमित्तं गहेतब्बं, नानुब्यञ्जनं गहेतब्बं। इदं, महाराज, कुक्कुटस्स चतुत्थं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन महाकच्चायनेन—

'चक्खुमास्स यथा अन्धो, सोतवा बधिरो यथा ।
पञ्ञास्स यथा मूगो, बलवा दुब्बलोरिव ।
अत्थअत्थे समुप्पन्ने, सयेथ मतसायिकं' ति ॥

"पुन च परं, महाराज, कुक्कुटो लेड्डुदण्डलगुळमुग्गरेहि परिपातियन्तो पि सकं गेहं न विजहाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चीवरकम्मं करोन्तेन पि नवकम्मं करोन्तेन पि वत्तपटिवत्तं करोन्तेन पि उद्दिसन्तेन पि उद्दिसापेन्तेन पि योनिसो मनसिकारो न विजहितब्बो। सकं खो पनेतं, महाराज, योगिनो गेहं यदिदं योनिसो मनसिकारो। इदं, महाराज, कुक्कुटस्स पञ्चमं अङ्गं गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन–'को च, भिक्खवे, भिक्खुनो गोचरो सको पेत्तिको विसयो, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना' ति। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना पि—

'यथा सुदन्तो मातङ्गो, सकं सोण्डं न मद्दति।
भक्खाभक्खं विजानाति, अत्तनो वुत्तिकप्पनं॥
तथेव बुद्धपुत्तेन, अप्पमत्तेन वा पन।
जिनवचनं न मद्दितब्बं, मनसिकारवरुत्तमं'" ति ॥

३. कलन्दकङ्गपञ्हो

३. "भन्ते नागसेन, 'कलन्दकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, कलन्दको पटिसत्तुम्हि ओपतन्ते नङ्गुट्ठं पप्फोटेत्वा महन्तं कत्वा तेनेव नङ्गुट्ठलगुळेन पटिसत्तुं पटिबाहति; एवमेव खो महाराज, योगिना योगावचरेन किलेससत्तुम्हि ओपतन्ते सतिपट्ठानलगुळं पप्फोटेत्वा महन्तं कत्वा तेनेव सतिपट्ठानलगुळेन सब्बकिलेसा पटिबाहितब्बा। इदं, महाराज, कलन्दकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन चुल्लपन्थकेन—

'यदा किलेसा ओपतन्ति, सामञ्ञगुणधंसना।
सतिपट्ठानलकुटेन, हन्तब्बा ते पुनप्पुनं'" ति ॥

४. दीपिनियङ्गपञ्हो

४. भन्ते नागसेन, 'दीपिनिया एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, दीपिनी सकिं येव गब्भं गण्हाति, न पुनप्पुनं पुरिसं उपेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आयतिं पटिसन्धि उप्पत्तिं गब्भसेय्यं चुतिं भेदं खयं विनासं संसारभयं दुग्गतिं विसमं सम्पीळितं दिस्वा 'पुनब्भवे नप्पटिसन्दहिस्सामी' ति योनिसो मनसिकारो

करणीयो। इदं, महाराज, दीपिनिया एकं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन सुत्तनिपाते धनियगोपालकसुत्ते—

'उसभोरिव छेत्व बन्धनानि, नागो पूतिलतं व दालयित्वा।
नाहं पुन उपेस्सं गब्भसेय्यं, अथ चे पत्थयसी पवस्स देवा" ति॥

५. दीपिकङ्गपञ्हो

५. "भन्ते नागसेन, दीपिकस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, दीपिको अरञ्ञे तिणगहणं वा वनगहनं वा पब्बतगहनं वा निस्साय निलीयित्वा मिगे गण्हाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन विवेकं सेवितब्बं। अरञ्ञं रुक्खमूलं पब्बतं कन्दरं गिरिगुहं सुसानं वनपत्थं अब्भोकासं पलालपुञ्जं अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसं विजनवातं मनुस्सराहसेय्यकं पटिसल्लानसारुप्पं विवेकं सेवमानो हि, महाराज, योगी योगावचरो न चिरस्सेव छळभिञ्ञासु च वसीभावं पापुणाति। इदं, महाराज, दीपिकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेहि धम्मसङ्गाहकेहि—

'यथा पि दीपिको नाम, निलीयत्वा गण्हते मिगे।
तथेवायं बुद्धपुत्तो, युत्तयोगो विपस्सको।
अरञ्ञं पविसित्वान, गण्हाति फलमुत्तमं' ति॥

"पुन च परं, महाराज, दीपिको यं कञ्चि पसुं वधित्वा वामेन पस्सेन पतितं न भक्खेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन वेळुदानेन वा पत्तदानेन वा पुप्फदानेन वा फलदानेन वा सिनानदानेन वा मत्तिकादानेन वा चुण्णदानेन वा दन्तकट्ठदानेन वा मुखोदकदानेन वा चाटुकम्यताय वा मुग्गसुप्यताय वा पारिभट्टयकताय वा जंघपेसनीयेन वा वेज्जकम्मेन वा दूतकम्मेन वा पहिणगमनेन वा पिण्डपटिपिण्डेन वा दानानुप्पदानेन वा वत्थुविज्जाय वा नक्खत्तविज्जाय वा अङ्गविज्जाय वा अञ्ञतरञ्ञतरेन वा बुद्धपटिकुट्ठेन मिच्छाजीवेन निप्फादितं भोजनं न भुञ्जितब्बं, वामेन पस्सेन पतितं पसुं विय दीपिको। इदं, महाराज, दीपिकस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'वचीविञ्ञत्तिविप्फारा, उप्पन्नं मधुपायसं।
सचे भुत्तो भवेय्याहं, साजीवो गरहितो मम॥
यदि पि मे अन्तगुणं, निक्खमित्वा बही चरे।
नेव भिन्देय्यमाजीवं, चजमानो पि जीवितं" ति॥

६. कुम्मङ्गपञ्हो

६. "भन्ते नागसेन, 'कुम्मस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि,

कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, कुम्मो उदकचरो उदके येव वासं कप्पेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बपाणभूतपुग्गलानं हितायानुकम्पिना मेत्तासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्जेन सब्बावन्तं लोकं फरित्वा विहरितब्बं। इदं, महाराज, कुम्मस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, कुम्मो उदके उप्पिलवन्तो सीसं उक्खिपित्वा यदि कोचि पस्सति, तत्थेव निमुज्जति गाळ्हमोगाहति—'मा मं ते पुन पस्सेय्युं' ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन किलेसेसु ओपतन्तेसु आरम्मणसरे निमुज्जितब्बं, गाळ्हमोगाहितब्बं—'मा मं किलेसा पुन पस्सेय्युं' ति। इदं, महाराज, कुम्मस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, कुम्मो उदकतो निक्खमित्वा कायं ओतापेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन निसज्जट्ठानसयनचङ्कमतो मानसं नीहरित्वा सम्मप्पधाने मानसं ओतापेतब्बं। इदं, महाराज, कुम्मस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, कुम्मो पठविं खणित्वा विवित्ते वासं कप्पेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन लाभसक्कारसिलोकं पजहित्वा सुञ्ञं विवित्तं काननं वनपत्थं पब्बतं कन्दरं गिरिगुहं अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसं पविवित्तमोगाहित्वा विवित्ते येव वासं उपगन्तब्बं। इदं, महाराज, कुम्मस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपसेनेन वङ्गन्तपुत्तेन—

'विवित्तं अप्पनिग्घोसं, वाळमिगनिसेवितं।
सेवे सेनासनं भिक्खु, पटिसल्लानकारणा' ति॥

"पुन च परं, महाराज, कुम्मो चारिकं चरमानो यदि किञ्चि पस्सति वा सुणाति वा, सोण्डिपञ्चमानि अङ्गानि सके कपाले निदहित्वा अप्पोस्सुक्को तुण्हीभूतो तिट्ठति कायमनुरक्खन्तो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बत्थ रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बधम्मेसु आपतन्तेसु छसु द्वारेसु संवरकवाटं अनुग्घाटेत्वा मानसं समोदहित्वा संवरं कत्वा सतेन सम्पजानेन विहातब्बं समणधम्मं अनुरक्खमानेन। इदं, महाराज, कुम्मस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे** कुम्मूपमसुत्तन्ते—

'कुम्मो व अङ्गानि सके कपाले, समोदहं भिक्खु मनोवितक्के।
अनिस्सितो अञ्ञमहेठयानो, परिनिब्बुतो नूपवदेय्य कञ्ची" ति॥

७. वंसङ्गपञ्हो

७. "भन्ते नागसेन, 'वंसस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, वंसो यत्थ वातो तत्थ अनुलोमेति, नाञ्ञत्थमनुधावति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन यं बुद्धेन भगवता भासितं नवङ्गं सत्थुसासनं तं अनुलोमयित्वा कप्पिये अनवज्जे ठत्वा समणधम्मं येव परियेसितब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन राहुलेन—

'नवङ्गं बुद्धवचनं, अनुलोमेत्वान सब्बदा।
कप्पिये अनवज्जस्मि, ठत्वापायं समुत्तरिं'" ति ॥

८. चापङ्गपञ्हो

८. "भन्ते नागसेन, 'चापस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, चापो सुतच्छितो नमितो यावग्गमूलं समकमेव अनुनमति न पटित्थम्भति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन थेरनवमज्झिमसमकेसु अनुनमितब्बं न पटिप्फरितब्बं। इदं, महाराज, चापस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन विधु(पुण्णक)जातके—

'चापो वूनुदरो धीरो, वंसो वापि पकम्पये।
पटिलोमं न वत्तेय्य, स राजवसतिं वसे" ति ॥

९. वायसङ्गपञ्हो

९. "भन्ते नागसेन, 'वायसस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, वायसो आसङ्कितपरिसङ्कितो यत्तप्पयत्तो चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आसङ्कितपरिसङ्कितेन यत्तप्पयत्तेन उपट्ठिताय सतिया संवुतेहि इन्द्रियेहि चरितब्बं। इदं, महाराज, वायसस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वायसो यं कञ्चि भोजनं दिस्वा ञातीहि संविभजित्वा भुञ्जति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ये ते लाभा धम्मिका धम्मलद्धा अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्तं पि, तथारूपेहि लाभेहि पटिविभत्तभोगिना भवितब्बं सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि। इदं, महाराज, वायसस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'सचे मे उपनामेन्ति, यथालद्धं तपस्सिनो।
सब्बे ते विभजित्वान, ततो भुञ्जामि भोजनं" ति ॥

१०. मक्कटपञ्हो

१०. "भन्ते नागसेन, 'मक्कटस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, मक्कटो वासमुपगच्छन्तो तथारूपे ओकासे महतिमहारुक्खे पविवित्ते सब्बट्ठकसाखे भीरुत्ताणे वासमुपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन लज्जिं पेसलं सीलवन्तं कल्याणधम्मं बहुस्सुतं धम्मधरं विनयधरं पियं गरुं भावनीयं वत्तारं वचनक्खमं ओवादकं विञ्ञापकं सन्दस्सकं समादपकं समुत्तेजकं एवरूपं कल्याणमित्तं आचरियं उपनिस्साय विहरितब्बं। इदं, महाराज, मक्कटस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मक्कटो रुक्खे येव चरति तिट्ठति निसीदति, यदि निद्दं ओक्कमति तत्थेव रत्तिं वासमनुभवति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पवनाभिमुखेन भवितब्बं, पवने येव ठानचङ्कमनिसज्जसयनं निद्दं ओक्कमितब्बं। तत्थेव सतिपट्ठानमनुभवितब्बं। इदं, महाराज, मक्कटस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'चङ्कमन्तो पि तिट्ठन्तो, निसज्जसयनेन वा।
पवने सोभते भिक्खु, पवनन्तं व वण्णितं''' ति ॥

पठमो गद्रभवग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं

गद्रभो चेव कुक्कुटो, कलन्दो दीपिनि-दीपिको।
कुम्मो वंसो च चापो च, वायसो अथ मक्कटो ति ॥

२. समुद्दवग्गो

१. लाबुलतङ्गपञ्हो

११. "भन्ते नागसेन, 'लाबुलताय एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, लाबुलता तिणे वा कट्ठे वा लताय वा सोण्डिकाहि आलम्बित्वा तस्सूपरि वड्ढति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अरहत्ते अभिवड्ढितुकामेन मनसा आरम्मणं आलम्बित्वा अरहत्ते अभिवड्ढितब्बं। इदं, महाराज, लाबुलताय **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'यथा लाबुलता नाम, तिणे कट्ठे लताय वा।
आलम्बित्वा सोण्डिकाहि, ततो वड्ढति उप्परि ॥

तथेव बुद्धपुत्तेन, अरहत्तफलकामिना।
आरम्मणं आलम्बित्वा, वड्ढितब्बं असेक्खफले" ति ॥

२. पदुमङ्गपञ्हो

१२. "भन्ते नागसेन, 'पदुमस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, पदुमं उदके जातं उदके संवद्धं अनुपलित्तं उदकेन; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुले गणे लाभे यसे सक्कारे सम्माननाय परिभोगपच्चयेसु च सब्बत्थ अनुपलित्तेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पदुमस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पदुमं उदका अच्चुग्गम्म ठाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बलोकं अभिभवित्वा अच्चुग्गम्म लोकुत्तरधम्मे ठातब्बं। इदं, महाराज, पदुमस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पदुमं अप्पमत्तकेन पि अनिलेन एरितं चलति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अप्पमत्तकेसु पि किलेसेसु संयमो करणीयो। भयदस्साविना विहरितब्बं। इदं, महाराज, पदुमस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी समादाय सिक्खति सिक्खापदेसू' ति।

३. बीजङ्गपञ्हो

१३. "भन्ते नागसेन, 'बीजस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, बीजं अप्पकं पि समानं भद्दके खेत्ते वुत्तं देवे सम्मा धारं पवेच्छन्ते सुबहूनि फलानि अनुदस्सति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन यथा पटिपादितं सीलं केवलं सामञ्ञफलमनुदस्सति, एवं सम्मापटिपज्जितब्बं। इदं महाराज, बीजस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, बीजं सुपरिसोधिते खेत्ते रोपितं खिप्पमेव संविरूहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन मानसं सुपरिग्गहितं सुञ्ञागारे परिसोधितं सतिपट्ठानखेत्तवरे खित्तं खिप्पमेव विरूहति। इदं, महाराज, बीजस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्ब। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन अनिरुद्धेन—

"यथा पि खेत्ते परिसुद्धे, बीजं चस्स पतिट्ठितं।
विपुलं तस्स फलं होति, अपि तोसेति कस्सकं॥
तथेव योगिनो चित्तं, सुञ्ञागारे विसोधितं।
सतिपट्ठानखेत्तम्हि, खिप्पमेव विरूहती" ति॥

४. सालकल्याणिकङ्गपञ्हो

१४. "भन्ते नागसेन, सालकल्याणिकाय एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, सालकल्याणिका नाम अन्तो पठवियं येव अभिवड्ढति हत्थसतं पि भिय्यो पि; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चत्तारि सामञ्ञफलानि चतस्सो पटिसम्भिदा छळभिञ्ञायो केवलं च समणधम्मं सुञ्ञागारे येव परिपूरयितब्बं। इदं, महाराज, सालकल्याणिकाय **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन राहुलेन—

'सालकल्याणिका नाम, पादपो धरणीरुहो।
अन्तोपठवियं येव, सतहत्थो पि वड्ढति ॥
यथा कालम्हि सम्पत्ते, परिपाकेन सो दुमो।
उग्गञ्छित्वान एकाहं, सतहत्थो पि वड्ढति ॥
एवमेवाहं महावीर, सालकल्याणिका विय।
अब्भन्तरे सुञ्ञागारे, धम्मतो अभिवड्ढयिं" ति ॥

५. नावङ्गपञ्हो

१५. "भन्ते नागसेन, 'नावाय तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति ? "यथा, महाराज, नावा बहुविधदारुसङ्घाटसमवायेन बहुं पि जनं तारयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आचारसीलगुणवत्तपटिवत्तबहुविधधम्मसङ्घाटसमवायेन सदेवको लोको तारयितब्बो। इदं, महाराज, नावाय **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, नावा बहुविधऊमित्थनितवेगविसटमावट्टवेगं सहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन बहुविधकिलेसऊमिवेगं लाभसक्कारयससिलोकपूजनवन्दना परकुलेसु निन्दापसंसासुखदुक्खसम्माननविमाननबहुविधदोसऊमिवेगं च सहितब्बं। इदं, महाराज, नावाय **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, नावा अपरिमितमनन्तमपारमक्खोभितगम्भीरे महतिमहाघोसे तिमितिमिङ्गलमकरमच्छगणाकुले महतिमहासमुद्दे चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन तिपरिवट्टद्वादसाकारचतुसच्चाभिसमयप्पटिवेधे मानसं सञ्चारयितब्बं। इदं, महाराज, नावाय **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे** सच्चसंयुत्ते—'वितक्केन्ता च खो तुम्हे, भिक्खवे, इदं दुक्खं ति वितक्केय्याथ, अयं दुक्खसमुदयो ति वितक्केय्याथ, अयं दुक्खनिरोधो ति वितक्केय्याथ, अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा ति वितक्केय्याथा" ति।

६. नावालग्गनकङ्गपञ्हो

१६. "भन्ते नागसेन, 'नावालग्गनकस्स द्वे अंगानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अंगानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, नावालग्गकनकं बहुऊमिजालाकुलविक्खोभितसलिलतले महतिमहासमुद्दे नावं लग्गेति ठपेति, न देति दिसाविदिसं हरितुं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन रागदोसमोहूमिजाले महतिमहावितक्कसम्पहारे चित्तं लग्गेतब्बं, न दातब्बं दिसाविदिसं हरितुं। इदं, महाराज, नावालग्गनकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, नावालग्गनकं न प्लवति, विसीदति, हत्थसते पि उदके नावं लग्गेति, ठानमुपनेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन लाभयससक्कारमाननवन्दनपूजनअपचितीसु लाभग्गयसग्गे पि न प्लवितब्बं, सरीरयापनमत्तके येव चित्तं ठपेतब्बं। इदं, महाराज, नावालग्गकनस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'यथा समुद्दे लग्गनकं न प्लवति, विसीदति।
तथेव लाभसक्कारे, मा प्लवथ, विसीदथा' ति॥

७. कूपङ्गपञ्हो

१७. "भन्ते नागसेन, 'कूपस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति ? "यथा महाराज, कूपो रज्जुं च वरत्तं च लङ्कारं च धारेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सतिसम्पजञ्ञसमन्नागतेन भवितब्बं, अभिक्कन्ते पटिक्कन्ते आलोकिते विलोकिते सम्मिञ्जिते पसारिते सङ्घाटिपत्तचीवरधारणे असिते पीते खायिते सायिते उच्चारपस्सावकम्मे गते ठिते निसिन्ने सुत्ते जागरिते भासिते तुण्हीभावे सम्पजानकारिना भवितब्बं। इदं, महाराज, कूपस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'सतो, भिक्खवे, भिक्खु विहरेय्य सम्पजानो। अयं वो अम्हाकं अनुसासनी'" ति।

८. नियामकङ्गपञ्हो

१८. "भन्ते नागसेन, 'नियामकस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, नियामको रत्तिन्दिवं सततं समितं अप्पमत्तो यत्तप्पयत्तो नावं सारेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चित्तं नियामयमानेन रत्तिन्दिवं सततं समितं अप्पमत्तेन योनिसो मनसिकारेन चित्तं नियामेतब्बं। इदं, महाराज, नियामकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **धम्मपदे**—

'अप्पमादरता होथ, सचित्तमनुरक्खथ ।
दुग्गा उद्धरथत्तानं, पङ्के सन्नो व कुञ्जरो'' ति ।।

"पुन च परं, महाराज, नियामकस्स यं किञ्चि महासमुद्दे कल्याणं वा पापकं वा सब्बं तं विदितं होति; एवमेव, खो महाराज, योगिना योगावचरेन कुसलाकुसलं सावज्जानवज्जं हीनप्पणीतं कण्हसुक्कसप्पटिभागं विजानितब्बं । इदं, महाराज, नियामकस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, नियामको यन्ते मुद्दिकं देति—'मा कोचि यन्तं आमसित्था' ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चित्ते संवरमुद्दिका दातब्बा—'मा किञ्चि पापकं अकुसलवितक्कं वितक्केसी' ति । इदं, महाराज, नियामकस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं । भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे**—'मा, भिक्खवे, पापके अकुसले वितक्के वितक्केय्याथ । सेय्यथीदं कामवितक्कं, ब्यापादवितक्कं, विहिंसावितक्कं'' ति ।

९. कम्मकारङ्गपञ्हो

१९. "भन्ते नागसेन, 'कम्मकारस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति ? "यथा, महाराज, कम्मकारो एवं चिन्तयति–'भतको अहं, इमाय नावाय कम्मं करोमि, इमायाहं नावाय वाहसा भत्तवेतनं लभामि, न मे पमादो करणीयो, अप्पमादेन मे अयं नावा वाहेतब्बा' ति; एवमेव, खो, महाराज, योगिना योगावचरेन एवं चिन्तयितब्बं—'इमं खो अहं चातुम्महाभूतिकं कायं सम्मसन्तो सततं समितं अप्पमत्तो उपट्ठितसति सतो सम्पजानो समाहितो एकग्गचित्तो जातिजराब्याधिमरणसोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सूपायासेहि परिमुच्चिस्सामी ति अप्पमादो मे करणीयो' ति । इदं, महाराज, कम्मकारस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं । भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना–

'कायं इमं सम्मसथ, परिजानाथ पुनप्पुनं ।
काये सभावं दिस्वान, दुक्खस्सन्तं करिस्सथा'' ति ।

१०. समुद्दङ्गपञ्हो

२०. "भन्ते नागसेन, 'समुद्दस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी'' ति ? "यथा, महाराज, महासमुद्दो मतेन कुणपेन सद्धिं न संवसति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन रागदोसमोहमानदिट्ठिमक्खपळासइस्सामच्छरियमायासठकुटिलविसमदुच्चरितकिलेसमलेहि सद्धिं न संवसितब्बं । इदं, महाराज, समुद्दस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो मुत्तामणिवेळुरियसङ्खसिलापवाळफळिकमणिविविधरतननिचयं धारेन्तो पिदहति, न बहि विकिरति; एवमेव खो, महा-

राज, योगिना योगावचरेन मग्गफलझानविमोक्खसमाधिसमापत्तिविपस्सनाभिञ्ञाविविधगुणरतनानि अधिगन्त्वा पिदहितब्बानि, न बहि नीहरितब्बानि। इदं, महाराज, समुद्दस्स **दुतियं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो महन्तेहि महाभूतेहि सद्धिं संवसति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अप्पिच्छं सन्तुट्ठं धुतवादं सल्लेखवुत्तिं आचारसम्पन्नं लज्जिं पेसलं गरुं भावनीयं वत्तारं वचनक्खमं चोदकं पापगरहिं ओवादकं अनुसासकं विञ्ञापकं सन्दस्सकं समादपकं समुत्तेजकं सम्पहंसकं कल्याणमित्तं सब्रह्मचारिं उपनिस्साय वसितब्बं। इदं, महाराज, समुद्दस्स **ततियं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो नवसलिलसम्पुण्णाहि गंगायमुनाअचिरवतीसरभूमहीआदीहि नदीसतसहस्सेहि अन्तलिक्खे सलिलधाराहि च पूरितो पि सकं वेलं नातिवत्तति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन लाभसक्कारसिलोकवन्दनमाननपूजनकारणा जीवितहेतु पि सञ्चिच्च सिक्खापदवीतिक्कमो न करणीयो। इदं, महाराज, समुद्दस्स **चतुत्थं** अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'सेय्यथापि, महाराज, महासमुद्दो ठितधम्मो वेलं नातिक्कमति; एवमेव खो, महाराज, यं मया सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं, तं मम सावका जीवितहेतु पि नातिक्कमन्ती' ति।

"पुन च परं, महाराज, महासमुद्दो सब्बसवन्तीहि गंगायमुनाअचिरवतीसरभूमहीहि अन्तलिक्खे उदकधाराहि पि न परिपूरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उद्देसपरिपुच्छासवणधारणविनिच्छयअभिधम्मविनयगाळ्हसुत्तन्तविग्गहपदनिक्खेपपदसन्धिपदविभत्तिनवङ्गजिनसासनवरं सुणन्तेनापि न तप्पितब्बं। इदं, महाराज, समुद्दस्स **पञ्चमं** अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **सुतसोमजातके**—

'अग्गि यथा तिणकट्ठं डहन्तो, न तप्पति सागरो वा नदीहि।
एवं पि पे पण्डिता राजसेट्ठ, सुत्वा न तप्पन्ति सुभासितेना'"ति॥

दुतियो समुद्दवग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं

लाबुलता च पदुमं, बीजं सालकल्याणिका।
नावा च नावालग्गनं, कूपो नियामको तथा।
कम्मकारो समुद्दो च, वग्गो तेन पवुच्चती ति॥

३. पथविवग्गो

१. पथविअङ्गपञ्हो

२१. "भन्ते, नागसेन, 'पथविया पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, पठवी इट्ठानिट्ठानि कप्पूरागरुतगरचन्दनकुङ्कमादीनि आकिरन्ते पि, पित्तसेम्हपुब्बरुधिरसेदमेदखेळसिङ्घाणिकलसिकमुत्तकरीसादीनि आकिरन्ते पि तादिसा येव; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इट्ठानिट्ठे लाभालाभे यसायसे निन्दापसंसाय सुखदुक्खे सब्बत्थ तादिना येव भवितब्बं। इदं, महाराज, पठविया **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पठवी मण्डनविभूसनापगता सकगन्धपरिभाविता; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन विभूसनापगतेन सकसीलगन्धपरिभावितेन भवितब्बं। इदं महाराज, पठविया **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पठवी निरन्तरा अखण्डच्छिद्दा असुसिरा बहला घना वित्थिण्णा; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन निरन्तरमखण्डच्छिद्दमसुसिरबहलघनवित्थिण्णसीलेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पठविया **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पठवी गामनिगमनगरजनपदरुक्खपब्बतनदीतळाकपोक्खरणीमिगपक्खिमनुजनरनारीगणं धारेन्ती पि अकिलासु होति; एवमेव, खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ओवदन्तेन पि अनुसासन्तेन पि विञ्ञापेन्तेन पि सन्दस्सेन्तेन पि समादपेन्तेन पि समुत्तेजेन्तेन पि सम्पहंसेन्तेन पि धम्मदेसनासु अकिलासुना भवितब्बं। इदं, महाराज, पठविया **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पठवी अनुनयप्पटिघविप्पमुत्ता; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तेन पठवीसमेन चेतसा विहरितब्बं। इदं, महाराज, पठविया **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, उपासिकाय चूळसुभद्दाय सकसमणे परिकित्तयमानाय—

'एकं चे बाहं वासिया, तच्छे कुपितमानसा।
एकं चे बाहं गन्धेन, आलिम्पेय्य पमोदिता॥
अमुस्मिं पटिघो नत्थि, रागो अस्मिं न विज्जति।
पठवीसमचित्ता ते, तादिसा समणा ममा'" ति॥

२. आपङ्गपञ्हो

२२. "भन्ते नागसेन, 'आपस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, आपो

सुसण्ठितमकम्पितमलुळितसभावपरिसुद्धो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुहनलपननेमित्तकनिप्पेसिकतं अपनेत्वा सुसण्ठितमकम्पितमलुळितसभावपरिसुद्धाचारेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आपस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आपो सीतलसभावसण्ठितो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बसत्तेसु खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पन्नेन हितेसिना अनुकम्पकेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आपस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आपो असुचिं सुचिं करोति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन गामे वा अरञ्ञे वा उपज्झाये उपज्झायमत्तेसु आचरिये आचरियमत्तेसु सब्बत्थ अनधिकरणेन भवितब्बं अनवकासकारिना। इदं, महाराज, आपस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आपो बहुजनपत्थितो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अप्पिच्छसन्तुट्ठपविवित्तपटिसल्लानेन सततं सब्बालोकमभिपत्थितेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आपस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आपो न कस्सचि अहितमुपदहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन परभण्डनकलहविग्गहविवादरित्तज्झानअरतिजननं कायवचीचित्तेहि पापकं न करणीयं। इदं, महाराज, आपस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **कण्हजातके**—

'वरं चे मे अदो सक्क, सब्बभूतानमिस्सर।
न मनो वा सरीरं वा, मं कते सक्क कस्सचि॥
कदाचि उपहञ्ञेथ, एतं सक्क वरं वरे" ति॥

३. तेजङ्गपञ्हो

२३. "भन्ते नागसेन, 'तेजस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, तेजो तिणकट्ठसाखापलासं डहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ये ते अब्भन्तरा वा बाहिरा वा किलेसा इट्ठानिट्ठारम्मणानुभवना सब्बे ते ञाणग्गिना डहितब्बा। इदं, महाराज, तेजस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, तेजो निद्दयो अकारुणिको; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बकिलेसेसु कारुञ्ञानुद्दया न कातब्बा। इदं, महाराज, तेजस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, तेजो सीतं पटिहनति; एवमेव खो, महाराज,

योगिना योगावचरेन विरियसन्तापतेजं अभिजनेत्वा किलेसा पटिहन्तब्बा। इदं, महाराज, तेजस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, तेजो अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो उण्हमभिजनेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तेन तेजोसमेन चेतसा विहरितब्बं। इदं महाराज, तेजस्स **चतुत्थं अंगं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, तेजो अन्धकारं विधमति आलोकं दस्सयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अविज्जअन्धकारं विधमित्वा ञाणालोकं दस्सयितब्बं। इदं, महाराज, तेजस्स **पञ्चमं अंगं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन सकं पुत्तं राहुलं ओवदन्तेन—'तेजोसमं, राहुल, भावनं भावेहि; तेजोसमं हि ते, राहुल, भावनं भावयतो अनुप्पन्ना चेव अकुसला धम्मा नुप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च अकुसला धम्मा चित्तं न परियादाय ठस्सन्ती'" ति।

४. वायुङ्गपञ्हो

२४. "भन्ते नागसेन, 'वायुस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, वायु सुपुप्फितवनसण्डन्तरं अभिवायति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन विमुत्तिवरकुसुमपुप्फितारम्मणवनन्तरे रमितब्बं। इदं, महाराज, वायुस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वायु धरणीरुहपादपगणे मथयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन वनन्तरगतेन सङ्खारे विचिनन्तेन किलेसा मथयितब्बा। इदं, महाराज, वायुस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वायु आकासे चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन लोकुत्तरधम्मेसु मानसं सञ्चारयितब्बं। इदं, महाराज, वायुस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वायु गन्धं अनुभवति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अत्तनो सीलसुरभिगन्धो अनुभवितब्बो। इदं, महाराज, वायुस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वायु निरालयो अनिकेतवासी; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन निरालयमनिकेतमसन्थवेन सब्बत्थ विमुत्तेन भवितब्बं। इदं, महाराज, वायुस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **सुत्तनिपाते**—

'सन्थवतो भयं जातं, निकेता जायती रजो।
अनिकेतमसन्थवं, एतं वे मुनिदस्सनं'" ति॥

५. पब्बतङ्गपञ्हो

२५. "भन्ते नागसेन, 'पब्बतस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, पब्बतो अचलो अकम्पितो असम्पवेधी; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सम्मानने विमानने सक्कारे असक्कारे गरुकारे अगरुकारे यसे अयसे निन्दाय पसंसाय सुखे दुक्खे इट्ठानिट्ठेसु सब्बत्थ रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बधम्मेसु रजनीयेसु न मुय्हितब्बं; न कम्पितब्बं न चलितब्बं, पब्बतेन विय अचलेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पब्बतस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'सेलो यथा एकघनो, वातेन न समीरति।
एवं निन्दापसंसासु, न समिञ्जन्ति पण्डिता' ति॥

"पुन च परं, महाराज, पब्बतो थद्धो न केनचि संसट्ठो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन थद्धेन असंसट्ठेन भवितब्बं। न केनचि संसग्गो करणीयो। इदं, महाराज, पब्बतस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'असंसट्ठं गहट्ठेहि, अनागारेहि चूभयं।
अनोकसारिमप्पिच्छं, तमहं ब्रूमि ब्राम्हणं' ति॥

"पुन च परं, महाराज, पब्बते बीजं न विरूहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सकमानसे किलेसा न विरूहापेतब्बा। इदं, महाराज, पब्बतस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सुभूतिना—

'रागूपसंहितं चित्तं, यदा उप्पज्जते मम।
सयमेव पच्चवेक्खित्वा, एकग्गो तं दमेमहं॥
रज्जसे रजनीयेसु, दुस्सनीयेसु दुस्ससे।
मुय्हसे मोहनीयेसु, निक्खमस्सु वना तुरं॥
विसुद्धानं अयं वासो, निम्मलानं तपस्सिनं।
मा खो विसुद्धं दूसेसि, निक्खमस्सु वना तुरं" ति॥

पुन च परं, महाराज, पब्बतो अच्चुग्गतो ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ञाणच्चुग्गतेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पब्बतस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।
पञ्ञापासादमारुय्ह, असोको सोकिनिं पजं।
पब्बतट्ठो व भुम्मट्ठे, धीरो बाले अवेक्खती" ति॥

"पुन च परं, महाराज, पब्बतो अनुन्नतो अनोनतो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उन्नतावनति न करणीया। इदं, महाराज, पब्बतस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, उपासिकाय चूळसुभद्दाय सकसमणे परिकित्तयमानाय—

लाभेन उन्नतो लोको, अलाभेन च ओनतो।
लाभालाभेन एकट्ठा, तादिसा समणा ममा" ति॥

६. आकासङ्गपञ्हो

२६. "भन्ते नागसेन, 'आकासस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, आकासो सब्बसो अगय्हो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बसो किलेसेहि अगय्हेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आकासस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, आकासो इसितापसभूतदिजगणानुसञ्चरितो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन 'अनिच्चं, दुक्खं, अनत्ता' ति सङ्खारेसु मानसं सञ्चारयितब्बं। इदं, महाराज, आकासस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, आकासो सन्तासनीयो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बभवपटिसन्धिसु मानसं उब्बेजयितब्बं। अस्सादो न कातब्बो। इदं, महाराज, आकासस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आकासो अनन्तो अप्पमाणो अपरिमेय्यो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अनन्तसीलेन अपरिमितञाणेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आकासस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, आकासो अलग्गो असत्तो अपतिट्ठितो अपलिबुद्धो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुले गणे लाभे आवासे पलिबोधे पच्चये सब्बकिलेसेसु च सब्बत्थ अलग्गेन भवितब्बं, अनासत्तेन अपतिट्ठितेन अपलिबुद्धेन भवितब्बं। इदं, महाराज, आकासस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन सकपुत्तं राहुलं ओवदन्तेन—'सेय्यथापि, राहुल, आकासो न कत्थचि पतिट्ठितो, एवमेव खो त्वं, राहुल, आकाससमं भावनं भावेहि। आकाससमं हि ते, राहुल, भावनं भावयतो उप्पन्नुप्पन्ना मनापामनापा फस्सा चित्तं न परियादाय ठस्सन्ती'" ति।

७. चन्दङ्गपञ्हो

२७. "भन्ते नागसेन, 'चन्दस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, चन्दो सुक्कपक्खे उदयन्तो उत्तरुत्तरिं वड्ढति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिया आगमाधिगमे पटिसल्लाने सति-

पट्ठाने इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताय भोजने मत्तञ्ञुताय जागरियानुयोगे उत्तरुत्तरिं वड्ढितब्बं। इदं, महाराज, चन्दस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, चन्दो उळाराधिपति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उळारच्छन्दाधिपतिना भवितब्बं। इदं, महाराज, चन्दस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, चन्दो निसाय चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पविवित्तेन भवितब्बं। इदं, महाराज, चन्दस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, चन्दो विमानकेतु; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सीलकेतुना भवितब्बं। इदं, महाराज, चन्दस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, चन्दो आयाचितपत्थितो उदेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आयाचितपत्थितेन कुलानि उपसङ्कमितब्बानि। इदं, महाराज, चन्दस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे**—'चन्दूपमा, भिक्खवे, कुलानि उपसङ्कमथ। अपकस्सेव कायं अपकस्स चित्तं निच्चनवता कुलेसु अप्पगब्भा'" ति।

८. सुरियङ्गपञ्हो

२८. "भन्ते नागसेन, 'सुरियस्स सत्त अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि सत्त गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, सुरियो सब्बं उदकं परिसोसेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बकिलेसा अनवसेसं परिसोसेतब्बा। इदं, महाराज, सुरियस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सुरियो तमन्धकारं विधमति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बं रागतमं दोसतमं मोहतमं मानतमं दिट्ठितमं किलेसतमं सब्बं दुच्चरिततमं विधमयितब्बं। इदं, महाराज, सुरियस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, सुरियो अभिक्खणं चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अभिक्खणं योनिसोमनसिकारो कातब्बो। इदं, महाराज, सुरियस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सुरियो रंसिमाली; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आरम्मणमालिना भवितब्बं। इदं, महाराज, सुरियस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सुरियो महाजनकायं सन्तापेन्तो चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिया झानविमोक्खसमाधिसमापत्तिइन्द्रियबलबोज्झङ्गसतिपट्ठानसम्मप्पधानइद्धिपादेहि सदेवको लोको सन्तापयितब्बो। इदं, महाराज, सुरियस्स **पञ्चमं अङ्गं** वेदितब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सुरियो राहुभया भीतो होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन दुच्चरितदुग्गतिविसमकन्तारविपाकविनिपातकिलेस-जालजटिते दिट्ठिसङ्घातपटिमुत्ते कुपथपक्खन्दे कुम्मग्गपटिपन्ने सत्ते दिस्वा महता संवेगभयेन मानसं संवेजेतब्बं। इदं, महाराज, सुरियस्स छट्ठं अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, सुरियो कल्याणपापके दस्सेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इन्द्रियबलबोज्झंगसतिपट्ठानसम्मप्पधानइद्धि-पादलोकियलोकुत्तरधम्मा दस्सेतब्बा। इदं, महाराज, सुरियस्स **सत्तमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन वङ्गीसेन—

'यथापि सुरियो उदयन्तो, रूपं दस्सेति पाणिनं।
सुचिं च असुचिं चापि, कल्याणं चापि पापकं॥
तथा भिक्खु धम्मधरो, अविज्जापिहितं जनं।
पथं दस्सेति विविधं, आदिच्चोवुदयं यथा'' ति॥

९. सक्कङ्गपञ्हो

२९. 'भन्ते नागसेन, 'सक्कस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी'' ति ? "यथा, महाराज, सक्को एकन्तसुखसमप्पितो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन एकन्त-पविवेकसुखाभिरतेन भवितब्बं। इदं, महाराज, सक्कस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, सक्को देवे दिस्वा पग्गण्हाति, हासमभिजनेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुसलेसु धम्मेसु अलीनमतन्दितं सन्तं मानसं पग्गहेतब्बं, हासमभिजनेतब्बं, उट्ठहितब्बं घटितब्बं वायमितब्बं। इदं, महाराज, सक्कस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सक्कस्स अनभिरति नुप्पज्जति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सुञ्ञागारे अनभिरति न उप्पादेतब्बा। इदं, महाराज, सक्कस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सुभूतिना—

'सासने ते महावीर, यतो पब्बजितो अहं।
नाभिजानामि उप्पन्नं, मानसं कामसंहितं'' ति॥

१० चक्कवत्तिङ्गपञ्हो

३०. "भन्ते नागसेन, 'चक्कवत्तिस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी'' ति ? "यथा, महा-राज, चक्कवत्ती बहूहि सङ्गहवत्थूहि जनं सङ्गण्हाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चतस्सन्नं परिसानं मानसं सङ्गहेतब्बं अनुग्गहेतब्बं सम्पहं-सेतब्बं। इदं, महाराज, चक्कवत्तिस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, चक्कवत्तिस्स विजिते चोरा न उट्ठहन्ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कामरागब्यापादविहिंसावितक्का न उप्पादेतब्बा। इदं, महाराज, चक्कवत्तिस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'वितक्कूपसमे च यो रतो, असुभं भावयते सदा सतो।
एस खो ब्यन्तिकाहिति, एस छेच्छति मारबन्धनं' ति॥

"पुन च परं, महाराज, चक्कवत्ती दिवसे समुद्दपरियन्तं महापठविं अनुयायति कल्याणपापकानि विचिनमानो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं दिवसे दिवसे पच्चवेक्खितब्बं—'किन्नु खो मे इमेहि तीहि ठानेहि अनुपवज्जस्स दिवसो वीतिवत्तती' ति। इदं, महाराज, चक्कवत्तिस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **अङ्गुत्तरनिकायवरे**—'कथम्भूतस्स मे रत्तिन्दिवा वीतिवत्तन्ती ति पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं' ति।

"पुन च परं, महाराज, चक्कवत्तिस्स अब्भन्तरबाहिरा रक्खा सुसंविहिता होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अब्भन्तरानं बाहिरानं किलेसानं आरक्खाय सतिदोवारिको ठपेतब्बो। इदं, महाराज, चक्कवत्तिस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं। "भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—'सतिदोवारिको, भिक्खवे, अरियसावको अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति, अनवज्जं भावेति, सुद्धमत्तानं परिहरती" ति।

ततियो पथविवग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं

पथवी आपो च तेजो च, वायो पब्बतेन च।
आकासो चन्दसुरियो च, सक्को च चक्कवत्तिना ति॥

४. उपचिकावग्गो

१. उपचिकङ्गपञ्हो

३१. "भन्ते नागसेन, 'उपचिकाय एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, उपचिका उपरिच्छदनं कत्वा अत्तानं पिदहित्वा गोचराय चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सीलसंवरछदनं कत्वा मानसं पिदहित्वा पिण्डाय चरितब्बं। सीलसंवरछदनं कत्वा मानसं पिण्डाय चरितब्बं। सीलसंवरछदनेन खो, महाराज, योगी

योगावचरो सब्बभयसमतिक्कन्तो होति। इदं, महाराज, उपचिकाय एकं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपसेनेन वङ्गन्तपुत्तेन—

'सीलसंवरछदनं, योगी कत्वान मानसं।
अनूपलित्तो लोकेन, भया च परिमुच्चती'' ति॥

२. बिळारपञ्हो

३२. ''भन्ते नागसेन, 'बिळारस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि अङ्गानि गहेतब्बानी'' ति? ''यथा, महाराज, बिळारो गुहागतो पि सुसिरगतो पि हम्मियन्तरगतो पि उन्दूरं येव परियेसति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन गामगतेनापि अरञ्ञगतेनापि रुक्खमूलगतेनापि सुञ्ञागारगतेनापि सततं समितं अप्पमत्तेन कायगतासतिभोजनं येव परियेसितब्बं। इदं, महाराज, बिळारस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

''पुन च परं, महाराज, बिळारो आसन्ने येव गोचरं परियेसति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इमेसु येव पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु उदयब्बयानुपस्सिना विहरितब्बं—'इति रूपं', 'इति रूपस्स समुदयो', 'इति रूपस्स अत्थङ्गमो', 'इति वेदना', 'इति वेदनाय समुदयो', 'इति वेदनाय निरोधो', 'इति सञ्ञा', 'इति सञ्ञाय समुदयो', इति सञ्ञाय अत्थङ्गमो'; 'इति सङ्खारा', 'इति सङ्खारानं अत्थङ्गमो', 'इति विञ्ञाणं', 'इति विञ्ञाणस्स अत्थङ्गमो' ति। इदं, महाराज, बिळारस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

''भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'न इतो दूरे भवितब्बं, भवग्गं किं करिस्सति?
पच्चुप्पन्नम्हि वोहारे, सके कायम्हि विन्दथा''' ति॥

३. उन्दुरङ्गपञ्हो

३३. ''भन्ते नागसेन, 'उन्दुरस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं'' ति? ''यथा, महाराज, उन्दुरो इतो चितो च विचरन्तो आहारूपसीसको येव चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इतो चितो च विचरन्तेन योनिसो मनसिकारूपसीसकेनेव भवितब्बं। इदं, महाराज, उन्दुरस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपसेनेन वङ्गन्तपुत्तेन—

'धम्मासीसं करित्वान, विहरन्तो विपस्सको।
अनोलीनो विहरति, उपसन्तो सदा सतो'' ति॥

४. विच्छिकङ्गपञ्हो

३४. ''भन्ते नागसेन, 'विच्छिकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं'' ति? यथा, महाराज, विच्छिको नङ्गुलावुधो, नङ्गुलं

उस्सापेत्वा चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ञाणावुधेन भवितब्बं, ञाणं उस्सापेत्वा विहरितब्बं। इदं, महाराज, विच्छिकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपसेनेन वङ्गन्तपुत्तेन—

'ञाणखग्गं गहेत्वान, विहरन्तो विपस्सको।
परिमुच्चति सब्बभया, दुप्पसहो च सो भवे''' ति॥

५. नकुलङ्गपञ्हो

३५. "भन्ते नागसेन, 'नकुलस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, नकुलो उरगमुपगच्छन्तो भेसज्जेन कायं परिभावेत्वा उरगमुपगच्छति गहेतुं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कोधाघातबहुलं कलहविग्गहविवादविरोधाभिभूतं लोकमुपगच्छन्तेन मेत्ताभेसज्जेन मानसं अनुलिम्पितब्बं। इदं, महाराज, नकुलस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'तस्मा सकं परेसं पि, कातब्बा मेत्तभावना।
मेत्तचित्तेन फरितब्बं, एतं बुद्धान सासनं''' ति॥

६. जरसिङ्गालपञ्हो

३६. "भन्ते नागसेन, 'जरसिङ्गालस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, जरसिङ्गालो भोजनं पटिलभित्वा अजिगुच्छमानो यावदत्थं आहरियति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन भोजनं पटिलभित्वा अजिगुच्छमानेन सरीरयापनमत्तमेव परिभुञ्जितब्बं। इदं, महाराज, जरसिङ्गालस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन महाकस्सपेन—

'सेनासनम्हा ओरुय्ह, गामं पिण्डाय पाविसिं।
भुञ्जन्तं पुरिसं कुट्ठिं, सक्कच्च नं उपट्ठहिं॥
सो मे पक्केन हत्थेन, आलोपं उपनामयि।
आलोपं पक्खिपन्तस्स, अङ्गुलि पेत्थ छिज्जथ॥
कुड्डमूलं च निस्साय, आलोपं तं अभुञ्जिसं।
भुञ्जमाने वा भुत्ते वा, जेगुच्छं मे न विज्जती' ति॥

"पुन च परं, महाराज, जरसिङ्गालो भोजनं पटिलभित्वा न विचिनाति लूखं वा पणीतं वा ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन भोजनं पटिलभित्वा न विचिनितब्बं—लूखं वा पणीतं वा सम्पन्नं वा असम्पन्नं वा' ति। यथालद्धेन सन्तुस्सितब्बं। इदं, महाराज, जरसिङ्गालस्स दुतियं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपसेनेन वङ्गन्तपुत्तेन—

'लूखेन पि च सन्तुस्से, नाञ्ञं पत्थे रसं बहुं।
रसेसु अनुगिद्धस्स, झाने न रमते मनो।
इतरीतरेन सन्तुट्ठो, सामञ्ञं परिपूरती'" ति ॥

७. मिगङ्गपञ्हो

३७. "भन्ते नागसेन, 'मिगस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि अङ्गानी" ति ? "यथा, महाराज, मिगो दिवा अरञ्ञे चरति, रत्तिं अब्भोकासे; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन दिवा अरञ्ञे विहरितब्बं, रत्तिं अब्भोकासे। इदं, महाराज, मिगस्स **पठमं** अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **लोमहंसनपरियाये**—'सो खो अहं, सारिपुत्त, या ता रत्तियो सीता हेमन्तिका अन्तरट्ठके हिमपातसमये तथारूपासु रत्तिसु रत्तिं अब्भोकासे विहरामि, दिवा वनसण्डे। गिम्हानं पच्छिमे मासे दिवा अब्भोकासे विहरामि रत्तिं वनसण्डे' ति।

"पुन च परं, महाराज, मिगो सत्तिम्हि वा सरे वा ओपतन्ते वञ्चेति पलायति, न कायमुपनेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन किलेसेसु ओपतन्तेसु वञ्चयितब्बं पलायितब्बं, न चित्तमुपनेतब्बं। इदं, महाराज, मिगस्स **दुतियं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मिगो मनुस्से दिस्वा येन वा तेन वा पलायति—'मा मं ते अद्दसंसू' ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन भण्डनकलहविग्गहविवादसीले पुरिसे दुस्सीले कुसीते सङ्गणिकारामे दिस्वा येन वा तेन वा पलायितब्बं—'मा मं ते अद्दसंसु, अहं च ते मा अद्दसं' ति। इदं, महाराज, **ततियं** अङ्गं गहेतब्बं ति। भासितं पेतं, महाराज, सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'मा मे कदाचि पापिच्छो, कुसीतो हीनवीरियो।
अप्पस्सुतो अनाचारो, समेतो कत्थची अहू'" ति ॥

८. गोरूपङ्गपञ्हो

३८. "भन्ते नागसेन, 'गोरूपस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, गोरूपो सकं गेहं न विजहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सको कायो न विजहितब्बो—'अनिच्चुच्छादनपरिमद्दनभेदनविकिरणविद्धंसनधम्मो अयं कायो' ति। इदं, महाराज, गोरूपस्स **पठमं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, गोरूपो आदिण्णधुरो सुखदुक्खेन धुरं वहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आदिण्णब्रह्मचरियेन सुखदुक्खेन याव जीवितपरियादाना आपाणकोटिकं ब्रह्मचरियं चरितब्बं। इदं, महाराज, गोरूपस्स **दुतियं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, गोरूपो छन्देन घायमानो पानीयं पिबति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आचरियुपज्झायानं अनुसिट्ठि छन्देन पेमेन पसादेन घायमानेन पटिग्गहेतब्बा। इदं, महाराज, गोरूपस्स ततियं अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, गोरूपो येन केनचि वाहियमानो वहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन थेरनवमज्झिमभिक्खूनं पि गिहिउपासकस्सापि ओवादानुसासनी सिरसा सम्पटिच्छितब्बा। इदं, महाराज, गोरूपस्स चतुत्थं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'तदहु पब्बजितो सन्तो, जातिया सत्तवस्सिको।
सो पि मं अनुसासेय्य, सम्पटिच्छामि मत्थके॥
तिब्बं छन्दं च पेमं च, तस्मि दिस्वा उपट्ठपे।
ठपेय्याचरियट्ठाने, सक्कच्च नं पुनप्पुनं'" ति॥

९. वराहङ्गपञ्हो

३९. "भन्ते नागसेन, 'वराहस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? यथा, महाराज, वराहो सन्तत्तकठिते गिम्हसमये सम्पत्ते उदकं उपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन दोसेन चित्ते आलुळितखलितविब्भन्तसन्तत्ते सीतलामतपणीतमेत्ताभावनं उपगन्तब्बं। इदं, महाराज, वराहस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, वराहो चिखल्लमुदकमुपगन्त्वा नासिकाय पठविं खणित्वा दोणिं कत्वा दोणिकाय सयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन मानसे कायं निक्खिपित्वा आरम्मणन्तरगतेन सयितब्बं। इदं, महाराज, वराहस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

भासितं पेतं, महाराज, थेरेन पिण्डोलभारद्वाजेन—

'काये सभावं दिस्वान, विचिनित्वा विपस्सको।
एकाकियो अदुतियो, सेति आरम्मणन्तरे'" ति॥

१०. हत्थिङ्गपञ्हो

४०. "भन्ते नागसेन, 'हत्थिस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, हत्थी नाम चरन्तो येव पठविं दालेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कायं सम्मसमानेनेव सब्बे किलेसा दालेतब्बा। इदं, महाराज, हत्थिस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, हत्थी सब्बकायेनेव अपलोकेति, उजुकं येव पेक्खति, न दिसाविदिसा विलोकेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बकायेन अपलोकिना भवितब्बं, न दिसाविदिसा विलोकेतब्बा, न उद्धं उल्लोके-

तब्बं न अधो ओलोकेतब्बं, युगमत्तं पेक्खिना भवितब्बं। इदं, महाराज, हत्थिस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, हत्थी अनिबद्धसयनो गोचरायानुगन्त्वा न तमेव देसं वासत्थमुपगच्छति, न धुवपतिट्ठालयो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अनिबद्धसयनेन भवितब्बं, निरालयेन पिण्डाय गन्तब्बं। यदि पस्सति विपस्सको मनुञ्ञं पतिरूपं रुचिरदेसे भवं मण्डपं वा रुक्खमूलं वा गुहं वा पब्भारं वा, तत्थेव वासमुपगन्तब्बं, धुवप्पतिट्ठालयो न कातब्बो। इदं, महाराज, हत्थिस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, हत्थी उदकं ओगाहेत्वा सुचिविमलसीतलसलिलपरिपुण्णं कुमुदुप्पलपदुमपुण्डरीकसञ्छन्नं महतिमहन्तं पदुमसरं ओगाहित्वा कीळति गजवरकीळं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सुचिविमलविप्पसन्नमनाविलधम्मवरवारिपुण्णं विमुत्तिकुसुमसञ्छन्नं महासतिपट्ठानपोक्खरणिं ओगाहित्वा ञाणेन सङ्खारा ओधुनितब्बा विधुनितब्बा, योगावचरकीळा कीळितब्बा। इदं, महाराज, हत्थिस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, हत्थी सतो पादं उद्धरति, सतो पादं निक्खपति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सतेन सम्पजानेन पादं उद्धरितब्बं, सतेन सम्पजानेन पादं निक्खिपितब्बं, अभिक्कमपटिक्कमे सम्मिञ्जनपसारणे सब्बत्थ सतेन सम्पजानेन भवितब्बं। इदं, महाराज, हत्थिस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे**—

'कायेन संवरो साधु, साधु वाचाय संवरो।
मनसा संवरो साधु, साधु सब्बत्थ संवरो॥
सब्बत्थ संवुतो लज्जी, रक्खितो ति पवुच्चती'" ति।

चतुत्थो उपचिकावग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं

उपचिका बिलारो च, उन्दुरो विच्छिकेन च।
नकुलो सिङ्गालो मिगो, गोरूपो वराहो हत्थिना दसा ति॥

५. सीहवग्गो

१. सीहङ्गपञ्हो

४१. "भन्ते नागसेन, 'सीहस्स सत्त अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि सत्त अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, सीहो नाम सेतविमलपरिसुद्धपण्डरो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सेतविमलपरिसुद्धपण्डरचित्तेन ब्यपगतकुक्कुच्चेन भवितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **पठमं**

अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, सीहो चतुचरणो विक्कन्तचारी; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चतुरिद्धिपादचरणेन भवितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सीहो अभिरूपरुचिरकेसरी; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अभिरूपचिरसीलकेसरिना भवितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

'पुन च परं, महाराज, सीहो जीवितपरियादाने पि न कस्सचि ओनमति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारपरियादाने पि न कस्सचि ओनमितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सीहो सपदानभक्खो यस्मिं ओकासे निपतति, तत्थेव यावदत्थं भक्खयति, न वरमंसं विचिनाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सपदानभक्खेन भवितब्बं, न कुलानि विचिनितब्बानि, न पुब्बगेहं हित्वा कुलानि उपसङ्कमितब्बानि, न भोजनं विचिनितब्बं, यस्मिं ओकासे कबळं आदियति तस्मिं येव ओकासे भुञ्जितब्बं सरीरयापनत्थं, न वरभोजनं विचिनितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सीहो असन्निधिभक्खो, सकिं गोचरं भक्खयित्वा न पुन तं उपगच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन असन्निधिकारपरिभोगिना भवितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **छट्ठं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सीहो भोजनं अलद्धा न परितस्सति, लद्धा पि भोजनं अगधितो अमुच्छितो अनज्झापन्नो परिभुञ्जति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन भोजनं अलद्धा न परितस्सितब्बं, लद्धा पि भोजनं अगधितेन अमुच्छितेन अनज्झापन्नेन आदीनवदस्साविना निस्सरणपञ्ञेन परिभुञ्जितब्बं। इदं, महाराज, सीहस्स **सत्तमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे** थेरं महाकस्सपं परिकित्तयमानेन—'सन्तुट्ठोयं, भिक्खवे, कस्सपो इतरीतरेन पिण्डपातेन, इतरीतरपिण्डपातसन्तुट्ठिया च वण्णवादी, न च पिण्डपातहेतु अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जति, अलद्धा च पिण्डपातं न परितस्सति, लद्धा च पिण्डपातं अगधितो अमुच्छितो अनज्झापन्नो आदीनवदस्सावी निस्सरणपञ्ञो परिभुञ्जती''' ति।

२. चक्कवाकङ्गपञ्हो

४२. "भन्ते नागसेन, 'चक्कवाकस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज,

चक्कवाको याव जीवितपरियादाना दुतियिकं न विजहति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन याव जीवितपरियादाना योनिसो मनसिकारो न विजहितब्बो। इदं, महाराज, चक्कवाकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

'पुन च परं, महाराज, चक्कवाको सेवालपणकभक्खो, तेन च सन्तुट्ठिमापज्जति, ताय च सन्तुट्ठिया बलेन च वण्णेन च न परिहायति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन यथालाभसन्तोसो करणीयो। यथालाभसन्तुट्ठो खो, महाराज, योगी योगावचरो न परिहायति सीलेन, न परिहायति समाधिना, न परिहायति पञ्ञाय, न परिहायति विमुत्तिया, न परिहायति विमुत्तिञाणदस्सनेन, न परिहायति सब्बेहि कुसलेहि धम्मेहि। इदं, महाराज, चक्कवाकस्स **दुतियं** अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, चक्कवाको पाणे न विहेठयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन निहितदण्डेन निहितसत्थेन लज्जिना दयापन्नेन सब्बपाणभूतहितानुकम्पिना भवितब्बं। इदं, महाराज, चक्कवाकस्स ततियं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन चक्कवाकजातके—

'यो न हन्ति न घातेति, न जिनाति, न जापये।
मेत्तंसो सब्बभूतेसु, वेरं तस्स न केनची'' ति॥

३. पेणाहिकङ्गपञ्हो

४३. "भन्ते नागसेन, 'पेणाहिकाय द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, पेणाहिका सकपतिम्हि उसूयाय छापके न पोसयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सकमने किलेसे उप्पन्ने उसूयायितब्बं, सतिपट्ठानेन सम्मासंवरसुसिरे पक्खिपित्वा मनोद्वारे कायगतासति भावेतब्बा। इदं, महाराज पेणाहिकाय **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पेणाहिका पवने दिवसं गोचरं चरित्वा सायं पक्खिगणं उपेति अत्तनो गुत्तिया; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन एककेन पविवेकं सेवितब्बं संयोजनपरिमुत्तिया। तत्र रतिं अलभमानेन उपवादभयपरिरक्खणाय सङ्घं ओसरित्वा सङ्घरक्खितेन वसितब्बं। इदं, महाराज, पेणाहिकाय **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

भासितं पेतं, महाराज, ब्रह्मुना सहम्पतिना भगवतो सन्तिके—

'सेवेथ पन्तानि सेनासनानि, चरेय्य संयोजनविप्पमोक्खो।
सचे रतिं नाधिगच्छेय्य तत्थ, सङ्घे वसे रक्खितत्तो सतीमा''' ति।

४. घरकपोतकङ्गपञ्हो

४४. "भन्ते नागसेन, 'घरकपोतस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं

तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, घरकपोतो परगेहे वसमानो न तेसं किञ्चि भण्डस्स निमित्तं गण्हाति, मज्झत्तो वसति सञ्ञाबहुलो; एवमेव खो महाराज, योगिना योगावचरेन परकुलं उपगतेन तस्मिं कुले इत्थीनं वा पुरिसानं वा मञ्चे वा पीठे वा वत्थे वा अलङ्कारे वा उपभोगे वा भोजनविकतीसु वा न निमित्तं गहेतब्बं, मज्झत्तेन भवितब्बं, समणसञ्ञा पच्चुपट्ठपेतब्बा। इदं, महाराज, घरकपोतस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं।

भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **चुल्लनारदजातके**—

'पविसित्वा परकुलं, पानेसु भोजनेसु वा।
मितं खादे, मितं भुञ्जे, न च रूपे मनं करे'" ति॥

५. उलूकङ्गपञ्हो

४५. "भन्ते नागसेन, 'उलूकस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, उलूको काकेहि पटिविरुद्धो रत्तिं काकसङ्घं गन्त्वा बहू पि काके हनति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अञ्ञाणेन पटिविरोधो कातब्बो, एकेन रहो निसीदित्वा अञ्ञाणं सम्पमद्दितब्बं, मूलतो छिन्दितब्बं। इदं, महाराज, उलूकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, उलूको सुपटिसल्लीनो होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पटिसल्लानारामेन भवितब्बं पटिसल्लानरतेन। इदं, महाराज उलूकस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **संयुत्तनिकायवरे**—'इध, भिक्खवे, भिक्खु पटिसल्लानरतो—'इदं दुक्खं' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खसमुदयो' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधो' ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा' ति यथाभूतं पजानाति।

६. सतपत्तङ्गपञ्हो

४६. "भन्ते नागसेन, 'सतपत्तस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, सतपत्तो रवित्वा परेसं खेमं वा भयं वा आचिक्खति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन परेसं धम्मं देसयमानेन विनिपातं भयतो दस्सयितब्ब, निब्बानं खेमतो दस्सयितब्बं। इदं, महाराज, सतपत्तस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज थेरेन पिण्डोलभारद्वाजेन—

'निरये भयसन्तासं, निब्बाने विपुलं सुखं।
उभयानेतानि अत्थानि, दस्सेतब्बानि योगिना'" ति॥

७. वग्गुलिङ्गपञ्हो

४७. "भन्ते नागसेन, 'वग्गुलिस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, वग्गुलि गेहं पविसित्वा विचरित्वा निक्खमति, न तत्थ पलिबुद्धति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन गामं पिण्डाय पविसित्वा सपदानं विचरित्वा पटिलद्धलाभेन खिप्पमेव निक्खमितब्बं। न तत्थ पलिबुद्धेन भवितब्बं। इदं, महाराज, वग्गुलिस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, वग्गुलि परगेहे वसमानो न तेसं परिहानिं करोति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुलानि उपसङ्कमित्वा अतियाचनाय विञ्ञत्तिबहुलताय वा कायदोसबहुलताय वा अतिभाणिताय वा समानसुखदुक्खताय वा न तेसं कोचि विप्पटिसारो करणीयो, न पि तेसं मूलकम्मं परिहापेतब्बं, सब्बथा वड्ढि येव इच्छितब्बा। इदं, महाराज, वग्गुलिस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **दीघनिकायवरे** लक्खणसुत्तन्ते—

'सद्धाय सीलेन सुतेन बुद्धिया, चागेन धम्मेन बहूहि साधुहि।
धनेन धञ्ञेन च खेत्तवत्थुना, पुत्तेहि दारेहि चतुप्पदेहि च॥
ञातीहि मित्तेहि च बन्धवेहि, बलेन वण्णेन सुखेन चूभयं।
'कथं न हायेय्युं परे' ति इच्छति, अत्थस्समिद्धिं च पनाभिकङ्खती'" ति॥

८. जलूकपञ्हो

४८. "भन्ते नागसेन, 'जलूकाय एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? "यथा, महाराज, जलूका यत्थ अल्लीयति तत्थेव दळ्हं अल्लीयित्वा रुधिरं पिवति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन यस्मिं आरम्मणे चित्तं अल्लीयति, तं आरम्मणं वण्णतो च सण्ठानतो च दिसतो च ओकासतो च परिच्छेदतो च लिङ्गतो च निमित्ततो च दळ्हं पतिट्ठापेत्वा तेनेवारम्मणेन विमुत्तरसमसेचनकं पातब्बं। इदं, महाराज, जलूकाय **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन अनुरुद्धेन—

'परिसुद्धेन चित्तेन, आरम्मणे पतिट्ठाय।
तेन चित्तेन पातब्बं, विमुत्तिरसमसेचनं'" [ति]।

१०. सप्पङ्गपञ्हो

४९. "भन्ते नागसेन, 'सप्पस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, सप्पो उरेन गच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगवचरेन पञ्ञाय चरितब्बं। पञ्ञाय चरमानस्स खो, महाराज, योगिनो चित्तं ञाये चरति, विलक्खणं विवज्जेति, सलक्खणं भावेति। इदं, महाराज, सप्पस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सप्पो चरमानो ओसधं परिवज्जेन्तो चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन दुच्चरितं परिवज्जन्तेन चरितब्बं। इदं, महाराज, सप्पस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, सप्पो मनुस्से दिस्वा तप्पति सोचति चिन्तयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन कुवितक्के वितक्केत्वा अरतिं उप्पादयित्वा तप्पितब्बं सोचितब्बं चिन्तयितब्बं—'पमादेन मे दिवसो वीतिनामितो, न सो पुन सक्का लद्धुं' ति। इदं, महाराज, सप्पस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, **भल्लाटियजातके** द्विन्नं किन्नरानं—

'मयेकरत्ति विप्पवसिम्ह लुद्द, अकामका अञ्ञमञ्ञं सरन्ता।
तमेकरत्तिं अनुतप्पमाना, सोचाम सा रत्ति पुनं न हेस्सती''' ति॥

१०. अजगरङ्गपञ्हो

५०. "भन्ते नागसेन, 'अजगरस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं गहेतब्बं" ति। "यथा महाराज, अजगरो महतिमहाकायो बहू पि दिवसे ऊनूदरो दीनतरो कुच्छिपूरं आहारं न लभति, अपरिपुण्णो येव यावदेव सरीरयापनमत्तकेन यापेति; एवमेव खो, महाराज, योगिनो योगावचरस्स सिक्खाचरियप्पसुतस्स परपिण्डमुपगतस्स परदिन्नपाटिकङ्खिस्स सयंगाहपटिविरतस्स दुल्लभं उदरपरिपूरं आहारं, अपि च अत्थवसिकेन कुलपुत्तेन चत्तारो पञ्च आलोपे अभुञ्जित्वा अवसेसं उदकेन परिपूरेतब्बं। इदं, महाराज, अजगरस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'अल्लं सुक्खं च भुञ्जन्तो, न बाळ्हं सुहितो सिया।
ऊनूदरो मिताहारो, सतो भिक्खु परिब्बजे॥
चत्तारो पञ्च आलोपे, अभुत्वा उदकं पिवे।
अलं फासुविहाराय, पहितत्तस्स भिक्खुनो''' ति॥

पञ्चमो सीहवग्गो निट्ठितो।

तस्सुद्दानं

केसरी चक्कवाको च, पेणाहि घरकपोतको।
उलूको सतपत्तो च, वग्गुली च जलूपिका।
सप्पो अजगरो चेव, वग्गो तेन पवुच्चती ति॥

६. मक्कटवग्गो

१. पन्थमक्कटपञ्हो

५१. "भन्ते नागसेन, 'पन्थमक्कटकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, पन्थमक्कटको पन्थे मक्कटकजालवितानं कत्वा यदि तत्थ जालके लग्गति—किमी वा मक्खिका वा

पतङ्गो वा, तं गहेत्वा भक्खयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन छसु द्वारेसु सतिपट्ठानजालवितानं कत्वा यदि तत्थ किलेसमक्खिका बज्झन्ति, तत्थेव घातेतब्बा। इदं, महाराज, पन्थमक्कटकस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, थेरेन अनुरुद्धेन—

'चित्तं नियमे छसु द्वारेसु, सतिपट्ठानवरुत्तमे।
किलेसा तत्थ लग्गा चे, हन्तब्बा ते विपस्सिना''' ति॥

२. थनस्सितदारकङ्गपञ्हो

५२. "भन्ते नागसेन, 'थनस्सितदारकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, थनस्सितदारको सदत्थे लग्गति, खीरत्थिको रोदति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सदत्थे लग्गितब्बं, सब्बत्थ धम्मञाणेन भवितब्बं, उद्देसे परिपुच्छाय सम्मप्पयोगे पविवेके गरुसंवासे कल्याणमित्तसेवने। इदं, महाराज, थनस्सितदारकस्स **एकं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **दीघनिकायवरे** परिनिब्बानसुत्तन्ते—'इङ्घ तुम्हे, आनन्द, सदत्थे घटथ, सदत्थे अनुयुञ्जथ, सदत्थे अप्पमत्ता आतापिनो पहितत्ता विहरथा''' ति।

३. चित्तकधरकुम्मङ्गपञ्हो

५३. "भन्ते नागसेन, 'चित्तकधरकुम्मस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति? "यथा, महाराज, चित्तकधरकुम्मो उदकभया उदकं परिवज्जेत्वा विचरति, ताय च पन उदकं परिवज्जनाय आयुना न परिहायति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पमादे भयदस्साविना भवितब्बं, अप्पमादे गुणविसेसदस्साविना, ताय च पन भयदस्साविताय न परिहायति सामञ्ञा, निब्बानस्स सन्तिके उपेति। इदं, महाराज, चित्तकधरकुम्मस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं ति। "भासितं पेतं, महाराज, देवातिदेवेन **धम्मपदे**—

'अप्पमादरतो भिक्खु, पमादे भयदस्सि वा।
अभब्बो परिहानाय, निब्बानस्सेव सन्तिके''' ति॥

४. पवनङ्गपञ्हो

५४. "भन्ते नागसेन, 'पवनस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, पवनं नाम असुचिजनं पटिच्छादेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन परेसं अपरद्धं खलितं पटिच्छादेतब्बं, न विवरितब्बं। इदं, महाराज, पवनस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पवनं सुञ्ञं पचुरजनेहि; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन रागदोसमोहमानदिट्ठिजालेहि सब्बेहि च किलेसेहि सुञ्ञेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पवनस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पवनं विवित्तं जनसम्बाधरहितं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पापकेहि अकुसलेहि धम्मेहि अनरियेहि पविवित्तेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पवनस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पवनं सन्तं परिसुद्धं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सन्तेन परिसुद्धेन भवितब्बं, निब्बुतेन पहीनमानेन पहीनमक्खेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पवनस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, पवनं अरियजनसंसेवितं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अरियजनसंसेवितेन भवितब्बं। इदं, महाराज, पवनस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, देवातिदेवेन संयुत्तनिकायवरे—

'पविवित्तेहि अरियेहि, पहितत्तेहि झायिहि।
निच्चं आरद्धविरियेहि, पण्डितेहि सहावसे'" ति॥

५. रुक्खङ्गपञ्हो

५५. "भन्ते नागसेन, 'रुक्खस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तीनि तीणि अङ्गानो' ति ? "यथा, महाराज, रुक्खो नाम पुप्फफलधरो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन विमुत्तिपुप्फसामञ्ञफलधारिना भवितब्बं। इदं, महाराज, रुक्खस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज रुक्खो उपगतानं अनुप्पविट्ठानं जनानं छायं देति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उपगतानं अनुप्पविट्ठानं पुग्गलानं आमिसपटिसन्थारेन वा धम्मपटिसन्थारेन वा पटिसन्थरितब्बं। इदं, महाराज, रुक्खस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, रुक्खो छायावेमत्तं न करोति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बसत्तेसु वेमत्तता न कातब्बा, चोरवधकपच्चत्थिकेसु पि अत्तनि पि समसमा मेत्ताभावना कातब्बा—'किन्ति इमे सत्ता अवेरा अब्यापज्जा अनीघा सुखी अत्तानं परिहरेय्युं' ति। इदं, महाराज, रुक्खस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'वधके देवदत्तम्हि, चोरे अङ्गुलिमालके।
धनपाले राहुले च, सब्बत्थ समको मुनी" ति॥

६. मेघङ्गपञ्हो

५६ "भन्ते नागसेन, मेघस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, मेघो उप्पन्नं रजोजल्लं वूपसमेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उप्पन्नं किलेसरजोजल्लं वूपसमेतब्बं। इदं महाराज, मेघस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मेघो पठविया उण्हं निब्बापेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन मेत्ताभावनाय सदेवको लोको निब्बापेतब्बो। इदं, महाराज, मेघस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च महाराज, मेघो सब्बबीजानि विरूहापेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बसत्तानं सद्धं उप्पादेत्वा तं सद्धाबीजं तीसु सम्पत्तीसु रोपेतब्बं, दिब्बमानुसिकासु सुखसम्पत्तिसु याव परमत्थ निब्बानसुखसम्पत्ति। इदं, महाराज, मेघस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मेघो उतुतो समुट्ठहित्वा धरणितलरुहे तिणरुक्खलतागुम्बओसधिवनप्पतयो परिरक्खति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन योनिसो मनसिकारं निब्बत्तेत्वा तेन योनिसो मनसिकारेन समणधम्मो परिरक्खितब्बो, योनिसो मनसिकारमूला सब्बे कुसला धम्मा। इदं, महाराज, मेघस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मेघो वस्समानो नदीतळाकपोक्खरणियो कन्दरपदरसरसोब्भउदपानानि च परिपूरेति उदकधाराहि; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आगमपरियत्तिया धम्ममेघमभिवस्सयित्वा अधिगमकामानं मानसं परिपूरयितब्बं। इदं, महाराज, मेघस्स **पञ्चमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'बोधनेय्यं जनं दिस्वा, सतसहस्से पि योजने।
खणेन उपगन्त्वान, बोधेति तं महामुनी'" ति॥

७. मणिरतनङ्गपञ्हो

५७. "भन्ते नागसेन, 'मणिरतनस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, मणिरतनं एकन्तपरिसुद्धं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन एकन्तपरिसुद्धाजीवेन भवितब्ब। इदं, महाराज, मणिरतनस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मणिरतनं न केनचि सद्धिं मिस्सीयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पापेहि पापसहायेहि सद्धिं न मिस्सितब्बं। इदं, महाराज, मणिरतनस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, मणिरतनं जातिरतनेहि योगीयति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उत्तमवरजातिमन्तेहि सद्धिं संवसितब्बं, पटिपन्नकफलट्ठसेखफलसमङ्गीहि सोतापन्नसकदागामिअनागामिअरहन्ततेविज्जछळभिञ्ञसमणमणिरतनेहि सद्धिं संवसितब्बं। इदं, महाराज, मणिरतनस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन **सुत्तनिपाते**

'सुद्धा सुद्धेहि संवासं, कप्पयव्हो पतिस्सता ।
ततो समग्गा निपका, दुक्खस्सन्तं करिस्सथा" ति ।।

८. मागविकङ्गपञ्हो

५८. "भन्ते नागसेन, 'मागविकस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, मागविको अप्पमिद्धो होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन अप्पमिद्धेन भवितब्बं । इदं, महाराज, मागविकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, मागविको मिगेसु येव चित्तं उपनिबन्धति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आरम्मणेसु येव चित्तं उपनिबन्धितब्बं । इदं, महाराज, मागविकस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, मागविको कालं कम्मस्स जानाति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पटिसल्लानस्स कालो जानितब्बो—'अयं कालो पटिसल्लानस्स, अयं कालो निक्खमनाया' ति । इदं, महाराज, मागविकस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, मागविको मिगं दिस्वा हासमभिजनेति—'इमं लच्छामी' ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आरम्मणे अभिरमितब्बं हासमभिजनेतब्बं—'उत्तरिं विसेसमभिगच्छामी' ति । इदं, महाराज, मागविकस्स **चतुत्थं अङ्गं** गहेतब्बं । भासितं पेतं, महाराज, थेरेन मोघराजेन—

'आरम्मणे लभित्वान, पहितत्तेन भिक्खुना ।
भिय्यो हासो जनेतब्बो—'अधिगच्छिस्सामि उत्तरिं'" ति ।

९. बाळिसिकङ्गपञ्हो

५९. "भन्ते नागसेन, 'बाळिसिकस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, बाळिसिको बळिसेन मच्छे उद्धरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन ञाणेन उत्तरिं सामञ्ञफलानि उद्धरितब्बानि । इदं, महाराज, बाळिसिकस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, बाळिसिको परित्तकं वधित्वा विपुलं लाभमधिगच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन परित्तलोकामिसमत्तं परिच्चजितब्बं । लोकामिसमत्तं, महाराज, परिच्चजित्वा योगी योगावचरो विपुलं सामञ्ञफलं अधिगच्छति । इदं महाराज, बाळिसिकस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं । भासितं पेतं, महाराज, थेरेन राहुलेन—

'सुञ्ञतं चानिमित्तं च, विमोक्खं चाप्पणिहितं ।
चतुरो फले छळभिञ्ञा, चजित्वा लोकामिसं लभे" ति ।।

१०. तच्छकङ्गपञ्हो

६०. "भन्ते नागसेन, तच्छकस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानिद्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, तच्छको काळसुत्तं अनुलोमेत्वा रुक्खं तच्छति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन जिनसासनमनुलोमयित्वा सीलपठवियं पतिट्ठहित्वा सद्धाहत्थेन पञ्ञावासिं गहेत्वा किलेसा तच्छेतब्बा । इदं, महाराज, तच्छकस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं ।

"पुन च परं, महाराज, तच्छको फेग्गुं अपहरित्वा सारमादियति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सस्सतं, उच्छेदं, तं जीवं तं सरीरं, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं, तदुत्तमं अञ्ञदुत्तमं, अकतमभब्बं, अपुरिसकारं, अब्रह्मचरियवासं, सत्तविनासं, नवसत्तपातुभावं, सङ्खारसस्सतभावं, यो करोति सो पटिसंवेदेति, अञ्ञो करोति अञ्ञो पटिसंवेदेति, कम्मफलदस्सना च किरियफलदिट्ठि च—इति एवरूपानि चेव अञ्ञानि च विवादपथानि अपनेत्वा सङ्खारानं सभावं परमसुञ्ञतं निरीहनिज्जीवतं अच्चन्तं सुञ्ञतं आदियितब्बं । इदं, महाराज, तच्छकस्स दुतियं अङ्गं गहेतब्बं ।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन सुत्तनिपाते—

'कारण्डवं निद्धमथ, कसम्बुं चापकस्सथ ।
ततो पलापे वाहेथ, अस्समणे समणमानिने ॥
निद्धमित्वान पापिच्छे, पापआचारगोचरे ।
सुद्धा सुद्धेहि संवासं, कप्पयव्हो पतिस्सता ॥
ततो समग्गा नियका, दुक्खस्सन्तं करिस्सथा'" ति ।

छट्ठो मक्कटकवग्गो निट्ठितो ।

तस्सुद्दानं

मक्कटो दारको कुम्मो, वनं रुक्खो च पञ्चमो ।
मेघो मणि मागविको, बाळिसी तच्छकेन चा ति ॥

७. कुम्भवग्गो

१. कुम्भङ्गपञ्हो

६१. "भन्ते नागसेन, 'कुम्भस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं' ति यं वदेसि, कतमं तं कुम्भस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं" ति ? 'यथा, महाराज, कुम्भो सम्पुण्णो न सणति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन आगमे अधिगमे परियत्तियं सामञ्ञे पारमिं पत्वा न सणितब्बं, न तेन मानो करणीयो, न दप्पो दस्सेतब्बो, निहतमानेन निहतदप्पेन भवितब्बं, उजुकेन अमुखरेन अविकत्थिना । इदं, महाराज, कुम्भस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं ।

"भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन सुत्तनिपाते—

'यदूनकं तं सणति, यं पूरं सन्तमेव तं।
रित्तकुम्भूपमो बालो, रहदो पूरो व पण्डितो'" ति ॥

२. कालायसङ्गपञ्हो

६२. "भन्ते नागसेन, 'काळायसस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? यथा, महाराज, काळायसो सुपीतो वमति; एवमेव खो, महाराज, योगिनो योगावचरस्स मानसं योनिसो मनसिकारेन अपीतं वमति। इदं, महाराज, काळायसस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, काळायसो सकिं पीतं उदकं न वमति, एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन यो सकिं उप्पन्नो पसादो न पुन सो वमितब्बो—'उळारो सो भगवा सम्मासम्बुद्धो, स्वाक्खातो धम्मो, सुप्पटिपन्नो सङ्घो' ति। रूपं अनिच्चं, वेदना अनिच्चा, सञ्ञा अनिच्चा, विञ्ञाणं अनिच्चं ति यं सकिं उप्पन्नं ञाणं न पुन तं वमितब्बं। इदं, महाराज, काळयसस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन—

'दस्सनम्हि परिसोधितो नरो, अरियधम्मे नियतो विसेसगू।
नप्पवेधति अनेकभागसो, सब्बसो च मुखभावनमेव सो'" ति ॥

३. छत्तङ्गपञ्हो

६३. "भन्ते नागसेन, छत्तस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, छत्तं उपरिमुद्धनि चरति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन किलेसानं उपरिमुद्धनि चरणेन भवितब्बं। इदं, महाराज, छत्तस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, छत्तं मुद्धनुपत्थम्भं होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन योनिसो मनसिकारुपत्थम्भेन भवितब्बं। इदं, महाराज, छत्तस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, छत्तं वातातपमेघवुट्ठियो पटिहनति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन नानाविधदिट्ठिपुथुसमणब्राह्मणानं मतवाततिविधग्गिसन्तापकिलेसवुट्ठियो पटिहन्तब्बा। इदं, महाराज, छत्तस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

यथापि छत्तं विपुलं, अच्छिद्दं थिरसंहितं।
वातातपं निवारेति, महती मेघवुट्ठियो।
तथेव बुद्धपुत्तो पि, सीलछत्तधरो सुचि।
किलेसवुट्ठिं वारेति, सन्तापतिविधग्गयो" ति ॥

४. खेतङ्गपञ्हो

६४. "भन्ते नागसेन, खेत्तस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? यथा, महाराज, खेत्तं मातिकासम्पन्नं होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सुचरितवत्त-पटिवत्तमातिकासम्पन्नेन भवितब्बं। इदं, महाराज, खेत्तस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

'पुन च परं, महाराज, खेत्तं मरियादासम्पन्नं होति, ताय च मरियादाय उदकं रक्खित्वा धञ्ञं परिपाचेन्ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सीलहिरिमरियादासम्पन्नेन भवितब्बं, ताय च सीलहिरिमरियादाय सामञ्ञं रक्खित्वा चत्तारि सामञ्ञफलानि गहेतब्बानि। इदं, महाराज, खेतस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

पुन च परं, महाराज, खेत्तं उट्ठानसम्पन्नं होति, कस्सकस्स हासजनकं, अप्पं पि बीजं वुत्तं बहु करोति, बहु वुत्तं बहुतरं होति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उट्ठानसम्पन्नेन विपुलफलदायिना भवितब्बं, दायकानं हासजनकेन भवितब्बं, यथा अप्पं दिन्नं बहु होति, बहु दिन्नं बहुतरं होति। इदं महाराज, खेत्तस्स **ततियं अङ्गं** गहेतब्बं।

"भासितं पेतं, महाराज, थेरेन उपालिना विनयधरेन—

'खेत्तूपमेन भवितब्बं, उट्ठानविपुलदायिना।
एस खेत्तवरो नाम, यो ददाति विपुलं फलं"' ति॥

५. अगदङ्गपञ्हो

६५. "भन्ते नागसेन, 'अगदस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि द्वे अङ्गानि गहेतब्बानी" ति ? "यथा, महाराज, अगदे किमी न सण्ठहन्ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन मानसे किलेसा न सण्ठपेतब्बा। इदं महाराज, अगदस्स **पठमं अङ्गं** गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, अगदो दट्ठफुट्ठदिट्ठअसितपीतखायितसायितं सब्बं विसं पटिहनति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन रागदोसमोहमान-दिट्ठि विसं सब्बं पटिहनितब्बं। इदं, महाराज, अगदस्स **दुतियं अङ्गं** गहेतब्बं।

'सङ्खारानं सभावत्थं, दट्ठुकामेन योगिना।
अगदेनेव होतब्बं, किलेसविसनासने"' ति॥

६. भोजनङ्गपञ्हो

६६. "भन्ते नागसेन, "भोजनस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि तीणि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति। यथा, महाराज, भोजनं सब्ब-

सत्तानं उपत्थम्भो; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बसत्तानं मग्गुपत्थम्भेन भवितब्बं। इदं, महाराज, भोजनस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं बलं वड्ढेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन पुञ्ञवड्ढिया वड्ढितब्बं। इदं, महाराज, भोजनस्स दुतियं अङ्गं गहेतब्बं। पुन च परं, महाराज, भोजनं सब्बसत्तानं अभिपत्थितं; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सब्बलोकाभिपत्थितेन भवितब्बं। इदं, महाराज, भोजनस्स ततियं अङ्गं गहितब्बं।

भासितं पेतं, महाराज, थेरेन मोग्गल्लानेन--

संयमेन नियमेन, सीलेन पटिपत्तिया।
पत्थितेन भवितब्बं, सब्बलोकस्स योगिना''' ति॥

७. इस्सासङ्गपञ्हो

६७. "भन्ते नागसेन, 'इस्सासस्स चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी' ति यं वदेसि, कतमानि तानि चत्तारि अङ्गानि गहेतब्बानी" ति? "यथा, महाराज, इस्सासो सरे पातयन्तो उभो पादे पठवियं दळ्हं पतिट्ठापेति, जण्णु अवेकल्लं करोति, सरकलापं कटिसन्धिम्हि ठपेति, कायं उपत्थद्धं करोति, द्वे हत्थे सन्धिट्ठानं आरोपेति, मुट्ठिं पीळयति, अङ्गुलियो निरन्तरं करोति, गीवं पग्गण्हाति, चक्खूनि मुखं च पिदहति, निमित्तं उजुं करोति, हासमुप्पादेति—'विज्झिस्सामी' ति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सीलपठवियं विरियपादे पतिट्ठापेतब्बं, खन्तिसोरच्चं अवेकल्लं कातब्बं, संवरे चित्तं ठपेतब्बं, संयमनियमे अत्ता उपनेतब्बो, इच्छा मुच्छा पीळयितब्बा, योनिसो मनसिकारे चित्तं निरन्तरं कातब्बं, विरियं पग्गहेतब्बं, छ द्वारा पिदहितब्बा, सति उपट्ठापेतब्बा, हासमुप्पादेतब्बं—'सब्बकिलेसे ञाणनाराचेन विज्झिस्सामी' ति। इदं, महाराज, इस्सासस्स पठमं अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, इस्सासो आळकं परिहरति वङ्कजिम्हकुटिलनाराचस्स उजुकरणाय; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये सतिपट्ठानआळकं परिहरितब्बं, वङ्कजिम्हकुटिलचित्तस्स उजुकरणाय। इदं, महाराज, इस्सत्थस्स दुतियं अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, इस्सासो लक्खे उपासेति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये उपासितब्ब। कथं, महाराज, योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये उपासितब्बं? अनिच्चतो उपासितब्बं, दुक्खतो उपासितब्बं, अनत्ततो उपासितब्बं, रोगतो ... पे० ... गण्डतो, सल्लतो, अघतो, आबाधतो, परतो, पलोकतो, ईतितो, उपद्दवतो, भयतो, उपसग्गतो, चलतो, पभंगुतो, अद्धुवतो, अत्ताणतो, अलेणतो, असरणतो, असरणीभूततो, रित्ततो, तुच्छतो, सुञ्ञतो,

आदीनवतो, विपरिणामधम्मतो, असारतो, अघमूलतो, वधकतो, विभवतो, सासवतो, सङ्खततो, मारामिसतो, जातिधम्मतो, जराधम्मतो, ब्याधिधम्मतो, मरणधम्मतो, सोकधम्मतो, परिदेवधम्मतो, उपायासधम्मतो, सङ्किलेसधम्मतो। एवं खो, महाराज, योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये उपासितब्बं। इदं, महाराज, इस्सासस्स ततियं अङ्गं गहेतब्बं।

"पुन च परं, महाराज, इस्सासो सायं पातं उपासति; एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन सायम्पातं आरम्मणे उपासितब्बं। इदं, महाराज, इस्सत्थस्स चतुत्थं अङ्गं गहेतब्बं। भासितं पेतं, महाराज, थेरेन सारिपुत्तेन धम्मसेनापतिना—

'यथा इस्सासको नाम, सायम्पातं उपासति।
उपासनं अरिञ्चन्तो, लभते भत्तवेतनं॥

तथेव बुद्धपुत्तो पि, करोति कायुपासनं।
कायुपासनं अरिञ्चन्तो, अरहत्तमधिगच्छती" ति[1]॥

सत्तमो कुम्भवग्गो निट्ठितो।

ओपम्मकथापञ्हो समत्तो॥

निगमनं

इति छसु कण्डेसु बावीसतिवग्गपटिमण्डितेसु द्वासट्ठि-अधिका द्वे सता इमस्मिं पोत्थके आगता मिलिन्दपञ्हा समत्ता। अनागता च पन द्वाचत्ताळीसा होन्ति, आगता च अनागता च सब्बा समोधानेत्वा चतूहि अधिका तिसतपञ्हा होन्ति। सब्बा व मिलिन्दपञ्हा ति सङ्खं गच्छन्ति।

१. रञ्ञो च थेरस्स च पुच्छाविस्सज्जनावसाने चतुरासीतिसतसहस्सयोजनबहला उदकपरियन्तं कत्वा अयं महापठवी छधा कम्पित्थ, विज्जुलता निच्छरिंसु, देवता दिब्बपुप्फवस्सं पवस्सिंसु, महाब्रह्मा साधुकारं अदासि। महासमुद्दकुच्छियं मेघत्थनितनिग्घोसो विय महाघोसो अहोसि। इति सो मिलिन्दो राजा च ओरोधगणा च सिरसा अञ्जलिं पणामेत्वा वन्दिंसु।

२. मिलिन्दो राजा अतिविय पमुदितहदयो सुमथितमानहदयो बुद्धसासने सारमतिनो रतनत्तये सुनिक्कङ्खो निग्गुम्बो नित्थद्धो हुत्वा थेरस्स गुणेसु पब्बज्जासु पटिपदाइरियापथेसु च अतिविय पसन्नो विस्सत्थो निरालयो निहतमानदप्पो उद्धटदाठो विय भुजङ्गो एवमाह—"साधु, भन्ते नागसेन, बुद्धविसयो पञ्हो तया विस्सज्जितो, इमस्मिं बुद्धसासने ठपेत्वा धम्मसेनापतिं सारिपुत्तं अञ्ञो तया सदिसो पञ्हविस्सज्जने नत्थि। खमथ, भन्ते नागसेन, मम अच्चयं। उपासकं मं, भन्ते नागसेन, धारेथ अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं" ति।

---

१. इतो परं राजपञ्हादिका अट्ठतिंस पञ्हा विनट्ठा। येहि ते दिट्ठा, तेहि ते आरोचेतब्बा पुन मुद्दापनकाले पक्खिपनत्थाया ति निवेदनं सम्पादकस्स।

३. तदा राजा बलकायेहि नागसेनथेरं पयिरुपासित्वा मिलिन्दं नाम विहारं कारेत्वा थेरस्स निय्यादेत्वा चतूहि पच्चयेहि नागसेनं कोटिसतसहस्सभिक्खूहि सद्धिं परिचरि। पुन पि थेरस्स पञ्ञाय पसीदित्वा पुत्तस्स रज्जं निय्यादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजित्वा विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पापुणि। तेन वुत्तं—

"पञ्ञा पसत्था लोकस्मिं, कथा सद्धम्मट्ठितिया।
पञ्ञाय विमतिं हन्त्वा, सन्तिं पप्पोन्ति पण्डिता॥
यस्मिं खन्धे ठिता पञ्ञा, सति तत्थ अनूनका।
पूजा विसेसस्साधारो, अग्गो सेट्ठो अनुत्तरो॥
तस्मा हि पण्डितो पोसो, सम्पस्सं हितमत्तनो।
पञ्ञवन्तं हि पूजेय्य, चेतियं विय सादरो" ति॥

लङ्कायं दोणिनगरे, वसता दोणिनामिना।
महाथेरेन लेखित्वा, सुट्ठपितं यथासुतं॥
मिलिन्दराजपञ्हो च, नागसेनविसज्जनं।
मिलिन्दो हि महापञ्ञो, नागसेनो सुपण्डितो॥
इमिना पञ्हकम्मेन, इतो गच्छामि तुस्सितं।
मेत्तेयं नागते पस्से, सुणेय्यं धम्ममुत्तमं ति।

मिलिन्दपञ्हो निट्ठितो।